प्रथम प्रवेश
छः सौ पच्चीस
जनवरी, सन् १९६१
माघ, संवत् २०१७ विक्रम

प्रकाशक
स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशन मन्दिर
जैन भवन, लोहामण्डी
आगरा

मुद्रक
प्रेम इलैक्ट्रिक प्रेस,
घटिया आजमखां,
आगरा

प्रकाशक की ओर से

—अध्यात्म-साधना के ज्वलन्त आदर्श प्रतीक, उदार हृदय, सन्त महापुरुष किसी की बपौती नही हुआ करते। वे तो व्यक्ति, परिवार, समाज अथवा सम्प्रदाय के क्षुद्र सीमा-बन्धनो से एक दम परे हुआ करते हैं। वे सारे ससार के होते हैं और सारा ससार उनका अपना होता है। उनका आदर्श जीवन सभी के लिए आदरणीय एव आचरणीय होता है। उनके पावन उपदेश और सन्देश सभी के लिए मननीय एव अनुकरणीय होते हैं।

—प्रात स्मरणीय श्रद्धेय पूज्यपाद गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, एक ऐसे ही सन्त महापुरुष अभी-अभी हो चुके हैं। उन्ही की पुण्य स्मृति मे प्रस्तुत "स्मृति-ग्रन्थ" का प्रकाशन किया गया है। इस 'स्मृति-ग्रन्थ' के माध्यम से वर्तमान एवं भविष्य मे आने वाली जनता कुछ प्रेरणा ले सके, कुछ जीवन का विकास कर सके और अपने इन महान् सन्त पुरुषो पर एक सात्विक गर्व का अनुभव कर सके—इसी पवित्र उद्देश्य को ले कर यह 'स्मृति-ग्रन्थ' प्रकाशित किया गया है।

—इस 'स्मृति-ग्रन्थ' प्रकाशन जैसे गुरुतर विशाल कार्य को, एक ही व्यक्ति भला कैसे पूर्ण कर सकता था ? ऐसे महान् कार्य मे अनेक सहयोगियो की आवश्यकता पडा ही करती है। फलतः इस कार्य मे भी, सहयोगियो की जब-जब भी, जिस-जिस रूप मे आवश्यकता प्रतीत हुई, वह हमारे उदार हृदय सहयोगियो की कृपा से तत्काल पूर्ण होती गई। प्रारम्भ से ले कर अन्त तक हमे, अपने स्नेही सहयोगियो का मधुर सहयोग मिलता ही रहा। विभिन्न लेखक महानुभावो का श्रद्धाञ्जलि-लेख के रूप मे, विभिन्न कवियों का काव्याञ्जलि के रूप मे एवं विभिन्न प्रेमियो का समवेदना सन्देश के रूप मे, हमे पूरा-पूरा सहयोग मिला ही। इसके लिए हम उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए, उनकी उदार कृपाओ का स्मरण करते हैं। साथ ही

हम हिन्दी साहित्य के वयोवृद्ध साहित्यकार श्रद्धेय डाक्टर प० हरिशकर जी शर्मा, डी० लिट्, लोहामण्डी आगरा, के भी परम आभारी है, जिन्होने अस्वस्थ होते हुए भी प्रस्तुत 'स्मृति-ग्रन्थ' की भूमिका के रूप मे 'दो शब्द' लिखने की कृपा की है। इसी रूप में हम श्री हृषीकेश जी चतुर्वेदी, किनारी बाजार आगरा, श्री सुभाषी जी, महात्मागाँधी रोड आगरा, तथा श्री अरुण जी, मानपाडा आगरा के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करते हैं, जिन्होने प्रस्तुत ग्रन्थ के लिए अपनी अमूल्य सम्मतियाँ प्रदान की हैं।

—'स्मृति-ग्रन्थ' को सजाने-सँवारने और उसका एक महत्त्वपूर्ण नयी शैली से सम्पादन करते हुए, उसे सर्वांग सुन्दर बनाने के रूप मे, हमे श्री के० सी० जैन का सहयोग मिला। आपने अपनी बौद्धिक प्रतिभा एव शिल्प सम्पादन कला का चमत्कार प्रस्तुत ग्रन्थ मे दिखलाया और इसे जन-भोग्य बना दिया। इस रूप मे आपका यह सहयोग चिर स्मरणीय रहेगा ही—यह नि सन्देह है।

—और इसी प्रकार उन आर्थिक सहयोगियो के अभाव मे भी यह कार्य अपूर्ण सा ही रह जाता—जिन्होने अपनी परिश्रम से उपार्जित धन-राशि को, प्रस्तुत 'स्मृति-ग्रन्थ' के लिए प्रदान कर, एक महत्वपूर्ण सहयोग दिया। जिन्होंने अपनी प्राप्त सम्पदा का समुचित सदुपयोग करके हृदय की उदारता का परिचय दिया, उन सभी सहयोगियो का सहर्ष नामोल्लेख करते हुए, हम उनके प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करते हैं और उनके इस सहयोग की भूरि-भूरि प्रशसा भी। 'स्मृति-ग्रन्थ' के लिए आपका सहयोग इस प्रकार रहा—

४०१) सौभाग्यवती श्रीमती कृष्णा देवी जैन,
मातेश्वरी, श्रीमान् बाबू महेन्द्रकुमार, विजयकुमार जैन
आॅयरन मर्चेण्ट, कानपुर (उ० प्र०)

२७५) श्रीमान् बाबू अजितप्रसाद जी जैन,
वकीलपुरा, दिल्ली
(१२ रिम कागज के रूप मे)

२५१) श्रीमान् वावू रोशनलाल जी जैन,
मैनेजर, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, आगरा (उ० प्र०)

२५१) श्रीमान् वावू पदमचन्द जी जैन,
रतन बुक डिपो, राजामण्डी, आगरा (उ० प्र०)

१५१) श्रीमान् लाला अमोलकचन्द जी, पदमचन्द जी जैन,
प्रिंस वॉच कम्पनी, कसेरट वाजार, आगरा (उ० प्र०)

१०१) सौभाग्यवती श्रीमती कमलादेवी जैन,
धर्मपत्नि, श्रीमान् वावू फकीरचन्द जी जैन,
नाई की मण्डी, आगरा (उ० प्र०)

१०१) श्रीमान् लाला जालमसिंह जी जैन,
मोतीकटरा, आगरा (उ० प्र०)

१०१) श्रीमान् लाला सूरजमल जी हीरालाल जी जैन सकलेचा,
मोतीकटरा, आगरा (उ० प्र०)

१०१) श्रीमान् बाबू कुँवरलाल जी जैन,
खजाची, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, आगरा (उ० प्र०)

१०१) श्रीमती लक्ष्मीदेवी जैन
मातेश्वरी, श्रीमान् लाला कल्याणदास जी भगवानदास जी जैन,
लोहामण्डी, आगरा (उ० प्र०)

१०१) गुप्तदान

५१) श्रीमती लाभदेवी जैन,
धर्मपत्नि श्रीमान् वावू शम्भूनाथ जी जैन स्यालकोट वाले,
नाई की मण्डी, आगरा (उ० प्र०)

५१) श्रीमान् वावू अमरचन्द जी जैन कैथल वाले
राजामण्डी, आगरा (उ० प्र०)

५१) श्रीमान् लाला मिट्ठनलाल, पदमकुमार जी जैन,
लोहामण्डी, आगरा (उ० प्र०)

५१) श्रीमान् लाला वावूराम, जगन्नाथ जी जैन,
लोहामण्डी, आगरा (उ० प्र०)

५१) श्रीमान् लाला हरीराम परसराम जी,
नई मण्डी, करनाल (पंजाब)

५१) श्रीमान् बाबू मांगेराम जी जैन, रोहतक वाले,
नई दिल्ली

५०) श्रीमान् लाला ताराचन्द जी,
बेलनगंज, आगरा (उ० प्र०)

४१) श्रीमान् लाला शादीशाह, इकबाल शाह जी जैन
बद्री शाह एण्ड संस, किनारी बाजार, आगरा (उ० प्र०)

२५) श्रीमान् लाला हंसराज जी जैन,
कचहरी घाट, आगरा (उ० प्र०)

२५) श्रीमान् बाबू जगन्नाथ जी जैन, खरड वाले
इलैक्ट्रिक पावर हाउस, आगरा (उ०प्र०)

२५) सौभाग्यवती श्रीमती इचरजबाई जैन,
धर्मपत्नि, श्रीमान् लाला श्रीचन्द्र जी जैन,
मोतीकटरा, आगरा (उ० प्र०)

२५) श्रीमती प्रेमबाई जैन,
धर्मपत्नि श्रीमान् लाला कन्हैयालाल जी जैन सकलेचा
मोतीकटरा, आगरा (उ० प्र०)

२५) सौभाग्यवती श्रीमती स्वराजदेवी जैन,
धर्मपत्नि श्री बुलाकीराम जी जैन,
लोहामण्डी, आगरा (उ० प्र०)

२१) श्रीमान् सेठ फतहसिंह जी जैन बोहरा,
गोकन मुहल्ला, आगरा (उ० प्र०)

२१) श्रीमान् लाला बच्चूमल राजेन्द्रसिंह जी जैन
मोतीकटरा, आगरा (उ० प्र०)

१५) श्रीमान् बाबू सत्यप्रकाश जी जैन, राजपुर वाले,
हनतुपुर, आगरा (उ० प्र०)

११) श्रीमान् बाबू अजितप्रसाद जी जैन,
करनाल (पंजाब)

११) श्रीमान् वावू जयभगवान जी जैन,
देहरादून

११) श्रीमान् लाला नौरगमल, हुकमचन्द जी जैन,
रोहतक (पजाव)

३१) श्रीमान् सितावचन्द जी, महतावचन्द जी जैन,
आगरा (उ०प्र०)

—अन्त मे श्रमदान के इस युग मे, हम उन सहयोगियो एव मित्रो को भी नही भुला सकते—जिन्होंने परिश्रम एव सेवा के रूप मे अपना योगदान देकर इस कार्य को सुसम्पन्न किया। श्री मूलचन्द जी जैन पल्लीवाल, जैन भवन लोहामण्डी आगरा तथा श्री ठाकुर गुलजारी सिंह जी, जैन स्थानक मानपाड़ा आगरा, का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वैसे तो श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के जीवन काल मे भी उनकी, आप दोनो ने वह अनन्य सेवा-भक्ति की है—जो भुलायी जा सकने जैसी नही है। वह तो चिर स्मरणीय ही रहेगी।

—वस अपने इन सभी सहयोगियो का स्मरण करते हुए मैं अपनी वात पूरी करता हूँ। और कामना करता हूँ कि जनता इस 'स्मृति-ग्रन्थ' को सहर्ष अपनाएगी, तथा इससे प्रेरणा ग्रहण करके, कुछ न कुछ जीवन का उत्थान एवं विकास करते हुए, हमारे तथा हमारे सहयोगियो के परिश्रम को सफल वनाएगी।

—सितावचन्द जैन
मन्त्री, श्री व० स्था० जैन श्री संघ,
मानपाड़ा, आगरा

दो शब्द

हिन्दी साहित्य के प्रख्यातनामा साहित्यकार डा० पं० श्री हरिशंकर जी शर्मा डी० लिट्, से साहित्य-संसार पूर्णतया परिचित है। आप व्यक्तिगत रूप में भी परम सज्जन, उदार हृदय एव सद्गुणी पुरुष हैं। जैन साधु-सन्तों के तपस्वी जीवन के प्रति आप की गहरी आस्था है।

प्रस्तुत 'स्मृति-ग्रन्थ' के लिये आपने भूमिका के रूप में दो शब्द लिखे हैं। इनसे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के पावन जीवन तथा प्रस्तुत 'स्मृति-ग्रन्थ' पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

—सम्पादक

जैन साधु-सन्त, श्रमण या मुनि बडे त्यागी-तपस्वी होते है। इस स्वार्थमय आडम्बर-युक्त युग मे भी उनके त्याग-तप की विमल धारा अव्याहत गति से प्रवाहित हो रही है। आज भी जैन मुनि अपने उच्च एव कर्मण्य जीवन तथा उदात्त विचारो द्वारा लोक-कल्याण मे सलग्न है। उनके त्याग-तपपूर्ण विशाल व्यक्तित्व का सर्व साधारण पर पुण्य प्रभाव पडे बिना नहीं रहता।

स्वर्गीय गणी श्री श्यामलालजी महाराज भी ऐसे ही सन्तो अथवा मुनियो मे से थे। आपका जन्म सवत् १९४७ वि० मे, आगरा जिले के सोरई नामक ग्राम मे हुआ था और मृत्यु इसी वर्ष अर्थात सवत् २०१७ वि० मे, आगरा नगर मे हुई। वैराग्य-भावना का उदय, आपके हृदय मे, बाल्यकाल से ही हो गया था। जब श्री श्यामलालजी के माता-पिता ने अपने अल्प वयस्क पुत्र को विरक्ति-पथ पर अग्रसर होते देखा तो वे बडे चिन्तित हुए, और विरक्त बालक को बहुत कुछ समझाने-बुझाने लगे। परन्तु इस प्रकार के सारे प्रयत्न निष्फल हुए। बालक श्यामलालजी गुरु की खोज में निकल पड़े और १९५६ वि० मे एलम (मुजफ्फरनगर) पहुँच कर पूज्य श्री ऋषिरामजी महाराज की शिष्य-मण्डली मे मिल गए। यहाँ उन्होने अध्ययन

एव चिन्तन किया और सवत् १९६३ वि० मे श्री ऋषिराजजी महाराज से दीक्षा ली । साथ ही आप सयम-साधना के पथ पर भी अग्रसर हुए । इसके पश्चात् सन्त श्यामलालजी विचरण करते हुए धर्म-प्रचार मे समय विताने लगे । आपने विविध स्थानो मे ५४ के लगभग 'चातुर्मास' विताए ।

जैन साधु या श्रमण के लिये यह आवश्यक है कि वह आठ मास तक विचरण करता हुआ प्रचार करे और वर्षा-ऋतु के चार मास किसी एक स्थान पर विताये । इसी का नाम 'चातुर्मास' है । इस 'चातुर्मास' मे तो प्रचार-कार्य और भी अधिक दृढता, स्थिरता एवं सलग्नता से करना पडता है । व्याख्यानो-प्रवचनो मे नित्य नियमित रूप से श्रोतागण लाभ उठाते हैं ।

श्रद्धेय गणी श्री श्यामलालजी महाराज की पुण्य स्मृति मे, यह 'स्मृति-ग्रन्थ' प्रकाशित किया गया है । इस गन्थ मे स्वर्गीय गणीजी महाराज के चित्र और चरित्र के अतिरिक्त लेख रूप मे ९४ महानुभावो की श्रद्धाञ्जलियाँ हैं और ४३ व्यक्तियो ने कविताओ द्वारा भी भक्ति-भावनाएँ प्रदर्शित की हैं । इन महानुभावो मे जैन साधु-सन्तो अर्थात् मुनियो या श्रमणो के अतिरिक्त अनेक विद्वान् और नेता भी सम्मिलित हैं । सबने हार्दिक श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित करते हुए मुनि श्री के सम्बन्ध मे अपने-अपने व्यक्तिगत सस्मरण भी दिए हैं । सभी सस्मरण गुरुवर श्री श्यामलालजी महाराज के महान् जीवन की विशालता और महत्ता को प्रकट करने वाले हैं । कितने ही सस्मरणो मे तो सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, उर्दू, अँग्रेजी की वडी शिक्षाप्रद सूक्तियाँ भी उद्धृत की गई हैं । एक और विशेषता है, प्रत्येक संस्मरण या श्रद्धाञ्जलि के प्रारम्भ मे, सस्मरण-लेखक का सक्षिप्त परिचय भी दे दिया गया है । इससे ग्रन्थ की उपयोगिता और बढ गयी है ।

महान् पुरुषो के भौतिक शरीर तो नष्ट हो जाते हैं, परन्तु उनकी आत्मा, उनके आदेश-उपदेश और विशाल व्यक्तित्व के सस्मरण अमर और अमिट रहते हैं । स्वर्गीय श्री श्यामलालजी महाराज के सम्बन्ध मे भी यही वात है । उनका पार्थिव शरीर तो नष्ट हो गया परन्तु उनके कल्याण-कारी उपदेश और शिक्षाप्रद सस्मरण अव भी जीवित हैं । उनसे लाभ उठा

कर हम अपने जीवन मे पवित्रता लाएँ, हृदयो मे सद्‌भावना भरें और कर्म्म-शीलता को सुख-शान्ति-सम्पन्न बनाएँ—यही 'सन्त-स्मृति' का सन्देश है, और यही इस ग्रन्थ का वास्तविक उपयोग है। ऐसा 'स्मृति-ग्रन्थ' प्रकाशित कर बड़ा अच्छा काम किया गया है। मैं इसकी प्रशसा करता हूँ। यदि इसी प्रकार अन्य स्वर्गीय महान् श्रमणो के भी ग्रन्थ प्रकाशित किये जा सकें तो वे भी कल्याणकारी सिद्ध होगे।

हरिशकर शर्मा

शङ्कर-सदन,
लोहामण्डी, आगरा
मकर सक्रान्ति, २०१७ वि०

सम्पादक की ओर से

—'पूज्य गुरुदेव, स्मृति-ग्रन्थ' के प्रकाशन की योजना बनते ही, इस ग्रन्थरत्न के सम्पादन का भार मुझ पर आ पड़ा। स्थान-स्थान से श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सम्बन्ध मे रचनाएँ प्राप्त होने लगी। सम्पादन जैसा महत्त्वपूर्ण गुरुतर कार्य और सम्पादन का मेरा सर्वप्रथम अवसर; मैं सोच-विचार मे पड़ गया कि करूँ तो क्या करूँ? और किस तरह करूँ? इससे पूर्व, सम्पादन का मुझे कोई अनुभव तो था ही नही, फलतः मेरा सोच-विचार मे पड जाना स्वाभाविक ही था। एक बार तो मैं डगमगा ही उठा और ग्रन्थ सम्पादन का भार किसी अन्य अनुभवी व्यक्ति को सौंप देने का विचार करने लगा। परन्तु मेरे सहयोगियो ने मुझे धैर्य दिया, ढाढस बँधाया और उत्साह दिला कर इस कार्य-क्षेत्र मे कूद पड़ने के लिए प्रेरित किया। सहयोगियो के कहने पर मैं श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का नाम ले कर इस मैदान मे उतर पडा। ग्रन्थ सम्पादन की एक रूपरेखा बनायी और उसी के अनुसार कार्य चलने लगा। वैसे मुझे अपनी ओर से तो कुछ लिखना नही था। लेख लेखको के थे और कविताएँ कवियो की। पत्र भी सवेदनशील प्रेमी सहयोगियो के थे ही। मुझे तो उन्हे सजा-सवार कर केवल समुचित आकर्षक रूप मे संग्रह भर कर देना था। और इस कार्य को 'यावद्-बुद्धि बलोदय' के अनुसार जैसा बन पडा, वैसा किया ही गया, और मैं तो समझता हूँ कि श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की कृपा से यह कार्य ठीक रूप में ही सम्पन्न हुआ। फिर भी इसका सही निर्णय एवं मूल्यांकन तो प्रेमी प्रवुद्ध पाठकगण ही कर सकेंगे।

—प्रस्तुत 'स्मृति-ग्रन्थ' मे मेरा अपना क्या है? ज़रा इसे भी स्पष्ट कर दूँ। लेखो तथा कविताओ की अधिकतया शीर्षक और उप-शीर्षक योजना मेरी ओर से है। साथ ही किन्ही-किन्ही लेखो तथा कविताओ मे, उनकी मूल भावनाओ को सुरक्षित रखते हुए, कही-कही परिवर्तन एव परिवर्धन भी किया गया है। किन्ही-किन्ही भावो को स्पष्ट करने के लिये कही-

कहीं सूक्तियाँ भी मैंने अपनी ओर से दी हैं। इतना कुछ करने पर भी लेख या कविता की मूल भाषा को अधिकांशतया ज्यों का त्यों ही रखा गया है। यह हुई लेखों और कविताओं की बात। इसके अतिरिक्त प्रत्येक लेख और कविता के रचनाकार का संक्षिप्त परिचय एवं लेख और कविता के सम्बन्ध में अति संक्षिप्त टिप्पणी तो अपनी ओर से दी ही गई है। शिल्प सम्पादन की दृष्टि से भी प्रस्तुत 'स्मृति-ग्रन्थ' में एक नवीन आकर्षक शैली का प्रयोग किया गया है। जिसका सदर्शन तो पाठक वृन्द को 'स्मृति-ग्रन्थ' देखने के पश्चात् ही हो सकेगा।

—इतना सब कुछ सावधानी पूर्वक किये जाने के पश्चात् भी, मेरा यह प्रथम ही प्रयास होने के कारण, सम्भव है प्रस्तुत 'स्मृति-ग्रंथ' में कुछ न कुछ अस्वाभाविकताएँ, कुछ न कुछ त्रुटियाँ, कुछ न कुछ भूलें भी रही ही होंगी; परन्तु प्रेमी पाठकों से इतना आग्रह अवश्य है कि वे त्रुटियों की ओर ध्यान न देते हुए—हंस बुद्धि से केवल सार ही ग्रहण करें। प्रस्तुत 'स्मृति-ग्रंथ' के द्वारा यदि प्रेमी पाठकवृन्द अपने जीवन का कुछ विकास कर सकें, नैतिक उत्थान के लिए कुछ प्रेरणा प्राप्त कर सकें और मानवता के विकास में सहयोगी बन कर अपने को कुछ लाभान्वित कर सकें, तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। बस मुझे इस सम्बन्ध में इतना ही कहना था और अब इतना ही कह कर, अपनी बात पूर्ण करता हूँ।

जैन भवन, लोहामण्डी
आगरा
१—१—६१

—के० सी० जैन

समर्पण

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव !

प्रस्तुत 'स्मृति-ग्रन्थ' मे—

जीवन परिचय आप का ही तो है,

लेखाञ्जलियाँ भी आपको ही समर्पित की गई हैं,

तथा काव्याञ्जलियाँ भी आपके ही श्री चरणो मे अर्पित है,

और पत्र ?

वे भी तो आपके ही सम्बन्ध मे बोलते है,

इसलिए इस 'स्मृति-ग्रन्थ' मे, सभी कुछ आपका ही तो है,

फिर—

आपके अतिरिक्त इसे अन्य किसको समर्पित किया जावे ?

अस्तु—

अपनी ही वस्तु, आप ही स्वीकार कीजिए गुरुदेव !

त्वदीय वस्तु गुरुदेव !
तुभ्यमेव समर्प्यते ॥

—के० सी० जैन

कहाँ क्या है ?

जीवन परिचय एवं लेखाञ्जलि

(प्रथम खण्ड)

पृष्ठ १ से ४६२ तक

काव्याञ्जलि

(द्वितीय खण्ड)

पृष्ठ ४६५ से ५६६ तक

बोलते पत्र

(तृतीय खण्ड)

पृष्ठ ५६९ से ६२४ तक

जहा ससी कोमुइ जोग जुत्तो,
नक्खत्त तारा गण परिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अब्भ मुक्के,
एव गणी सोहइ भिक्खु मज्झे ॥

द० ९—१—१५

—जिस प्रकार अभ्रमुक्त-आकाश में कौमुदी का योग आने पर तारागण के मध्य चन्द्रमा शोभायमान होता है, उसी प्रकार साधु-समाज मे श्री गणी जी महाराज अपने सौम्यता आदि अनेक सद्गुणो से शोभायमान हैं ।

"भ० महावीर"

पूज्य गुरुदेव,

स्मृ

ति

ग्र

न्थ

जीवन परिचय एवं लेखाञ्जलि :

:जीवन परिचय एवं लेखाञ्जलि:

—पूज्य गुरुदेव, स्मृति-ग्रन्थ के इस प्रथम खण्ड का नाम—जीवन परिचय एवं लेखाञ्जलि—है। प्रस्तुत खण्ड के प्रारम्भ में सन्त संस्कृति के जाज्वल्यमान प्रकाश-स्तम्भ, जैन जगताकाश के प्रकाशमान दिनकर, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय दे दिया गया है। जिसका पारायण कर प्रबुद्ध पाठक गण, उस महान् जीवन की विशिष्ट घटनाओं से परिचित हो सकें। इसके पश्चात् साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, चतुर्विध श्रीसंघ के प्रतिनिधि, विभिन्न लेखक और लेखिकाओं की, लेख रूप में प्राप्त श्रद्धाञ्जलियाँ हैं। जिनमें विभिन्न दृष्टिकोणों से आँकी गई; श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की, पावनजीवन-घटनाओं एव विभिन्न महान् विशेषताओं की मनो मुग्धकर झाँकियाँ हैं। लेख क्या हैं? सुधा-रस से भरी गागरियाँ हैं। जिनमें एक से एक बढ कर मधुर रस भरा हुआ है। प्रत्येक लेख अपने आपमें एक नई विशेषता रखता है। कोई परिचयात्मक है तो कोई संस्मरणात्मक। कोई घटनात्मक है तो कोई काव्यात्मक। कोई प्राकृत उद्धरणों से भरपूर है तो कोई संस्कृत श्लोकों से। किसी में हिन्दी काव्य की छटा मिलती है तो किसी में उर्दू के दिलकश तराने नज़र आते हैं। किसी में अंग्रेजी की बहार है तो किसी में कथाओं का चमत्कार है। अधिक क्या? यह तो मानो विभिन्न मधुर रस-भरे फलों से लदे हुए वृक्षों से भरपूर वाटिका है। जिसमें पहुँच कर पाठक गण एक मधुर परितृप्ति, एक सात्त्विक आनन्द, एक परम प्रसन्नता एक मधुर आकर्षण, एक मधुर सुवास तथा एक मधुर रस प्राप्त किए विना न रह सकेंगे। बस पाठक गण इस सुरम्य मनोहर पुष्प वाटिका से कुछ न कुछ ग्रहण कर, अपना जीवन सफल करें—यही कामना है।

:सम्पादक:



पूज्य गुरुदेव : एक परिचय :

श्री कीर्ति मुनि जी

—श्री कीर्ति मुनि जी, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के ही प्रशिष्य रत्न हैं। आप श्रद्धेय तपस्वी श्री श्री चन्द्र जी महाराज के सुशिष्य है। आप अच्छे विचारक युवक सन्त हैं। जीवन की शैशवावस्था से ही आप श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की पावन छाया में रहे हैं। अतएव आपने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को अत्यन्त निकट से देखा है, परखा है, जाना है और पहिचाना है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के जीवन के अन्तिम क्षणों तक आप उनकी सेवा मे समुपस्थित रहे हैं।

—आप ने जिस रूप में श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी को देखा, जिस रूप मे जाना और उन्हीं के मुखारविन्द से जिस रूप में उनका परिचय सुना ; प्रस्तुत लेख में उन्हीं भावनाओं को शब्दो का रूप दिया गया है। आपने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का परिचय किस रूप में दिया है ? यह उन्हीं के शब्दो में इस लेख मे पढ़िए।

—सम्पादक

❀ भारतीय संस्कृति

—विश्व की विराट एव विशाल मानव-सस्कृति के इतिहास मे भारतीय संस्कृति, अपना एक विशिष्ट ही, महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय सस्कृति, जन सस्कृति की आत्मा का एक अमर सगीत है। एक ऐसा अमर संगीत, जो जन-गण-मन को, आध्यात्मिक-आनन्द-रस मे आप्लावित कर दे। भारतीय सस्कृति दर असल आध्यात्मिक सस्कृति है। इसी लिए इसको जन-सस्कृति मे शीर्षस्थ स्थान प्राप्त है। भारतीय सस्कृति मानव को, असत् से सत् की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृतत्व की ओर ले जाने वाली सस्कृति है। भारतीय सस्कृति के उद्गाता ऋषि के शब्दो मे, यह सस्कृति हमे सिखाती है—

असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्यो र्मा अमृत गमय ॥

—आज पदार्थतावादी भौतिक संस्कृति, मानव को विनाश के महागर्त की ओर ले जाने के लिए अग्रसर है। भौतिकता की चकाचौध पूर्ण घुड़दौड मे विज्ञान का आश्रय ले, आज का पदार्थ-वादी मानव यत्र तत्र सर्वत्र छा जाना चाहता है। उसने जल, स्थल और नभ में एकाधिकार करने के पश्चात् अब अन्य ग्रहो पर धावा बोलने की तैयारी करली है और इस दिशा मे वह प्रयत्नशील भी है। किन्तु अध्यात्मवादी तत्ववेत्ताओ का कहना है कि मानव जब तक अध्यात्म की जलती हुई मशाल हाथ मे लेकर नही वढेगा, तब तक वह, यो ही इधर से उधर भटकता, ठोकरे खाता रहेगा। भौतिक पदार्थवादिता का यह विकास, अध्यात्मिक विचार धारा के बिना, मानव के विनाश का ही कारण वन जाएगा। सच्ची अध्यात्मिकता के बिना मानव आपस मे ही एक दूसरे का रक्त वहा कर, कट मरेगा। भौतिक सस्कृति मानव को केवल ध्वस ही सिखाती है जब कि

अध्यात्म-संस्कृति उसके जीवन-निर्माण मे सलग्न रहती है। आध्यात्मिक विचार धारा, मानव के आत्मस्थ सद्भाव और संस्कारो को जागृत कर उनका चरम विकास कर दिखाती है। आध्यात्मिकता के अभाव मे कोरी भौतिकता, निरर्थक ही नही, अपितु हानिकारक भी है।

—अध्यात्म संस्कृति अपने साथ, विवेक को लेकर चलती है।

अध्यात्म संस्कृति ही एक ऐसी सस्कृति है, जो मानव को नीचे, पशुता मे जाने से रोकती है और ऊपर मानवता में ले जाने का सद् प्रयत्न किया करती है। अध्यात्म संस्कृति त्याग मे ही अपना गौरव समझती है। जबकि भौतिक पदार्थ वादी सस्कृति, सब कुछ बटोर लेने मे ही अपनी महत्ता मानती है। अध्यात्म सस्कृति सब कुछ त्याग कर, अकिंचन बन कर भी, एक अलौकिक आनन्द और असीम सुख का अनुभव करती है, जबकि पदार्थवादी भौतिक सस्कृति सब कुछ पाकर, बटोर कर, उस पर एक मात्र अधिकार करके भी तृप्त नहीं होती, उसकी लालसा-कामना और तृष्णा बढ़ती ही रहती है, वह कभी पूर्ण नही होती, समाप्त नही होती। आध्यात्मिक-संस्कृति एक ऐसी वृत्ति है, एक ऐसा रुझान है, जिससे सम्पन्न होकर मानव आदर्श बन जाता है। भौतिक सस्कृति मानवता को दहका तो सकती है, पर उसे दमका और चमका नही सकती। वह जला तो सकती है, पर उजला नही कर सकती। भौतिक पदार्थ वादी संस्कृति जब अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होती है, तो हिसा, माया, झूठ, प्रपञ्च और दम्भ आदि अनेक असत् वृत्तियो को भी अपने साथ रखने मे कोई संकोच नही करती। जब कि अध्यात्मवादी सस्कृति, इन वृत्तियो के विना ही पनपती है, बढ़ती है, और एक अखण्ड शांति तथा परम तृप्ति हासिल करती है।

—भारतीय संस्कृति सच्ची आध्यात्मिक सस्कृति है। वह मानव

को त्याग एवं सद्गुणो द्वारा सच्चा मानव, बल्कि अतिमानव और महामानव बनना सिखाती है। भारतीय सस्कृति एक तरह से

सभ्यता और समाज की जड़ है, नीव की ईंट है। भारतीय आध्यात्मिक सस्कृति की आधार शिला पर ही, यह सभ्यता और समाज का गगनस्पर्शी महाप्रासाद खडा है। अधिक क्या, भारतीय संस्कृति जन-संस्कृति का प्राण है, विशाल मानव सस्कृति की आत्मा है।

❀ श्रमण संस्कृति

—जिस प्रकार विश्व-संस्कृति अथवा जन-सस्कृति मे, भारतीय-संस्कृति अपना विशिष्ट स्थान रखती है। उसी प्रकार भारतीय-सस्कृति मे, श्रमण सस्कृति सन्त सस्कृति भी एक उन्नतम स्थान रखती है। भारतीय-सस्कृति से यदि श्रमण सस्कृति को पृथक् कर दिया जाय, तो केवल शून्य ही शेष रहेगा। भारतीय सस्कृति को जो इतनी प्रतिष्ठा है, पूजा है, जो इतना सम्मान इसे विश्व भर मे प्राप्त हो रहा है, वह अधिकाशत. बल्कि कहना चाहिए सर्वाशत. श्रमण-सस्कृति के कारण ही तो है। सच्चा श्रमण, सच्चा सन्त, अध्यात्म सस्कृति के विकसित रूप का सर्वोत्कृष्ट नमूना है। श्रमण सस्कृति क्या है? आचार में विचार और विचार मे आचार का सुन्दरतम योग, ज्ञान और क्रिया का श्रेष्ठतम समन्वय, सद्गुण और सदाचरण का पुञ्जीकृत समूह। इसके अलावा श्रमण सस्कृति कोई अन्य वस्तु नही है। श्रमण-त्याग-मार्ग का आदर्श होता है। सन्त अपने त्याग एव सयम, सद्ज्ञान एवं सद् विचार के कारण संसार का पथ-प्रदर्शक रहा है, नेता रहा है; एक ऐसा राहबर रहा है, जो अपने पीछे आने वाली जनता को, उस के ठीक लक्ष्य तक, साध्य तक पहुचा सके। ठेठ मजिले-मकसूद तक रहनुमाई कर सके।

—श्रमण, भारतीय संस्कृति का सजग प्रहरी है। उसका सरक्षक है, उद्धारक है, और उसे विकास के सर्वोच्च शिखर तक ले जाने वाला साहसिक नेता है। भारतीय सस्कृति का इतिहास, इन त्याग-मार्गी, महान् आत्माओ के समुज्ज्वल चरित्रो का ——

उपदेशो से भरा पडा है। इन सस्कृति के उन्नायक महापुरुषो से भला कौन भारतीय परिचित नही है ? प्रथम श्रेणी के विद्यार्थी तक भी इनके महान् सद्गुणो एवं कार्य-कलापो से सुपरिचित है। सन्त देश-काल की तुच्छ सीमाओ मे कभी बँध कर नही रहा। समाज-परिवार, सम्प्रदाय या देश भी उस अमर ज्योति को रोक कर नही रख सके। उस महान् पुरुष की दिव्य ज्योति सर्वत्र फैली। अपने समुज्ज्वल आलोक से उसने समस्त विश्व को आलोकित कर दिया। उसके सद्गुणो और पावन अनुभूतियो की सुगन्ध को, क्षुद्र परिधि कब तक बन्द रख सकी ? वह तो फैली समस्त विश्व मे। जन-मानस का कोना-कोना उसकी विराट खुशबू से महक उठा, सुवासित और सुगन्धित हो उठा। इन श्रमण सस्कृति के पुण्य-स्रोत, महान् सन्तो, अध्यात्म वेत्ताओ की पुण्य जन्म भूमि होने का गौरव भारत को ही अधिकाशतः सम्प्राप्त है। काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और अटक से लेकर कटक तक ऐसा कौन सा स्थान है, जो इन ऋषियो, मुनियो, त्यागियो, महात्माओ, सन्तो और श्रमणो से गौरवान्वित न हुआ हो ? भारत तो अध्यात्म संस्कृति का केन्द्र ही रहा है, अतः प्रत्येक स्थान मे, प्रत्येक समाज मे, प्रत्येक सम्प्रदाय मे, प्रत्येक प्रान्त मे, एक से एक बढ कर ये महामानव हुए है। तथा होते रहेगे। सौराष्ट्र एव गुजरात के सन्तो से, त्यागी महापुरुषों से भला कौन परिचित नही है ? महाराष्ट्र एवं वग देश की विभूतियो को भला कौन नही जानता ? राजस्थान के धीर वीर, गम्भीर एव भक्त हृदय सत्पुरुषो से भला कौन अनभिज्ञ है ? पञ्चनद के फक्कड़ फकीर भला किस से छिपे हुए हैं ? और उत्तर-प्रदेश ? वह तो एक तरह से भक्तो, सन्तो एव सत्पुरुषो की मानो खान ही रहा है। भारत की यह आध्यात्मिक सन्त-परम्परा आज की नही अपितु अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है। ऋषभदेव, शान्तिनाथ, राम, कृष्ण, पारस और महावीर सरीखे अवतारी महापुरुषो की यह भारत ही जन्मभूमि रही है। महात्मा बुद्ध, आचार्य शकर, मध्व, निम्बार्क, आदि तथा

गुरु नानक, तुलसी, सूर, कबीर, दादू, मीरा, जैसे एवं तुकाराम, नामदेव, ज्ञानेश्वर, नरसी, आनन्दघन, जैसे भक्तो और सन्तों की परम्परा यहाँ अविच्छिन्न रूप से चलती आई है।

❀ श्रमण संस्कृति में जैन श्रमणों का योग

—श्रमण सस्कृति के उन्नयन और उत्थान मे, जैन श्रमणों का भी महत्वपूर्ण योग रहा है। जैन श्रमण, श्रमण संस्कृति के विशालतम भाल पर तिलक के समान है। जैन श्रमणों ने इस श्रमण-सस्कृति की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व होम दिया। जैन श्रमण, श्रमण सस्कृति के कठोरतम साधको मे से हैं। आज से सैकड़ो-हजारो वर्ष पूर्व भी अन्य साधक, जैन श्रमणो की कठोर आत्म-साधना को, चकित दृष्टि से देखा करते थे। वैदिक तथा बौद्ध आदि अन्यान्य ऐतिहासिक साहित्य, ऐसे ही प्रत्यक्ष प्रमाणो एव उदाहरणो से भरे पड़े हैं। आज भी जब अन्य श्रमण, सन्त-साधक, अपने नियमोपनियम तथा साधना-बन्धनो को काफी शिथिल कर चुके है, तब भी आज का जैन श्रमण, अपने उन्ही मूलभूत सिद्धान्तो पर, नियमो पर, कठिनतम साधना-पथ पर डटा हुआ है। आज भी उच्च कोटि के सन्तो मे जैन सन्त का नाम सर्व प्रथम आता है। जैन सन्त के तप-त्याग और सयम की एक विशिष्ट छाप, आज भी जन-मानस मे अपना सर्वोच्च स्थान रखती है। अहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि महाव्रतो, यम और नियमो का पालन, जैन सन्त आज भी उसी सूक्ष्मता और गहराई के साथ करता है, जिसका पालन उस श्रमण संस्कृति के प्रारम्भिक काल मे जो बतलाया गया था। भारत का कोना-कोना, आज भी जैन सन्तो के पाद विहार का, विचरण स्थल बना हुआ है। जैन श्रमणो के पवित्र जीवन एवं महान् उपदेशो मे, आज भी भारतवर्ष उसी प्रकार से गूँज रहा है, जिस प्रकार शताब्दियों पूर्व गूँजता रहा था। इतिहास गगन, जैन श्रमणो के ज्योतिर्मय समान जीवन-नक्षत्रों से आज भी परिव्याप्त होकर उसी

प्रकार जगमगा रहा है तथा भविष्य मे भी इसी प्रकार जगमाता रहेगा। क्या गुजरात ? क्या सौराष्ट्र ? क्या राजस्थान ? क्या पञ्जाब ? क्या मध्य-प्रदेश ? क्या वग-विहार और महाराष्ट्र ? तथा क्या उत्तर-प्रदेश ? भारत के सभी क्षेत्र जैन श्रमणो की साधना के अमर केन्द्र रहे हैं। क्या साहित्य ? क्या संगीत ? क्या कला ? सभी जैन श्रमणों की अमूल्य कृतियो से सम्पन्न है। जैन श्रमण साहित्य, अपने आप मे इतना विशाल साहित्य है, जिसकी गणना भारत के उच्चतम साहित्य मे की जा सकती है। जैन श्रमणो के साहित्य और कला-कृतियो से भण्डार के भण्डार परिपूर्ण है। जैन श्रमणो ने भारतीय सस्कृति एवं श्रमण-सस्कृति की रक्षा, उत्थान एवं उन्नयन की प्रत्येक दिशा मे अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। प्रत्येक दिशा मे, सफलता पूर्वक अपना योग देकर जैन श्रमणो ने संस्कृति के विशाल कोष को समृद्धि प्रदान कर, विशालतम बनाया है।

❀ श्रमण संस्कृति के समुज्ज्वल नक्षत्र

—श्रमण सस्कृति मे श्रमण से बढ कर, सन्त से अधिकतर पवित्र वस्तु और कौन है ? सन्त की पवित्रता, समुज्ज्वलता और संयम-साधना की धाक जन-मानस पर, हमेशा-हमेशा से रही है। सन्त जीवन की पवित्रता एवं महानता की छाप अमिट है। जन-चेतना सन्त की भक्ति करती है, पूजा करती है, सम्मान एवं सत्कार करती है। सन्त, भारतीय जनता का आराध्य देव, हृदय सम्राट बना हुआ है। सन्त ने प्रत्येक काल मे, प्रत्येक स्थान मे और प्रत्येक मानस मे, अपना वह सर्वोच्च स्थान सुरक्षित कर लिया है, जो सहज ही पहिचाना जा सकता है। श्रद्धालु जन-मानस सन्त के लिए, सर्वस्व तक समर्पित करने को तैयार है। ऐसा क्यों ? सन्त की इतनी प्रतिष्ठा क्यो ? इस प्रश्न का तो स्पष्ट ही समाधान यह है कि जन-चेतना, सन्त के तप. पूत पवित्र जीवन से प्रेरणा प्राप्त करती है। सन्त पुरुष के आदर्श जीवन से कर्तव्य-मार्ग मे बढ़ने के लिए उसे समुचित

मार्ग-दर्शन प्राप्त होता है। मानव, रात और दिन अपने निरन्तर चलने वाले कार्य व्यवहार से जब ऊब उठता है, तो उसे सन्त चरण मे पहुँच कर, सन्त के पवित्र दर्शन से, महान् जीवन से और धर्म उपदेशो से, एक अपूर्व शान्ति तथा एक अनुपम विश्रान्ति सुख का अनुभव होता है। सन्त-सेवा करके जन-मानस एक परम तृप्ति और संतुष्टि अनुभव करता है। सन्त जीवन तो एक ज्वलन्त प्रकाश-स्तम्भ होता है, जिसके आदर्श जीवन और पवित्र उपदेश ज्योति से, ससार के जीवन क्षेत्र में भूले-भटके प्राणी, प्रकाश ग्रहण करके अपना कर्तव्य-मार्ग प्रशस्त एवं आलोकित किया करते है। सन्त जीवन तो एक कल-कल और छल-छल निनाद करके वहता हुआ निर्मल निर्झर होता है। जिसके शीतल एव मधुर जल का पान करके तथा उसमे स्नान करके, हर कोई अपनी प्यास बुझा सकता है। परिश्रान्ति और थकावट दूर कर सकता है। इत्यादि इन्ही अनेक कारणो से सन्त जीवन भारतीय जनता का पूजा-केन्द्र वना हुआ है।

—ऐसे ही जन-श्रद्धा के आधार-स्तम्भ, प्रेरणा-केन्द्र और आराध्य देव, एक तपस्वी, यशस्वी, मनस्वी सन्त का परिचय हम इन पृष्ठो मे करा देना चाहते हैं। जो श्रमण संस्कृति के एक समुज्ज्वल नक्षत्र थे। जिनका जीवन उच्चतम साधना का जीवन था। जिनके परम पावन सन्देश और उपदेश, आज भी भूली और भटकी हुई जनता को, कर्तव्य मार्ग का निरन्तर सकेत कर रहे है। जिस महापुरुष का जीवन सद्गुणो की सुगन्धी से महकता हुआ जीवन था जिस महान् आत्मा ने अपने जीवन के शैशव काल में ही सयम के उस असिधारा व्रत को ग्रहण करने मे तत्परता दिखलाई और इस अमन्द आत्म-भावना के लिए अपना समस्त जीवन ही उत्सर्ग कर दिया। उभरते हुए यौवन के प्रारम्भ में ही जिन्होने ब्रह्मचर्य जैसे कठोर महाव्रत को अगीकार किया और जीवन के अन्तिम क्षणो तक उसे, उसी प्रकार निर्धूम, निर्मल एव पवित्र रूप से निभा कर ससार के समक्ष एक उच्चादर्श समुपस्थित किया। जिन्होने अपने कौटम्बिक

मोह को, विश्व मैत्री और विश्व प्रेम के रूप में परिवर्तित कर, अपनी महत्ता की धाक संसार मे जमा दी। जिनके महान् जीवन का प्रत्येक क्षरण, आत्म-शोधन और सत्य-अन्वेषरण की प्रक्रिया मे ही संलग्न रहा। जिनकी सरलता, सौम्यता, मृदुता, शान्ति प्रियता और सेवा-परायरणता, कर्तव्य-पथ के पथिकों को, आज भी पाथेय का काम दे रही है, और भविष्य मे भी युगों-युगों तक जो समाप्त होने वाली नही है। उन्ही श्रमरण संस्कृति के समुज्ज्वल नक्षत्र, श्रद्धेय पूज्य-गुरुदेव, गरणी श्री श्यामलाल जी महाराज का जीवन परिचय हम इन पृष्ठों मे करा देना चाहते है।

❀ परिचय रेखा

—वैसे तो सन्त अपना परिचय स्वय होता है। संसार उसके कृतिशील जीवन से स्वयमेव परिचित रहता है। फिर उसका क्या परिचय कराया जाय? भला सूर्य का, ससार को क्या परिचय दिया जाय? जब कि वह अपनी प्रकाशमय रश्मियो से स्वय प्रकाशित है, तो उस पर फिर कौन सा प्रकाश डाला जाय? उस का तो, प्रचण्ड तेजस्वी प्रकाश ही संसार को अपना परिचय करा देता है। भला एक खिले हुए सुगन्धित पुष्प का क्या परिचय हो सकता है? उसकी तो मधुर एव भीनी-भीनी सुगन्ध ही उसका परिचय करा देती है। इसी प्रकार उन महान् आत्मा पूज्य गुरुदेव का क्या परिचय कराया जाय? वे तो अपने महान् सद्गुणो से, संसार भर मे स्वयं ही परिचित है। और फिर बेचारे शब्दो मे वह सामर्थ्य ही कहाँ है, जो उनके अन्तर्जीवन के महान् गुणो से किसी को परिचित करा सके? श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सद्गुणो का परिचय तो अनुभव से ही सीधा सम्बन्ध रखता है। शब्द, बाहरी रूप-रंग बनावट अथवा ढाँचे का तो वर्णन कर सकता है, बाह्य साकारता तो उसकी सीमा रेखा मे समा सकती है, परन्तु आन्तरिक जीवन के निराकार सद्गुणों का अनुभव कराना उसके बस की बात नही। यह काम शब्दो की सीमा-रेखा से बाहर है। गुड़ की मिठास, केवल मीठा कहने मात्र से नही

मालूम होती, वह तो चखने पर ही जानी जा सकती है। इसी तरह पूज्य गुरुदेव सरीखे, महापुरुष-सन्तो के सद्गुणो की मधुरता और विशेषता तो, उन्हीं की तरह आचरण करने पर ही ज्ञात हो सकती है। किन्तु इतना होने पर भी मानव एक दूसरे को, एक दूसरे से परिचित कराने के लिए, शब्दो एव भाषा का माध्यम ढूँढा ही करता है, लेखनी अथवा वाणी का आश्रय लिया ही करता है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का परिचय भी यहाँ इसी दृष्टिकोण को लेकर लिखा जा रहा है।

—श्रद्धेय, पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज, अपने जैसे आप स्वय ही थे। अतएव उनकी तुलना किस से की जाय? उपमा किस से दी जाय? पूज्य गुरुदेव का पवित्र जीवन, सुन्दर विचार और श्रेष्ठ आचार का समन्वित रूप था। वे एक सच्चे मानव थे, सच्चे सन्त थे, सच्चे साधक थे और एक सच्चे महान्पुरुष थे। उनके सामने एक वैभव और विलासो से भरी दुनिया थी। एक आकर्षण भरा मधुर ससार था। पर वे उनका मन अपनी ओर न खीच पाए, अपनी ओर आकर्षित न कर पाए। माता-पिता और ससार ने, उन्हे ढालना चाहा था किसी ढाँचे मे, परन्तु वे ढले, अपने ही उद्बुद्ध आध्यात्मिक, सयम मूलक सुसस्कारो के ढाँचे मे। ससार ने उन्हे चलाना चाहा था किसी मार्ग पर, परन्तु उनके मुस्तैदी कदम बढे, सयम साधना के जलते हुए महामार्ग ही पर। संसार ने उनको बाँधना चाहा था किन्ही और ही बन्धनो मे, परन्तु वे बँधे अपने यम-नियमो के ही कठोर बन्धनो मे। ससार ने उन्हे सीमित करना चाहा था किसी और ही दायरे मे; पर वे उदार हृदय सीमित रहे, इस विशाल विश्व के विशालतम सम्पूर्ण दायरे मे ही। संक्षेप मे पूज्य गुरुदेव एक ऐसी प्रज्ज्वलित दीपशिखा के समान थे, जो महात्मा, लक्षाधिक शलभो का आकर्षण केन्द्र रही है। एक ऐसे महकते हुए फूल की मानिन्द थे, जो शताधिक भ्रमरो-मधुमक्खियो और तितलियों का अवलम्ब स्थान रहा है।

❀ जन्म एवं माता-पिता

—महान् पुरुष एक पारस पत्थर की तरह होते है। जिस तरह पारस के स्पर्श एवं सम्पर्क मात्र से लौह खण्ड, बहुमूल्य सुवर्ण मे परिवर्तित हो जाता है। उसी प्रकार महापुरुषो के सम्पर्क-ससर्ग मे आने वाली प्रत्येक वस्तु, चाहे वह जड़ हो अथवा चैतन्य, अपने मूल्य की आशातीत वृद्धि कर लिया करती है। सम्मानित-विश्ववद्य महापुरुष के कारण तथा निमित्त से ही, वह काल, वह देश, वह समाज, वह परिवार, अथवा वह व्यक्ति भी सम्मान और प्रतिष्ठा के अधिकारी बन जाते है, जिन का मधुर सम्पर्क उस महान् आत्मा से रहा हो। त्याग मूर्ति पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज भी, ऐसे ही विश्ववद्य, महान् आध्यात्मिक सन्त पुरुष थे। अतएव उनके जीवन सम्पर्क मे आने वाली वस्तुओ का भी, उनके वर्णन के साथ-साथ वर्णन आ जाना स्वाभाविक ही है। इसी दृष्टिकोण को समक्ष रखते हुए, पूज्य गुरुदेव के परिचय के साथ-साथ, उनकी जन्म-भूमि का, उनके माता-पिता आदि परिवार का उनके वंश और खानदान का, तथा उनके जन्म-समय आदि का परिचय करा देना भी आवश्यक सा ही हो जाता है।

—पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज का शुभ जन्म, भारतवर्ष के समृद्धिशाली प्रदेश, उत्तर-भारत के महानगर, ऐतिहासिक मुगलकालीन राजधानी-आगरा के सन्निकट "सोरई ग्राम" मे हुआ था। यह सोरई ग्राम छोटा सा होते हुए भी, अपनी अलग ही विशेषता रखता है। प्रकृति के प्राङ्गण मे हरा-भरा यह छोटा सा गाँव, बड़ा ही सुन्दर प्रतीत होता है। इस ग्राम के ग्रामीणो में भारत के वास्तविक स्वरूप के दर्शन-संदर्शन हो जाते हैं। क्योकि कृषि-प्रधान भारत के, कृषि-कर्म पर निर्भर गाँव का यह आदर्श नमूना है। कृषकवर्ग की ही इस गाँव मे प्रधानता रही हुई है। इसी ग्राम के क्षत्रिय-कुल भूषण श्रीमान् चौधरी टोडरमल जी—जोकि उस समय ग्राम के एक सम्मानित एव प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते थे, उनकी

धर्मपरायणा, धर्मशीला, सुगृहिणी-श्रीमती रामप्यारी जी के उदर मे, पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज का शुभ जन्म, विक्रम सम्वत् १९४७ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी के शुभ दिन हुआ था। आप के जन्म से माता-पिता को अपूर्व हर्ष का अनुभव हुआ। आप सरीखे पुत्र रत्न को पा कर के, माता-पिता फूले नही समाते थे। उन्होने अपनी आशाओ का केन्द्र आपको बनाया। आप के माता-पिता क्योंकि धार्मिक शुभ सस्कारो से सम्पन्न दम्पति थे। अत उन्होंने अपनी इस लाडली सन्तान को भी सुसस्कारो से सम्पन्न करना प्रारम्भ कर दिया। यह तो मानस-सिद्धान्त का निश्चित नियम है कि मानव अपनी अतृप्त इच्छाओ की पूर्ति अपनी सन्तान मे देखना चाहता है। इसी नियम के फलस्वरूप पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज के माता-पिता भी, अपने उन धार्मिक सस्कारो का—जो स्वय उनके जीवन का अग बन चुके थे, एक सफल विकास आप के जीवन मे देखना चाहते थे। इसीलिए वे हर सम्भव प्रयत्न करते थे, अपने पुत्र का सुसस्कारी व्यक्तित्व निर्माण करने मे।

❀ मधुर बचपन

—इस प्रकार पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज का मधुर बचपन बडे ही आनन्द के साथ व्यतीत होने लगा। सुसस्कारी माता-पिता की सन्तान होने के कारण, धर्म के सस्कार तो आपको विरासत मे ही मिले थे। साथ ही—'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'—लोकोक्ति के अनुसार आपका नैसर्गिक स्वभाव भी अन्य सामान्य बालको से भिन्न था। पूज्य गुरुदेव के जीवन मे, बचपन के प्रारम्भ से ही एक होनहार बालक के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे थे। और वैसे तो यह जगत् प्रसिद्ध बात है, कि महानता के उन्नति शील मार्ग की ओर अग्रसर होने वाले पुण्यशील महापुरुषो का बचपन भी, सामान्य बालको की अपेक्षा अनेकानेक प्रकार की सद् विशेषताओ से परिपूर्ण हुआ ही करता है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का मधुर बचपन भी इसी लक्षण का जीता जागता उत्कृष्ट उदाहरण था। आप का

मधुर बचपन भी अपने आप मे अनेकानेक महत्वपूर्ण विशेषताएँ रखता था। आप पूर्व जन्म के सुसस्कार साथ लेकर आये थे। तभी तो जीवन के प्रारम्भ से ही धार्मिक संस्कारो के प्रति आप का अधिक आकर्षण था, अधिक झुकाव था।

—माता पिता की आज्ञा-पालन करना, बाल सुलभ हठ एव उद्दण्डता का अभाव, किसी से भी खटपट न करने का स्वभाव, आप को अन्य बालको की श्रेणी से अलग रखे हुए था। एकान्त प्रियता, नम्रता, मित भाषण, गम्भीरता तथा सौजन्य आदि महापुरुषोचित सद्गुणो का सद्भाव, पूज्य गुरुदेव के बाल जीवन की अमूल्य निधि था। ज्यो-ज्यो आप शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की कलाओं की तरह दिन प्रति दिन वृद्धि पाने लगे, त्यो-त्यो आप की वाणी मे मधुरता एवं विचार प्रवीणता का अधिकाधिक सौष्ठव दिखाई देने लगा तथा कर्म मे दूसरे की सेवा, दुखियों के दु ख दूर करने की चेष्टा का भाव झलकने लगा। विवेक पूर्ण रहन-सहन, संयत एव मधुर भाषण, विद्या एवं सत्कर्म के प्रति अभिरुचि तथा साधुजन सत्सग की लालसा ने, आपके सुखद, सुन्दर और महान् भविष्य का निर्माण करना प्रारम्भ कर दिया। क्षत्रिय कुलोत्पन्न होने के कारण क्षत्रियत्व, तथा वीरत्व भाव तो आपकी नस-नस मे, रग-रग मे ही भरे हुये थे। परन्तु इन वीरत्व भावनाओ का प्रयोग किसी को कष्ट या दु.ख पहुँचाने मे नही बल्कि दूसरे की रक्षा एव दु.ख मोचन के लिये ही होता था।

—माता-पिता अपने लाल की सौम्य मुद्रा और शान्त स्वभाव को देख-देख कर परम प्रसन्नता का अनुभव किया करते थे। आपके सद्गुणो एवं सुसंस्कारित कार्यो को देख-देख कर माता-पिता एक सुखद-सुन्दर भविष्य की कल्पना मे डूब जाते थे। माता-पिता को यह अनुभव तो हो ही चुका था कि यह सस्कारी बालक हमारे कुल का दीपक बनेगा, हमारे नाम को रोशन करने वाला होगा। लेकिन पूज्य गुरुदेव तो केवल परिवार मात्र के ही नही अपितु

समस्त जैन समाज के, भारत वर्ष के, एक समुज्ज्वल सूर्य निकले। जिन्होंने अपने सद्गुणो और आदर्श सयम-साधना से, सारे संसार को चमत्कृत कर दिया, आलोकित और प्रकाशित कर दिया। अधिक क्या? श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का विशेषताओ से परिपूर्ण मधुर बचपन ही उनके आत्मसाधनामय महान् जीवन का पूर्व सकेत था।

❀ वैराग्य भावना

—श्रद्धेय पूज्यपाद गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज के निर्मल मानस मे, वैराग्य भावना का समुद्र बचपन से ही हिलोरें लिया करता था। साधु-सत्सग ने पूज्य गुरुदेव की इन वैराग्यमयी भावनाओ मे और अधिक वृद्धि की। फलत. आपका वैराग्य दिनों-दिन बढने लगा। सयम-साधना एव आध्यात्मिक जीवन अपनाने की अदम्य प्रेरणा, आपका पवित्र हृदय आपको देने लगा। यह सद् इच्छा जब अपनी चरमावस्था पर पहुँच गयी, तो एक दिन आपने माता-पिता के समक्ष अपना यह सत्सकल्प रखा। छोटे से, केवल नौ वर्ष के बालक के मुख से त्याग और वैराग्य भरी बाते सुन कर, और अपने पुत्र का सत्सकल्प जान कर माता-पिता चकित रह गए। आश्चर्य चकित हो, वे पूछने लगे—पुत्र! ये सब बाते तुमने कहाँ से सीखी? माता-पिता का प्रश्न सुन कर, बालक श्यामलाल जी ने अपनी विनयावनत मधुर वाणी मे कहा—पिता जी! यह सब आपकी कृपा और सन्त सत्सग का प्रभाव है। अब तो मैंने दृढ़ निश्चय सा ही कर लिया है कि जिस प्रकार पूर्व महापुरुषो ने अपनी शैशवावस्था से ही आत्म-साधना प्रारम्भ करके लक्ष्य-सिद्धि प्राप्त कर ली थी, उसी प्रकार मुझे भी प्राप्त करनी है।

—बालक की यह दृढ निश्चयी वाणी सुन कर माता-पिता ने कहा—बेटा! इतनी छोटी सी उम्र मे भी भला कोई साधु सन्यासी बन कर, घर-बार त्याग कर निकल जाया करता है? ...

तो तुम्हारे खेलने और खाने के दिन हैं। अतः खेलो, खाओ और मौज करो। यह बात सुन कर बालक श्यामलाल जी ने मुस्करा कर कहा—पिताजी! यह आपने भली कही! मुझे साधु-सत्संग से लालूम हो चुका है कि अनेक-अनेक महापुरुष, अपने जीवन की प्रारम्भिक अवस्था मे ही घर-बार छोड़ कर, साधू-सन्यासी बन गये थे, और उन्होने छोटी सी अवस्था से ही अपना जीवन जप-तप मे लगा दिया था। आपने भी तो सुन रखा है, बतलाइए भक्त ध्रुव ने किस उम्र मे कठिन तपस्या करके भगवान् को प्रसन्न किया था? भक्त प्रहलाद को किस उम्र मे भगवद्दर्शन हुए थे? शकराचार्य कितनी उम्र मे सन्यासी बन कर निकल पडे थे? महर्षि दयानन्द की क्या उम्र थी, जब उन्होने घर-बार छोडा था? बतलाइये-बतलाइये पिता जी! चुप क्यो हो गए आप? क्या ये सब महापुरुष अपने जीवन की प्रारम्भिक अवस्था मे ही, कठोर साधना मार्ग पर नही चल पडे थे? क्या उन्होने छोटी सी शैशवावस्था मे ही लक्ष्य सिद्धि प्राप्त करने का प्रयत्न नही किया था? बस उन्ही महान् पुरुषों के चरण-चिन्हो पर चलने का दृढ़ निश्चय मेरा है। अब तो आप अपने इस पुत्र को सहर्ष आज्ञा प्रदान कीजिए, जिससे यह अपने कर्तव्य-मार्ग मे आगे बढ़ सके। अपने पुत्र की ऐसी अद्भुत ज्ञान एव वैराग्य पूर्ण बाते सुन कर माता-पिता दाँतो तले अँगुली दबा गए। बालक श्यामलाल जी की तर्क पूर्ण युक्तियो का वे क्या उत्तर देते? अतएव पुत्र की उत्कट अभिलाषा जान कर उन्होने उसे आध्यात्मिक साधनामय जीवन व्यतीत करने की अनुमति प्रदान कर दी। अब तो बालक श्यामलाल जी के हर्ष का पार न रहा, क्योकि उनके मन की मुरादें जो पूरी हो गईं। वे माता-पिता को बार-बार प्रणाम कर, अपना आभार एव हर्ष व्यक्त करने लगे। माता-पिता की अनुज्ञा प्राप्त कर, अब बालक श्यामलाल आत्म-साधना-मार्ग को अपनाने की तैयारी करने लगे। माता-पिता की ओर से निश्चिंत हो जाने पर, अब आप ने सच्चे सद्गुरु की खोज प्रारम्भ कर दी, साधु-सत्संग की मात्रा और अधिक बढ़ा दी।

❀ गुरु चरणों में

—अब बालक श्यामलाल जी सच्चे सद्गुरु की खोज मे थे।

'जिन खोजा, तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ' अर्थात् जिसने जरा गहराई से अन्वेषण किया उसे उसका प्राप्तव्य अवश्य ही मिल गया इस कहावत के अनुसार, आपने भी खोजते-खोजते एक दिन सच्चे सद्गुरु को खोज ही लिया। बालक श्यामलाल जी सद्गुरु की तलाश मे घर-बार छोड़ कर निकल पडे, और ढूँढते-ढूँढते, फाल्गुण मास, विक्रम सम्वत् १६५६ मे, एलम ग्राम जिला मुजफ्फर नगर (उत्तर-प्रदेश) मे जा पहुँचे। इन्ही दिनो वहाँ पर, श्वेताम्बर स्थानक वासी जैन समाज के धुरन्धर विद्वान्, शास्त्रो के मर्मज्ञ, पण्डितरत्न, चारित्र-चूड़ामणि, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज, अपनी शिष्य मण्डली सहित विराजमान थे। आप उस समय के विद्वद्रत्न मुनिराजो मे अग्रणी समझे जाते थे। आस-पास क्या? दूर-दूर क्या? सर्वत्र आप के पाण्डित्य की, जप-तप की, और उत्कृष्ट-चारित्र की धाक थी।

—साधु सत्संग के इच्छुक, बालक श्यामलाल जी ने आपका नाम सुना, प्रसिद्धी सुनी, तो झट गुरुदेव के चरणो मे जा पहुँचे। गुरु सेवा मे पहुँच कर आप ने सत्संग का लाभ लिया, उन की पवित्र वाणी का श्रवण किया, उन की सयम एव आध्यात्मिक-साधना पर दृष्टिपात् किया। बस फिर क्या था, पूज्य गुरुदेव का जादू सा प्रभाव आप पर पडा। पूज्य गुरुदेव की मधुर एवं ओजस्वी वाणी तथा उत्कट सयम-साधना की प्रभावशाली छाप, आपके सरल मानस पर पडी और वही अमिट रूप से स्थिर हो गई। जिस सद्गुरु की खोज मे आप घर-बार छोड़ कर निकले थे वह खोज, पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराजजी महाराज को पाकर परिपूर्ण हो गई। बालक श्यामलाल के ऊपर पूज्य गुरुदेव का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह उन्ही के हो गए। भला सच्चे गुरु को प्राप्त करके भी ऐसा कौन है, जो इधर-उधर

भटके ? आध्यात्मिक तत्त्ववेत्ता भक्त हृदय सन्त मानतु ग जी के शब्दो मे—

पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिन्धो .,
क्षार जलं जलनिधेरसितु ं क इच्छेत् ?

अर्थात्—चन्द्र किरणो के समान उज्ज्वल अति निर्मल क्षीरसागर का मधुर पयपान करने के पश्चात् लवण समुद्र का खारा जल, भला कौन पीना चाहेगा ? कोई भी तो नही।

—इसी प्रकार बालक श्यामलाल जी भी, सच्चे सद्‌गुरु की शरण प्राप्त कर लेने के पश्चात् भला इधर-उधर क्यों भटकते ? वे अब पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज की पवित्र सेवा मे ही रहने लगे। ज्यो-ज्यो बालक श्यामलाल जी, पूज्य गुरुदेव के आचार समन्वित विचार और विचार समन्वित आचार को निकट से देखते गए, परखते गए, त्यो-त्यों उनके हृदय मे, पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धा और विश्वास और अधिक दृढ से दृढतर होते गए। वैराग्य भावना से पगे हुए बालक श्यामलाल जी अब श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के चरण-चञ्चरीक बन कर निवास करने लगे। पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज ने भी योग्य जान कर, उनको अपने पास मे रखा और धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का धीरे-धीरे अभ्यास कराने लगे। इस प्रकार मात्र नौ वर्ष की छोटी सी आयु मे ही आपने घर-बार छोड़ कर तथा पूज्य गुरुदेव की पवित्र सेवा मे रह कर ज्ञान-साधना एवं अध्यात्म-साधना प्रारम्भ कर दी। ज्ञानाभ्यास, विद्याध्ययन, एवं सद्‌गुरु सेवा अब आप की दिन चर्या के महत्त्वपूर्ण अंग थे।

❀ अध्ययन एवं चिन्तन

—बालक श्यामलाल जी का अब अधिकाश समय, अध्ययन चिन्तन एवं मनन मे व्यतीत होने लगा। अपनी बुद्धि और प्रयत्न के अनुसार आप विद्याध्ययन और सयम-साधना का अभ्यास

करने मे तल्लीन हो गए। पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज ने आपको खूब जाँचा, अच्छी तरह परखा। दो चार महीने ही नही अपितु निरन्तर सात-सात वर्षों तक, ज्ञान का अभ्यास कराते हुए, तथा साधु चर्या का अपने क्रिया-कलापो से प्रत्यक्ष परिचय कराते हुए, पूज्य गुरुदेव ने आपको इस योग्य बनाया कि आप एक सच्चे आत्म-साधक बन सके। समय-समय पर बालक श्यामलाल जी पूज्य गुरुदेव से साग्रह निवेदन, सन्यास मार्ग में दीक्षित करने के लिए करते रहते थे। परन्तु पूज्य गुरुदेव का यही उत्तर रहता था—वत्स। अभी अपने को और माजो, और निखारो, ज्ञान के प्रकाश से अभी अपने को और चमकाओ। पूर्णतया योग्य बनने के पश्चात् ही इस मार्ग को ग्रहण करने मे आनन्द है। इस प्रकार सात वर्ष के लगभग, विद्याध्ययन एव ज्ञानाभ्यास मे निकल जाने के पश्चात् युवक श्यामलाल जी ने फिर पूज्य गुरुदेव से आग्रह किया कि मुझे आत्म-साधना के मार्ग मे दीक्षित करने की अनुकम्पा करे।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने इन्हे फिर जाँचते हुए कहा—वत्स! सयम और साधना-मार्ग सरल नही है। यह तो अत्यन्त दुर्गम पथ है, जिस पर बहुत ही सभल-सभल कर चलना होता है। सयम तो मोम के दांतो से लोहे के चने चबाना है। यह तलवार की धार पर चलने जैसा असिधारा व्रत है। इस साधना मे तो अपने आप को तिल-तिल कर जलाते हुए, आत्म भोग देना पडता है। संसार के आकर्षणो से दूर रह कर ही, इस साधना के मार्ग मे आगे बढना होता है। यह तो सर्वस्व समर्पण का सौदा है। इस लिए तुम, अपने, आप को जांचो, परखो और तोलो कि इस, कठिनतम जलते हुए महामार्ग पर कदम आगे की ओर बढा सकते हो अथवा नही? यदि संसार की मधुवासना की, धूमिल सी भी रेखा तुम्हारे मानस में शेष हो, तो तुम सहर्ष लौट सकते हो। तुम्हारे लिए वापसी का मार्ग अभी तक भी खुला है। किन्तु सयम-मार्ग मे कदम रखने के पश्चात्, फिर तो निरन्तर, आगे ही बढना होगा

तो क्या ? फिर तो पीछे की ओर मुड़ कर भी नहीं देखना है। यह एकाध दिन का नही, जीवन भर का प्रश्न है। इस लिए अच्छी तरह सोच लो, भली प्रकार विचार लो। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की यह बात सुन कर युवक श्यामलाल जी ने, दृढ़ निश्चय के स्वर मे कहा—पूज्य गुरुदेव ! आपका फरमाना सही है। जब तक साधक के मन से, वासनाओ का, ससार के आकर्षणो का रौद्र विष नही निकल जाता, तब तक उसकी साधना, और उसकी साधुता सफल ही नहो गिनी जा सकती। मैने तो गुरुदेव ! भलि भाँति सोच लिया है, अच्छी तरह से विचार लिया है, और अपना कर्तव्य मार्ग निश्चित कर लिया है। मुझे तो अब बिना किसी विकल्प के संयम-साधना की ओर ही बढना है। अब तो केवल आप श्री जी के अनुग्रह की ही अपेक्षा है। कृपा करे, मेरे सत् संकल्पो को, मेरे दृढ़ निश्चय को; आत्म-साधना के महामार्ग मे दीक्षित कर, पूर्ण करे। पूज्य गुरुदेव अब तो यही प्रार्थना है कि आप मुझे, एक संयम-साधक लघु शिष्य के रूप मे स्वीकार करे। युवक श्यामलाल जी के इस दृढ निश्चय को सुन कर, तथा उन्हें सभी प्रकार से योग्य जान कर पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज ने, अब उनको सन्यास मार्ग मे शीघ्र ही दीक्षित करने का सत्संकल्प कर लिया।

❀ संयम-साधना के पथ पर

—इधर-उधर पैदल भ्रमण करते हुए तथा जनता मे धर्म-प्रचार करते हुए, पूज्य गुरुदेव अपनी शिष्य मण्डली सहित ढिढाली ग्राम मे पहुँचे। पूज्य गुरुदेव के वहाँ विराजने से जनता में धर्म-चर्चा और अध्यात्म-साधना के ठाठ लग गए। सत्संगी जिज्ञासु भक्त वृन्द से, पूज्य गुरुदेव का धर्म दरबार हरा-भरा और चहल-पहल से परिपूर्ण रहने लगा। वहाँ के श्रावक वर्ग ने वैरागी श्यामलाल जी की वैराग्य भावना, धर्मनिष्ठा एवं ज्ञानाभ्यास की योग्यता आदि को देखते हुए, पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज से सादर साग्रह

प्रार्थना की कि गुरुदेव ! अब तो इन वैरागी जी को दीक्षित करने की कृपा करनी चाहिए। और दीक्षा उत्सव के सौभाग्य का शुभावसर हमे ही प्रदान करने की कृपा करें। श्रीसघ के अत्यन्त आग्रह पर, पूज्य गुरुदेव ने दीक्षा की स्वीकृति देकर, दीक्षा-तिथि की घोषणा कर दी। अब क्या था ? सर्वत्र प्रसन्नता और खुशियाँ छा गई घर-घर मे मंगलाचार होने लगा। दीक्षा उत्सव मनाने की बड़ी हं धूम धाम से तैयारियाँ होने लगी। अब तो वैरागी श्यामलाल जं के हर्ष का भी पार न था। क्योकि वर्षो से चिर सचित आप का अमर साध अब शीघ्र ही, पूरी जो होने जा रही थी। प्रसन्नता एव हँसी खुशी के वातावरण मे, अब दीक्षा तिथि का वह शुभ दिन भी आ पहुँचा, जिस दिन वैरागी श्यामलाल जी को गृहस्थ जीवन से ऊपर उठ कर सन्यास धर्म अगीकार करना था।

—प्रातः काल से ही सारे ग्राम भर मे चहल-पहल थी। दीक्षा का समाचार सुन कर आस-पास के ग्रामो से तथा दूर-दूर से भी श्रद्धालु जन आ रहे थे। वैरागी श्यामलाल जी को विशिष्ट स्नानादि से निवृत्त करा कर, श्री सघ एवं ग्राम निवासियो ने बड़ी धूम-धाम से आपकी दीक्षा सवारी का जलूस निकाला। ग्राम की गलियों से होता हुआ जलूस, आपके जय-जयकारो के नाद से गगन-मण्डल गु जाता हुआ पुरुष वर्ग, तथा मगल गीत गाता हुआ नारि-समूह, दीक्षा स्थान पर पहुँचा। वहाँ पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज अपनी शिष्य मण्डली सहित पहले ही जा कर विराजमान हो चुके थे। फलत वैरागी का जलूस उनकी सेवा मे पहुँचा, वन्दन-नमस्कार के पश्चात् वैरागी श्यामलालजी ने, पूज्य गुरुदेव की आज्ञा ली और जन समूह को दर्शन देते हुए, एकान्त स्थान मे जाकर गृहस्थ-वेश का परित्याग करके साधु-वेश पहिना और पुन. गुरु सेवा मे जा पहुँचे। अपार जनमेदिनी कृत, जय-जय कार ध्वनि के साथ आपने पूज्य गुरुदेव से साधु धर्म मे दीक्षित करने की प्रार्थना की। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने श्री सघ की आज्ञा से ज्येष्ठ शुक्ला पचमी

मंगलवार, विक्रम सम्वत् १९६३ के शुभ दिन, शास्त्रोक्त पद्धति से धृत साधुवेश, वैरागी श्यामलालजी को दीक्षा का पाठ पढा कर अणगार धर्म मे दीक्षित कर लिया। वैरागी श्यामलाल जी, अब मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज कहलाने लगे। जिस यौवन के प्रारम्भ मे, सामान्य मानव के मानस में भाँति-भाँति की कामनाओ, अभिलाषाओ एवं ससार की मधु वासनाओ के सुखद स्वप्नो का निर्माण हुआ करता है, उसी यौवन के प्रारम्भ मे ही, पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल-जी महाराज के हृदय मे सत्संकल्प एव आत्म-साधना के सुखद स्वप्नो का निर्माण होने लगा। जिस अवस्था मे मानव ससार क्षेत्र मे कदम बढ़ाने को उत्सुक रहता है, उसी अवस्था मे आप के मुस्तैदी कदम कठोर आत्म-साधना तथा उत्कट सयम के महामार्ग पर दृढ़ता के साथ बढ चले। दीक्षा लेने के पश्चात् आप शास्त्र अध्ययन और आत्म-साधना मे सलग्न हो गए। एकाग्रता और पूर्ण निष्ठा के साथ संयम का पालन करने लगे।

❀ विघ्न और बाधाओं के झंझावात

—नीतकार कहते है—जिस प्रकार निघर्षण, छेदन, ताप और ताड़न के द्वारा सुवर्ण को ही परखा जाता है, पीतल को नही, उसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र मे, विभिन्न प्रकार की परीक्षाओ मे से महापुरुष ही गुजरा करते हैं, सामान्य जन नहीं। जिस प्रकार सुवर्ण अग्नि मे पड़ कर, तप कर, मजता, निखरता, और चमकता ही है; उसी प्रकार महापुरुष भी, विघ्न और बाधाओं की अग्नि मे पड़ कर, तप कर, मजा, निखरा और चमका ही करते है। जिस प्रकार सागर की प्रचण्ड लहरे, अडिग प्रस्तर चट्टान का कुछ भी नही विगाड़ पाती, बल्कि वे स्वय ही उस से टकरा कर, निराश और हताश हो, लौट जाया करती हैं, इसी प्रकार विघ्न-बाधाओ की प्रचण्ड लहरे, आत्म-साधक अडिग महापुरुषो का भी कुछ नही बिगाड़ पाती; बल्कि विघ्न और बाधाएं स्वय परास्त होकर लौट जाया करती हैं। प्रबल तूफान और झंझावात छोटे-मोटे पेड-पौधो को तो उखाड़ सकते

हैं, परन्तु अडोल पर्वत-शिखर पर उसका क्या असर पड़ने वाला है ? अर्थात् कुछ भी तो नही। इसी प्रकार सयम साधना के क्षेत्र मे, आने वाले तूफान, झझावात सामान्य दुर्बल साधको को बेशक उखाड़ सकें, परन्तु पर्वत-शिखर समान अडोल आध्यात्मिक महापुरुषो ‹ उसका तनिक भी प्रभाव नही पड़ता।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज, के सन्मुख भी सयम-साधना का मार्ग अपनाते ही, विघ्न और बाधाओ विपत्तियो और कष्टो की प्रवल आँधियाँ आईं, प्रचण्ड लहरे, उन टकराई परन्तु, वे उनका कुछ भी नही विगाड़ सकी। भयक तूफान और झझावात आए, परन्तु वे उस वीर योद्धा, आध्यात्मि महापुरुष को कर्तव्य-पथ से जरा भी विचलित नही कर सके, थोड़ भी इधर-उधर नही कर सके। वे तो सीना ताने उन आँधियो औ लहरो से टक्कर लेते, तूफानो और झझावातो से लड़ते, अप साधना मार्ग मे अडोल रहे, अकम्प रहे, और एक वीर सैनानी क भाँति डटे रहे। प्रवल सघर्षो से मुकावला कर, उन्हे परास्त क देना, आपके वाएं हाथ का खेल था। पूज्य गुरुदेव, बिना झिझवे विना ठिठके, विना जरा भी रुके, अपने कर्तव्य-मार्ग पर आगे—निरन्त आगे, सतत वढ़ते ही रहे। कष्टो की उन्होने जरा भी परवाह की। दु खों को उन्होने सहर्ष झेला। आपत्तियो के कठोर प्रहा को वे हँसते-हँसते सह गए। आप ने अपने कर्तव्य पर, अपने ध पर जरा भी आँच न आने दी। वाह रे, दिव्य पुरुष। धन्य है ते साहस को और धन्य है तेरी कर्तव्य परायणता को।

—दीक्षा लिए अभी आप को, केवल कुछ मास ही हुए थे कि आप के पूज्य गुरुदेव, श्रद्धेय श्री ऋषिराज जी महाराज व स्वर्गवास हो गया। पूज्य गुरुदेव की छत्र छाया आप के शिर हमेशा-हमेशा के लिए उठ गई। पूज्य गुरुदेव के इस आकस्मिक वियो से आपके अध्ययन को तो काफी क्षति पहुँची; परन्तु आप धैर्य ए

साहस के साथ इस दु.ख को बर्दाश्त कर गए। पूज्य गुरुदेव के पावन सन्देशो एव पवित्र स्मृतियो का अवलम्ब ले, अपने ज्येष्ठ गुरुभ्राता पण्डित प्रवर श्री प्यारेलाल जी महाराज की सेवा में रह कर आप अपने आत्म साधना-मार्ग मे बढते ही गए। परन्तु खेद है कि विपत्तियो ने फिर भी आप का पीछा नही छोड़ा। कुछ वर्षो के पश्चात् ज्येष्ठ गुरु भ्राता श्री प्यारेलाल जी महाराज का भी, करनाल शहर मे, मात्र २२-२३ वर्ष की ही अवस्था मे स्वर्गवास हो गया। गुरु भ्राता का ममतामय वरद हस्त भी आप के शिर से उठ गया। इस अनभ्र बज्रपात से, कुछ समय के लिए तो आप किं कर्तव्य हो उठे, परन्तु शीघ्र ही संभल गए। जिन्होने साहस एव धैर्य को ही अपना सहचर बना लिया हो, फिर भला उन पर कष्ट या संकट क्या प्रहार कर सकेंगे? उन के वे सब आक्रमण निष्फल और व्यर्थ ही जाँएगे। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव भी इस दारुण चोट को धैर्य एवं साहस के साथ सह गए। अब आप अपने ज्येष्ठ गुरुभ्राता के शिष्य के साथ रह कर, अपनी सयम-साधना करने लगे। आप के प्रबलतम साहस और धैर्य को देख कर जनता चकित हो, आप का जय-जयकार करने लगी।

❀ विचरण और धर्म प्रचार

—जैन साधु का जीवन एक घुमक्कड़ का जीवन होता है, आज यहाँ तो कल वहाँ।—'बहता पानी और रमता जोगी'—कहावत के अनुसार सन्त रमतेराम होते ही हैं। फिर जैन सन्त के लिए तो केवल चार महीने चातुर्मास, वर्षाकाल के अतिरिक्त शेष आठ महीने लगातार ग्रामानुग्राम विचरने का ही स्पष्ट विधान है। इस से सन्त जीवन भी पवित्र और निर्बन्ध रहता है तथा स्थान-स्थान पर धर्म प्रचार भी हो जाता है। सन्त अपने आप मे एक जीता-जागता, चलता-फिरता नैतिक विद्यालय ही होता है। वह अपने आदर्श सयमी जीवन एवं पवित्र ओजस्वी उपदेशो के द्वारा, जन-जीवन का

भव्य निर्माण करता चलता है। जीवन के महान् आदर्श की ओर बढने की सतत प्रेरणा करते हुए, जन-जागरण, जन-उत्थान एव जन-कल्याण मे अपना महत्वपूर्ण योग देता चलता है। सच्चे सन्त का जीवन, पतित पावनी गगा के समान होता है, जो जिस ओर वह निकलती है, उसी ओर गुलजार करती हुई चली जाती है, भूमि को शस्य श्यामला, पेड़-पौधो एव अन्नादि से समृद्धिशाली बनाती हुई चली जाती है। सच्चे सन्त के विषय मे यह लोकोक्ति तो प्रसिद्ध ही है—'जहँ-जहँ चरण पडें सन्तन के, तँह-तँह मगलाचार करें'—सन्त का स्वय का जीवन मगलमय हुआ करता है, फिर उसके मगलमय जीवन एव मगलमय उपदेशों से सर्वत्र आनन्द एव मगल का वातावरण, भला क्यो न निर्माण होगा? अवश्य होगा।

—अस्तु पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज ने भी दीक्षा लेने के पश्चात् स्थान-स्थान मे परिभ्रमण कर जन-कल्याण और समाजोत्थान के सत्कार्य सम्पन्न किए। भगवान् महावीर के दिव्य शान्ति-सन्देश को घर-घर मे गु जाया। भारत के कोने-कोने मे सर्वत्र आप ने जैन धर्म की विजय पताका फहराई। क्या उत्तर प्रदेश? क्या दिल्ली? क्या हरियाणा? और क्या पञ्जाब? समस्त भारत आपके ओजस्वी प्रवचनो की ज्योति से जगमगा उठा, आपके सद्गुणों की सुगन्धि से महक उठा। सतत पाद विहार करते हुए आपने शिमला जैसे कठोर पर्वतीय प्रदेशो की दुर्गम यात्राएँ भी भर सर्दी और भर गर्मी दोनो ही ऋतुओ मे की हैं। जिस ओर कठिनाई और दुर्गमता के कारण दूसरे साधक जाने मे भी झिझकते थे, उसी ओर आप सहर्ष अपने मुस्तैदी कदम निर्भीकता एव निडरता के साथ आगे बढा देते थे। विघ्न और बाधाओ के तूफानो और झझावातो से खेलने मे, उनसे जूझ जाने मे तथा उन्हे परास्त कर दिखाने मे आपको एक प्रकार से सात्विक आनन्द की अनुभूति होती थी। अतएव आप कष्ट प्रद परिस्थितियों मे कूद जाने के लिये सदैव तैयार

इन्सान क्या ? मुसीबतो की ठोकरे न सह सके !
इन्सान क्या ? जो गर्दिशो के बीच खुश न रह सके !!

और आप वस्तुतः मुसीबतो के समूह मे, मुस्कराते हुए घुस जाते और उन्हे चीरते हुए, रौंदते हुए, एवं उन पर विजय प्राप्त करते हुए, मुस्कराते हुए ही उस पार पहुँच जाते। यह सब आप के आत्म-बल एवं उत्कट संयम-साधना का चमत्कार था।

—हा तो, पूज्य गुरुदेव ने लगातार महीनो तक ऐसे क्षेत्रो मे विचरण कर धर्म प्रचार किया है, जहाँ भोजन और पानी की समस्या ही बड़ी कठिनाई से हल हो पाती थी। फिर भी भगवान् महावीर के अडिग सैनानी, यह पूज्य गुरुदेव एक योद्धा की तरह, अपने मिशन को लिए, आगे—और आगे बढते ही रहे, बढते ही रहे। निरन्तर भ्रमण करते हुए आपने जन-चेतना को उद्‌बुद्ध किया, जन-मानस मे एक नव जागृति, एक नव स्फूर्ति का जीवनमन्त्र फूँका। जनता के मन एव मस्तिष्क को, अज्ञान के, मिथ्यात्व के, कुरूढ़ियो के तथा कुप्रथाओ के अन्धकार से परे हटा कर, ज्ञान के, सम्यक्त्व के, सत्य के और सयम के ज्योतित अनन्त प्रकाश मे ला खडा किया। स्थान-स्थान मे आपके द्वारा किए गये उपकार आज भी आपकी कीर्ति-गाथा का जीवन्त स्मारक बने हुए हैं और भविष्य मे भी युगो-युगो तक वे आप की गौरव गाथा को सुरक्षित एवं अक्षुण्ण रखेंगे। आप के ये स्मृति-मन्दिर कभी मिटने वाले नही हैं। ये तो हमेशा-हमेशा के लिए अजर अमर रहेगे।

❀ चातुर्मास तथा विशिष्ट घटनाएँ

—यह पहिले भी लिखा जा चुका है कि जैन श्रमण, कोई विशेष कारण न होने पर, केवल चार महीने वर्षाकाल में ही एक स्थान पर स्थिर रहता है, अन्यथा लगातार आठो महीने वह घूमता ही रहता है। उस का लक्ष्य ही आत्म-कल्याण एवं जन-

कल्याण करते हुए विचरण करना है। इसी नियम के अनुसार पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज ने भी अपने ५४ वर्ष के साधना काल मे ५४ चातुर्मास २६ विभिन्न स्थानो मे किए। जहाँ-जहाँ आपने चातुर्मास किए, वर्षाकाल व्यतीत किया ; वहाँ-वहाँ ही धर्म, सत्संग एव आत्म-साधना के ठाठ लग गए, जप-तप एव धर्म-साधना की झड़ियाँ लग गई और वह चातुर्मास वहाँ की जनता के लिए चिर-स्मरणीय वन गया। पूज्य गुरुदेव, एक आत्मलक्षी महात्मा थे, अतएव आप समाज की आत्मोन्नति की ओर सर्व प्रथम ध्यान देते थे, उन का प्रथम प्रयत्न सर्वत्र इस ओर ही होता था। धार्मिक क्रियाओ एव धार्मिक ज्ञान का अभ्यास जनता को कराना, आप की दिनचर्या का महत्वपूर्ण अग रहता था। इसी लिए जहाँ भी आप चातुर्मासार्थ विराजते, वहाँ की समाज के बच्चे-बच्चे के हृदय मे एक अपूर्व धर्म जागृति उत्पन्न हो जाया करती थी। आपके साधना-मय जीवन के चातुर्मास अपने आप मे एक विशिष्टता एव महत्ता रखते हैं और मानव-मानस को एक सद् प्रेरणा दे जाया करते है। इसी लिए विशिष्ट घटनाओ के साथ उनका यहाँ क्रमश सक्षिप्त वर्णन लिखा जाता है।

—विक्रम सम्वत् १९६३ ज्येष्ठ शुक्ला पचमी मंगलवार के शुभ दिन, ढिढाली ग्राम मे दीक्षा लेने के पश्चात्, पूज्य गुरुदेव एव ज्येष्ठ गुरु भ्राता की छत्र छाया मे आप ने अपना सम्वत् १९६३ विक्रम का पहला चातुर्मास-वडसतग्राम-जिला करनाल (पञ्जाब) मे किया। इस चातुर्मास मे आप ने टट कर शास्त्राभ्यास, विद्याध्ययन एव सद्गुरु सेवा का महान् लाभ लिया। शास्त्राभ्यास और गुरु सेवा मे आप को सलग्न देख कर जनता आप के सुखद एवं सुन्दर भविष्य की कल्पना किया करती थी। जनता की कल्पना कुछ अन्यथा नही थी, वह आगे चल कर अक्षरश सत्य निकली। पूज्य गुरुदेव वास्तव मे जैन धर्म का उद्योत करने वाले एक विशिष्ट एव श्रेष्ठ सन्त निकले।

—सम्वत् १९६४ का, आप का दूसरा चातुर्मास-झिझाणा-जिला मुजफ्फर नगर (उत्तर-प्रदेश) मे हुआ। इस चातुर्मास मे भी आपके शास्त्र अध्ययन एव सयम साधना-कार्य तो चलते ही रहे। किन्तु इसी चातुर्मास के अन्तिम दिनो मे, आप के पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज अस्वस्थ हो गए और उनकी वह अस्वस्थता प्रतिदिन बढ़ती ही गई। अनेक उपचार किए गए, परन्तु प्रतिफल कुछ न निकला। आप सब कुछ छोड़ कर गुरु सेवा मे तल्लीन हो गए। गुरुदेव की परिचर्या मे आप ने रात-दिन एक कर दिया। परन्तु काल से कौन किस को बचा सका है? श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव आप की निष्काम सेवा से परम प्रसन्न थे। अन्त मे पौष कृष्णा द्वितीया शनीश्चर वार के दिन सायंकाल ४ बजे, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज का स्वर्गवास हो गया। उस समय महासती श्री दुर्गा जी महाराज भी अपनी शिष्याओ के साथ वहाँ विराजमान थी। पूज्य गुरुदेव के स्वर्गवास से आप के हृदय पर चोट तो काफी गहरी लगी, परन्तु साहस और विवेक के बल पर आप यथा शीघ्र सँभल गए। उधर श्रद्धेया महासती जी ने भी, मुनि द्वय को धैर्य एवं सान्त्वना दिलाने मे महत्व पूर्ण योग दिया।

—सम्वत् १९६५ का, आप का तीसरा चातुर्मास एलम जिला मुजफ्फर नगर (उत्तर-प्रदेश) मे हुआ। इस चातुर्मास मे आप ने अपने ज्येष्ठ गुरुभ्राता की छत्र छाया मे रह कर शास्त्रो का अभ्यास किया। श्री प्यारेलाल जी महाराज, जो छोटी सी ही अवस्था मे काफी विद्वत्ता प्राप्त कर चुके थे, उनके ओजस्वी प्रवचनों से जनता मे अच्छी खासी धर्म जागृति रही। एलम ग्राम पर पूज्य गुरुदेव की विशेष कृपा दृष्टि रही है, फलतः आज भी यह पूरा का पूरा ग्राम, आप के प्रति श्रद्धा-भक्ति एव धर्मानुराग को हृदय मे संजोए हुए है।

—सम्वत्त १९६६ का चौथा चातुर्मास, आप का-मितलावली ग्राम-जिला मुजफ्फर नगर (उत्तर-प्रदेश) मे ठाणे ४ से हुआ। यहाँ पण्डित श्री भरता जी महाराज के सुशिष्य श्री जस्सीराम जी महाराज भी आपके साथ ही थे। यह चातुर्मास आप का आदर्श चातुर्मास था। सम्पूर्ण ग्राम निवासियो ने मिल कर चातुर्मास कराया था। फलत क्या जैन, क्या अजैन ? सभी ने इस चातुर्मास मे आपकी सेवा-भक्ति एव धर्म प्रवचनो से लाभ उठाया। इस चातुर्मास की एक महान् विशेषता यह थी कि यह सम्पूर्ण चातुर्मास आपने एक पीपल के वृक्ष के नीचे व्यतीत किया था। वृक्ष के नीचे आप के तख्त लग गए और दिन-रात वही से उपदेश-धारा प्रवाहित होने लगी। वर्षा आदि के समय आप, पास की ही एक दुकान के छप्पर मे चले जाते, अन्यथा—तरु तल वास—वाक्य को ही चरितार्थ करते रहे। सानन्द चातुर्मास समाप्त करके आप ने पञ्जाब की ओर विहार किया और सम्वत् १९६७ मे करनाल शहर पधारे। यहाँ ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी के दिन आप के ज्येष्ठ गुरुभ्राता, पण्डित श्री प्यारेलाल जी महाराज का भी मात्र २२-२३ वर्ष की तरुण वय मे ही स्वर्गवास हो गया। गुरुभ्राता का वरद हस्त भी आपके शिर से उठ गया। इस वज्र दु ख से आप का हृदय मर्माहत हो गया। किन्तु आप तो जीवन क्षेत्र के साहसी वीर सैनानी थे, अत जैसे-तैसे करके इस महान् कष्ट को भी साहस के साथ आप झेल गए और कर्तव्य-मार्ग मे निर्बाध गति से अग्रसर होते रहे।

—सम्वत् १९६७ का पाँचवा चातुर्मास, आप का-करनाल शहर- मे ही हुआ। चातुर्मास मे आप ने अपने मन को, शास्त्र स्वाध्याय, सदुपदेश और जनता को ज्ञानाभ्यास कराने मे लगाए रखा। आप के सद् प्रयत्नो से जनता मे अच्छी धर्म जागृति रही। चातुर्मास समाप्त होने पर आप यमुना पार र-प्रदेश में फिर जा पहुँचे और उसी ओर विचरते हुए जन-याण करते रहे।

—विनौली क्षेत्र के श्रावक सघ की अत्यन्त आग्रह भरी विनती को मान देकर आपने आगामी चातुर्मास की स्वीकृति उनको प्रदान कर दी। १९६८ का छट्ठी चातुर्मास आपने कस्बा -विनौली-जिला मेरठ मे किया। यहाँ के श्रावक गण ने आप की दिल खोल कर भक्ति की। आपके धर्म उपदेशामृत का आकण्ठ मधुर पान किया। आपके द्वारा प्रेरणा पाकर, धर्म-साधना के मार्ग पर चल कर, सभी ने यथाशक्ति अपनी-अपनी आत्मा को उन्नत एव विशुद्ध बनाने का प्रयत्न किया।

—सम्वत् १९६९ का सातवाँ चातुर्मास, तीन वर्षो के पश्चात आपने फिर एलम ग्राम मे किया। श्रावकवृन्द अपने धर्म गुरुओ का दर्शन कर हर्षित एवं प्रफुल्लित हो उठे। बड़ी ही श्रद्धा-भक्ति पूर्वक ग्राम निवासियो ने आप का चातुर्मास कराया और आप के मधुर उपदेशो से प्रेरणा प्राप्त की।

—छह वर्षो के पश्चात् आपने १९७० का अपना आठवाँ चातुर्मास फिर-बड़सत ग्राम-मे किया। जनता आपकी विकसित साधना को देख कर परम प्रसन्न हुई और आप की सेवा का लाभ ले, अपने आप को कृतार्थ करने लगी। पूज्य गुरुदेव ने भी अपने प्रवचनो और प्रयत्नो द्वारा, वीर-वाणी की वह सुधा-धारा बहाई कि जन वृन्द उसमे उन्मज्जन-निमज्जन कर, परम शान्ति और परम तृप्ति का अनुभव करने लगा।

—सम्वत् १९७१ का अगला नवमा चातुर्मास आपने यमुना किनारे स्थित कस्बा-छपरौली-जिला मेरठ मे किया। यहाँ भी आप के विराजने से खूब ही धर्म का उद्योत हुआ। जप-तप और आत्म साधना के जनता मे सफल प्रयोग होते रहे।

—सम्वत् १९७२ का दशवां चातुर्मास, आपका-बडौत शहर-जिला मेरठ में हुआ। यहाँ पर आपके सदुपदेशो से जैन सभा की स्थापना हुई और अनेक समाजोत्कर्ष के कार्य भी सानन्द सम्पन्न हुए। जप-तप धर्म-ध्यान की तो मानो बाढ़ सी ही आ गई।

—इससे अगला विक्रमाब्द १९७३ का ग्यारहवा चातुर्मास ४ वर्षों के पश्चात् फिर आप ने बिनौली किया। इस चातुर्मास मे आप फोडे की पीड़ा के कारण अधिकतर अस्वस्थ से ही रहे। फिर भी जनता मे आप की मधुर प्रेरणा से धर्म-ध्यान तथा जप-तप अच्छी सख्या मे हुआ। श्रावक वर्ग ने आपकी सेवा-भक्ति, चिकित्सा एव उपचार मे कोई कसर वाकी न उठा रखी।

—सम्वत् १९७४ का वारहवा चातुर्मास आपने सकारण फिर वड़ौत शहर मे किया। यहाँ पर श्रद्धेय तपस्वीराज श्री पूर्णचन्द्र जी महाराज विराजमान थे, उनकी अस्वस्थता की खबर पहुँचने पर, आपने यह चातुर्मास उनकी सेवा मे किया। चातुर्मास मे श्रद्धेय तपस्वी जी महाराज की सेवा का आप ने अच्छा लाभ लिया। सेवा-धर्म तो आप की रग-रग मे रमा हुआ था, जहाँ सेवा की आवश्यकता पडती, वही आप झट जा पहुँचते और सेवा-कार्य मे सहर्ष जुट जाते। चातुर्मास समाप्त होने पर श्रद्धेय तपस्वी जी महाराज भी कुछ-कुछ स्वस्थ हो चले थे, इसलिए आप उन्हे अपने साथ ही ले, उनकी सेवा करते हुए, आस-पास के क्षेत्रो मे विचरने लगे।

—दोघट श्रावक सघ के अत्यन्त आग्रह पर १९७५ का तेरहवा चातुर्मास आपने-दोघट-जिला मेरठ मे किया। इस चातुर्मास मे भी आप श्रद्धेय तपस्वी जी महाराज की सेवा तथा जन-कल्याण-कार्य मे सलग्न रहे। चातुर्मास के पश्चात् विचरते हुए आप फिर वडौत पहुँचे।

—श्रद्धेय तपस्वी जी महाराज के कहने से, उनकी चिकित्सा के लिए, भक्त वृन्द के अत्यन्त आग्रह से १९७६ का चातुर्मास फिर आपने सकारण वडौत किया। इस चातुर्मास मे श्रद्धेय तपस्वी जी महाराज की अस्वस्थता और अधिक वढ गई। आप ने अम्लान एवं अग्लान भाव से श्रद्धेय तपस्वी जी महाराज की दिन-रात अनन्य सेवा करते हुए, सेवा का एक श्रेष्ठ आदर्श प्रस्तुत किया। यह आपका चौदहवां चातुर्मास था।

—पन्द्रहवां १९७७ का चातुर्मास आपने-श्यामली-जिला मुजफ्फर नगर मे किया। इस चातुर्मास मे श्री सुखानन्द जी महाराज भी आपके साथ थे। चातुर्मास मे स्थानीय जनता को साधु-सत्सग एव आत्म-कल्याण का श्रेष्ठ संयोग मिला, जिसका लाभ यथाशक्ति सभी ने उठाया। चातुर्मास समाप्त करके पञ्जाब करनाल-काछ्वा की ओर कुछ दिन विचरने के पश्चात् आप फिर श्यामली पधारे। इसी समय वसन्त पंचमी के लगभग, आप के ज्येष्ठ शिष्य श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज ने आपके द्वारा वैराग्य प्राप्त किया और वे आप की ही पुनीत सेवा मे रहने लगे।

—सम्वत् १९७८ का सोलहवां चातुर्मास, १० वर्ष पश्चात् आपने फिर करनाल शहर मे किया। सत्रहवा चातुर्मास १९७९ का फिर -एलम ग्राम- में किया। अठारहवाँ १९८० का चातुर्मास आपने यमुना किनारे स्थित कस्वा -कुताना- जिला मेरठ मे किया। चातुर्मास के पश्चात् आप श्यामली पधारे और वही होली चौमासी की। यही पर आपके द्वितीय शिष्य श्री श्रीचन्द्र जी महाराज को वैराग्य प्राप्त हुआ और वे भी आपकी सेवा मे रहने लगे। ग्रामानुग्राम विचरते हुए आप -मितलावली ग्राम- पधारे। वहाँ के श्री सघ के अत्यन्त आग्रह से वैरागी श्री प्रेमचन्द्र जी को वैशाख शुक्ला पचमी सम्वत् १९८१ विक्रम के शुभ दिन आप ने बड़ी धूम-धाम के साथ साधु-धर्म में दीक्षित किया। इस शुभ अवसर पर शान्त मुद्रा श्रद्धेय श्री मोतीराम जी महाराज, पण्डित रत्न श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज, श्री अमरचन्द्र जी महाराज, तथा श्री लालचन्द जी महाराज और तपस्वी श्री जीतमल जी महाराज ने भी पधार कर दीक्षा उत्सव मे भाग लिया था। दीक्षा बडे ही समारोह पूर्वक हुई।

—सम्वत् १९८१ का उन्नीसवाँ चातुर्मास आप ने परासौली-जिला मुजफ्फर नगर में किया। यहाँ आप नवदीक्षित मुनि को शास्त्राभ्यास एवं जनता को ज्ञानाभ्यास कराते रहे। चातुर्मास में

घर्माराधन खूब हुआ। आपके इस चातुर्मास को, वहाँ के बूढे-बूढे श्रावक जन अब तक भी बड़ी श्रद्धा के साथ स्मरण किया करते है। १९८२ का चातुर्मास आप ने फिर -श्यामली- किया। यह आप का बीसवाँ चातुर्मास था। श्रद्धेय मोतीराम जी महाराज ने भी अपनी शिष्य मण्डली सहित, इस वर्ष का चातुर्मास आपके साथ ही -श्यामली- कया। इसी चातुर्मास से पूज्य गुरुदेव का मधुर सम्पर्क श्रद्धेय श्री तीराम जी महाराज से इतना दृढ हुआ कि वह आपके जीवन के न्तम क्षणो तक उसी रूप मे कायम रहा। चातुर्मास के पश्चात् ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए -बड़सत- पहुँचे। यहाँ के श्रावक के अत्यन्त आग्रह पर आपने आषाढ कृष्णा द्वितीया सम्वत् १९८३ विक्रम को अपने द्वितीय शिष्य वैरागी श्री श्री चन्द्र जी को मुनि दीक्षा दी। दीक्षा उत्सव की काफी दिनो तक चहल-पहल रही।

—तपश्चात् १९८३ का आप का इक्कीसवाँ चातुर्मास हुआ -काछुआ ग्राम- जिला करनाल मे। यहाँ आपने अपने दोनो शिष्यो को सस्कृत व्याकरण एव साहित्य का अध्ययन कराया। आपके प्रत्येक ही चातुर्मास मे धर्म-ध्यान, जप-तप तथा आत्मोत्थान के महत्वपूर्ण कार्य तो सम्पन्न होते ही रहे। अत उन्हे पुन पुनः लिख कर क्यो व्यर्थ मे पुस्तक का कलेवर बढाया जाय? १९८४ का बाईसवा चातुर्मास आपने -सगरूर- जीद स्टेट (पञ्जाब) मे किया। चातुर्मास मे ही श्रद्धेय श्री मोतीराम जी महाराज की आज्ञा आ जाने पर, चातुर्मास उठते ही आपने विहार कर दिया, अनेक ग्राम और नगरो से होते हुए आप नारनौल श्री मोतीराम जी महाराज की सेवा मे पहुँचे और वहाँ वैरागी श्री अमोलक चन्द्र जी की दीक्षा का कार्य सम्पन्न किया। तत्पश्चात् तेईसवाँ चातुर्मास १९८५ का आपने चरखी दादरी किया। यहाँ पर आपने लाला नरसिंह जी जैन उत्साही धर्म प्रेमी को ७० वर्ष की अवस्था मे भी निमग्न सूत्र कण्ठस्थ कराया। पूज्य गुरुदेव के रूप मे लगी हुई

यह ज्ञान की प्याऊ सर्वत्र ही, जिज्ञासुओ और पिपासुओ की धर्म-तृषा शान्त किया करती थी।

—जैन समाज भूषण सेठ ज्वाला प्रसाद जी के आग्रह से, तथा श्री मोतीराम जी महाराज की आज्ञा से १९८६ का चौबीसवां चातुर्मास आपने श्रद्धेय श्री मोतीराम जी महाराज के साथ ही -महेन्द्रगढ- (तत्कालीन पटियाला स्टेट) मे किया। पच्चीसवां १९८७ का चौमास आपका -हिसार- (पंजाब) मे नागौरी गेट की धर्मशाला में हुआ। श्रद्धेय श्री मोतीराम जी महाराज अपने शिष्य समुदाय सहित इस चातुर्मास मे भी आप के साथ ही थे। छब्बीसवा १९८८ के साल का चौमासा श्रद्धेय श्री मोतीराम जी की आज्ञा से, उन्ही की सेवा मे आपने पुन. -महेन्द्रगढ- मे सकारण किया। यही फाल्गुण कृष्णा पंचमी को आपने समस्त जैन संघ की सम्मति से श्री मोतीराम जी महाराज को, आचार्य पद वड़े ही समारोह पूर्वक प्रदान किया। १९८९ का सत्ताइसवां चातुर्मास आपने फिर उत्तर-प्रदेश पधार कर -एलम ग्राम- मे किया। अट्ठाइसवा चातुर्मास १९९० के साल का आचार्य श्री मोतीराम जी महाराज की सेवा मे -नारनौल- किया। उन्तीसवा अगला १९९१ का चातुर्मास भी आचार्य श्री जी की सेवा मे -महेन्द्रगढ- किया। १९९२ का चातुर्मास फिर -एलम ग्राम- किया। यह आपका तीसवां चातुर्मास था। इसी वर्ष यहाँ आप ने सर्वप्रथम नमोकार मन्त्र का अखण्ड जाप प्रारम्भ कराया, जो अब हजारो क्षेत्रो मे चालू हो गया है। इस धर्म दृष्टि के दाता भी आप ही हैं। यही पर आप के तृतीय शिष्य श्री हेमचन्द्र जी महाराज को वैराग्य प्राप्त हुआ।

—इकत्तीसवा चातुर्मास आपने फिर -महेन्द्रगढ़- किया। इस समय सम्वत १९९३ चल रहा था। चातुर्मास उठने पर आप नारनौल पधारे। श्रद्धेय आचार्य श्री मोतीराम जी महाराज

का स्वर्गवास हुए काफी समय गुजर गया था। इस लिए पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज ठाणे ६ एवं श्री मदनलाल जी महाराज ठाणे ५ के समक्ष पण्डितरत्न श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज को आचार्य पद, कविरत्न श्री अमर चन्द्र जी महाराज को उपाध्याय पद, और आप को गणावच्छेदक पद, समस्त जैन श्री संघ ने प्रदान किए। इसी पद महोत्सव के शुभावसर पर आपके तृतीय शिष्य वैरीगी श्री हेमचन्द्र जी को तथा श्री मदनलाल जी महाराज के शिष्य वैरागी श्री जग्गूमल जी को साधु पद भी बड़े ही समारोह पूर्वक दिये गए।

—सम्वत् १६६४ का बत्तीसवां चातुर्मास आपने -पाटौदी- (तत्कालीन स्टेट) मे किया। यहाँ आप की मधुर प्रेरणा से सम्वत्सरी महापर्व की आम छुट्टी की घोषणा हमेशा के लिए समस्त राज्य मे नवाव साहब की ओर से की गई। १६६५ का, तेतीसवां चातुर्मास -आगरा, लोहामण्डी- मे हुआ। आचार्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज भी अपनी शिष्य मण्डली सहित, साथ मे थे। इस प्रकार ठाणे ७ से आप, जिस समय आगरा पधारे उस समय जैन दिवाकर श्री चौथमल जी महाराज, तथा शतावधानी श्री रत्नचन्द्र जी महाराज भी अपनी-अपनी शिष्य मंडली सहित आगरा ही विराजमान थे। सन्त सम्मिलन की काफी दिनो चहल-पहल रही। इसी वर्ष श्रद्धेय शतावधानी श्री रत्नचन्द्र जी महाराज ने भी अपना चातुर्मास आपके साथ आगरा मे किया। धर्म-ध्यान एवं जप-तप का खूब ठाठ लगा रहा। इसी वर्ष मरुधर प्रान्तीय महासती श्री सौभाग्य-कुँवर जी महाराज का चातुर्मास भी आगरा मे ही था। इन मे से महासती श्री हेम कुँवर जी महाराज ने इसी चातुर्मास मे ७५ दिन का लम्बा तपश्चरण किया।

—चातुर्मास समाप्त होने पर तत्कालीन उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज के आग्रह पर आप पञ्जाब की ओर पधारे और १६६६ का चौंतीसवां चातुर्मास, श्रद्धेय आचार्य श्री पृथ्वीचन्द्र

जी महाराज के साथ -जगरावाँ- जिला लुधियाना (पञ्जाब) में किया। पैंतीसवाँ १९९७ का आपका चातुर्मास -अम्बाला शहर- (पञ्जाब) मे हुआ। इस चातुर्मास मे श्रद्धेय आचार्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज तो साथ थे ही, तत्कालीन उपाध्याय श्रद्धेय श्री आत्माराम जी महाराज के सुशिष्य पण्डित श्री हेमचन्द्र जी महाराज भी अपनी शिष्य मण्डली सहित आप के साथ विराजमान थे। यही पर आप के प्रथम प्रशिष्य श्री कस्तूरचन्द्र जी को वैराग्य सम्प्राप्ति हुई। चातुर्मास के पश्चात् १९९८ का छत्तीसवां चातुर्मास, आचार्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज, तथा तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज, श्री चन्दनमुनि जी के साथ ठाणे ११ से -फरीदकोट- (तत्कालीन स्टेट) पञ्जाब मे किया। चातुर्मास के पश्चात् आपने पञ्जाब के क्षेत्रो मे परिभ्रमण किया, फिरोजपुर, कसूर, लाहौर, अमृतसर, जंडियाला, कपूरथला, जालन्धर फगवाड़ा आदि होते हुए आप लुधियाना पधारे, वहाँ से तत्कालीन उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज, (जो वर्तमान मे श्रमण संघ के आचार्य हैं) को साथ लेते हुए, अनेक सन्त-मण्डली के साथ मालेरकोटला, धूरी होते हुए -संगरूर- पधारे। यहाँ पर माघ शुक्ला द्वितीया सम्वत् १९९८ को आपके प्रथम प्रशिष्य वैरागी श्री कस्तूरचन्द्र जी, श्री सुदर्शनलाल जी तथा श्री स्वरूपचन्द्र जी की मुनि दीक्षाएँ बड़ी धूम-धाम एवं समारोह पूर्वक हुईं। श्रद्धेय गणावच्छेदक श्री बनवारीलाल जी महाराज, श्रद्धेय उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज, श्रद्धेय श्री मदनलाल जी महाराज, तथा आचार्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज आदि सभी प्रमुख-प्रमुख मुनिराज अपनी-अपनी शिष्य मण्डली सहित ठाणे ३२ से विराजमान थे। संगरूर से जिनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला होते हुए आप ने पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज श्री खजानचन्द्र जी महाराज तथा तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज आदि अनेक मुनियों के साथ शिमला आदि पर्वतीय प्रदेश की दुर्गम यात्रा की।

—घूम घाम कर १९९९ का सैंतीसवा चातुर्मास आपने -काछुआ- जिला करनाल मे किया। इस से अगला अड़तीसवां सम्वत् २००० का चातुर्मास, आप का -कैथल- जिला करनाल मे हुआ। यहाँ आपके द्वितीय एव तृतीय प्रशिष्य युगल भ्राता श्री कीर्तिचन्द्र जी तथा श्री उमेशचन्द्र जी ने वैराग्य प्राप्त किया। २००१ का उन्तालीसवां चातुर्मास -करनाल शहर- मे हुआ। आप की सद्-प्रेरणा से यहाँ लगभग १७ हजार रुपए का दान हुआ। धर्म ध्यानार्थ श्री सघ ने इस द्रव्य से एक वहुत वडा मकान क्रय किया। इसी वर्ष यहाँ आपने श्री ऋषिराज जैन पुस्तकालय की स्थापना की। चातुर्मास के पश्चात् आप-नारनौल-पधारे। वहाँ पर माघ शुक्ला पचमी (वसन्त-पंचमी) सम्वत् २००१ के शुभ दिन आप के द्वितीय प्रशिष्य श्री कीर्तिचन्द्र जी की दीक्षा हुई। इसी अवसर पर श्रद्धेय व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज के पास भी चार अन्य वैरागियो ने मुनि धर्म अगीकार किया। आचार्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज, श्रद्धेय श्री मदनलाल जी महाराज, योगीराज श्री रामजीलाल जी महाराज, तपस्वीराज श्री निहालचन्द जी महाराज, अपनी-अपनी शिष्य मण्डली सहित इस शुभावसर पर विराजमान थे। नवदीक्षितों सहित ठाणे २६ उस समय नारनौल क्षेत्र को पावन कर रहे थे।

—तदनन्तर २००२ का चालीसवा चातुर्मास आपने -सफीदो मण्डी- (तत्कालीन रियासत जीद) मे किया। यहाँ पर भी आपके उपदेशों से प्रभावित होकर जनता ने १४-१५ हजार का दान दिया और धर्म स्थान के अभाव को पूर्ण किया। इकतालीसवां चातुर्मास आपने फिर आचार्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज के साथ -लोहामण्डी, आगरा- मे किया। उस समय सम्वत् २००३ चल रहा था। सम्वत् ४ का अगला चातुर्मास आपने उत्तर प्रदेश के -एलम ग्राम- में किया। यह आप का बयालीसवा चातुर्मास था। चातुर्मास के पश्चात् चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, वीर जयन्ती के शुभ दिन

-सराय लुहारा- जिला मेरठ मे आपके तृतीय प्रशिष्य श्री उमेशचन्द्र जी को दीक्षा बडे समारोह पूर्वक हुई। २००५ का तेतालीसवा चातुर्मास आपने -छपरौली- किया। चवालीसवा २००६ का वर्षावास आपने -रोहतक- शहर की जैन धर्म शाला मे व्यतीत किया। स्थानक मे यहाँ महासती श्री धनदेवी जी महाराज अपनी शिष्याओ के साथ विराजमान थी। इससे अगला पैतालीसवा ७ के साल का चातुर्मास आपने -हिसार- किया। यहाँ पर भी आप श्री जी की मधुर प्रेरणा से अनेक धार्मिक एव सामाजिक सत्कार्य सम्पन्न हुए।

❀ आगरा आगमन

—हिसार चातुर्मास मे ही, आगरा से श्रद्धेय पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज की आगरा आने की आज्ञा आ चुकी थी। फलत· चातुर्मास समाप्त होते ही आपने आगरा के लिए विहार कर दिया। हिसार से हाँसी, रोहतक, तथा दिल्ली आदि क्षेत्रो मे होते हुए आप वैशाख कृष्णा पचमी सम्वत् २००८ के दिन पूज्य श्री जी की सेवा मे आगरा पधार गए। तब से लेकर अपने जीवन के अन्तिम क्षणो तक आप पूज्य श्री जी की सेवा मे आगरा ही विराजमान रहे। सम्वत् २००८ से लेकर सम्वत् २०१६ तक, छयालीसवे चातुर्मास से लेकर ५४ वे चातुर्मास तक, ९ चातुर्मास आपने पूज्य श्री जी की सेवा मे ही, कभी लोहामण्डी आगरा तथा कभी मानपाड़ा आगरा मे किए। आप के आगरा विराजने से, आगरा जैन समाज मे अपूर्व धर्म जागृति रही। अनेकानेक धार्मिक कार्य सम्पन्न हुए, अनेकानेक समाजोत्थान के कार्य सम्पन्न हुए। अधिक क्या ? आप के विराजने से आगरा क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र की भाँति पावन गिना जाने लगा।

❀ अस्वस्थता

—इधर गत कुछ वर्षो से पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज का, वृद्धावस्था के कारण स्वास्थ्य कुछ-कुछ कमजोर हो चला था। आँखो मे मोतिया उतर आने के कारण आपको, काफी

परेशानी सी रहती थी। एक आंख का ऑपरेशन कराने पर भी कोई खास सफलता न मिल सकी। इतना होने पर भी आप शरीर की जर्जर गाडी को आत्म-बल एव अपूर्व साहस के साथ लक्ष्य की ओर खींचे जा रहे थे। शारीरिक अस्वस्थता होने पर भी मन आपका पूर्णतया स्वस्थ रहा। सयम-साधना एव आत्मोन्नति की क्रियाओं मे आपने कभी ढील नही की, कभी प्रमाद या आलस्य नही किया। दृष्टि मन्द पड़ जाने पर भी, आप के कण्ठस्थ किये हुए शास्त्रों की स्वाध्याय, जाप-सुमरण, एव आत्म चिन्तन आदि चलते ही रहते थे। माला हर समय आप के हाथ में रहती थी। आप की मुस्कराहट आप की प्रसन्नता एव आप की निश्छल हँसी, आप की सौम्य मुख-मुद्रा से कभी विलग नही हुई। वह तो स्वर्गारोहण के पश्चात् आपके निश्चेष्ट शरीर मे भी अन्त तक कायम रही।

—आप श्री जी चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को लोहामण्डी आगरा से श्रद्धेय कवि जी महाराज के साथ मानपाड़ा आगरा मे पधार गए थे। वैशाख कृष्णा चतुर्थी के दिन आप को उदर पीड़ा का अनुभव हुआ। यह आपकी उदर पीडा बढती ही गई। इस के साथ ही आप को पेचिश एव अतिसार की व्याधि ने भी आ घेरा। उपचार किए गए किन्तु प्रतिफल कुछ न निकला और अब तो आप को ज्वर और रहने लगा। तीन-तीन व्याधियो का एक साथ आक्रमण जवानों तक के हौंसले भी पस्त कर देता है, फिर आप तो शरीर से वृद्ध थे। इन व्याधियों के अचानक हमले से आपका जरा जर्जर शरीर हिल उठा। परन्तु जिस आध्यात्मिक वीर यो[illegible], जीवन के क्षेत्र में कभी हार मानी ही न हो, कभी साहस खो[illegible]ा न हो; जो सघर्षों एवं तूफानों से खेलना और उन पर वि[illegible] प्राप्त करना ही सीखा हो; भला क्या वह, इन नगण्य, तुच्छ व्याधियो के आगे घुटने टेक देगा? हार मान लेगा? कभी नहीं। यह तो कल्पना ही अन्यथा है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव हारने वाले, या घुटने टेक देने वाले मानव न थे। वे तो एक ऐसे महान आत्म-साधक थे, जिसने हमेशा आगे ही बढ़ना सीखा हो।

और लोगों मे प्राय प्रत्येक के विरूद्ध धीमी काना-फूसी चला करती है ! सामने नही तो आगे-पीछे, ऐसी वैसी विरुद्ध बात सुनने मे आ ही जाती है ; लेकिन आप से जो रूष्ट हो, अथवा आपके जो विरुद्ध हो, कम से कम ऐसा व्यक्ति हमे तो दृष्टिगोचर हुआ नही । और मिलता भी कहाँ से

जग में वैरी कोय नही, जो मन सीतल होय ।
या आपा को डारि दे, दया करे सब कोय ।।

जब कि आपने अपने अहं को ही समाप्त कर डाला था, जबकि आप सब की ही हित चिन्ता मे संलग्न रहते थे, फिर भला ऐसे शीतल स्वभावी, शान्त हृदय का विरोधी कौन हो सकता है ? कठोर से कठोर हृदय समझा जाने वाला व्यक्ति भी आप की प्रशसा ही करता हम ने पाया ।

—जिस का हृदय हमेशा सब के प्रेम मे ही सराबोर रहता हो, जिसकी प्रसन्नता; सब के उत्थान मे ही सन्निहित हो, भला उस का शत्रु ही कौन हो सकता है ? हृदय मन्दिर की वेदी के सिंहासन पर एक ही भाव अधिष्ठित हो सकता है, चाहे प्रेम, चाहे घृणा, चाहे मैत्री, चाहे शत्रुता । श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव शायर के शब्दो मे कहा करते थे—

करूँ मैं दुश्मनी किस से, नही दुश्मन कोई मेरा ।
मुहब्बत ने जगह बाकी नहीं छोड़ी अदावत की ।।

यही कारण था कि आपको सभी स्नेह और श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे । आप के प्रति सभी सद् भावना एवं अनुराग रखते थे । इसी लिए यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि आप वास्तव मे अजात शत्रु थे ।

❀ विष को अमृत बनाने की कला के मर्मज्ञ

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, विष से अमृत बनाने की कला के मर्मज्ञ थे । हलाहल कालकूट को, क्षण भर मे सुस्वादु पियूष बना डालना, आप के बाएँ हाथ का खेल था । जीवन मे, अवमानना

के, तिरस्कार के, अपमान के, कटुक से कटुक जहरीले घूँट आप को मिले, पर आप ने, अपनी सरलता से, सौम्यता से, उस मे प्रेम का मधुर अमृत उँडेल कर, उस की कड़वाहट दूर कर दी, उस का मारक विष-प्रभाव समाप्त कर डाला, और उसे अमृत मे परिवर्तित कर, हँसते-मुस्कराते सहर्ष पान कर गए। जीवन-साधना मे आप विष पायी सच्चे शिव थे। विष को पीना और पचा जाना, यह हर किसी का काम नही, हर एक के बस का सौदा नही। इस के पान के एक मात्र अधिकारी शिव सदृश आप जैसे महापुरुष ही हो सकते हैं। कवि की काव्यमयी परिभाषा मे यो समझ लीजिए—

मनुज दुग्ध से, दनुज रक्त से, देव सुधा से जीते है।
किन्तु हलाहल इस जगति का, शिव शकर ही पीते हैं॥

—वस्तुत आप सच्चे शिव शकर ही थे। विश्व-कल्याण के लिए, जन-उत्थान के लिए, दुःखों का, कष्टो का, अवमाननाओं-लांछनाओ का, हलाहल सहर्ष मुस्कराते हुए पी जाने, तथा उसे पचा जाने वाले आप ही थे। कहते हैं, ससार का विष वही पर अपना प्रभाव दिखाता है जहाँ विष पहले से ही विद्यमान हो। परन्तु पूज्य गुरुदेव का जीवन तो कठोर साधनाओ से गुजर कर पूर्णतया निर्विष हो चुका था। भला उस पर फिर मानापमान का क्या असर होना था? पूज्य गुरुदेव का जीवन तो अगाध शान्त समुद्र जैसा था, जिस पर कितनी ही विपत्तियो की बिजलियाँ क्यो न गिरी, वे उन का कुछ भी न बिगाड़ सकी बल्कि स्वय ही शान्त हो गई। पूज्य गुरुदेव का अमृतोपम जीवन, साधना-पथ के यात्रियो के लिए एक स्पृहा, एवं अनुकरण की वस्तु रहा है, एक प्रेरणा का मधुर स्रोत रहा है।

हमारा कर्तव्य

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के स्वर्गवास के पश्चात् अब तो हमारा यही कर्तव्य रह जाता है; कि श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने जो ज्ञान एवं आचरण की जलती हुई मशाल थमा गए हैं

प्रज्ज्वलित रखे, उसकी रोशनी कभी धूमिल न पड़ने दे, उस का प्रकाश कभी मन्द न होने दे, और उस का तेल कभी खत्म न होने दे। अपने ज्योतिर्मय जीवन एवं पावन-सन्देशों से, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव जो आदर्श हमारे सामने रख गए है, अब तो हमारा यही कर्तव्य है कि उस पर चल कर, उस का अनुकरण कर, उस महापुरुष के सच्चे सेवक कहलावे। जिस मिशन को लेकर जीवन के प्रारम्भिक काल मे ही उन्होंने अपने को उसके लिए उत्सर्ग एवं समर्पित कर दिया था। जिस मिशन को जीवन पर्यन्त उन्होने चलाया तथा आगे बढ़ाया, अब तो हमारा एक मात्र यही कर्तव्य है कि उस मिशन को आगे, और आगे बढाए चले, चलाए चले।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की पावन स्मृतियो को सुरक्षित रखने का अब तो यही सर्व श्रेष्ठ उपाय है कि उन्ही के पावन चरण-चिन्हो पर चला जाय। जीवन मे उन की सी साधना, उन के से सद्गुण अपनाए जाँय। ज्ञान का जो शीतल निर्झर श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव अपनी महान् आत्म साधना के द्वारा प्रवाहित कर गए हैं, उस मे निमज्जन-उन्मज्जन कर अपना जीवन पवित्र एव निर्मल बनाया जाय।

❀ सच्ची श्रद्धाञ्जलि

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव भले ही पार्थिव शरीर से हमारे समक्ष नही हैं। किन्तु उन की महान् आत्मा आज भी हमारी ही हित चिन्ता मे व्यस्त होगी। उन का महान् जीवन आज भी हमारा मार्ग-दर्शन कर रहा है। उनके पावन उपदेश आज भी हमे लक्ष्य की ओर बढने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

—कौन कहता है, पूज्य गुरुदेव नही रहे ? नही वे मरे नही। आज भी ज़िन्दा हैं, और हमेशा-हमेशा के लिए जिन्दा रहेगे। महापुरुष कभी मरा नही करते ; वे तो हमेशा जिन्दा रहा करते हैं एक उर्दू शायर के शब्दो मे—

हमेशा जिन्दा ओ जावीद है,
वह दहरे-फानी मे ।
मेहर वन कर अजव चमके,
जो अपनी जिन्दगानी मे ।।

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव भी अपने जीवन क्षेत्र मे सूर्य बन कर चमके ही थे। अत एव वे अजर हैं, अमर हैं, और हैं युगो-युगो तक के लिए कायम ।

—हम ऐसे महापुरुष की जीवन-ज्योति से यदि एक किरण भी ले सके, उन के पावन उपदेश सुधा-सिंधु से एक विन्दु भी ले सके, तो यही होगी, उन के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि और यही होगी उन की पुनीत सेवा।

—लोहा मण्डी, आगरा : उत्तर- प्रदेश :

६—१०—६०

[२]

वे सच्चे सन्त थे :

श्रद्धेय मंत्री श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज

—वयोवृद्ध परम श्रद्धेय मंत्री श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज, एक अनुभवी स्थविर सन्त हैं। अपनी भूत पूर्व सम्प्रदाय के आप श्री जी आचार्य रह चुके हैं, तथा वर्तमान में -श्रमण संघ-के महत्वपूर्ण मंत्री पद पर अधिष्ठित हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से, आप श्री जी का परिचय पुराना—बहुत पुराना है। पूज्य गुरुदेव श्री जी की वैराग्य अवस्था से ही आप उन से पूर्ण परिचित रहे हैं। तीस-पैंतीस वर्षों से तो आप श्री जी तथा पूज्य गुरुदेव श्री जी के अत्यन्त मधुर सम्बन्ध रहे हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गत नौ-दस वर्षों से तो लगातार आप श्री जी की सेवा में ही विराजमान थे।

—आप श्री जी की, एवं पूज्य गुरुदेव श्री जी की तो सूर्य और चन्द्रमा की सी जोड़ी रही है। एक आसन पर विराजित ये दोनों स्थविर सन्त, भगवान् महावीर के शब्दों में—'उभओ निसन्ना सोहन्ति चन्दसूर सम पभा'—अर्थात् एकासनस्थ दोनो, सूर्य और चन्द्रमा के सदृश शोभा पाते हैं। आप श्री जी ने जिस रूप मे, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी को देखा है. उस की एक छोटी सी झांकी प्रस्तुत लेख में, पाठकों को मिलेगी।

—सम्पादक

❀ भद्र परिणामी सन्त

—श्री गणी श्यामलाल जी, एक भद्र परिणामी सन्त थे।

वे जैसे स्वभाव से सरल और भद्र थे, वैसे ही मन से थे। और जैसे स्वभाव से और मन से थे, वैसे ही सरल एवं भद्र, वाणी तथा कर्म से भी थे। जैसा सोचना, वैसा ही कह देना, और जैसा कहना, वैसा ही कर दिखाना, यह थी उन के जीवन की विशेषता। वड़े भोले-भाले, वडे सीधे-सादे, ऐसे सरल आत्म-साधक विरले ही देखने को मिला करते है। परन्तु गणी जी तो साक्षात् मूर्ति ही, भद्रता और सरलता की थे। उनकी भद्रता कृत्रिम नही थी, अभ्यास जन्य भी नही थी। वह थी, स्वभाव जन्य, नैसर्गिक, सहज सुलभ। यही कारण था कि वे झट पट सब का मन आकर्षित कर लेते थे। वे अपनी भद्रता के कारण, अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति से भी वहुत जल्दी ही घुल मिल जाते थे। तभी तो सभी उन से स्नेह रखते थे, और उन्हे आदर एव श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे।

—वैसे देखा जाय तो, सन्त शब्द की परिभाषा मे ही भद्रता निहित है। सन्त तो दूर की वात है, सच्चा मानव वनने के लिए भी, परिणामो की भद्रता और सरलता की सर्व-प्रथम अनिवार्य आवश्यकता हुआ करती है। शास्त्रकार तो यहाँ तक कहते हैं कि धर्मात्मा, एकमात्र भद्र हृदय मानव ही हो सकता है। अर्थात्—भद्र हृदय मे ही धर्म सुस्थिर रह सकता है। श्री गणी जी, धर्मात्मा ही नही, वल्कि सच्चे महात्मा भी थे। क्या मन? क्या वाणी? और क्या कर्म? श्री गणी जी का तो सारा जीवन ही भद्रता से ओत पोत था। प्राकृतिक भद्रता के जब कि अन्यत्र दर्शन ही दुर्लभ होते ह, वही प्राकृतिक भद्रता श्री गणी जी के जीवन मे, प्रचुरतम मात्रा मे, कूट-कूट कर भरी थी। उन के सम्पर्क मे आने वाले, चाहे साधु-साध्वी हो, अथवा गृहस्थ, वे उन की भद्रता और सरलता पर मुग्ध हुए विना नही रह सकते थे।

❋ प्रथम परिचय और मधुर सम्पर्क

—उस भद्र मूर्ति का प्रथम परिचय, काफी पुराना हो चुका है, फिर भी मुझे कल की ही तरह याद है–विक्रम संवत् १९६० में पूज्य प्रवर गुरुदेव श्री मोतीराम जी महाराज और तपस्वी रत्न श्री पूर्णचन्द्र जी महाराज के साथ, हम घूमते-घामते, काछुवा जिला करनाल (पंजाब) मे पहुँचे। उस समय वहाँ श्रद्धेय पण्डित श्री ऋषिराज जी महाराज तथा श्री प्यारेलाल जी महाराज विराजमान थे। उनकी सेवा मे श्री गणी जी, उस समय वैराग्य अवस्था मे रह रहे थे। वही उनसे प्रथम परिचय हुआ। मेरी अवस्था भी उन दिनों यही कोई १६-१७ वर्ष की रही होगी, दीक्षा लिए मुझे तीन या चार वर्ष ही हुए थे। उस समय श्री गणी जी की उम्र भी यही १३-१४ वर्ष के लगभग होगी। अतएव वय समानता होने से आपस मे अच्छा वार्तालाप होता रहा। श्री गणी जी के सरल और भद्र स्वभाव का परिचय मुझे उन्ही दिनों मिल गया था। उन थोड़े से दिनों के मधुर परिचय ने ही श्री गणी जी का स्थान मेरे मानस मे सुरक्षित कर लिया और उसी समय से श्री प्यारेलाल जी महाराज से, मेरी चादर बदल मैत्री का प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् फिर विक्रम सम्वत् १९६५ की उतरती सर्दियो मे बडौत जिला मेरठ (उत्तर प्रदेश) मे श्री गणी जी से मधुर मिलन हुआ। उस समय आप दीक्षित हो चुके थे और गुरुदेव का स्वर्गवास हो जाने पर अपने ज्येष्ठ गुरु भ्राता श्री प्यारेलाल जी महाराज के साथ विचर रहे थे।

—इसके पश्चात् तो समय-समय पर श्री गणी जी से मधुर मिलन होता ही रहा। सम्वत् १९८२ विक्रम का श्री गणी जी का और हमारा सम्मिलित चातुर्मास श्यामली जिला मुजफ्फर-नगर (उत्तर प्रदेश) में हुआ। तब से तो उनका मधुर सम्पर्क हमेशा-हमेशा के लिए कायम हो गया और वह आज तक अर्थात्—उनके जीवन के अन्तिम क्षणो तक उसी रूप मे कायम रहा, बल्कि

अधिकाधिक वृद्धिगत ही होता गया। बयासी के साल के पश्चात् तो हमारे और श्री गणी जी के चातुर्मास अधिकाशतया साथ-साथ ही होते रहे हैं। उनका स्नेह, उनका सद्भाव और उनके परिणामों की भद्रता तथा सरलता, भुलाई जाने जैसी वस्तुएँ नही हैं, वे तो हृदय-पटल पर हमेशा-हमेशा के लिए कायम हो चुकी हैं।

※ मेरी दाहिनी भुजा

—अधिक क्या कहूँ? श्री गणी जी मेरी दाहिनी भुजा थे। आज उनके चले जाने पर, मैं अपने को अकेला-अकेला महसूस कर रहा हूँ। श्री गणी जी और हम वर्षों से साथ-साथ रहे हैं। हमारा आपस मे इतना मधुर सम्वन्ध रहा है कि जनता आज तक भी नही जान पाई है कि ये दोनो, दो गुरू के शिष्य हैं। अधिकांश जनता तो हमें हमेशा से सगे गुरु भाई अथवा गुरु शिष्य के रूप मे ही जानती रही है।

—श्री गणी जी की किन-किन विशेषताओ का वर्णन करूँ? वे विशेषताओं की तो मानो खान ही रहे है। उनका जीवन एक सीधे-सादे आत्म-साधक का जीवन था। झगडे-टण्टो से, माया-प्रपञ्चो से वे हमेशा दूर रहे है। उन्होने आत्म-साधना के द्वारा अपने जीवन का तो विकास किया ही है, साथ ही वे जनता के लिए त्याग का, सयम का, सरल एव भद्र जीवन, का एक जीता-जागता आदर्श भी सामने रख गये हैं। अब तो जनता का यही कर्त्तव्य है कि उनके बतलाए हुए अध्यात्म-पथ पर चल करके, उनका अनुकरण करके, उनकी स्मृति को सदा-सर्वदा के लिए सुरक्षित रखे।

—लोहामंडी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :

२-१०-६०

[३]

एक मधुर संस्मृति :

श्रद्धेय उपाध्याय श्री अमर मुनि जी

—परम श्रद्धेय कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज से, भला कौन अपरचित होगा ? महान् कवि, महान् साहित्यिक, महान् दार्शनिक, सफल प्रवक्ता, जन-गण मान्य समाज-नेता ; आप क्या नहीं ? सब कुछ ही तो हैं। आपके सभी रूपों से जैन समाज पूर्णतया सुपरिचित है। आप सन्त-समाज के प्राण और श्रमण संघ के उपाध्याय हैं। आप श्री जी व्यक्तिगत रूप मे भी बड़े ही मधुर, मिलनसार और सेवापरायण महान् सन्त हैं। अधिक क्या ? आप समाज की अमूल्य निधि हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की उनके अन्तिम दिनों में आपने अनन्य भाव से सेवा की है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की भी, आप श्री जी पर स्नेह पूर्ण विशेष कृपा दृष्टि रही है। आपने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के सद्गुणोपेत् जीवन की कुछ विशेषताओं को मधुर झलक प्रस्तुत लेख मे दिखलाई है। वह क्या है ? इसका दिग्दर्शन आगे उन्हीं के शब्दों में कीजिए।

—सम्पादक

* सरलता की ज्योति

—सन्त जीवन का सर्वतोमहान् सद्गुण है—सरलता।

सरलता के बिना जीवन मे सहज-सौम्यता नही आ पाती। सरल जीवन सर्वत्र समादर पाता है। सरलता शुद्ध जीवन की कसौटी है। जहाँ सरलता है, वहाँ समता है, समदृष्टि है, तथा सदाचार है। धर्म की प्रतिष्ठा सरल जीवन मे ही सम्भव है। सरलता का अर्थ है—वक्रता का अभाव। भगवान महावीर की वाणी मे—जीवन की शुद्धि ऋजुता मे है, वक्रता मे नही।

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, जो आज से कुछ मास पूर्व तक हमारे मध्य मे थे, पर आज जिन की मधुर सस्मृति ही हमारे पास है—जिन का अभाव मन को पीड़ा से भर देता है,—वे सरलता एव सौम्यता के देवता थे। जो मन मे सो वाणी मे, और जो वाचा मे सो कर्म मे। जीवन की यह एक-रूपता अति दुर्लभ है, परन्तु श्रद्धेय गणी जी महाराज मे वह अपने सहज रूप मे थी। उन के पावन जीवन का यह पहलू कितना स्पृहणीय है! वे सरलता की सहज ज्योति थे।

* सेवा व्रती सन्त

—'सेवा' कहना सरल है, पर करना अति दुष्कर। विकट वनो मे योग-साधना करना सरल है, पर सेवा के गहनपथ पर चलना सहज नही है। क्योकि—सेवा धर्म. परम गहन। अर्थात्—सेवा धर्म परम गहन है। सेवा वही कर सकता है, जो अपने आपको सहर्ष समर्पित कर सकता हो, जो विनय विनम्र हो चुका हो। अर्पित करने की शक्ति तथा अपनी अहवृति को जीतने का साहस जिसमे हो, वही तो सेवक बन सकता है।

—अर्पण भावना और विनय शीलता—ये दोनों गुण श्रद्धेय गणी जी महाराज में सहज सुलभ थे, Habitual actions (अभ्यास जन्य) नही थे। मेरे परम गुरू, श्रद्धेय आचार्य श्री

मोतीराम जी महाराज की सेवा आपने तन और मन से की। दीर्घ काल तक सेवा करना और वह भी प्रसन्न मुद्रा मे—बहुत बड़ी बात है। श्रद्धेय गणी जी महाराज उनकी सेवा मे दीर्घ काल तक रहे, परन्तु कभी भी सेवा मे, वे प्रमत्त नही रहे। जब कभी, जिस किसी भी वेला मे, सेवा की आवश्यकता पड़ी—श्रद्धेय गणी जी महाराज सेवा के उस मोर्चे पर, सब से आगे अडिग हो कर डटे रहे। उनका सम्पूर्ण जीवन ही सेवामय रहा है। सेवा उनके तप. पूत जीवन का परम साध्य था।

❋ त्याग-मूर्ति

—त्याग, साधक जीवन का प्रकाश है। साधक जीवन मे यदि त्याग है तो सब कुछ है; नही तो कुछ भी नही। श्रद्धेय गणी जी महाराज के जीवन मे त्याग की चमक, त्याग की दमक कभी मन्द नही हो सकी। खाने-पीने की बहुत-सी वस्तुओं का उनका त्याग था, जिनका नाम बताना भी मेरे लिए कठिन होगा। प्रति दिन कुछ न कुछ त्याग करते रहना, उनका दैनिक कार्य-क्रम था। अपने जीवन में तप भी उन्होने बहुत किया। बेला, तेला, पचौला और अठाई न जाने कितनी बार की। परन्तु कभी भी उन्होने अपने आपको तपस्वी होने का दावा पेश नही किया। वे कहा करते थे—तप एवं त्याग तो आत्म-शोधन की वस्तु हैं, आत्म-ख्यापन की नही।

❋ ज्ञान और कर्म योगी

—'ज्ञान-पिपासा' उनके पावन जीवन की सव से बड़ी साघ थी। कोई भी नई पुस्तक मिले, उसे पढने के लोभ का वे सवरण नही कर सकते थे। नन्हे-मुन्ने वच्चो को लेकर वैठ जाना और उन्हे मधुर धार्मिक कहानियो का प्रलोभन देकर, प्रति-दिन आने को प्रेरित करना, फिर उन्हे धीरे-धीरे सामायिक, प्रतिक्रमण और थोकडे याद कराना, उनके जीवन का सवसे प्रिय तथा मधुर विपय था।

'ज्ञान की यह प्याऊ' उनके जीवन के अन्तिम दिनों तक चालू रही। वह दृश्य कैसे भुलाया जा सकेगा?

—निष्क्रिय होकर बैठना उन्हें कभी पसन्द न था। अपने नित्य प्रति के कामों से फुर्सत पाकर ज्योतिष ग्रथो का अध्ययन एवं मनन करना, उनकी रुचि का विशेष विषय था। तेतीस बोल के थोकड़े का वे एक अपूर्व ढग से संकलन कर रहे थे, परन्तु कुछ दिनो से आँखो मे मोतिया उतरने से वह कार्य उनके जीवन में पूरा न हो सका। वे अपने जीवन के अन्तिम क्षणो तक क्रियाशील वने रहे।

❀ जीवन के वे मधुर क्षण

—श्रद्धेय गणी जी महाराज के मधुर तथा सुन्दर जीवन के वे अन्तिम दिन—जिनमे उन के निकट सेवा मे रहने का परम सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ—वे मेरे जीवन के मधुर क्षण हैं, जिनमे मैं, एक सेवाव्रती महान् सन्त की सेवा कर सका।

—कानपुर : उत्तर-प्रदेश :

३—९—६०

[४]

एक दमकता जीवन :

श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज

—श्रद्धेय प्रखर वक्ता श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के ही प्रथम शिष्य रत्न हैं। आप एक अनुभवी एवं अच्छे विचारशील सन्त हैं। मधुर एवं मिलनसार स्वभाव, तथा मधु-स्नाता वाणी के धनी हैं आप। जीवन की प्रथमावस्था से ही आपको श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का सान्निध्य सम्प्राप्त था।

—आपने कषाय विजेता श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के दमकते हुए एकरूपता से परिपूर्ण आदर्श जीवन का, एक अत्यन्त समुज्ज्वल पक्ष प्रस्तुत लेख मे उपस्थित किया है, उस महापुरुष को अपनी भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए। वह समुज्ज्वल पक्ष क्या है ? और कौन सा है ? यह सब, पाठकगण को अगली पक्तियाँ पढ़ने से ही ज्ञात हो सकेगा।

—सम्पादक

❀ कषाय विजेता

—राग द्वेषौ यदि स्याता, तपसा किं प्रयोजनम् ?
तावेव यदि ना स्याता, तपसा किं प्रयोजनम् ?

अर्थात्—जीवन मे यदि राग-द्वेष, कषायभाव विद्यमान रहे, तो जप-तप और सयम-साधना का क्या अर्थ रहा ? कुछ भी तो नही। और यदि कषाय भाव, राग-द्वेष जीवन से दूर हो चुके, तब भी जप-तप साधना का क्या महत्त्व है ? कुछ नही, क्योकि राग-द्वेष और कषाय भावो से शून्य जीवन तो स्वय ही कृत-कृत्य हो चुका होता है। फिर उसे भला साधना और जप-तप की क्या आवश्यकता रहती है ?

—वास्तव मे सच्ची साधना, कषाय विजय के बिना नही हो पाती है। आत्मसाधक को तो सर्व प्रथम, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग और द्वेष आदि कषाय भावों से ही टक्कर लेनी होती है। इन आन्तरिक षड्रिपुओ को विजय किये बिना अध्यात्म साधना, सफलता के चरम बिंदु तक नही पहुँच पाती। हित-चिंतक आत्म-साधक को इन चारो महादोषों, महाविकारो को जीवन-क्षेत्र से निकाल फेंकना ही होता है। शास्त्रकार इसी बात को, शास्त्रीय भाषा मे इस प्रकार कहते हैं—

कोहं माणं च मायं च, लोहं च पाव वड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसेउ, इच्छन्तो हियमप्पणो॥

क्रोध, मान, माया और लो.. [illegible] प्रकार से सद्गुणो को नष्ट कर डालते हैं ? यह आगम की [illegible] भाषा मे इस प्रकार है—

कोहो पीइ पणासेइ, माणो विणय नासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्व विणासणो॥

अर्थात्—क्रोध प्रीति को, मान विनय को, माया मित्रता को तथा लोभ समस्त सद्गुणो को ही विनष्ट कर डालता है। कषाय भावों

के वशीभूत होकर मानव, मानवता के सत्पथ से भ्रष्ट हो जाता है।

—ससार में, इन कषायों पर विजय प्राप्त करने वाले ही महापुरुष कहलाया करते हैं। उन्ही कषाय-विजेता सयमी पुरुषों मे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का शुभ नाम भी सगर्व लिया जा सकता है। कषायो पर विजय प्राप्त करने के लिए आप जीवन के प्रथम चरण मे ही, संयम के ज्वलन्त साधना-मार्ग पर आगे बढ चले थे। जीवन-क्षेत्र मे निरन्तर अनेक वर्षो तक, सतत आत्म-साधना करने के पश्चात् आप श्री जी ने इन आत्म-विकारों, आन्तरिक शत्रुओं पर अधिकाशत विजय प्राप्त कर ली थी। कर्म शत्रुओं, कषाय भावो पर विजय प्राप्त करने मे, आपने अपूर्व साहस का परिचय दिया था। आप एक सच्चे योद्धा थे, जीवन-क्षेत्र के अमर सैनानी थे। कषाय भावों पर विजय प्राप्त करने के लिए आपने किन-किन आध्यात्मिक अस्त्र-शस्त्रो का सहारा लिया और किस प्रकार इन आन्तरिक शत्रुओ से भीषण सग्राम कर इन पर विजय प्राप्त की ? यह आगमिक भाषा मे इस प्रकार है—

सद्ध नगरं किच्चा, तव संवर मग्गल।
खन्ति निउणपागारं, तिगुत्त दुप्पधंसय ॥
धणु परक्कम किच्चा, जीव च इरियं सया।
धिइ च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमन्थए ॥
तवनारायजुत्तेण, भित्तूण कम्मकचुयं।
मुणी विगय सगामो, भवाओ परि मुच्चए ॥

अर्थात्—कषाय भावों और कर्म-शत्रुओ पर विजय प्राप्त करने के लिए तथा इन आन्तरिक शत्रुओं से अपने को सुरक्षित रखने के लिए, अध्यात्म योद्धा—श्रद्धारूप नगर, तप-सवर रूप अर्गल, क्षमा रूप प्राकार=कोट, मनो-गुप्ति रूप खाई, वचन गुप्ति रूप अट्टालक

और काय गुप्ति रूप शतघ्नी को तैयार करके, पराक्रम रूप धनुष में ईर्यासमिति रूप जीवा=प्रत्यञ्चा को चढा कर के, धृति रूप केतन=वह स्थान जहाँ मुट्ठी रखी जाती है, स्थिर करके सत्य की डोरी से उस धनुष को बाँधता हुआ, तप रूप बाण से युक्त होकर उस धनुप द्वारा, कर्म एव कषाय शत्रुओ का भेदन-उच्छेदन करता हुआ, सग्राम जय कर के, ससार से सर्वथा मुक्त हो जाता है ।

—पूज्य गुरुदेव इन्ही अर्थो मे, सच्चे कषाय-विजेता थे । अपूर्व क्षान्ति, परम मृदुता, स्वाभाविक सरलता एव परम सतोष, आपके कपाय-विजेता होने के प्रत्यक्ष प्रमाण थे । भगवान महावीर ने इन चारो कपायो को चार प्रकार के आत्मिक सद्गुणों से जीतना बतलाया है, जो इस प्रकार है—

उवसमेण हणे कोह, माण मद्दवया जिणे ।
माया मज्जवभावेण, लोभ सन्तोसओ जिणे ॥

उपशम अर्थात्—क्षमा से क्रोध को, मृदुता अर्थात्—विनय-शीलता, नम्रता से मान को, आर्जव भाव अर्थात्—सरलता और भद्रता से माया को, तथा सन्तोष और धैर्य से लोभ को पराजित करना चाहिये । पूज्य गुरुदेव का महान् साधनामय जीवन इस कषाय-विजय की आदर्श कहानी कह रहा है । पूज्य गुरुदेव के सफल जीवन को देख कर—उत्तराध्ययन सूत्र के नमि राजपि वाले नवमे अध्ययन मे, इन्द्र द्वारा स्तुति सहित वर्णन किये गये, उन राजर्षि के सफल जीवन वाले भाव, दोहराने का लोभ मैं सवरण नही कर सकता; क्योंकि पूज्य गुरुदेव के सफल-जीवन में एव राजपि नमि के सफल जीवन में बहुत-कुछ अशो तक समानता मिलती है । वे भाव इस प्रकार हैं—

अहो ते णिज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ।
अहो निरक्किया माया, अहो लोभो वसीकओ ॥
अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खन्ति, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥

अर्थात्—हे ऋषे ! आपने क्रोध को जीत लिया, अहकार को पराजित कर दिया, छल-कपट को दूर किया, और लोभ को अपने वश मे कर लिया, यह बडा आश्चर्य है। हे ऋषे ! आपकी सरलता, मृदुता क्षमा और निर्लोभता सर्व प्रकार से श्रेष्ठ है, सुन्दर है और उत्तम है ; यह और भी आश्चर्य एव हर्ष की बात है।

❀ एक रूपता पूर्ण, आदर्श जीवन

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का पवित्र जीवन, एकरूपता का आदर्श प्रतीक था। जो मन में, वही वाणी मे, जो वाणी मे, वही कर्म मे। एकरूपता का का यह आदर्श विरले ही आत्म-साधको मे मिल पाता है। सन्त-जीवन के लिए तो एकरूपता अनिवार्य है। मन कुछ सोचता हो, वचन कुछ और ही बोलता हो, और कर्म कुछ तीसरा मार्ग ही ग्रहण करता हो, तो क्या वह सन्त-जीवन है ? नही, कदापि नही। ऐसे जीवन को तो एक सच्चे मानव का जीवन भी नही कहा जा सकता। पूज्य गुरुदेव तो जीवन के मन, वचन और कर्म की इस भिन्न-रूपता से कोसों दूर थे। आपका जैसा जीवन अन्दर था, वैसा ही बाहर भी था, जैसी प्रवृत्ति एक सत जीवन से परिचित श्रावक के समक्ष थी, वैसी ही प्रवृत्ति अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति के सम्मुख भी आप की रही है। आगम के आदर्श वाक्यो मे इन भावो का वर्णन इस प्रकार है —

से, गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, अप्पं वा, वहुं वा,
अणुं वा, थूल वा, दिआ वा, राओ वा,
एगओ वा, परिसागओ वा,
सुत्ते वा, जागरमाणे वा ॥

अर्थात्—ग्राम मे, नगर मे, अरण्य=वन मे, अल्प=चन्द व्यक्तियो में, बहुत व्यक्तियो मे, सूक्ष्म रूप मे, स्थूल रूप मे, दिन मे, रात्री मे, एकाकी=एकान्त में, परिषदा=जन समूह मे, स्वप्न मे और जागृति

में, साधक को एक रूप, एक रस एवं एक भाव रहना चाहिए। पूज्य गुरुदेव आगम के इस आदर्श वाक्य के प्रत्यक्ष उदाहरण थे। प्रत्येक स्थिति और परिस्थिति मे आप जीवन के अन्तिम क्षणों तक एक रूप रहे। पूज्य गुरुदेव के जीवन की एकरूपता आत्म-साधको के लिए स्पर्धा की वस्तु रही है।

❀ एक दमकता जीवन

—पूज्य गुरुदेव का पवित्र जीवन, एक दमकता हुआ जीवन है। बिल्कुल खरे सोने की मानिन्द, दोषो एव विकारों से रहित, उज्ज्वलता एव तेजस्विता से परिपूर्ण। पूज्य गुरुदेव का आत्म-तेज निराला ही था। कितनी ही आँधियाँ आई, कितने ही विघ्न आए, कितने ही तूफान और प्रबल झंझावात आए। परन्तु पूज्य गुरुदेव के तेजस्वी जीवन की चमक और दमक को, जरा भी धूमिल न कर सके। बल्कि खरे स्वर्ण की भाँति विघ्न-बाधाओ की अग्नि मे पड़ कर, तप कर, मँज कर, निखर कर तो पूज्य गुरुदेव का जीवन और अधिक सद्गुणों की, सयम-साधना की चमक और दमक से परिपूर्ण ही बना।

—आज पूज्य गुरुदेव बेशक पार्थिव रूप से हमारे समक्ष नही हैं। परन्तु उनका दमकता और, चमकता हुआ महान् जीवन आज भी हमें प्रेरणा दे रहा है। कर्तव्य-मार्ग मे बढने के लिए एक मधुर संदेश दे रहा है। अब तो उनके चरण चिन्हो पर चल कर, उनका अनुकरण कर, कर्तव्य मार्ग में आगे बढ़ने के साथ-साथ, मैं अपनी भाव-भीनी श्रद्धा-ञ्जलि उस महापुरुष को अर्पित करता हूँ।

—लोहामंडी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :

३—१०—६०

[५]

एक निराला व्यक्तित्व :

श्री अमोलक चन्द्र जी महाराज--अखिलेश-

—श्रद्धेय श्री अखिलेश मुनि जी एक कर्मठ एवं कर्तव्यशील सन्त हैं। सेवा परायणता को तो आपने अपने जीवन का विशिष्ट ध्येय ही बनाया हुआ है। आप श्रद्धेय मन्त्री श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य एवं कविरत्न उपाध्याय श्री अमरचन्द्र जी महाराज के लघु गुरु-भ्राता हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के अन्तिम दिनों मे, आप भी उनकी सेवा में समुपस्थित थे। पाठक गण श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के उदात्त जीवन और निराले व्यक्तित्व की निराली छटा श्री अखिलेश मुनि जी की रचना मे पायेंगे, और प्रस्तुत लेख को पढ़ कर, एक निराला ही आनन्द अनुभव करेंगे।

—सम्पादक

❀ एक उदात्त जीवन

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, जो कुछ मास पूर्व हमारे बीच में ही मौजूद थे, अब केवल स्मृति की वस्तु बन चुके हैं। जो पहले एकरूप थे, वे अब अनेक रूपो मे परिवर्तित हो चुके हैं। भारतीय दार्शनिको का कहना है कि उदात्त चरित मानव, जीवित रूप में तो केवल एक ही रहता है, किन्तु मृत्यु के पश्चात् वही सत्पुरुष, अनेक-अनेक हृदयों में, स्मृति एव सद्‌गुणों को धारण कर अनेकधा रूपो में परिवर्तित हो जाया करता है। इसी दृष्टिकोण को लेकर ही, हम श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज के सम्बन्ध में भी यही बात कह सकते हैं। वे भौतिक शरीर से मौजूद न होते हुए भी सहस्राधिक मानव हृदयो में, सहस्राधिक स्मृति-रूपों मे विद्यमान हैं, यह नि.स्सन्देह सत्य है।

—श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज का जीवन एक उदात्त जीवन रहा है। वे कठोर सयम-साधना के सर्वोच्च शिखर पर थे। साधना-साधना कहना और उसका विस्तृत-विवेचन कर देना, सरल है, परन्तु उस साधना को जीवन का एक अविभाज्य अग बना कर चलना कठिन है। बडे-बडे साधको के लिए, जो साधना स्पृहा की वस्तु रही है, वह श्रद्धेय गणी जी महाराज को सहज प्राप्त थी। उनका जीवन, सरलता, सौम्यता, मृदुता एव सेवा-परायणता जैसे महान् सद्‌गुणो को अपना कर उदात्त बन चुका था। जिसने भी उनको निकट से देखा, जाँचा और परखा, वही उनके उदात्त जीवन का कायल हो गया। उनकी [illegible]त्तता सिर्फ अभ्यास-जन्य वस्तु न थी, बल्कि उदात्तता तो उन[illegible] सहज स्वभाव मे थी, रग-रग में, नस-नस में और जीवन के क[illegible]ण में थी।

❀ निराला व्यक्तित्व

—यों व्यक्तित्व तो अनेक-अनेक इन आँखों के सामने से गुजरे, लेकिन श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज का व्यक्तित्व तो बिल्कुल निराला ही था। अपनी निजी विशेषताओं के कारण वह हजारों

व्यक्तित्वो के समूह में, अलग ही पहिचाना जा सकता था। यह ठीक है कि यहाँ, एक से एक बढकर व्यक्तित्व हैं, पर उन के व्यक्तित्व की समता कर पाना, जरा मुश्किल ही था। उनका व्यक्तित्व अपने में निराला ही था, जो किसी को भी प्रभावित किए बिना नही रह सकता था। उनके सम्पर्क मे आने वाला प्रत्येक व्यक्ति उनकी इस विशेषता का प्रमाण है।

—सरल जीवन, सरल वाणी, और उच्च विचार, उनके व्यक्तित्व मे प्रमुख अंग थे। सहज स्नेह की सरिता उनके अंतस्तल मे सदा-सर्वदा प्रवाहमान रही है। जो जन-गण-मन को आकर्षित किये बिना नही रही। जो भी उनके सम्पर्क मे आया, वही अपने आपको उस स्नेह सरिता मे, डुबकियाँ लगाकर, परम तृप्त, परम शान्त और धन्य अनुभव करने लगा। जिसने एक बार भी उनके दर्शन कर लिए, उसने ही अपने आपको, उनके अतिशय स्नेह और ममता मे बँधा पाया। उनके समीप पहुँच कर हर्ष और उल्लास प्राप्त करना, एक आम बात थी। उन्होंने अपने मन और वचन से भी किसी का बुरा न चाहा और न किसी को बुरा कहा, अपितु वे सदा सब की भलाई में ही तत्पर रहे।

—सौम्य-मुद्रा, शान्त एवं सरल स्वभाव, हँसता हुआ प्रति क्षण प्रसन्न चेहरा, सेवा-रत सतत कर्मशील हस्त एव पाद युगल, ये सब अब कहानी की वस्तुएँ रह गई हैं। फिर भी ऐसे उदात्त जीवन और निराले व्यक्तित्व से, प्रेरणा तो हम ले ही सकते हैं, ऐसे स्पृहा योग्य, सद्गुण शाली आत्मा के चरण चिन्हो पर तो चल ही सकते हैं; उनका अनुकरण कर उनके सच्चे अनुयायी तो कहला ही सकते हैं। जिस दिन हम ऐसा कर सकेंगे, उसी दिन हम उस महा-पुरुष को सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकेंगे।

—कानपुर : उत्तर-प्रदेश :

२३—९—६०

[६]

मेरे जीवन निर्माता :

श्रद्धेय, तपस्वी श्री श्रीचन्द्र जी महाराज

—श्रद्धेय तपस्वी श्री श्रीचन्द्र जी महाराज एक विशिष्ट-व्यक्तित्व से सम्पन्न सद्‌गुणी सन्त हैं। आप श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के ही द्वितीय शिष्य रत्न हैं। उग्र तपश्चरण एव कठोर व्रत आचरण की मर्यादा, आपके जीवन के आदर्श रहे हैं। आपने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की पवित्र सेवा मे ही अपना समस्त जीवन लगा दिया है। पूज्य गुरुदेव के जीवन के अन्तिम क्षणों तक आप ने उनकी श्रद्धा पूर्वक अनन्य भाव से सेवा की है।

—अपनी जीवन कहानी के माध्यम से, आपने अपने जीवन-निर्माता श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धा-पुष्प समर्पित किए हैं। जो अगले पृष्ठों मे उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन श्रद्धा-पुष्पों में क्या कुछ सौन्दर्य है? और क्या कुछ आकर्षण है? साथ ही इनकी मोहक सुवास, किस प्रकार मन को मुग्ध कर लेती है; यह सब सम्पूर्ण लेख पढ़ने के पश्चात् ही ज्ञात हो सकेगा।

—सम्पादक

❀ जीवन निर्माता

—पूज्य गुरुदेव, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, सच्चे जीवन-निर्माता थे। उन्होने, स्वयं अपने ही जीवन का, भव्य निर्माण नही किया, बल्कि वे जन-जीवन-निर्माता भी थे। वे मानव को अपने तीक्ष्ण सद्ज्ञान और महान् सद् उपदेशो से गढ़-गढ़ कर एक आदर्श कलाकृति का रूप दे देते थे। ऐसी कलाकृति, जिसका सर्वत्र सम्मान हो, पूजा हो, और अप्रतिम प्रशसा हो।

—मै ही जब पूज्य गुरुदेव की, चरण-शरण में आया था, तब बिल्कुल अज्ञान एवं अबोध दशा मे था। और एक दृष्टि से पशु के समान ही था। हित-अहित, धर्म-अधर्म, कर्तव्य-अकर्तव्य किसी भी प्रकार का ज्ञान नही था। किन्तु करुणा के सागर, दया के भण्डार, शान्त स्वरूप, परम सौम्य मूर्त्ति, सरल आत्मा, पूज्य गुरुदेव श्री जी ने मुझ को अपनी आत्मा का रस देकर, अपनी बुद्धि का चमत्कार भर कर एव अपने संयम की अप्रतिम साधना का अंग बना कर, ज्ञानी से अज्ञानी, पशु से मानव, अनाथ से सनाथ, जन से जैन, मिथ्यात्वी से सम्यक्त्वी, गृहस्थ से आत्म-साधक-सन्त, अव्रती से महाव्रती और अपूज्य से पूज्य बनाया। अन्धकार मे भटकते हुए को रत्न-त्रय की अनन्त-अनन्त ज्योतित किरणो से प्रकाशित संयम की जलती हुई मशाल हाथ मे थमा कर लक्ष्य तक पहुँचने मे महान् सहयोग दिया। स्वयं अपने समान बना कर मुक्ति-पथ का सच्चा अनुगामी बनाया। अधिक क्या ? मेरे लिये तो वे सब कुछ थे। मै उनको कैसे भुला सकता हूँ ? वे मेरे जीवन-निर्माता थे। उनका पवित्र जीवन तो मेरी सयम यात्रा का पाथेय बन चुका है। उनकी पावन मधुर स्मृतियाँ तो मेरे हृदय की अमूल्य थाती के रूप मे सुरक्षित हो चुकी है। उनकी जीवन विकासक उपयोगी शिक्षाएँ तो मेरे जीवन के अन्धेरे-उजाले की, साँझ-सकारे की पग-पग पर साथी बन चुकी हैं।

❀ सच्चे सद्गुरु

—वे मेरे लिये सच्चे सद्गुरु थे। वे ही मेरे लिये माता-पिता एवं परमात्मा के समान थे। किन्तु मैं ही उनकी यथोचित सेवा न कर सका। मेरी अविनीतता एवं शठता पर उन्होंने कभी भी ध्यान नही दिया। वे मुझे हर बार क्षमा करते हुए सभी तरह से योग्य बनाने का सतत प्रयत्न करते रहे। उनके महान् उपकारों से इस जीवन में तो क्या ? अनेक जन्म-जन्मान्तरों मे भी उऋण हो पाना असम्भव है। अतः मै उनके पवित्र चरणों मे पुनः पुनः वन्दन करने के अतिरिक्त और क्या श्रद्धाञ्जलि अर्पण करूँ ?

—लोहामंडी आगरा : उत्तर प्रदेश :

२२—९—६०

[७]

पूज्य गुरुदेव तो अमर हैं :

श्री हेमचन्द्र जी महाराज

—श्रद्धेय पण्डितवर्य श्री हेमचन्द्र जी महाराज एक सुलझे हुए विचारो के तरुण सन्त हैं। मधुर प्रकृति तो आपको विरासत में ही मिली है। आप भी श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के तृतीय शिष्य रत्न हैं। अतएव श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की अनेक विशेषताएं आपके जीवन में मूर्त रूप प्राप्त कर चुकी हैं।

—आपने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को एक अमर महामानव, एक पावन पुरुष के रूप मे देखा है। उन्हीं विचारों और भावनाओं का चित्रण पाठक गण उनके इस मधुर संस्मरण मे पायेंगे। लेख अपने आप में एक पृथक् ही विशेषता रखता है—जिसका पता पाठक गण सम्पूर्ण लेख पढ़कर ही लगा सकेंगे।

—सम्पादक

❀ दु.खद समाचार

—पूज्य गुरुदेव का स्वर्गवास हो गया,—यह दुःखद समाचार सुनते ही अन्तर में वेदना की थाह न रही। उस पावन पुरुष पूज्य गुरुदेव की पावन मधुर स्मृतियाँ रह-रह कर स्मृति-पथ पर आने लगी। मानस आकुल-व्याकुल हो उठा और हृदय दु.ख से विह्वल। सारी देह मानो निर्जीव सी हो गई। जो कभी नही टूट सका था वह धैर्य का दृढ फौलादी बाँध आज पूज्य गुरुदेव के दुस्सह वियोग के तीव्र तूफान ने टूक-टूक कर दिया। भयकर दुःखपूर्ण ही था यह समय, जो आज देखना पडा। वास्तव में अपूर्व ही घड़ी थी यह।

—मन भीतर ही भीतर सिसक-सिसक कर कराह उठा, तथा दु.ख पूर्ण अस्फुट स्वर में बोल उठी लडखडाती हुई वाणी। अब न रहे दयालु गुरुदेव ! उठ गया अब उस परम पुरुष का सिर से साया ! हा हन्त ! न लिखे थे उस पावन पुरुष के अन्तिम दर्शन भी भाग्य मे ! वाह रे, निष्ठुर दुर्दैव ! अन्तिम सेवा-लाभ से भी वञ्चित ही रखा हमे। दिल मे उमग थी, आगरा जाएँगे और दर्शन करेंगे पूज्य गुरुदेव के, उस पावन मगलमय मूर्ति के ! लेकिन यह तो स्वप्न मे भी कल्पना नही थी कि होनी अपना रंग इस रूप मे भी दिखाएगी ! हृदय की सब उमगो को, सब आशाओं को अन्दर ही अन्दर कुचल कर, दबोच कर समाप्त कर डालेगी ! श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की अमूल्य जीवन-घडियाँ हमारी अनुपस्थिति मे ही दस-पाँच दिन की ही भीषण बीमारी से समाप्त हो गयीं, स्वाँसों की मधुर झनकार बन्द हो गई ! इस मर्त्यलोक को छोड़, पूज्य गुरुदेव स्वर्ग-धाम मे जा विराजे।

❀ कठोर काल

—काल की गति सचमुच बड़ी ही विचित्र है। इस जगति तल पर कौन बच पाया है इस कराल महाकाल से ? अनादि से प्राणियों को अपना ग्रास बनाता ही तो चला आ रहा है। एक

स्वांस तक भी तो प्रदान करने की उदारता नही रखता है, यह बेदर्दी और बे रहम महाकाल ! भला कौन बच सका है इसकी चपेट से ? सामान्य मानव तो क्या, बड़े से बड़े साधक भी तो नही टाल सके इस घड़ी को ? एक न एक दिन उन्हे भी इसका सामना करना ही पड़ा ।

—जैन इतिहास इस बात का साक्षी है । निर्वाण से पूर्व देवाधिपति इन्द्र ने भगवान महावीर से विनम्र प्रार्थना की थी—भगवन् ! यदि आप केवल दो घड़ी अपनी आयु और बढ़ा ले, तो आपकी महद् अनुकम्पा होगी ? इन्द्र को जो उत्तर भगवान महावीर ने दिया था वह अढाई हजार वर्षो के पश्चात् आज भी उसी प्रकार अटल है । भगवान महावीर ने कहा था—

इन्दा ! न एव भूय, न भविस्सइ ।

हे इन्द्र ! न ऐसा हुआ और न कभी ऐसा होगा । मै तो क्या ? मुझ जैसे हजार तीर्थंकर भी मिलकर अवधि से अधिक एक स्वास भी आयु नही बढा सकते, तुम दो घड़ी की कह रहे हो ! जो जन्मा है, उसे मरना अवश्यम्भावी है । इस काल की गति अवरुद्ध करने का साहस भला किस मे है ?

—परम पुरुष भगवान महावीर के इस संस्मरण ने अतर के पट खोले । महत्त्वपूर्ण यह विचार दिया कि चिंता से, फिक्र से अब क्या होना है ? सिवाय कर्म-बन्ध के । जाने वाला तो गया, चिंता से वह तो वापिस आने से रहा । वस्तुत: बात भी बिल्कुल ठीक है । ज्ञानी-जनो, आध्यात्मिक पुरुषों के वचन कभी अन्यथा नही हुआ करते ।

❀ गुरुदेव तो अमर हैं

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का पार्थिव शरीर भले ही मृत्यु का ग्रास बन गया हो ; लेकिन श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव एव उनकी आत्मा तो अमर है । काल उसका कुछ भी नही बिगाड़ सकता ।

काल का प्रहार भोगी पर चल सकता है, योगी पर नहीं । योगी की आत्मा तो मृत्यु का मदारी बन कर, उसे मर्कटवत् नचाती है । सन्त पुरुष को कभी काल नही खाता । काल सन्त पर विजय नही पाता, बल्कि सन्त ही काल पर विजय प्राप्त करता है । अतएव मुझे तो पूर्ण विश्वास है, सच्चा यकीन है कि श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव मरे नही, वे जीवित हैं और हमेशा जीवित रहेगे । वे अजर है अमर है, क्षुद्र काल की सीमा से एक दम परे हैं । उनकी आत्मा, उनका सद्-गुणोपेत जीवन, उनके पावन उपदेश कभी भी धूमिल पडने वाले नहीं हैं । वे तो युग युगान्त तक सूर्य की भाँति चमकेगे । इन्ही विचारों से जीवन मे साहस आया । धैर्य एवं सान्त्वना से हृदय मजबूत हुआ और फिर कुछ सन्तोष तथा शान्ति की सास ली ।

※ सुसंस्कृत जीवन

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का जन्म, ग्राम—सोरई-जिला आगरा मे हुआ था । आपकी माता का नाम रामप्यारी और पिता का नाम था, चौधरी टोडरमल जी । सम्पन्न घर था । कुल दीपक पुत्र पा कर दोनों फूले नही समाते थे । आपके प्रति अत्यन्त अनुराग था, माता पिता का । वास्तव में आप माता पिता के प्यारे थे, दुलारे थे और थे नयन सितारे । उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रही, आप सरीखे पुत्र रत्न को पाकर । बड़े ही लाड-चाव से आपका पालन-पोषण होता रहा ।

—बचपन के मधुर दिवस गुजरे और मीठी रातें व्यतीत हुई तो कुछ नये मोड़ आने प्रारम्भ हुए, आपके जीवन में । धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों होश एवं समझ-बूझ का आना प्रारम्भ हुआ, शनैः शनैः त्यों-त्यों ही वैराग्य भाव के कोमल अंकुर भी आपके अन्तर मानस से उभर-उभर कर बाहर आने लगे । वे सस्कार कल्याणप्रद आध्यात्मिक सस्कार थे, जो जल्दी से जल्दी मूर्त्त रूप लेना चाहते थे । एक दिन

अपनी यह सद्भावनाएँ, आपने माता पिता के समक्ष रखी । बच्चे की बात सुन कर दोनों आश्चर्य चकित हो उठे । मन में सोचा—क्या यह नन्ही सी जान ? क्या यह भोला बचपन ? मगर फिर भी इसमे इतने उच्च विचार ! इतने श्रेष्ठ सकल्प ! बोले—अभी बचपन भी पूर्ण रूप से नही छूट पाया है पीछे, नही टूटे हैं अभी दूध के भी दाँत, क्या बात करते हो बेटा ? बड़ा कठोर है आध्यात्मिक साधना का जीवन तो ! कैसे चल पाओगे, इस कोमल छोटे से शरीर से, उस दुर्गम कण्टकाकीर्ण सयम के महामार्ग पर ? इसलिए रहने दो इन योग की बातो को । अधिक क्या ? हर तरह से समझाने का प्रयत्न किया । परन्तु आप तो धुन के पक्के थे न ! जो सोच लिया सो सोच लिया । आपके दृढतम इरादे के सम्मुख, माता-पिता का सब प्रयास विफल ही हुआ । अन्त मे आपने सहर्ष माता-पिता की आज्ञा प्राप्त की और फिर चल पडे, अपने अभीष्ट पथ की ओर ।

—छोटी सी ही केवल ९ वर्ष की अवस्था मे, पण्डित रत्न, प्रतापी मुनिराज श्रद्धेय श्री ऋषिराज जी महाराज की चरण-शरण मे पहुँचे । गुरुदेव की सेवा मे अनेक वर्षों तक भाव संयमी रहे । गुरु चरणो मे बैठकर विनय पूर्वक शास्त्र-ज्ञान का अभ्यास किया और किया साधुत्व साधना का पूर्वाभ्यास । जव आपने अपने को साधना क्षेत्र मे सोलह आने खरा पाया, तो गुरुदेव श्री ऋषि-राज जी महाराज से प्रार्थना की, दीक्षा के लिए । गुरुदेव ने भी आपका हर प्रकार से निरीक्षण-परीक्षण किया और योग्य जान स्वीकृति प्रदान करदी, दीक्षा के लिए । आपने बडे ही उत्कट भावो से गुरुदेव की पवित्र सेवा मे आर्हती दीक्षा ग्रहण कर ली । भगवती दीक्षा स्वीकार कर आप चल पड़े, दृढ मुस्तैदी कदमो के साथ विशुद्ध मोक्ष के राज मार्ग पर ।

—जिस सिंह वृत्ति तथा उच्च भावो से आपने सयम-साधना के रूप में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि महाव्रतों का कठोर प्रण लिया था, उस प्रण को आपने अन्त

तक, जीवन के आखिरी सांस तक पूर्ण ईमानदारी और वफादारी के साथ निभाया। आपके जीवन मे आए, उग्र से उग्रतर परिषह, किन्तु आपको न कभी हिर्राते देखा और न देखा कभी घबराते ही। किंतु देखा, उनको समभाव से सहन करते हुए आपको, प्राप्त करते हुए उन पर विजय आपको। सयम की राह पर आप इतने सतर्क एव अप्रमत्त होकर आगे बढते थे कि क्या मजाल जो एक इच भी इधर उधर हो जाएँ ? फिसल जाएँ कही पग, सयम पथ से ?

❀ साहसी कर्मवीर

—मैने अपनी जिन्दगी मे पूज्य गुरुदेव को कभी हिम्मत हारते नही देखा। विकट से विकट परिस्थिति में भी उनको शान्त भाव से मुस्कराते हुए ही पाया है। आलस्य और प्रमाद का तो नाम भी न था आप में। वयोवृद्ध होते हुए भी, साधुत्व-चर्या के हित कठिन से कठिन कार्य करने की पूरी-पूरी क्षमता थी आपमे। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव जहाँ अपने लिए अति कठोर थे, वहाँ परहित के लिए अत्यन्त मृदु भी थे। वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि-वाक्य के आप साक्षात् उदाहरण थे। जटिल से जटिल समस्या को अत्यन्त सरलता पूर्वक हल कर डालने की एक स्वाभाविक निराली कला थी आप मे। पूज्य गुरुदेव वस्तुत· साहसी कर्मवीर थे।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव कितने कर्मठ एवं कर्तव्य शील थे ? यह एक छोटे से प्रसग से अनुमान लगाया जा सकता है। एक वार विहार करते हुए, हम रास्ते मे पडने वाले एक ग्राम मे ठहरे। गर्मी का मौसम था। गर्मी क्या ? अगारे ही वरस रहे थे। उस दिन उष्ण परिपह का प्रावल्य था, साथ ही क्षुधा एव पिपासा परिषह का भी। गाँव में सन्त गए और आहार ले आए। आहार के साथ कुछ छाछ तो मिल गई, परन्तु पानी उपलब्ध न हो सका। सन्तों ने, जो प्राप्य था उसी में से थोडी थोड़ी छाछ के साथ आहार किया और बैठे रहे। गर्मी के दिन, दोपहर का समय और पानी का अभाव,

एक जटिल समस्या बन गई। रास्ते के थके-मादे सन्त थे। सो पूज्य गुरुदेव के सिवाय सभी लेटे और सो गये। कुछ देर मे निद्रा खुली तो देखा—गुरुदेव नही है ! कहाँ गए ? इधर-उधर देखा, नही मिले। मकान से बाहर आ, दीर्घ दृष्टि से एक ओर देखने पर पता चला कि वे आ रहे हैं गुरुवर, छोटी सी पगडण्डी से होकर पास के एक दूसरे गाँव से, पानी की जोट लिए हाथ मे। सन्त झट-पट सन्मुख पहुँचे। गुरुदेव का हाथ हल्का किया। इस परिस्थित मे हम लज्जित थे। तरुण हो कर हम कितने प्रमत्त और गुरुदेव इस वृद्ध अवस्था मे भी कितने पुरुषार्थी ! लज्जानत हो, हमने नम्रभाव से पूछा—गुरुदेव ! आपने हमें क्यो नही दी आज्ञा ? गुरुदेव मुस्कराते हुए बोले—वाह ! इस सेवा के शुभ अवसर को मै कैसे हाथ से निकल जाने देता ? ऐसे अवसर जीवन मे बार-बार थोडे ही आते हैं। गुरु हूँ तो इसका अर्थ यह नही कि सेवा-धर्म से भी मुख मोड लूँ। वक्त पड़ने पर सेवा न करूँ, यह कदापि नही हो सकता। जहाँ सेवा करवाने का अधिकार है वहां वक्त पडने पर सेवा करने की हिम्मत भी होनी ही चाहिए। तुम पर मैने यह सेवा करके कुछ ऐहसान थोडे ही किया है, मैने तो बस अपना कर्तव्य पालन किया है। कितना महान् था सेवा-व्रत भी गुरुदेव का। गुरुदेव की इस विशाल उदारता से हृदय गद्-गद् हो उठा। पानी ठण्डा किया गया और उसका पान कर सब ने तृप्ति अनुभव की। ऐसे थे साहसी कर्मवीर पूज्य गुरुदेव।

❀ संकीर्ण भावनाओं का अभाव

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव वास्तव मे सच्चे सन्त थे, सच्चे श्रमण थे। उनमे अपार शान्ति थी, अपार क्षमा और दया थी, और थी उनमे सरलता, नम्रता तथा अमित उदारता। सम्पूर्ण जीवन सद्गुणोपेत होते हुए भी, उनको न तो जरा भी अहकार था और न था झूठा घमण्ड। दीर्घ सयमी होते हुए भी, वे अपने बड़प्पन को

एक ओर रखकर, स्वकीय तथा परकीय, छोटे तथा बडे का भेद भूलकर, सभी की निस्वार्थ एव निज कर्तव्य भाव से निस्संकोच सेवा करते थे। उनका निर्मल-मानस संकीर्ण भावनाओं से एक दम परे था। सकीर्ण भावनाओं का अभाव, पूज्य गुरुदेव के महान् जीवन की एक प्रमुख विशेषता थी। यही कारण था कि आपकी असकीर्ण भावनाओं को देख कर हर किसी का मस्तक, आप के पावन चरणों मे श्रद्धा से झुक जाता था।

—संयम पालन का चातुर्य एवं वाणी का माधुर्य, यह दोनों ही सद्गुण आप मे विद्यमान थे। कटुक अथवा अहितकर वचन वे कभी नही बोलते थे। उनका प्रत्येक वाक्य वात्सल्य, आत्मीयता और सहृदयता से ओत प्रोत होता था। यही कारण था कि किसी से भी उनका, कभी भी सघर्ष अथवा विरोध न हुआ। पूज्य गुरुदेव सघर्ष में न कभी पड़े और न किसी संघर्ष मे पड़ने का उन्होने इरादा ही किया। यदि कभी लडे भी तो, एक मात्र अपनी ही दुर्वृत्तियो से। संघर्ष भी किया तो अपने ही असत् भावो से, अपने ही कर्मों से। जीवन के रणक्षेत्र में तो आप एक सच्चे वीर सैनिक, वीर योद्धा एवं एक सच्चे विजेता ही साबित हुए। वास्तविक दृष्टि से पूज्य गुरुदेव साक्षात् मूर्ति थे तप और त्याग की। वे गम्भीर थे सागर से, अचल और निश्चल थे मे से, सहिष्णु थे पृथ्वी से, शीतल थे चन्द्रमा से; और वे तेजस्वी थे, सूर्य के सदृश। पूज्य गुरुदेव का जीवन था एक आदर्श जीवन

—भले ही देह रूप में अब, हमारे बीच नही है, वह सौम्य मूर्ति। परन्तु गूंज रही है आज भी, उस पावन पुरुष विशिष्ट जीवन की, जीवन स्पर्शी, शिक्षाप्रद अनेक मधुर स्मृति हृदय के कण-कण में। और जो गूंजती ही रहेगी, हजार-हजार व तक। भूले-भटके जीवन को, दिखाती रहेगी सत्पथ युगों-युगों तक दीपक का प्रकाश तो रहता है, तब तक ही, जब तक कि

रहता है, उस मे। चन्द्रमा का प्रकाश भी केवल रात भर ही रहता है और सूर्य का प्रकाश केवल दिन भर ही। परन्तु महापुरुषों की जीवन ज्योति का प्रकाश तो रहता है सदैव ही, शाश्वत, चिरस्थायी और हमेशा-हमेशा के लिए कायम। महापुरुषो के सन्देशों एव उपदेशों की ज्योति-किरणे तो पड़ ही नही सकती हैं कभी भी मन्द अथवा धूमिल। वे तो युग युगान्त तक उसी प्रकार से करती रहती है जगमग-जगमग। और फूल की खुशबू तो, रह पाती है कुछ ही देर, फूल की समाप्ति के पश्चात् कुछ ही समय तक। परन्तु, सन्त पुरुषो के जीवन की महक तो, हजारो लाखो वर्षों तक महकती रहती है, उनके चले जाने के बाद भी। अतएव उस अजर-अमर आत्मा पूज्य गुरुदेव को, वन्दन हो कोटि-कोटि मेरा।

—जीद पजाब :
६—१०—६०

[८]

सफल जीवन के आधार विन्दु :

श्री विजय मुनि जी–शास्त्री–साहित्यरत्न–

—श्री विजय मुनि जी, स्थानकवासी समाज के, सिद्ध हस्त लेखक एवं जाने पहिचाने सन्त हैं। आप कविरत्न उपाध्याय श्री अमरचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य हैं। आप में विद्वत्ता एवं पाण्डित्य से परिपूर्ण प्रतिभा के दर्शन होते हैं। आपने सस्कृत साहित्य में- शास्त्री-एव हिन्दी साहित्य में-साहित्य-रत्न-परीक्षा उत्तीर्ण की है।

*

—प्रस्तुत लेख मे, श्री विजय मुनि जी ने, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का बड़ा ही भव्य चित्र खींचा है और उनके जीवन की चन्द वास्तविकताओं मे प्रबुद्ध पाठकों को परिचित कराया है। मुनि जी की जादू-भरी लेखनी का चमत्कार पाठक गण अगले पृष्ठो मे देखेंगे।

—सम्पादक

❀ सन्त जीवन की कसौटी

—सन्त जीवन की धार, तलवार की धार से भी अधिक तीखी होती है। सँभल कर काम करना और सँभल कर बोलना, सन्त जीवन की सच्ची कसौटी है। जो सोचा जाय, वह सब के हित मे हो। जो बोला जाय, वह सबको प्रिय और मधुर लगे। जो किया जाय, वह सबके मंगल के लिए हो। शत्रु और मित्र के प्रति समता, स्वजन और परजन के प्रति सहज-स्नेह, सकट ग्रस्त जनों के प्रति सहानभूति, और अनुकूलता एवं प्रतिकूलता मे सहिष्णुता, सन्त जीवन का यही शास्त्र है। यही विधान है और यही सन्त जीवन की मर्यादा है।

❀ वे आज हैं, कल भी रहेंगे

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, जो कभी थे, पर आज नही रहे। नही रहे—इस अर्थ मे, कि उनका भौतिक शरीर नही रहा। परन्तु—वे नही रहे—यह स्वीकार करते, मन मे पीडा होती है। मन विद्रोह से भर उठता है—अपने श्रद्धेय के जीवन की सत्ता से इनकार करने से। हाँ, तो मेरा विद्रोही मन कहता है—वे हैं आज भी, वे रहेगे कल भी। माना, आँखे खोज कर भी उन्हे पा न सकेंगी। पर यह भी मे कैसे मान लूं, कि उनके पावन जीवन की समता, स्नेह शीलता, सहानुभूति और सहिष्णुता को, मेरा मन भूल कर भी भूल सकेगा? व्यक्ति रूप मे वे नही रहे किंतु गुण रूप मे वे आज भी हैं, और कल भी रहेगे। व्यक्ति तो मिट सकता है—क्योकि वह भौतिक है और भौतिक तो मिटने के लिए ही होता है। परन्तु गुण अमिट होता है, क्योकि वह अध्यात्म है, और अध्यात्म सदा शाश्वत रहता है, तो उनकी सत्ता से इनकार किसी अंश मे ठीक है, और उनकी सत्ता का इकरार भी किसी अश में सत्य ही है। मेरा मन कहता है—वे होकर भी नही रहे। मेरा

मन कहता है, वे नही हो कर भी है। भारतीय सस्कृति में सन्त-शरीर का मूल्य नही, सन्त गुण का मूल्य ही अधिक है।

❀ समर्पण भावना के सम्राट्

—मध्यम कद, सुघर शरीर, गौर वर्ण, धवल वस्त्रों मे मुस्कराता जीवन, सिर पर विरल-रजत-केश, आंखो मे तेज, वाणी मे ओज, और मन मे सत्य की खोज। जहाँ वैठना, मुस्कान भरा वातावरण। जहाँ जाना, मधुरता और सरसता विखेर कर ही लौटना। फूलो से उन्हे प्यार था, पर काँटों से उन्होने कभी द्वेष नही किया। व्यवहार मे वे कुसुम से भी कोमल थे, और कर्तव्य पालन मे वज्र से भी कठोर। स्वजन तो उनके लिए स्वजन थे ही परन्तु परजन को भी कभी उन्होने परजन न मानकर, स्वजन ही माना। सव उनके अपने थे, क्योकि जन-जन के मन-मन मे वे रम गए थे। जो सव का हो कर रहता है, उसके लिए स्वजनता तथा परजनता के वन्धन मिथ्या है। अपने मन, वचन एवं कर्म को जन-सेवा तथा जन-कल्याण के लिए समर्पित कर देना, वहुजन हिताय, वहुजन सुखाय ही अपना सव कुछ लगा देना, यह विरले ही सत्पुरुषों का काम होता है। सामन्य जन के वस का सौदा नही यह। उन मे यह सेवा एवं समर्पण भाव, साधक जीवन की प्रारम्भिक अवस्था से ही विद्यमान था। सेवा और समर्पण भावना का आदर्श, जीवन पर्यन्त उनके सम्मुख रहा, और इसी आदर्श की ओर वे सतत वढते रहे, विना झिझके, विना ठिठके और विना रुके। सभी के हित मे सोचना, सभी के हित में वोलना, और सभी के हित को ध्यान मे रख कर जीवन-व्यवहार चलाना ; उनका जीवन-मन्त्र था। उन्होने सव के हित मे अपना हित समझा और सव के सुख मे अपना सुख देखा। समर्पण भावना के वे सम्राट् थे। वे अपने जैसे आप थे। उनके मधुर जीवन की उपमा अन्यत्र दुर्लभ है।

❀ सफल जीवन के आधार विन्दु

—मुख मण्डल पर सदा मुस्कान थी। हृदय मे था, प्रेमामृत। वाणी से फूल बरसते थे। अपने काम को छोड़कर, दूसरो के काम को पहिले करना, उनके जीवन का यह मुख्य व्यवसाय था। मैं समझता हूँ–यह बात छोटी नहीं, बहुत बडी हैं। जीवन मे इतना हो सकना, आसान नही है। सफल जीवन के लिए, इतना भर काफी है। उक्त जीवन मे यह सब कुछ अभ्यास जन्य नही, बल्कि सहज सुलभ था।

❀ उनके प्रति हमारा कर्तव्य

—श्रद्धेय गणी जी महाराज की मधुर सस्मृति, स्नेह-शील स्वभाव, मिठास भरा व्यवहार, और उनकी सहज सौम्यता–यह एक ऐसी यादगार है, जिसको भूलना, कठिन ही नही, सर्वथा असम्भव है। अपने सुरभित जीवन की, जिस सुगन्ध को वे अपने पीछे छोड़ गए है, उसे संजो कर रखना, हम सबका कर्तव्य है।

—कानपुर : उत्तर प्रदेश :
२०—९—६०

[९]

श्रद्धेय गणी श्री जी :

एक महकता हुआ व्यक्तित्व :

मुनि श्री सुरेशचन्द्र जी–शास्त्री–साहित्यरत्न–

—श्रद्धेय श्री सुरेशचन्द्र जी महाराज एक बड़े ही जिन्दा-दिल सन्त हैं। आप मधुर वक्ता, मधुर गायक एवं मधुर लेखक हैं। श्रद्धेय कविरत्न उपाध्याय श्री अमरचन्द्र जी महाराज के आप शिष्य रत्न हैं। आप भी संस्कृत साहित्य मे-शास्त्री-और हिन्दी साहित्य मे-साहित्यरत्न- हैं।

—आपकी लेखनी एक अनूठे ही ढग से, गाती, इठलाती और कुछ-कुछ गुनगुनाती हुई चलती है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के महकते हुए व्यक्तित्व को, आपकी मधुर लेखनी कुछ इसी मजेदार चटपटे ढंग से परते हुए चलती है। जिस का मजेदार जायका पाठकों को अगली पक्तियों मे मिलेगा।

—सम्पादक

❀ एक महकता हुआ व्यक्तित्व

—यों तो सभी मरण के राही, एक रोज मर जाते हैं।
किन्तु धन्य वे, जो मर कर भी, अमर नाम कर जाते हैं॥

डाली पर फूल खिलता है, तो वह इधर-उधर—चारो ओर अपनी सुगन्ध बिखेर देता है। अपनी महक से आस-पास के वातावरण को महका देता है। किन्तु कब तक ? जब तक उसका अस्तित्व है। जब तक वह मौजूद है। जब तक वह खिला हुआ है। वह मुर्झाया, डाली से गिरा, मिट्टी मे मिला, तो उसके अस्तित्व के साथ ही, उसकी सुगन्ध का वह भण्डार भी लुप्त और वह महकती हुई दुनिया भी खत्म !

—परन्तु, इस जगति के मञ्च पर, कुछ आत्माएँ, एक ऐसे महकते फूल के रूप मे अवतरित होती हैं, कि जब तक वह मौजूद रहती है, तब तक तो उनका व्यक्तित्व और उनका अस्तित्व, जन-गण-मन को, अपने गुणो की महक से महकाता ही रहता है, अपने सौरभ दान से, जन-मानस को एक ताजगी देता ही रहता हैं। किन्तु आँखो से ओझल हो जाने पर भी, उनके जीवन के गुणो का, मधुर-मीठा सुवास, जन-जन के मन-मन को एक नव-चैतन्य एव एक नया जीवन प्रदान करता रहता है।

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का व्यक्तित्व भी, कुछ ऐसा ही उजागर था। दुर्भाग्य से, आज वह हमारी आँखो के सामने मौजूद नही हैं। परन्तु, उनके जीवन की, अपनी कुछ ऐसी निजी विशेषताएँ और उनके उदार व्यक्तित्व की कुछ ऐसी क्षमताएँ थी, जो आज भी हमारे मन-मस्तिष्क को महका रही हैं और रह-रह कर हमें उनकी याद दिला रही हैं। और यही तो जीवन का वास्तविक लक्षण है। इसी का नाम तो जिन्दगी है, दर असल, शायर भी तो इसी आवाज में बोल रहा है—

जिन्दगी ऐसी वना, जिंदा रहे दिल शाद तू।
जव न हो दुनिया मे तो, दुनिया को आए याद तू॥

सचमुच वह श्रमणसघ के एक उदार चेता सन्त थे। अभिमान उनको छू तक नही गया था। उनसे वातचीत करने पर, अपनत्व एव आत्मीय भाव की अनुभूति हो उठती थी। जो भी उनके सम्पर्क मे आता, वह उनकी उदारता, विनम्रता, सरलता, सौम्य स्वभाव, निश्छल वाणी तथा सेवा भावना की छाप, अपने हृदय मे लेकर लौटता था। उनकी सीधी-सादी मधुर-वाणी, मन को मोह लेती थी।

❀ शान्ति के देवता

—श्रद्धेय गणी श्री जी को, मुझे निकट–अत्यन्त निकट से देखने का सौभाग्य मिला है। वह शान्ति के देवता थे। जव भी देखिए, चेहरा खिला हुआ। एक सहज मुस्कान खेलती रहती थी, उनके चेहरे पर। चाहे कोई कुछ भी कह जाए, छोटा-वडा सन्त अथवा गृहस्थ, कोई भी ऊँची नीची वात वोल जाए, पर मजाल, जो उनके चेहरे पर एक भी शिकन आ जाए! सब कुछ होने पर भी, उनके दिमाग की मशीनरी गरम नही हो पाती थी। उनका मानसिक सन्तुलन, इधर उधर नही होता था। हँसते मुस्कराते हुए जहर को पी जाना, उन्हे अच्छी तरह आता था। आवेश, रोष तथा जोश किसे कहते हैं, यह शायद उन्होने न जाना था। वडे वडे गद्दी-धारी, पदवीधारी, सन्तों महन्तो को देखने का मौका मिलता रहा है मुझे। जरा से अपमान से तिलमिला उठते हैं, वे। जरा सी ऊँची-नीची वात से भृकुटियाँ तन जाती हैं, उनकी। जरा सी ठेस लगते ही वज उठते हैं वे शान्ति तथा क्षमा के अवतार! क्रियाकाण्ड की दण्ड-वैठक तथा कसरत करना और वात है, और अपने आप पर कावू पाना अलग वात है। दुनिया से हँसी मुस्कराहट के साथ मुलाकात करना आसान है, पर शान्ति और क्षमा भाव की लहरों मे रहकर, अपने जीवन के अन्तस्तल से,

अपनी हस्ती से मुलाकात करना, एक मुश्किल बात है। देखिए शायर क्या कह रहा है—

दूसरो से बहुत आसान है मिलना साकी।
अपनी हस्ती से मुलाकात बडी मुश्किल है॥

❀ सरलता के प्रतीक

—सरलता एवं भद्रता तो, उनके जीवन के कण-कण मे प्रतिबिम्बित हो उठी थी। जो अन्दर, वही बाहर। न किसी प्रकार का दुराव, न छुपाव। निश्छल बात के कहने मे, उन्हे मजा आता था, एक तरह से। मति भी सरल, गति भी सरल, आत्मा भी सरल, शील भी सरल, रहनी-करनी भी सरल, वार्ता-व्यवहार भी सरल, सरल आत्मा का सब कुछ सरल। ऐसी सरल-सहज स्थिति थी, उनके जीवन की। आचार्य की यह वाणी उनके जीवन का साकार रूप थी—

सरल मतिः सरल गति सरलात्मा, सरल शील सम्पन्न।
सर्व पश्यति सरल, सरलः सरलेन भावेन॥

सच पूछिए तो अन्तर में कुछ और वाहर मे कुछ—यह दोरगा रग उनके जीवन मे था ही नही। शव्दो तथा भाषा का हेर फेर उन्होने सीखा ही न था। मन की बात सीधी ओठों पर उतर आती थी उनके।

—एक बार गणी श्री जी महाराज काछवा-करनाल आदि क्षेत्रों मे धर्म-प्रचार कर रहे थे, अपनी शिष्य मण्डली के साथ। करनाल संघ ने चातुर्मास की विनती की, तो थोडा वहुत आश्वासन दे दिया होगा, उन्हे। विचरते, विहार करते हुए वे नारनौल आ निकले, पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज, उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज और उनके शिष्य परिवार के साथ साक्षात्कार करने के लिए। कुछ दिन तक स्थिति रही, वहाँ पर। सयोग से -करनाल- का सघ भी आ पहुँचा, अपनी वर्षावास

की विनती मनवाने के लिए। सब सत बैठ गए। करनाल का श्री सघ खड़ा हुआ, वर्षावास की विनती-अभ्यर्थना करने के लिए। पूज्य श्री के चरणो मे आग्रह कर ही रहा था श्री सघ, स्वीकृति के लिए। गणी श्री जी से न रहा गया। वे बीच मे अपनी ही सरल-निश्च्छल भाषा मे बोल उठे—अरे! चौमासा तो तुम्हारा करनाल ही मान लिया था, हमने। अब यह और विनती क्या कर रहे हो, तुम? इतना सुनते ही सब सन्त हँस पडे और विनती करने वाले भी लोट-पोट हो गये। हँसी-खुशी की लहर मे जय-जयकार का स्वर गूँज उठा। ऐसी सरल-भद्र आत्मा थी, वह। उनकी यह सहज निश्छल वाणी सदा याद आती रहेगी और भूले-भटके जिन्दगी के राहियो को राह दिखाती रहेगी।

तू चुप है, लेकिन सदियो तक, गूँजेगी सदाए-साज तेरी।
दुनिया को अन्धेरी रातो मे, ढाढस देगी आवाज तेरी॥

❀ सेवा की प्रतिमूर्ति

—सेवा की तो वह एक जीती जागती मूर्ति ही थे। यह उनका जन्मजात गुण था। वास्तव मे, सेवा के नाते, उनका हृदय बडा उदार था। अपने-पराये की कोई विभाजक रेखा न थी, उनके हृदय मे। और यह अधिकार की भाषा मे कहा जा सकता है कि उस उदारमना एव वरिष्ठ सन्त ने, इस क्षेत्र मे, समाज को, एक नई दीक्षा दी, एक नव शिक्षा दी, और एक नूतन दृष्टि दी। सेवा रत रहने पर भी कोई सन्त उन्हे, ऊँच-नीच बोल कह जाता, तो अपनी मधुर मुस्कान से, वे उसे भी अमृत बना लेते थे। उनके सेवा मार्ग मे वह वचन, जरा भी बाधा-बन्धन न बन पाता था। दूसरे सन्त उन्हे कह भी देते कि—मिल गया फल, सेवा करने का। आपको ही क्या पडी है, जो हर दम काम मे चिपटे रहते हो? उस समय वह मुस्करा कर कह उठते—अरे! ऐसी बातो का क्या खयाल करना? मनुष्य को

अपना कर्म करते चलना चाहिए। कवि की यह सृष्टि, उनकी दृष्टि मे शब्दशः अपने पूरे अर्थ के साथ, उतर गयी थी—

बदले मे क्या मिला न मैंने, इस पर कुछ भी ध्यान दिया है।
मैने अपना काम किया है, जग ने अपना काम किया है॥

प्रत्येक सेवा-कार्य को वे हृदय की सचाई, मन और प्राण की पूर्ण शक्ति के साथ करते थे। छोटे से छोटे काम मे भी प्राण डाल देने की कला उनको आती थी। जो करना सो अच्छा करना, अच्छे ढग से करना—यह उनकी जीवन नीति थी। उनका जीवन निरन्तर कर्मशील रहता था। किसी न किसी काम मे वह जुटे ही रहते थे। एक नयी रवानी थी, उनकी जिदगी मे। कभी उनको सन्त कह भी देते—महराज! अब तो आराम कर लो, थोडा चैन भी लिया करो, कभी। तो कहते—भाई!—निठल्ला नही बैठा जाता, मुझसे। मुझको कुछ न कुछ करते ही रहना चाहिए, जीवन मे। उस समय ऐसा प्रतीत होता था, मानो शायर की यह बात, उनके कण्ठ से फूट कर बाहर आ रही हो—

दरिया की जिन्दगी पर, सदके हजार जानें।
मुझको नही गवारा, साहिल की मौत मरना॥

—शरीर उनका जरूर बूढा हो चला था। पर मन अब भी जवान था उनका, ऐसा जवान, जो हजार-हजार नौजवानों को मात दे दे। वास्तव मे जीवन का आनन्द वही ले सकता है, जिसका दिल खुला हुआ हो और जवानी की उमगे जिसमे से फूट रही हो। कठिन से कठिन सेवा के मोर्चे पर भी, वह कभी घबराते नही थे, हिम्मत हारते नही थे।

एक बार हम कुछ सन्त, दिल्ली से चले, आगरे की ओर। दिल्ली से लगभग १२ मील दूर, वदरपुर पहुँचे, दुपहर को। वस्ती मे आहार-पानी का योग न मिल सका। नौजवानी का दम भरने वाले सन्तों की तो हिम्मत हिरन हो गई। परन्तु गणी श्री जी का

मानस, साहस की अँगडाई ले रहा था। वे बोले—अरे ! जब भिक्षु बन गये, मागने के लिए निकल पडे, तो फिर घबराना क्या ? लाओ, झोली मुझे दो। मैं लाता हूँ, आहार-पानी। एक सन्त को साथ लिया और जा पहुँचे दूर, रेलवे स्टेशन के क्वार्टरो मे। थोडी देर मे क्या देखते है कि आहार भी आ रहा है, और पानी भी आ रहा है। सब सन्त दग रह गये, उनके प्रबल पुरुषार्थ तथा अपूर्व कर्मठता को देखकर। उस सरल, शान्त, सौम्य एव सेवामयी मूर्त्ति के दर्शन अब कहाँ ! कवि ने सच ही कहा है—

आलमे-फानी मे यारो, चाल देखी है अजब।
इस जहाँ से जो गया, वैसा न आया फिर कोई ॥

—फरीदकोट : पंजाब :
२१—९—६०

[१०]

कोमल प्रकृति के सन्त :

श्री कस्तूर मुनि जी

—श्रद्धेय श्री कस्तूरचन्द्र जी महाराज, पूज्य गुरुदेव के प्रथम प्रशिष्य, तथा प्रखर वक्ता श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज के शिष्य रत्न हैं। आप एक तरुण तपस्वी सन्त हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की अध्यात्म-साधना की छाप आप के ऊपर काफी गहरी पड़ी है।

—पूज्य गुरुदेव के प्रति आप को असीम श्रद्धा है, भक्ति है, और है पवित्र अनुराग, एवं निश्छल स्नेह, यही कारण था कि श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की भी आप के ऊपर सात्त्विक ममतामय विशेष कृपा दृष्टि रही है। पूज्य गुरुदेव के स्वर्गवास से आप को हार्दिक खेद हुआ है, आपने उसी अनुभव को तथा पूज्य गुरुदेव श्री जी की कुछ महान् विशेषताओं को भावपूर्ण भाषा की लड़ियो में पिरोया है। जो लेख के रूप मे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

❀ वह घड़ी

—आखिर वह घडी जीवन मे आ ही गई। जिसे देखना तो क्या? जिस के सम्बन्ध मे हृदय ने कभी सोचा तक भी न था। अर्थात् वह वियोग घडी, जिस मे पूज्य गुरुदेव श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का, हम से हमेशा-हमेशा के लिए वियोग हो जाना बदा था। ६ मई सन् १९६० ईस्वी का दिन वास्तव मे एक अमगलमय दिन रहा, जिस दिन हमे, पूज्य गुरुदेव श्री जी के स्वर्गवास का समाचार न चाहते हुए भी सुनना पडा। वह विक्रम सम्वत् २०१७, वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार की मनहूस कठोर मध्यान्ह वेला ही थी, जो पूज्य गुरुदेव श्री जी को हमारे मध्य से हमेशा-हमेशा के लिए छीन कर ले गई और हम आंखे विस्फारित किए चकित एव स्तब्ध से देखते ही रह गए। श्रद्धेय पण्डित प्रवर श्री हेमचन्द्र जी महाराज और मै, मुनि द्वय उस समय करनाल(पजाब) मे थे। तार द्वारा जब गुरुदेव श्री जी के स्वर्गवास का समाचार प्राप्त हुआ, तो हृदय धक् से रह गया और मानस कि कर्तव्य विमूढ। इच्छा न होते हुए भी पुज्य गुरुदेव श्री जी के इस वियोग-विष के कडुए घूंट को पीना ही पडा। मन मे धैर्य एव सान्त्वना को स्थान देना ही पडा। वास्तव मे हमे स्वप्न मे भी ऐसा भान नही था कि ऐसा हो जावेगा, और गुरुदेव श्री जी के अन्तिम दर्शनो से भी हम वचित रह जावेगे। खैर—

मेरे मन कछु और है, विधि के मन कछु और।

❀ कोमल प्रकृति के सन्त :

—पूज्य गुरुदेव श्री जी क्या थे? उनके किन-किन गुणो का वर्णन करू? श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, एक कोमल प्रकृति के सन्त थे। उनका हृदय नवनीत से भी अधिक नरम एव कोमल था। जरा किसी को कष्ट मे या दु:ख-आपत्ति मे देखने, कि उनकी कोमलता द्रवित हो कर करुणा एवं परोपकार के

रूप मे वह निकलती, दूसरे के दु.ख से उन को घण्टो उदास रहते, हमने अपनी आँखो से देखा है। कोमलता उन के जीवन के कण-कण में परि-व्याप्त थी। वह स्वभाव सिद्ध कोमल-प्रकृति थे। इस के साथ-साथ सरलता, सौम्यता, नम्रता, मृदुता एव सेवा वृत्ति के संदर्शन भी हमे आपके जीवन मे होते थे।

—एक सच्चे साधक के जीवन मे जिन तल स्पर्शी सिद्धान्तो की आवश्यकता होती है, वे पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के जीवन मे अत्यन्त ठोस रूप मे विद्यमान थे। विष को अमृत के रूप मे परिवर्तित करने की महान् कला किन्ही विरले ही महापुरुषो को आती है। पूज्य गुरुदेव श्री जी इस कला के सिद्धहस्त कलाकार थे। विप के उन कटुक से कटुक सहारक घूँटो को आप अपनी तपःपूत साधना, एव प्राकृतिक भद्रता, सरलता एवं कोमलता द्वारा, जीवन के पोषक अमृत कणो के रूप मे बदल डालते थे। जिस प्रकार भोजन मे पड़ा हुआ कोयला या ककड़ अरुचि का प्रतीक होता है। भोजन करने वाला उस को देखते ही झट बाहर निकाल फैंकता है। उसी प्रकार आध्यात्मिक भोजन मे भी अपने-पराए की भावना कोयले के रूप मे ही सामने आती है, भेद-भाव ककड़ के रूप मे दृष्टिगोचर होता है तो ज्ञानी-जन उसे भी झट निकाल बाहर करते है। पूज्य गुरुदेव श्री जी ने भी इस अरुचि के प्रतीक कोयले या ककड को अपने सयम-भोजन से, सर्वथा निकाल फैंका था। उनके लिए सब अपने थे, पराया कोई नही। भेद भाव की सीमा रेखा तक आप पहुँच ही नही पाए थे। सरल जीवन, तत्वज्ञान की कसौटी है। पत्थर की कसौटी से जिस प्रकार सुवर्ण की परीक्षा होती है, उसी प्रकार मनुष्य के तत्त्ववेत्ता होने की परीक्षा, सरल जीवन से होती है। पूज्य गुरुदेव श्री जी इस परीक्षा मे बिल्कुल खरे उतरे थे, पूर्ण विशुद्ध, सौ टची।

❀ विनय एवं सेवा सम्पन्न

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के पवित्र चरणों मे रहने का सौभाग्य मुझे काफी मिला है। किशोर एव तरुण जीवन के अधिकांश-क्षण, उन्ही की पवित्र छत्रछाया मे व्यतीत हुए है। एक तरह से मेरे जीवन निर्माता, पूज्य गुरुदेव श्री जी ही रहे है। मैने पूज्य गुरुदेव श्री जी के जीवन मे जिस महानता के सदर्शन किए, उसे हृदय ही जानता है। पूज्य गुरुदेव श्री जी विनय एव सेवा की तो साक्षात् मूर्ति ही थे। जैन दर्शन के प्राण रूप मे जिस विनय धर्म का निर्देश, भगवान महावीर ने किया है वह आप के जीवन मे व्यापक रूप मे विद्यमान था। जीवन पर्यन्त आप श्री जी को किसी ने गर्वोन्नत नही देखा। आप छोटे से छोटे सन्त से भी वडे ही विनय से आलाप-सलाप किया करते थे।

—साधक के सन्मुख जब भेद-भाव या अपने पराए पन की दीवारे आ कर खडी हो जाती हैं तो उस का साधना मार्ग अवरुद्ध हो जाया करता है और लक्ष्य दूर। पूज्य गुरुदेव श्री जी ने इन दीवारो को जीवन की प्रारम्भिक दशा मे ही खण्डशः करके भूमिसात् कर दिया था। आप अपने पराए की सकुचित क्षुद्र परिधि से ऊँचे—वहुत ऊँचे उठ चुके थे। ६५-७० वर्ष की वयोवृद्ध अवस्था होते हुए भी आप श्री जी को भेद-भाव भुला कर सब की सेवा मे सलग्न रहते पाया है। सेवाभाव, एव धैर्य, साधक जीवन की वह महत्त्वपूर्ण ज्योति है, जो उस की साधना मे सच्ची चमक पैदा कर देती है। पूज्य गुरुदेव श्री जी का पवित्र जीवन इन ज्योति रश्मियो से आलोकित हो, जगमग-जगमग करता रहा है।

❀ अडिग साधक

—साधक को अपनी साधना के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधना के नाम पर वहुत कुछ भेट चढाना पडता है। साधना का विशाल गगनचुम्बी महाप्रासाद ऐसे ही तैयार नही हो जाता। जैसे मकान बनाने वाला कलाकार एक-एक ईंट को यथा स्थान मे जमा-जमा

कर दीवार तैयार करता है, उसी प्रकार साधक को भी अपनी साधना के महल को तैयार करने मे एक-एक कदम जमा-जमा कर अडिग एव दृढ रहते हुए ऊँचा उठाना होता है।

—यदि कोई मनुष्य नदी की तरगो को रोकता हुआ प्रवाह के विपरीत तैरने का अभ्यास करता रहे, तो समय आने पर वह समुद्र के विशाल-ज्वार-भाटे का मुकाबला भी कर सकता है। परन्तु यदि कोई तैराक शान्त टब मे ही तैरने का अभ्यास करे तो उससे ज्वार-भाटे के समय समुद्र मे तैरने की क्या आशा की जा सकती है? यही बात साधक के सम्बन्ध मे है। पूज्य गुरुदेव तो एक सच्चे अडिग साधक थे। वे आध्यात्मिक क्षेत्र के सच्चे तैराक थे। जीवन मे उन को, तैरने की महान् कला सम्प्राप्त थी। पूज्य गुरुदेव के सन्मुख विरोधी भावनाओ की अनेक प्रबल लहरे आई, पर वे उन का कुछ भी न बिगाड़ सकी। पूज्य गुरुदेव साधना मार्ग के अडिग, सच्चे पथिक थे। वे सब रुकावटो को, धैर्य के साथ निरस्त करते हुए अपनी साधना को पूर्णता की ओर ले गए। और अन्त मे आप श्री जी ने अपनी मजिल को प्राप्त कर ही लिया। ऐसे सरल और क्षमावान, अडिग साधक जीवन के चरणो मे, हमारा कोटि-कोटि वन्दन।

—जींद . पंजाब :

२८—८—६०

[११]

रूहानियत के पैगम्बर :

मुनि श्री कीर्तिचन्द्र जी —यश—

—श्री कीर्तिचन्द्र जी महाराज–यश–एक अच्छे लेखक और एक अच्छे कवि हैं। काव्य-कलन मे आपकी प्रतिभा का अच्छा प्रदर्शन होता है। आपके लिखने का ढंग अपना एक अलग ही वैशिष्ट्य रखता है। आप जिस ढंग से बात प्रारम्भ करते हैं उसी ढग और उसी भाषा में उसे अन्त तक ले जाते हैं।

—प्रस्तुत लेख मे आपने उर्दू भाषा और उर्दू काव्य के माध्यम से, चन्द अधखिली, सुवासित कलियाँ श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के पावन चरणो मे भेंट की हैं। इन विचार कलियों मे, क्या कुछ रूप-रग है? क्या कुछ आकर्षण-सौन्दर्य है? और क्या कुछ सुवास-पराग है? यह इनको देखने और सूंघने से ही पता चल सकेगा। प्रबुद्ध पाठक गण इसके लिए सहर्ष निमन्त्रित हैं।

—सम्पादक

❀ अहले दिल

—अपना जमाना आप बनाते हैं अहले दिल।
यह वह नही थे, जिनको जमाना बना गया ॥

पहाड़ की बुलन्दियो से निकलने वाले चश्मे को भला कौन रास्ता देता है ? कौन उसके लिए सडके बनाता है ? कोई भी तो नही। वह तो खुद ही इठलाता, गाता, मुस्कराता और पहाड़ की चट्टानो को चीरता, अडचनो को दूर करता हुआ, अपना रास्ता बनाता चलता है। वह तो जिधर से निकल गया, उधर से ही आगे-आगे, खुद ही उसका रास्ता साफ होता हुआ चला गया। भला, पुरनूर आफताब को मशरिक की क्या परवाह ? उसने तो जिधर से भी अपना चमकता हुआ सिर निकाला, वही मशरिक। इसी तरह अहले दिल भी अपना जमाना खुद बनाया करते हैं। वे जमाने के मोहताज नही हुआ करते, कि जमाना आये और उन्हे बना जाये ! बल्कि वे तो जमाने के तेज से तेज चलने वाले धारे को, अपने आहनी इरादो से मोम की तरह मोड दिया करते है। ऐसे ही अहले दिल, उर्दू शायर के शब्दों मे मस्ती के साथ गुनगुनाया करते हैं—

बहर मे रोक दें किश्ती जहाँ, साहिल हो जाय।
हम जहाँ रखदे कदम, बस वही मजिल हो जाय ॥

—इस पाक गगा और बुलन्द हिमालय के देश मे, हजारो लाखो हस्तियाँ कुछ ऐसी भी हो गुजरी हैं, जिनका दिल गंगा की तरह पाक-साफ और अज्म हिमालय की तरह मजबूत और बुलन्द था। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज जो अब माजी की एक आला रूहानी हस्ती बन चुके हैं वह ऐसे ही पाक-साफ, और बुलन्द इरादो के इन्सान थे। उन्होंने जमाने का इन्तजार नही किया कि वह उनको बनाये, बल्कि अपने जमाने को, अपनी जिन्दगी को, खुद अपने ही बल-बूते पर, अपनी

ही हिम्मत पर, अपने ही पाक अमल और सही इल्म के वजूद पर, उन्होने, बुलन्द से बुलन्द बनाया । श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, दरअसल, एक आला हिम्मत और सच्चे मर्द थे। दर हकीकत एक ऐसे मर्द—जो अपने आहनी इरादो एव फौलादी जज्बातो और कुव्वतो से जमाने तक को ही बदल डाले। उसे एक नया रग ही अपने औसाफ से दे डाले। जमाने के तेज से तेज चलने वाले धारे को, उन्होने एक दम मोडकर एक नया रूप दिया। एक नयी दिशा, एक नई शिक्षा-दीक्षा दी। त्याग-सयम, बाअमल इल्म और रूहानी जज्बातो को, अपनी जिन्दगी का एक मकसद ही बना लिया था उन्होने। जमाने ने उनको नही, बल्कि उन्होने जमाने को बदला। एक उर्दू शायर के शानदार लफ्जो मे—

लोग कहते हैं, बदलता है जमाना अक्सर।
मर्द वह है, जो जमाने को बदल देते है॥

❀ रूहानियत के पैगम्बर

—पैगम्बर रूहानियत के, आईनए-अमनो अमा।
देवता अखलाक के, तहजीब के शाहे जहा॥

कोई दुनिया मे न तेरा, दुश्मनो-बेगाना था।
सब से ही बर्ताव यकसा, और हम मर्दाना था॥

ऊपर लिखे गये उर्दू शायर के अल्फाज, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की रूहानी जिंदगी पर बिलकुल खरे उतरते हैं। दर असल श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव रूहानीयत के पैगम्बर ही थे। रूहानीयत के साथ तो उनके दामन और चोली जैसे ही तआल्लुकात थे। ऐसा मालूम होता था, कि रूहानीयत तो जैसे पूज्य गुरुदेव की जिंदगी के साथ-साथ ही पैदा हुई हो। पूज्य गुरुदेव के तिफ्लाना फैल तक रूहानी औसाफ से भरपूर होते थे। इतनी रूहानियत जो बडे-बडे पहुँचे हुए फकीरो और औलियाओ में भी मिलनी मुश्किल होती है; वह पूज्य गुरुदेव की

जिन्दगी मे बहुत ज्यादा तादाद मे मौजूद थी। पूज्य गुरुदेव तो सरापा रूहानियत ही थे। वह रूहानियत जिसकी तारीफ मे उर्दू शायर कलम तोडते हुए कह रहा है—

रूहानियत का अर्श से आगे मुकाम है,
रूहानियत कमाले-हकीकत का नाम है।
रूहानियत शराबे-मुहब्बत का जाम है,
रूहानियत में अमनो-सुकूं का पयाम है।।

रूहानियत वह एक ही जामे सुरूर है,
वहदत का आईना है मुसर्रत का नूर है।
इसकी तजल्लियो में झलकती है जिन्दगी,
इसकी लताफतो से महकती है जिन्दगी।।

रूहानियत की खुशबू से महकते हुए, जिन्दगी के रास्ते पर श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव अपनी सिर्फ ९ बरस की तिफ्लाना उम्र मे ही चल पडे थे। पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज की महरबानी से इल्म के भरपूर खजाने के मालिक वे बन बैठे थे। इल्म की रूहानी दौलत को पाकर पूज्य गुरुदेव ने १६ बरस की उम्र मे जवानी की शुरूआत मे ही, वा अमल फकीरी की राह पकड ली थी और मुस्तैद कदमों से वे अपनी रूहानी मजिल की जानिब बढ़ चले थे। १६ वरस की उम्र से ही, सच्ची दरवेशी तो, पूज्य गुरुदेव की रूहानी जिन्दगी का एक जुज ही बनकर रह गई थी। वह सच्ची फकीरी, जिसके सामने दुनियावी ऐशो-इशरत कुछ भी औकात नही रखते, पूज्य गुरुदेव ने सच्चे यकीन के साथ हासिल की थी। उर्दू शायर भी इसी वात को, इस तरह कह रहा है—

यकी पैदा कर ऐ वन्दे, यकी से हाथ आती है।
वह दरवेशी कि जिसके सामने झुकती है मगवूरी।।

फकीरी का पाक जामा पूज्य गुरुदेव ने सच्चे दिल से पहना था। इसी से ता उम्र आपने उसे तहे-दिल से निभाया भी, और खूब

शानदार ढग से निभाया। तभी तो आज दुनिया उन्हे अपना रहबर मानती है, उनको खुशी से सिजदा करती है, सर झुकाती है और उनका नाम लेना बाइसे-फख्र समझती है।

——वह फकर जिसकी शान के सामने, शाने-सिकन्दरी भी कोई चीज नही है। वह फकर जिसके मुकाबले मे, तख्तो-ताज लश्करो-सिपाह, मालो-जर, दुनिया की सब नेमते हेच ठहरती हैं। जिस फकर का मालिक शाहो का शाह है और बादशाहो का बादशाह। वह फकर श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की जिन्दगी मे लाइन्तिहा मौजूद था। वही फकर जिसकी तारीफ मे शायर कह रहा है——

निगाहे फकर के सामने, शाने सिकन्दरी क्या है ?
खिराज की जो गदा हो, वह कैसरी क्या है ?

फकर के हैं मोजजात, तख्त-ताज-लश्कर व जर व सिपाह।
फकर हैं मीरो का मीर, फकर है शाहो का शाह॥
न तख्तो ताज मे है, न लश्करो जरो सिपाह मे है।
जो बात मर्दे—कलन्दर की बारगाह में है॥
इल्म का मकसूद है, पाकिए अक्लो—खिरद।
फकर का मकसूद है, इफ्फते—कल्बो—निगाह॥

❀ तूफानों से खेलने वाले

—मजा चलने का चलने वालो से पूछो,
रोशनी क्या है ? जलने वालो से पूछो।
हल न होंगे किताबो से, जिन्दगी के सवाल,
इन्हे तूफान मे पलने वालो से पूछो॥

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव भी, तूफानो में पलने वाले और तूफानो से खेलने वाले, राहे-हकीकत के एक मुसाफिर थे। तूफानो और आंधियो से टक्कर लेने मे, दुखो पर काबू पाने मे उन्हे एक तरह

से बडा मजा आता था। वे कभी घबराये नही, झिझके नही, जरा भी ठिठके नही, अपनी मजिले-मकसूद की जानिब लगातार आगे—और आगे, कदम दर कदम बढते ही रहे, चलते ही रहे। हकीकत की राह, दर हकीकत बडी ही बेढब है। ऐसी पुर-खौफ कि जिस पर कदम रखते ही दिल दहल उठे। जहाँ कदम-कदम पर काँटे बिछे हुए हों, जहाँ हर एक गाम पर नुकीले ककड बिखरे हों, जहाँ मुह खोले बेरहम खार हर इंच पर रास्ता रोके खड़े हो, भला ऐसी मुश्किलातो से भरपूर राह पर कौन अपने कदम बढ़ाने की कोशिश करेगा ? गम की आँधियाँ और दुखों के तूफान जहाँ हर वक्त आते रहते हैं—ऐसी इस जिन्दगी की राह पर कोई इक्का-दुक्का हिम्मत वाला राही ही नजर आता है। नही तो यहाँ एक वीरानी सी ही छाई रहती है।

—लेकिन श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का तो कहना ही क्या ? वे तो इस राहे-हकीकत पर हँसते, मुस्कराते, खिलखिलाते और मस्ती के रूहानी गीत गाते हुए, आगे बढने वाले मुसाफिरो मे से थे। दुनिया के लोग, उनको इस राहे-हकीकत पर, बे डर और बे खौफ बढते हुए देख कर—अगुश्तबदन्दां-रह जाते थे। और अश्-अश् कर उठते थे। ऐसे ही हिम्मतेआला, जवामर्द इन्सां को देख कर ही तो शायर के गीत के बोल फडक उठे—

हवाएँ रुख बदलती हैं, कभी तूफान आते हैं,
कभी सर पर कयामतखेज बादल गडगडाते हैं।
कभी बर्क-बला चिघाड उठती है घटाओ में,
कभी हर सू अन्धेरा फैल जाता है फिजाओ में।
मगर वह पैकरे-हुस्ने-अमल वह पासवाँ अपना,
रफीके कामरा अपना अमीरे कारवाँ अपना।
खडा रहता है सीना तान कर और मुस्कराता है,
हर एक उठते हुए तूफान से आँखें मिलाता है॥

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव एक ऐसे ही आहनी जज्बातो के धनी इन्सान थे। कौन कहता है कि मौत का साया उन पर छा चुका ? कौन कहता है कि वे आलमे-फानी से चले गये ? नही, वे तो हमेशा जिन्दा ओ जावीद हैं। मौत उनका कुछ भी तो नही बिगाड़ सकती। वे हमेशा-हमेशा के लिए कायम हैं, अपने औसाफ से। उनकी मीनारे-जिन्दगी की रोशनी कभी भी मद्धम पडने वाली नही है, वह रोशनी कभी भी गुल होने वाली नही है। एक शायर उनके लिए यही तो कहता है—

दुनिया से बिला खौफ गुजरने वाले,
जुज हक के किसी से भी न डरने वाले।
तू जिन्दा ओ जावीद है ऐ रश्के-मसीह !
मरना कैसा ? कभी न मरने वाले ।।

❀ औसाफ के देवता

—मर्द खुश खू नही तो फिर क्या है ?
फूल में बू नही तो फिर क्या है ?

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के किस-किस वस्फ की तारीफ लिखूँ ? उनकी तो सारी जिन्दगी ही औसाफ की कान थी। खुशमिजाजी, जिंदा-दिली, खिदमतपरस्ती, नेक चलन और पाक अमल, किस-किस का अफसाना लिखने बैठूँ ? उनके एक-एक वस्फ की तारीफ में पोथे के पोथे और दीवान के दीवान लिखे जा सकते है ? फिर भी दो मतरे एक शायर के शब्दो मे दोहरा ही देता हूँ।

सखावत, शुजाअत, इबादत, रियाजत ।
हर इक वस्फ में तुझको थी काबलीयत ।।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की जिन्दगी एक महकते हुए फूल की जिन्दगी के मानिन्द थी। फूल की महक तो थोडी देर कायम रहती है। फूल के मुर्झाते-सूखते ही, उसकी हस्ती भी खत्म हो जाती है, लेकिन पूज्य गुरुदेव के औसाफ की खुशबू तो हमेशा-

हमेशा महकने वाली खुशबू है। वह उनकी जिन्दगी के वक्त भी थी, वह उनके चले जाने के बाद आज भी है और इसी तरह मुस्तकबिल भी उसकी महक से महकता ही रहेगा। क्या अपना, क्या पराया? सब पूज्य गुरुदेव के औसाफ की खुशबू से मुअत्तर रहे हैं और रहेगे। जैसा कि एक शायर ने कहा है—

फूल बन करके महक, तुझको जमाना जाने।
भीनी खुशबू को तेरी, अपना बेगाना जाने॥

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, सचमुच मे एक ऐसे ही हमेशा के लिए कायम रह कर खिलने वाले फूल बन कर, गुलशने-आलम मे महके थे। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की मिसाल किस से दी जावे? वे अपने जैसे खुद ही थे। एक शायर के शब्दो मे—

तेरी सूरत से किसी की नही मिलती सूरत।
हम जहाँ मे तेरी तस्वीर लिए फिरते हैं॥

औसाफ से चमकता चेहरा, नेक अमल से दमकती सोने सी देह। क्या मजाल? किसी की निगाहे ठहर सके। बेशक श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव इन्सान थे, लेकिन उन की जिन्दगी एक पुरनूर मेहरो-माह से भी बढ कर थी। तभी तो शायर को कहना ही पड़ा, आप को देख कर—

निगाह वर्क नही, चेहरा आफताब नही।
वह आदमी थे, मगर देखने की ताब नही॥

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के कौल और फैल, खुशी हो या गम, अकेले हो या लोगो के बीच मे, हर हालत मे, यकसां रहते थे। यह नही कि उन का दिल कुछ सोचे और जबान कुछ कहे। जबान कुछ कहे और फैल कुछ और ही कर गुजरे। नही, दिल-जबान-और अमल, यह तीनो ही हमेशा आप के यक्सा रहे हैं। तभी तो आप एक महान् पुरुष बन सके, पाकबातन कहला सके। शायर इसी लिए तो कहता है—

कौल और फैल से, खयालात हैं उन के यकसा।
पाक बातन जो जमाने मे हुआ करते है॥

कुदरत से एक ऐसा दर्द भरा दिल पूज्य गुरुदेव को मिला था कि जिस मे तमाम दुनिया का, दर्दो-गम समाया रहता था। जरा किसी को आफत मे देखा और आप तड़प उठे। जरा किसी को मुसीबत जदा पाया और आप का दिल बैचैन हो उठा। जब तक उस मुसीबत जदा का दु ख न मिट जाता, तब तक आप को चैन ही नही पडता था। आप सच्चे अशरफे उल मखलूकात थे। एक शायर के शब्दो मे—

कुदरत से मिला था तुझे क्या दर्द भरा दिल।
सर तुझ को झुकाते थे, जो दुनिया के थे काबिल ।।

दर असल मे पूज्य गुरुदेव की जिन्दगी हमेशा दूसरो के काम आती थी। खल्के-खिदमत को उन्होने अपना मकसदे-जीस्त बनाया हुआ था। पूज्य गुरुदेव को अपनी फिक्र नही बल्कि दूसरो की फिक्र ही सताया करती थी। वह भला जिन्दगी ही क्या ? जो सिर्फ अपने फिक्र तलक ही महदूद रहे। शायर इसी लिए जोरदार लफ्जो मे कहता है—

किसी के काम न आए, वह आदमी क्या है ?
जो अपनी फिक्र मे गुज़रे, वह जिन्दगी क्या है ?

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव इतने रहमदिल इन्सान थे कि रहमतो का फव्वारा उनके कल्बो-जिगर से हर वक्त छूटा करता था। जो भी शख्स श्रद्धेय-पूज्य गुरुदेव को जरा नजदीक से देख पाए हैं, उन्हे यह खूब अच्छी तरह मालूम है। पूज्य गुरुदेव शायर के शब्दो मे कहा करते थे—

दिखा सकेगी न हर्गिज जहा को अमन की राह।
सितमगरी की वह मशाल, जो दूद से है सियाह ।।

× × ×

आलमे-फानी मे जो इन्सान है।
रहम करना उस का दायम काम है ।।

× × ×

—सब्र और सुकून इस हद तक आप की जिन्दगी मे थे कि बस सिर्फ वाह-वाह ही कहते बनता था। एक शायर ने पूज्य गुरुदेव के सब्रो-शुक्र का खाका यों खींचा है—

शहीदाने वफा के हौसले थे दाद के काबिल।
वहाँ वह शुक्र करते थे, जहाँ पर सब्र मुश्किल था॥

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव क्या थे? और उन्होने अपनी औसाफ भरी जिन्दगी से और अपने पुर-सुकूं पैगाम से दुनिया को क्या सिखाया? क्या दिया? यह सब एक शायर के शब्दों मे ही इस तरह बयां है—

खुद आलिम थे और इल्म फैलाने वाले।
अमल से रहे नेक दिखलाने वाले॥

× × ×

तूने बतलाई जमाने को तमीजे नेको-वद।
तूने सिखलाया हमे, क्या चीज हैं ऐवो-सवाब?

× × ×

दी तालीम इन्सा को इन्सानियत की, जहालत को रस्ता बताया अदम का।
जमाने में छाई सदाक़त मुहब्बत, यह है फैज तेरे मुबारिक करम का॥

× × ×

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की जिन्दगी शुरू से आखीर तक पाक और साफ रही है। वे सदाकत की राह पर चल कर, मंजिले-हकीकत पर पहुँच गए और दुनिया के लिए दामने-गेती पर अपने नक्शे-कदम छोड़ गए, ताकि और भी कोई मुसाफिर इन नक्शे-कदम पर, कदम दर कदम चलता हुआ मंजिले-मकसूद तक पहुँच सके। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने दुनिया को हकीकी रूहानियत की वह जलती हुई मशाल थमाई; जिस की रोशनी मे दुनिया के लोग, बेखौफ, बिना ठोकर खाए, बिना इधर-उधर भटके सदाकत की रूहानी राह पर चल कर अपनी सही मंजिल को पा सके।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, अपने वस्फो से, अपने अमल से, अपनी शीरी कलामियो से, अपनी जिन्दादिली से, और अपनी पुर-मुहब्बत मीठी यादगारो से, आज भी हमारे सामने मौजूद हैं, और हैं

पूज्य गुरुदेव, स्मृति-
हमारे दिलो मे हमेशा-हमेशा के लिए कायम । वे दर हकीक़त आ
हम से जुदा होने वाले नही हैं । चूँकि मिट्टी का वना हुआ यह जिस्
ही तो फानी है, इन्सा के औसाफ तो फानी नही ? वे तो हर हालत
में हमेशा ही कायम रहने वाले हैं । मरने वाला सिर्फ आँखो से ही
दूर होता है, लेकिन विल्कुल फना तो वह नही होता । अपने औसाफ
से, अपने नाम से और अपने कौल और फैल से तो वह इस दुनिया
में कायम रहता ही है । इसी तरह श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के लिए भी
यही कहा जा सकता है कि वे हमारी सिर्फ आँखो से ही दूर हुए है
दिलों से दूर नही । वह दिलो मे तो हमारे, ज्यो के त्यो मौजूद हैं ।
और सदियो तक मौजूद रहेगे ही, इसमे जरा भी सन्देह की गुंजायश
नही है । वस अव तो मैं उर्दू शायर सर इकबाल के लफ्जों मे
आखिरी वात कह कर, उस रूहानियत के पैगम्बर श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव
को अपनी श्रद्धा की चन्द अधखिली कलियाँ, भेंट करता हूँ—

मरने वाले मरते हैं लेकिन फना होते नही ।
ये हकीकत मे कभी हम से जुदा होते नहीं ॥

लोहामण्डी, आगरा : उत्तर प्रदेश
१४—१०—६०

[१२]

वे महामानव थे :

श्री उमेश मुनि जी

—श्री उमेशचन्द्र जी महाराज, एक फक्कड़ तबीयत के मस्त, युवक संत हैं; बेखौफ, बेपरवाह। क्या शानदार तबीयत पाई है आपने? आप श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के तृतीय प्रशिष्य, एवं पण्डितवर्य श्री हेमचन्द्र जी महाराज के शिष्य रत्न हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए प्रस्तुत लेख मे, आपने उन्हें एक महामानव के रूप में देखा और देखा दिव्य पुरुष एक सच्चे सन्त के रूप में। उन्हीं, दर्शन, चिन्तन, मनन एव अनुभवों को, आपने सुन्दरतम शब्दों का रूप दिया है। विचारों की कड़ियों की लड़ियों का हार बना कर रख छोड़ा है मुनि जी ने। पाठक इसे सहर्ष पहन सकते हैं।

—सम्पादक

❀ प्राणी की जीवन कहानी

—जीवन और मृत्यु, मृत्यु और जीवन— यही तो है संसार के हर प्राणी के जीवन की राम कहानी। जिसमे–हर्ष-शोक, हास्य-रुदन, प्रेम-विद्वेष, कोमलता-कठोरता तथा भय और निर्भयता आदि, अनेक उतार-चढावो का ताना-बाना, आना-जाना बना ही रहता है। यही वह धुरी है, जिसके चारों ओर, अधिकाश जीवन-गाड़ी के पहिये, घूमा करते हैं। हर्प की सुखद लहरो मे बह कर, मानव-मन, अनेक सुख-सकल्पो की सेज सजा, उस पर ही दिन-रात, करवटे वदलता रहता है। उस समय, वह एक मदहोशी की सी हालत मे अपनी आस-पास की दुनिया को भूलकर, कि कहाँ क्या हो रहा है? किस का जीवन, किस रंग-ढग और किस साँचे-ढाँचे मे, चल-ढल रहा है? अपनी ही भौतिक पिपासा की, सुखानुभूति का रस पी, अपने आप को उन्मत्त वनाए, धन्य माने रहता है।

—और जव कभी, शोक की ज्वालाएँ, उसे सतप्त कर, उसके इस रस को सुखा डालती हैं, तो वह अपने अन्तर मे, एक नीरसता, वेकरारी और वेजारी सी अनुभव करने लगता है। आज का अधिकांश मानव गण, अपने आप मे ही बन्द रहना पसन्द करता है। कारण स्पष्ट है, वह अपने चारो ओर, स्वार्थों का एक जाला जो पूर लेता है, मकडी की तरह। फिर वह उसी मे वन्द हो, छटपटाते अपने जीवन-छकडे के भार को आगे के लिए ले, गिरता-पड़ता चलता रहता है।

❀ सच्चा जीवन

—ऐसे प्राणी आते हैं, और चले जाते हैं। कोई उनका नाम तक नही जान पाता, कोई उनके जीवन की दास्तान से परिचित तक नही हो पाता। यह भी भला कोई जीवन है? सच्चा जीवन तो वह है, जो इत्र की तरह महकना जाने। शीशी मे वन्द रहे, तव भी महकता रहे। और अगर मिट्टी में भी मिल जाए, तो भी वहाँ के वातावरण को

अपनी भीनी-भीनी सुगन्ध से सुवासित करता रहे। जीवन इसी का तो नाम है। हीरा टूट जाने पर भी अपनी चमक-दमक को बरकरार रखता है। इसी प्रकार वास्तविक सच्चा जीवन वही है, जो सांसारिक दृष्टि से टूट जाने पर भी, अपने अनुभव के प्रकाश से, आने वाली पीढी का जीवन-पथ आलोकित करता रहे। एक उर्दू शायर के शब्दो मे यो समझ लीजिए—

अतर की मिट्टी मे मिलकर भी महक जाती नही।
तोड भी डालो तो हीरे की चमक जाती नही॥

❋ एक खूबी

—तो, जिस महान् आत्मा महामानव के सम्बन्ध मे, मैं आपको कुछ बतलाने का संकल्प ले, यह चन्द पंक्तियाँ लिख रहा हूँ—जो आज हमारे बीच पार्थिव शरीर से नही रहे—उनका शुभ नाम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज था। मँझोला कद, गौर वर्ण, उन्नत ललाट, सदा स्नेह और सौहार्द का वर्षण करते नेत्र, और मुस्कराता हुआ सौम्य मुखमण्डल; सहसा ही देखने वालो को अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। इस से भी बढकर था, उनका निश्छल और सरल हृदय। जिसमे—हर छोटे-बड़े के प्रति निश्छल स्नेह और अकृत्रिम सौहार्द, की धाराएँ प्रवाहित रहती थी। जो भी एक बार उनके पास पहुँच गया, बस वह उन्ही का हो कर रह गया। उनकी, शान्त, सरल, स्नेही प्रकृति हर एक छोटे-बड़े को अपना बना लेने की सामर्थ्य रखती थी।

—वे जब भी जिससे भी मिलते, मुक्त हृदय से मिलते। यह उनकी अपनी एक विशेषता थी। आज का युग जब कि कृत्रिमता और पॉलीसी का युग है,—और दुर्भाग्य से, आज हमारा कुछ साधु-समाज भी, जिसका शिकार होता जारहा है—तब भी वे इन बातो से हजारो कोस दूर रहते थे। उनका कहना भी, यही होता था कि इन्सान जब इन्सान से मिले, तो मन, मस्तिष्क के, दरवाजे खोलकर मिले। दिल से दिल

खोलकर, अगर नही मिला जाता, तो इससे बेहतर यही है कि हम एक दूसरे से मिलने का, व्यर्थ दिखावटी प्रयत्न ही क्यो करें ? एक उर्दू शायर के शब्दो मे, वे कहा करते थे—

जव मिलें, जिससे मिलें, दिल खोलकर, दिल से मिलें ।
इस से बढकर और कोई, खूवी इन्सा मे नही ॥

❀ सच्चे सन्त

—जिन्हें गुरुदेव को, निकट से देखने का, सौभाग्य प्राप्त हुआ, वे उनकी सरलता, सौम्यता, और उदार हृदयता से प्रभावित हुए विना नही रहे। यदि मुझे और स्पष्ट शब्दो मे कहने का, अवसर दिया जाय, तो मै कहूँगा—गुरुदेव, भारतीय संस्कृति की सन्त परम्परा के एक सच्चे सन्तहृदय सन्त थे। आज के, भौतिकता प्रधान युग मे भी, भारत की सन्त-परम्परा अपना स्वतन्त्र महत्त्व बनाए हुए है। आज की भौतिकी शक्ति, जबकि वड़े-वड़े दूरमारक अस्त्र-शस्त्रो, राकेट और स्पूतनिक आदि के, भयंकरतम विनाशक रूप में, प्रस्फुटित हो रही है, तव भी, भारतीय परम्परा के सजग प्रहरी सन्त, अपनी अध्यात्म-साधना के, अनुभवों द्वारा, भारतीयो के मन-मस्तिष्क को इस महाविनाश की काली छाया से दूर रखने मे प्रयत्नशील हैं। वे मानव-मन की धारा को अध्यात्म और विश्व-वन्धुत्व की ओर मोड़ देना चाहते हैं। और इसी दिशा मे वे यथा शक्ति प्रयत्नशील भी है। उनके प्रत्येक कार्य के पीछे, सर्व जन सुखाय, और सर्व जन हिताय का नारा बुलन्द रहता है।

❀ वसुधैव कुटुम्बकम्

—यह भारत की, सन्त परम्परा, कोई आज की नवीन परम्परा नही है। यह अति प्राचीन काल से, देश-जाति के बन्धनों से मुक्त, जन-मन-गण मे, नव जागरण की ज्योति, जगाती चली आ रही है। परन्तु, यह हमारा दुर्भाग्य ही, कहा जाएगा, कि इस, उदार-

हृदयी सन्त परम्परा को पाकर भी हम आज उसके अनुयायी ही, सम्प्रदायवाद और पन्थवाद के संकीर्ण दायरे मे, बन्द होते चले जा रहे हैं। फिर भी–वसुधैव कुटुम्बकम्—की विराट भावना रखने वालो का सर्वथा अभाव नही है।

—पूज्य गुरुदेव, श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज भी, इसी विराट एव विशाल भावना वालों मे से एक थे। उनका सभी से प्रेम था। उनके अन्तर हृदय मे, प्राणी मात्र के विकास और उन्नयन की प्रेममयी लहरे लहराती थी। वे सब को प्रसन्न चित्त, हँसमुख और सुखी देखने की भावना, कामना अपने हृदय मे सदा संजोये रहते थे। उनका कहना और करना भी, इसी दिशा मे होता था। कवि जयशंकर प्रसाद के शब्दो मे—

औरो को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर दो, सब को सुखी बनाओ॥

वास्तव में यदि देखा जाय तो एक सच्चे सन्त के अन्तर्मन की यही आवाज होती है। वे अपनी अध्यात्म साधना के साथ-साथ यत्र, तत्र, सर्वत्र सुख शान्ति, विश्व बन्धुत्व और विश्व मैत्री का, साम्राज्य स्थापित करने मे, अपने जीवन तक की बाजी लगा देते हैं।

—परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज भी इसी सन्त परम्परा की एक सुदृढ़तम कड़ी के रूप मे थे। उन्होने अपने जीवन काल मे अध्यात्म-साधना के साथ-साथ, जन-मन-गण को नव जागरण की अमर ज्योति भी प्रदान की थी। अध्यात्म परम्परा के सन्त होते हुए भी, उनके हृदय मे समाजोत्कर्ष की भावनाएँ, सदा अठखेलियाँ किया करती थी। समाजोत्थान के, महा यज्ञ मे उन्होने समाज द्वारा प्रदत्त शास्त्रीय 'गणी पद' के सहर्ष त्याग की, आहुति डाल कर, अपनी उदारता का महान् परिचय दिया था। इसी प्रकार के, समाजहित कार्यो से, गौरवान्वित है, उनकी जीवन-गाथा।

❀ वास्तविक श्रद्धाञ्जलि

—ऐसे ही महान् भारतीय त्यागी सन्तो के, महान् जीवन से प्रकाश लेकर, आज हम भी, अपना जीवन-पथ, आलोकित कर, निःश्रेयस और कल्याण के राजमार्ग पर, आगे—निरन्तर आगे बढ़ सकते हैं। ऐसे ही महापुरुषो का जीवन, हमारे लिए महान् आदर्श उपस्थित करता है। जिस महान् आदर्श को प्राप्त कर, हम भी अपनी मजिल पर आगे वढें और उसे प्राप्त कर सकें। यही है उन महान् पुरुषो के प्रति दी गई वास्तविक श्रद्धाञ्जलि। महापुरुषों के जीवन, हमारे लिए, क्या प्रेरणा प्रदान करते हैं? यह एक कवि की भाषा मे उद्धृत कर, मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ—

जीवन चरित महापुरुषो के,
हमें यह शिक्षा देते हैं।
हम भी अपना-अपना जीवन,
स्वच्छ-रम्य कर सकते हैं।।

फरीदकोट पंजाब :
१२—६—६०

[१३]

सरलता एवं विनय की मूर्ति :

आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज

—जैन धर्म दिवाकर, साहित्य रत्न, जैनागम रत्नाकर, आचार्य सम्राट, पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज, श्री वर्द्धमान स्थानक वासी जैन श्रमण संघ के एक मात्र आराध्य आचार्य देव हैं। जैन समाज का बच्चा-बच्चा आप श्री जी से सुपरिचित है। आप श्री जी को प्रकृति से बड़ा ही मधुर एवं आकर्षक व्यक्तित्व मिला है। परम गम्भीरता के साथ-साथ हास्य एव विनोदप्रियता भी आप श्री जी के स्वभाव का एक महत्त्व-शील अग है।

—लगभग २५-२६ वर्षों से श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के साथ आप श्री जी के मधुर सम्बन्ध रहे हैं। अपनी-अपनी शिष्य मण्डली सहित दोनों महान् पुरुष महीनों-महीनों लगातार साथ-साथ रहे हैं, विचरे हैं और एक वार ही नहीं अपितु अनेक वार ऐसे शुभावसर सम्प्राप्त हो चुके हैं। अत-एव परम श्रद्धेय आचार्य श्री जी ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को काफी निकट से देखा है और उन की विशेषताओं को काफी नजदीक से परखा है। उन्हीं विशेषताओं मे से दो प्रमुख विशेषताओ का वर्णन आप श्री जी ने प्रस्तुत लेख मे किया है।

—सम्पादक

❀ सरल हृदय

—साधना के क्षेत्र मे, सरलता का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

सरलता शून्य साधना, साधना नहीं ढोग है, पाखण्ड है और आत्म प्रवञ्चना है। सच्ची मानवता प्राप्त करने के लिए सर्व प्रथम सरलता को ही, जीवन-स्वभाव मे स्थान देना होता है। शास्त्र-कारो ने सच्चा मानव कहलाने के जो चार कारण दिये है, उन मे सब से पहला—पगइ भद्दियाए—अर्थात्—प्राकृतिक यानी स्वाभाविक भद्रता=सरलता है। ऋजुता=सरलता साधुत्व का मूल है। इसके अभाव मे साधुता का चरम विकास होना शक्य नही है। आगम मे कहा है—

माइ मिच्छा दिट्ठी, अमाइ सम्म दिट्ठी।

—अर्थात्-कपट छल एव माया से युक्त व्यक्ति मिथ्या-दृष्टि है और छल प्रपञ्च से दूर रहने वाला सरल एवं सरस हृदयी व्यक्ति सम्यग्दृष्टि है। सरल जीवन मे ही धर्म स्थिरता पाता है। शास्त्र वाक्य है—

सो हि उज्जुय भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ।

—अर्थात् शुद्ध एव सरल जीवन मे ही धर्म स्थान पाता है, स्थिर रहता है। सरल जीवन मे ही त्याग, वैराग्य एव सयम-साधना के बीज अकुरित, पल्लवित, पुष्पित एव फलित हुआ करते हैं।

—मुनि श्री श्यामलाल जी—जो पहले पूज्य आचार्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज की सम्प्रदाय के गणी थे, एक सरल सरस एव उदार हृदय के साधु थे। वे सब के साथ प्रेम, स्नेह मे घुल मिल जाया करते थे। अपरिचित व्यक्ति को भी अपनी ओर आकर्षित करने की कला मे वे प्रवीण थे। उन की स्नेह-सुधा-सिक्त-सरलता आज भी याद आती है। ऐसे सरल हृदय सन्त के वियोग से जो क्षति जैन समाज को हुई है, उस

की सहज ही पूर्ति होनी कठिन है। उन को सहज सरलता से आज भी मानव प्रेरणा प्राप्त कर सकता है।

ॐ विनय मूर्ति

—आत्म साधना के विद्यार्थी को, अ आ के रूप मे सर्व प्रथम, विनय का ही पाठ सीखना होता है। जिस प्रकार वर्णमाला के अकार आदि अक्षर कण्ठस्थ करने के पश्चात् ही विद्यार्थी विद्या-क्षेत्र मे आगे बढ सकता है उसी प्रकार साधना क्षेत्र के विद्यार्थी को भी आद्याक्षरों के रूप मे विनय-नम्रता एव मृदुता आदि को आत्मस्थ करना पड़ता है, तभी उस की अध्यात्म साधना आगे बढ़ सकती है। विनय-शून्य साधना, आत्म साधना तो कदापि नही कहला सकती, भले ही वह कुछ अन्य कहलाती रहे। शास्त्रकारों ने विनय को ही धर्म का मूल माना है जिस का आराधन करने से सब कुछ सम्प्राप्त हो सकता है। परन्तु जब मूल ही नही होगा तो फिर शाखा प्रशाखा कहाँ ? छिन्ने मूले कुत शाखा ? भगवान महावीर वृक्ष के मूल (जड़) से विनय की तुलना करते हुए कहते हैं—

मूलाउ खधप्पभवो दुमस्स, खदाउ पच्छा समुविंति साहा।
साहाप्पसाहा विरुहति पत्ता, तओ सि पुप्फ च फल रसो य ॥

× × × ×

एवं धम्मस्स विणओ, मूल परमो से मुक्खो।
जेण किंत्ति सुय सिग्घ, नीमेसं चाभि गच्छई ॥

—अर्थात् जिस प्रकार वृक्ष के मूल=जड से स्कन्ध=धड़ उत्पन्न होता है। इसके पश्चात् स्कन्ध से शाखाएँ उत्पन्न होती हैं, शाखाओ से प्रशाखाएँ और उन से पत्ते निकलते हैं। फिर उस वृक्ष मे क्रमश. फूल फल और रस उत्पन्न होता है।

× × × ×

—उसी प्रकार धर्म रूपी वृक्ष का मूल विनय है और उस का अन्तिम सर्वोत्कृष्ट फल मोक्ष है। उस विनय रूपी मूल द्वारा साधक इस लोक मे कीर्ति और द्वादशाग श्रुत ज्ञान को प्राप्त करता है। तत्पश्चात् क्रमश. नि श्रेयस रूपी मोक्ष को भी प्राप्त कर लेता है।

—श्रद्धेय मुनि श्री श्यामलाल जी, तो साक्षात् विनय मूर्ति ही थे। वे विनयशीलता का महान् पाठ अपने जीवन के प्रारम्भिक काल मे ही पढ चुके थे। विनय धर्म को उन्होने भली प्रकार से समझ लिया था। और यह विनय धर्म अब उनकी रग-रग मे, जीवन के कण-कण मे परिव्याप्त था। गणी जैसी शास्त्रोक्त महान् पदवी प्राप्त हो जाने पर भी गर्व की एक धूमिल रेखा तक आपके जीवन को स्पर्श नही कर पाई थी। यही कारण था कि वे सर्व-जन प्रिय थे। उनका माधुर्य एव विनय शील जीवन जनता को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। विनय की उस मजुल मूर्ति को जो भी एक बार देख लेता था, वह उसे फिर जीवन पर्यन्त नही भुला पाता था। उन का स्नेह, माधुर्य एव विनय पूर्ण व्यवहार हमे आज भी याद आता है। यही कामना है, यह स्मृति अक्षुण्ण बनी रहे।

—लुधियाना पजाब :
८—६—६०

[१४]

श्रद्धेय गणी जी महाराज के प्रति :

प्रधान मन्त्री, श्री मदनलाल जी महाराज

—नवयुग सुधारक, व्याख्यान वाचस्पति, श्रद्धेय श्री मदनलाल जी महाराज एक परम तेजस्वी सन्त हैं। अखण्ड श्रमण संघ के आप प्रधान मन्त्री हैं। समाज-उत्थान एवं जन-कल्याण मे आप अग्रणी हैं। आपकी महान् विशेषताओं से जैन संसार सुपरिचित ही है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के साथ आपके बहुत प्राचीन काल से मधुर सम्बन्ध रहे हैं। अनेक वर्षों तक साथ-साथ विचरण हुआ है। अनेक शिष्य दीक्षाएं भी साथ-साथ ही हुई हैं। श्रद्धेय वाचस्पति जी महाराज ने पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, चन्द शब्दों में ही बड़ी महत्त्व पूर्ण बात कह दी है। वह कौन सी बात है? यह अगली पंक्तियों में पढिए।

—सम्पादक

❀ देना और लेना था

—श्रद्धेय, शान्त मुद्रा, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का वियोग अक्समात् हो गया। हुआ तो वही, जो होना था। परन्तु पीछे एक बात रह गई कि हम उनकी अन्तिम विदा के समय न उनको कुछ दे सके और न उनसे कुछ ले सके। देने को तो अपने पास थी केवल एक मूक श्रद्धा, पर लेने को तो बहुत कुछ था। अब तो यही हो सकता है कि उस श्रद्धा को हम हृदय में संजोये रक्खे और उनसे जो कुछ लेना था, वह स्मृतियो में पडे, उनके पावन प्रसंगो से ग्रहण करे।

सोनीपत मण्डी : पंजाब :
१८—८—६०

[१५]

गुण ग्राहक सन्त :

मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज

—शेरे-पंजाब जैन भूषण श्रद्धेय मंत्री श्री प्रेम चन्द्र जी महाराज, एक जाने, माने, पहिचाने, प्रसिद्ध सन्त हैं। आपकी वाणी में जादू और दिल में शेर के जज्बात मौजूद हैं। प्रसिद्ध वक्ता मुनिराजों में आप श्री जी का प्रमुख स्थान है। आप अपनी पंजाब सम्प्रदाय के पूर्व में उपाध्याय रह चुके हैं तथा वर्तमान में श्रमण संघ के मन्त्री पद पर अधीष्ठित हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आप श्री जी ने बड़े ही मधुर शब्दों में श्रद्धाञ्जलि समर्पित की है। अपने चिन्तनपूर्ण अनुभवों के आधार पर पूज्य गुरुदेव की कुछ विशेषताओं का दिग्दर्शन आपने प्रस्तुत लेख मे कराया है। जिसका मर्म पाठक गण, पढ़कर ही समझ सकते हैं।

—सम्पादक

❀ गुण ग्राहक

—इस विनश्वर ससार मे प्रकृति भगवती का अनन्त-अनन्त काल से अटल नियम चला आता है कि विश्व मे जितने भी सूक्ष्म और स्थूल, जड तथा चेतन पदार्थ है, वे सब पर्याय की अपेक्षा से परिवर्तनशील है। ऐसा कोई भी पदार्थ नही है जिसका परिवर्तन न होता हो। जहाँ जन्म है, वहाँ उसके पीछे मृत्यु भी है। जहाँ खुशी है, कालान्तर मे वहाँ गम भी हैं। जहाँ नवजीवन प्रदाता वसन्त है, तो वहाँ जीवन को कुम्हला देने वाली पतझड भी है। जहाँ बहारे है, वही खिजा भी है। यदि मेदिनी को हरियाली से सुशोभित करने वाली प्रावृट् ऋतु है, तो उसके प्रतिकूल ससार को सतप्तकर, हरियाली के सौन्दर्य को झुलसा कर, नष्ट-भ्रष्ट कर देने वाली ग्रीष्म ऋतु भी है। सारांश यह है कि इस प्रकार के परिवर्तनशील द्वन्द्व, परम्परा से चले ही आए है और चलते ही रहेंगे। यह कोई नई बात नही है। किन्तु यही ससार के परिवर्तनशील समस्त पदार्थ, गुण-ग्राहक एव विवेकी मानव को, सम्बोध का पाठ भी-पढाते हैं। मानव जीवन मे एक नई चेतना, नए जागरण का सचार भी कर सकते है। बशर्ते कि वह इन्सान गुण ग्राहक हो। अपने हृदय की आँखे खोले हुए हो। उन की बुद्धि इस शिक्षा को ग्रहण करने के लिए उत्सुक हो। उसका विवेक जागृत हो, और वह प्रकृति के इस पाठ को सहर्ष सीखने के लिए तैयार हो। कहा भी है—

जर्रे जर्रे मे हजारो राज हैं।
पत्ते-पत्ते मे हजारो साज है॥

× × ×

मआरफत के राज़ से पत्ता कोई खाली नही।
मआरफत के फूल से खाली कोई डाली नही॥

× × ×

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज, एक ऐसे ऐसे ही गुण-ग्राहक सन्त थे। उनकी विवेक दृष्टि, प्रत्येक पदार्थ से अपने लिए प्रेरणा प्राप्त कर लिया करती थी। उनका सरल एव गुण-ग्राहक-हृदय प्रत्येक वस्तु से अच्छाई ग्रहण कर लिया करता था। उन महापुरुष के ज्ञान नेत्र हर समय खुले रहते थे, और विवेक प्रतिक्षण जागरूक। तभी तो वे अपने जीवन मे, वह चमक पैदा कर सके, जो उनके तिरोहित हो जाने पर भी, आज उसी प्रकार से ज्योतित है, चमक रही है, और अपूर्व प्रकाश प्रदान कर रही है। जीवन के राज को, प्रकृति के रहस्य को वे पूर्णतया समझ चुके थे। तभी तो उनका जीवन एक आदर्श जीवन बन सका, और उनके काय आदरणीय, आचरणीय और स्पृहणीय।

❀ सफल साधक

—दूर न हो कोई कभी, वह उपाय है कौन ?
यही प्रश्न है विश्व मे, यही विश्व है मौन ॥

वास्तव मे यह अनादिकालीन सिद्धान्त है कि जो मिलता है, वह अवश्य बिछुड़ता भी है। जो उदय होता है, वह अवश्य छिपता भी है। जिसका जन्म है, उसी का मरण भी निश्चित है। किन्तु इस अनित्य जीवन मे श्रेष्ठ यही है कि इस जीवन को स्व तथा पर के कल्याण में लगा दिया जाय। यो साँसे लेकर, धड़कन गिन कर तो सभी जीते हैं। किन्तु यह जीवन भी कोई जीवन है ? जीवन वह है जो आत्म-साधना और जन-हितार्थ-अर्पित हो जाता है। वास्तव मे वे ही सफल साधक हैं, जो इस जीवन से पूर्णतया स्वय लाभ उठाते है और ससार को लाभान्वित कर जाते है। उन्ही के झण्डे दुनियाँ मे हजारों-लाखो वर्षो तक लहराया करते हैं। कहा भी हैं—

जिन्दगी ऐसी बना जिन्दा रहे दिल शाद तू।
जब न हो दुनिया में तो दुनिया को आए याद तू ॥

× × ×

नही वह ज़िन्दगी जिसको जहाँ नफरत से ठुकराए।
नही वह ज़िन्दगी जो मौत के कदमो पे गिर जाए॥
वही है ज़िन्दगी जो नाम पाती है भलाई मे।
खुदी को छोडकर जो पहुँच जाती है खुदाई मे॥

× × ×

मुबारिक है जो दिल मे दूसरो का दर्द रखते है।
जो आँसू आँखो में और लब पे आहे सर्द रखते हैं॥

—जिस प्रकार रात्री के समय आकाश मण्डल मे असंख्य तारे उदय होकर खिलखिलाते हैं, और अपनी चमक-दमक दिखलाकर अन्ततः निशान्त काल मे विलीन हो जाते हैं; बस इसी प्रकार इस पृथ्वी तल पर अनन्त-अनन्त प्राणी आते हैं, और अपनी छटा दिखला कर चले जाते हैं। किन्तु ससार मे सफल साधक वही गिने जाते है जो अपने जीवन को सयम-साधना मे लगाते हुए एक पवित्र एव उज्ज्वल आदर्श स्थापित कर जाते हैं।

—उन्ही सफल साधकों मे, स्वर्गीय श्रद्धेय श्री श्यामलालजी महाराज का नाम आता है। उन्होने अपनी निर्मल सयम-साधना द्वारा अपना तो उत्थान किया ही, किन्तु ससार मे एक उज्ज्वल आदर्श भी स्थापित किया। उस महात्मा का सुन्दर जीवन ससार की अँधेरी गलियो मे भटकने के लिए नही था। उसके पीछे एक लक्ष्य था, एक ध्येय था, एक पवित्र-उद्देश्य था। उन्होने अपनी महान् साधना के द्वारा उस लक्ष्य को एक दिन प्राप्त कर ही लिया, उनका ध्येय उन्हें प्राप्त हो गया, उनका उद्देश्य सफल हुआ। उनका जीवन वास्तव में एक जाज्वल्यमान प्रकाश-स्तम्भ था। जिससे प्रकाश लेकर अनेक मिथ्यात्व और अज्ञान के अन्धकार मे भटकने वाली आत्माओ ने अपने जीवन को प्रकाशित किया, और सत्पथ के अनुगामी बने।

❀ अन्य विशेषताएँ

—वैसे तो उस स्वर्गीय आत्मा का सम्पूर्ण जीवन ही अनेक विशेषताओं से परिपूर्ण था। किन्तु उन सभी विशेषताओ मे से मुझे तो मात्र दो विशेषताओं का ही वर्णन करना है। जिनकी विशेष छाप मुझ पर पड़ी है। वे उल्लेखनीय दो विशेषताएँ हैं—मिलनसारी और सरलता। वे हर समय प्रसन्न मुद्रा मे रहा करते थे। इतने मिलनसार कि अपरिचित से अपरिचित को भी वे कुछ ही क्षणों में अपना बना कर इस प्रकार घुल-मिल जाया करते थे, मानो वे युगों-युगों से परिचित हैं। सरलता तो उनके कण-कण मे भरी थी। दुनिया के छल-छन्दों, माया-प्रपञ्चों, एवं रगड़े-झगड़ो से दूर-बहुत दूर वे रहा करते थे। विक्रम सम्वत् २० सो १३ मे मैं जब आगरे गया था, उस समय मै आपके इस रूप से परिचित हुआ था। तब मै आपकी इन दोनों विशेषताओ का प्रत्यक्ष अनुभव करके आपको ठीक रूप से जान पाया था।

—अपने पीछे, श्रद्धेय श्री श्यामलालजी महाराज, व्याख्याता पण्डित मुनि श्री प्रेमचन्द्र जी, तपस्वी मुनि श्री श्रीचन्द्र जी, पण्डित मुनि श्री हेमचन्द्र जी, श्री कस्तूर मुनि जी, कीर्तिमुनि जी एवं उमेश मुनि जी के रूप मे सुयोग्य शिष्य-प्रशिष्य परिवार छोड गए हैं। मेरी हार्दिक कामना है कि यह आपका मुनिमण्डल जप-तप, सयम के आराधना क्षेत्र मे अतीव फले-फूले।

—भटिण्डा : पंजाब
६—६—६०

[१६]

उत्कृष्ट सेवा परायण सन्त :

पण्डित श्री हेमचन्द्र जी महाराज

—पण्डित रत्न श्री हेमचन्द्र जी महाराज एक सुलझे हुए गम्भीर विचारों के विद्वद्रत्न मुनिराज हैं। आप श्री जी जैनाचार्य श्रद्धय श्री आत्माराम जी महाराज के सुशिष्य हैं। सरल प्रकृति, उच्च विचार तथा मिलन सारिता आप श्री जी की प्रमुख विशेषताएं हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के प्रति आप श्री जी ने अत्यन्त श्रद्धा एवं निष्ठा पूर्वक, अपने भाव पूर्ण विचार पुष्पों की ऐसी सुवासित सुमनाञ्जलि समर्पित की है, जिसकी मधुर सुवास जन-गण-मन को मुग्ध एवं सुवासित किए बिना नहीं रहेगी।

—सम्पादक

※ ते धन्याः

—ससार मे वे महामानव धन्य हैं, जिनका जीवन परहितार्थ समर्पित रहता है। जो स्वयं कष्ट उठा कर भी, दूसरो का हित किया करते हैं। जो खुद दु.ख झेल कर भी ससार की उत्तप्त आत्माओ को, अखण्ड शान्ति प्रदान किया करते है। सचमुच ही उन मानवो की गणना महान् पुरुषो मे हुआ करती है, जो अपने जीवन का जन-कल्याणार्थ भोग दे दिया करते हैं। ऐसे धन्यवादार्ह महापुरुष ही संसार के उपकार मे सलग्न रहा करते हैं। कहा भी है—

महापुरुषो से होता है सदा उपकार दुनिया का।
उन्हे ही तो सताता है हमेशा प्यार दुनिया का॥

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, ऐसे ही—धन्यवादार्ह सन्त हुए है। उनको मानव जीवन, परोपकार के लिए ही मानो मिला था। अपने पवित्र जीवन एव सद् वचनो से उन्होने शताधिक, सहस्राधिक बल्कि कहना चाहिए लक्षाधिक मानव-गण को धर्म के सत्पथ पर लगाने का परम उपकार किया। वे उपकारी महापुरुष बेशक आज हमारे समक्ष नही है, लेकिन उनके किए गए उपकार आज भी पुकार-पुकार कर हमे उनकी याद दिला रहे हैं। धन्य हैं वे उपकारी सन्त, धन्य है उनका कर्म और धन्य है उनका पवित्र जीवन।

※ उत्कृष्ट सेवा परायण सन्त

—जीवन के किसी भी क्षेत्र में, विना सेवा भाव के व्यवस्था, शान्ति और क्रान्ति नही लाई जा सकती। देश मे फैले भ्रष्टाचार का निवारण, मात्र निष्काम सेवा के द्वारा ही किया जा सकता है। सेवा भाव से जीवन मे महत्ता, उच्चता और तेजस्विता आती है। वे महान् आत्मा, श्रेष्ठ साधक धन्य हैं, जो सेवा-साधना को अपना जीवन-मन्त्र बना लेते हैं। उन सेवा साधको

को स्वय भगवान् महावीर ने अपने मुखारविन्द से धन्य-धन्य कहा है—

जे गिलाण पडियरइ से धण्णे।

—अर्थात् जो ग्लान, रोगी तथा अशक्त की सेवा, परिचर्या करता है, वह धन्य है। सेवा जीवन क्षेत्र मे एक गौरवपूर्ण सर्वोच्च स्थान रखती है। भगवान महावीर कहते हैं कि सेवा=वैयावृत्य के द्वारा साधक आत्मा, तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन कर लेता है। उत्तराध्ययन सूत्र के सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन मे प्रश्नोत्तर के रूप मे, यह वर्णन इस प्रकार आया है—

वेयावच्चेणभते ! जीवे किं जणयइ ?
वेयावच्चेण तित्थयर नाम गोत्त कम्म निवन्धइ ॥

—शिष्य प्रश्न करता है—भगवन् ! वैयावृत्य=सेवा से साधक को क्या लाभ है ? भगवन् फर्माते है—वत्स ! वैयावृत्य=सेवा से साधक तीर्थंकर नाम गौत्र कर्म का बन्धन करता है।

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, एक उत्कृष्ट सेवा-परायण सन्त थे। उन्हे ग्लान-रोगी-तपस्वी आदि की सेवा करने मे कभी सकोच नही होता था। वल्कि सेवा-कार्य के लिए तो वे सहर्ष स्वय को समर्पित कर देते थे। सेवा उनकी साधक-चर्या का अविभाज्य अग था। आर्जव, मार्दव, क्षान्ति, शान्ति, एवं तितीक्षा आदि सद्गुणो के समान ही गणी श्री जी के जीवन मे सेवा-भाव को भी विशिष्ट स्थान प्राप्त था। ऐसे उत्कृष्ट सेवा परायण महान् सन्त के प्रति मैं अपनी-हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूं।

—लुधियाना : पंजाब.
८—६—६०

[१७]

लोकमान्य महापुरुष :

श्री रघुवरदयाल जी महाराज

—श्रद्धेय श्री रघुवरदयाल जी महाराज एक विशिष्ट सद्गुणों से सम्पन्न, सन्त रत्न हैं। आप श्री जी श्रद्धेय गणीवर्य श्री उदयचन्द्र जी महाराज के शिष्य रत्न हैं। आप श्री जी का मधुर स्वभाव तथा आकर्षक व्यक्तित्व अपनी पृथक ही विशेषता रखता है।

—अपने मधुर संस्मरण के आधार पर आप श्री जी ने प्रस्तुत लेख में श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के कुछ सद्गुणों का वर्णन किया है। जो विशिष्ट शब्दों का रूप पा कर चमत्कृत हो उठे हैं। उन्हे आपके ही शब्दों में आगे पढ़िए।

—सम्पादक

❀ परोपकाराय सतां विभूतय

—ससार मे जितने भी महापुरुष, सज्जन पुरुष अथवा सत पुरुष हुए हैं। उनका जीवन केवल अपनी ही चिन्ता मे व्यस्त नही रहा, वल्कि दूसरो की भलाई के लिए भी उनका महान् एव पवित्र जीवन सलग्न रहा है। अनुभवी तत्त्ववेत्ताओ के अनुभव यही कहते हैं कि सन्त पुरुष रूपी महान् विभूतियो का ससार मे अवतरण ही परोपकार एव जन-कल्याण के लिए हुआ करता है। महापुरुप स्वार्थ को नही अपितु परमार्थ तथा आत्मार्थ को ही जीवन मे स्थान दिया करते हैं। इसी कारण तो वे संसार के पूजा-पात्र एवं सम्मान के अधिकारी हुआ करते हैं। इसीलिए तो उनकी जीवन-गाथाएँ पवित्र एव अनुकरणीय मानी जाती हैं।

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, भी एक ऐसे ही परोपकारी, महापुरुष, सज्जन एवं सन्त पुरुष, अभी-अभी हो चुके हैं। श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज का पवित्र जीवन भी संयम-साधना के साथ-साथ जन-कल्याण और सब की भलाई मे सलग्न रहा है। उन्होने जो कुछ भी सोचा, जन-उत्थान के लिए सोचा। उन्होने जो कुछ भी किया, सब के कल्याण के लिए किया। अपने महान् और पवित्र जीवन के द्वारा, उन्होने, त्याग-संयम और सदाचरण का वह महत् आदर्श संसार के समक्ष समुपस्थित किया, जिस का अनुकरण कर, मानव अपना आध्यात्मिक विकास कर सके।

❀ लोकमान्य महापुरुष

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी, महाराज, सरल एव मधुर-सौम्य प्रकृति के एक अनुभवी सन्त थे। जैन-समाज को, आप के सदृश महापुरुप पाकर, एक सात्विक गर्व की सुखानुभूति होती है। आप के गौरव शील जीवन से, जैन-समाज अत्यन्त

गौरवान्वित है। आप के सद्गुणों ने आप को महानता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा दिया है। आप की संयम निष्ठा और शान्ति प्रियता ने आप को लोक मान्यता के उच्च सिंहासन पर बैठा दिया है।

—श्रद्धेय गणी जी महाराज वस्तुतः लोक मान्य महापुरुष थे। अपने सद्गुणों सद्विचारो एवं सद्आचरणों के द्वारा कोई विरले ही सन्त, जिस लोक-प्रियता और लोक मान्यता के उच्चतम शिखर तक पहुँच पाते हैं, वहाँ आप अत्यन्त सुगमता पूर्वक पहुँच गए थे। आपका सद्गुणोपेत जीवन, प्रसन्न एव सौम्य मुद्रा, सरल तथा भद्र-प्रकृति, प्रत्येक परिचय मे आने वाले व्यक्ति को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। तभी तो आप साधु-साध्वी, श्रावक और श्राविका-चतुर्विध संघ के अत्यन्त लोक-प्रिय सन्त रहे हैं।

❀ एक मधुर स्मृति

—भारत की राजधानी-देहली—मे मुझे भी आप श्री जी के शुभ दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उन बातों को आज लगभग १३,१४ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। किन्तु आप की सौम्य मूर्ति, अब भी उसी प्रकार नेत्रो के सामने मुस्कराती हुई आ जाती है और हृदय की वर्षो पुरानी उन मधुर-स्मृतियो को फिर से तरो-ताजा कर जाती हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणीवर्य श्री उदयचन्द्र जी महाराज उन दिनो दिल्ली सदर बाजार के महावीर भवन मे अपनी शिष्य मण्डली सहित विराजमान थे। उन्ही दिनो सुना कि श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज भी अपनी शिष्य मण्डली के साथ दिल्ली पधार रहे हैं। सब्जी मण्डी पहुँचने पर उनके दर्शनार्थ और सदर पधारने की प्रार्थना लेकर मैं उनकी सेवा मे पहुँचा। उन्होने

ग्रत्यन्त सरल मन से प्रार्थना स्वीकार की ग्रौर कुछ दिनों के पश्चात् वे सदर पधारे तथा कुछ दिन विराजे। तभी मै उनके सरलता-भद्रता ग्रौर शान्ति प्रियता ग्रादि सद्गुणो से परिचित हो सका। इन चन्द दिनों की सगति ने ही उनके सद्गुणो की जो छाप मेरे हृदय पर डाली वह ग्राज भी उसी चमक-दमक के साथ कायम है ग्रौर भविष्य मे भी वह इसी प्रकार बनी रहेगी। इन्ही शब्दो के साथ, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के पावन चरणों मे, मै ग्रपनी सहर्ष श्रद्धाञ्जली ग्रर्पण करता हूँ।

—जालन्धर शहर : पजाब :
३—१०—६०

[१८]

पावन आत्मा के चरणों में :

श्रद्धेय श्री छोटेलाल जी महाराज

—परम श्रद्धेय श्री छोटेलाल जी महाराज, पञ्चनद प्रदेश में विचरण करने वाले प्रमुख मुनिराज हैं। आप श्री जी सरल आत्मा एवं भद्र प्रकृति के सन्त हैं। आप श्री जी का मधुर स्वभाव, एवं मिलन सारिता, अनुकरणीय सद्गुण हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से बहुत ही लम्बे, समय से आपके मधुर सम्बन्ध रहे हैं, एक अपनत्व का नाता रहा है जो आज तक भी उसी रूप में कायम है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आप श्री जी ने अपनी भाव पूर्ण श्रद्धाञ्जलि बड़े ही भाव पूर्ण शब्दों में व्यक्त की है। पाठक गण जिसके द्वारा अनुमान लगा सकेंगे कि श्रद्धेय महाराज श्री जी मे कितनी निष्ठा एवं अपनत्व की भावना है ?

—सम्पादक

❀ परमहंस

—वैशाख शुक्ला दशमी के दिन, वर्षों के निकटवर्ती सामाजिक परिवार से, नाता तोड कर उस राजहस ने, इस भौतिकी-मायावी वन्धन स्वरूप पिंजड़े से निकल कर, नि सोम-मुक्त एव सुखद आकाश की ओर उड़ान ली, और वह दिव्यात्मा, महान् विभूति अपने चिर लक्षित स्थायी सदन की ओर चल पडी। कौन सो दिव्य आत्मा ? कौन सी महान् विभूति ? कौन से परमहस ? जिनका नाम था, श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज।

❀ जीवन मुस्कान

—नौ वर्ष तक लालन-पालन का जो कार्य-भार मातु श्रीमती-रामप्यारी-के सशक्त कन्धो ने सभाला, वही कार्य-भार सम्वत् १६५६ से, करुणा-भण्डार, पवित्रात्मा, पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज ने सहर्ष सभाल लिया। माता का प्यार, पिता का दुलार-हृदय की मधुरता, वाणी का विकास, आत्मा का अखण्ड आनन्द और वौद्धिक प्रकाश आदि सभी कुछ तो, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज ने आपको दिया। इतना ही नही, सयमामृत का रसास्वादन भी वे आपको अपने ही कर कमलो द्वारा कराना चाहते थे। फलत. ज्येष्ठ शुक्ला पञ्चमी, मंगलवार के दिन, सम्वत् १६६३ मे ढिढाली ग्राम पहुँच कर, इस योग्य एव पवित्र पात्र मे, आपने सयम का अमृत भी उंडेल ही दिया। अपने जीवन काल मे श्रद्धेय श्री ऋषिराज जी महाराज ने जिस-जिस भी तत्त्व की कमी देखी, वही, वही, विद्या-विवेक आदि तत्त्व इस योग्य पात्र मे भरते रहे।

—श्रद्धेय पूज्यपाद श्री श्यामलाल जी महाराज ने, अपने, जीवन के उन अनुपम आदर्शो से, आर्य सस्कृति के महात्मा-पुरुषो की रोमाञ्चकारी जीवन यात्रा को उपस्थित कर

दिखाया है। चाहे आज वे हमारे मध्य नही रहे, किन्तु उनके मधुर उपदेश और उपयोगी आदेश, युगान्तर मे भी हमारे कर्ण-कुहरो का संस्पर्श करते रहेगे और जन-जन के मन-मन को सन्मार्ग दिखाते रहेगे। उनकी अदृश्य पवित्र आत्मा हमारे से कभी भी विलग नही हो सकेगी। समाज उनका सदैव ऋणी रहेगा।

❀ तुम्हें शत-शत प्रणाम

—पूज्यपाद श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज की आत्मा और शरीर भले ही हमारे नेत्रो से ओझल हो गए, किन्तु नही, जब-जब भी सहस्रांशु उदय होगा अथवा सुधांशु निकलेगा, तारे खिलेगे, और जब-जब भी वैशाख-शुक्ला दशमी आएगी—हम अन्तर की सूक्ष्म दृष्टि से उस पवित्र आत्मा के दर्शन करेगे।

—ओ फूलो के मकरन्द मे महकने वाली, चन्दा की चाँदनी से झांकने वाली, और पवन के शीतल झकोरों मे विराजमान, सर्व व्यापक, सर्वदर्शी, अमर आत्मा! तुझे प्रणाम! प्रणाम!! शत-शत प्रणाम!!!

—जगराओ पजाब :
१६—१०—६०

[१९]

साधुता के पुण्य स्रोत :

श्री ज्ञान मुनि जी

—श्रद्धेय श्री ज्ञान मुनि जी महाराज एक अच्छे लेखक मुनिराज हैं। पण्डित्य आपकी लेखनी में तथा सुयुक्तियां आपके विशाल मस्तिक मे विद्यमान हैं। आप श्रद्धेय जैन धर्म दिवाकर, साहित्यरत्न, जैनागम रत्नाकर आचार्य श्री आतमाराम जी महाराज के सुशिष्य हैं।

—लगभग २०-२१ वर्ष पूर्व आप श्री जी ने उधर पंजाब में ही श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के शुभ दर्शन किए हैं। महीनों पूज्य गुरुदेव श्री जी की पवित्र सेवा मे आपको रहने का सुअवसर मिला है। इसलिए पूज्य गुरुदेव श्री जी की जिन विशेषताओं का वर्णन आपने प्रस्तुत किया है, वे सब आपकी देखी, जांची और परखी हुई हैं। पाठक गण भी उन का रसास्वादन अगली पंक्तियों मे कर सकते हैं।

—सम्पादक

❀ साधुता के पुण्य स्रोत

—साधुता के पुण्यस्रोत, स्वनाम धन्य, श्रद्धेय गणी श्री-श्यामलाल जी महाराज, आज हमारे मध्य मे नही हैं। इस पार्थिव शरीर को छोड़ कर, आज वे हम से जुदा हो चुके है, तथापि हम उन्हे भूल नही सकते। उनका वह हँसमुख चेहरा, उनकी वह बाल-सुलभ सरलता, तथा उनकी वह बिना किसी भेद-भाव के साधु-मुनिराजो की निष्काम सेवा, भुलाई जा सकने जैसी वस्तु नही है। उनकी साधु जनोचित गुण-सम्पदा जीवन पर्यन्त स्मृति-पथ पर बनी रहेगी। उनका भौतिक शरीर बेशक हमारे सम्मुख नही है। परन्तु उनका गुण-शरीर आज भी हमारे सम्मुख प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान है।

—मैंने स्वयं गणी श्री जी महाराज के जी भर कर दर्शन किए हैं। अतः जो कुछ मै उनके सम्बन्ध मे लिखने को उपस्थित हुआ हूँ वह सुनी-सुनायी कहानी नही है। अपितु प्रत्यक्ष किया गया अनुभव है। महीनो गणी श्री जी महाराज की सेवा मे रह कर मैंने उनको निकटता से देखा है, समझा है। जब श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज, श्रद्धेय मत्री श्री पृथ्वीचन्द्रजी महाराज तथा श्रद्धेय उपाध्याय श्री अमर मुनि जी महाराज आदि अपनी शिष्य मण्डली सहित, जैन धर्म दिवाकर, आचार्य सम्राट्, गुरुदेव श्री आत्माराम जी महाराज के दर्शनार्थ—लुधियाना (पजाव) पधारे थे, उस समय मुझे आप श्री जी के पावन दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तब हम सब महीनो इकट्ठे रहे थे, विचरे थे। श्रद्धेय गणी श्री जी मुझ पर तो विशेष कृपा दृष्टि रखते थे, उस समय। पिता के चरणों मे बैठ कर एक पुत्र को जो स्नेह मिलता है, वही स्नेह, बल्कि उससे भी अधिक, मुझे आप श्री जी के चरणो मे बैठ कर मिलता था। सक्षेप मे कहूँ, तो गणी श्री जी महाराज के कृपा पात्रो मे से एक होने का मुझे भी गौरव प्राप्त हुआ है।

❀ दिव्य जीवन

—आप श्री जी का दिव्य जीवन इस प्रकार है—श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज का शुभ जन्म विक्रम सम्बत् १९४७ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी के पवित्र दिन हुआ था। मातेश्वरी श्रीमती रामप्यारी जी थी। पूज्य पिता, चौधरी टोडरमल जी थे। श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज, बचपन से ही विरक्त से रहा करते थे। इन्हे अपने परिवार से कोई लगाव नही था। ससार के किसी प्रलोभन मे इनको कोई आकर्षण नही था। ये प्रभु-भजन और धर्म-कथा से प्यार रखते थे। जहाँ कही सत्सग होता, ये झट वही जा विराजते। ससार की मोह-माया इन्हे विष तुल्य प्रतीत होती थी। सदा विरक्ति के पावन सरोवर मे ये डुबकिया लगाते रहते थे।

—नौ वर्ष की क्या अवस्था होती है ? परन्तु हमारे श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज, इस छोटी सी अवस्था मे ही घर से निकल पडे थे। माता, पिता, भाई, बहिन, सबसे मोह-बन्धन तोड कर सयम-साधना को अपनाने के लिए ये तैयार हो गए थे। खाली घर को छोडने वाले बहुत मिल जाते है, पर भरे घर का त्याग करना कुछ सरल काम नही है, बच्चों का खेल नही है। सच्चा त्याग किसको कहते है ? भगवान महावीर ने इसका स्पष्टीकरण अपनी पवित्र वाणी मे इस प्रकार किया है—

जेय कते पिये भोए, लद्धे विपिट्ठी कुव्वई।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चई॥

अर्थात्–जो पुरुष स्वाधीन होकर, प्राप्त हुए, कान्त और प्रिय भोगो से पीठ फेर लेता है, वह ही सच्चा त्यागी कहलाता है।

—श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज के पूज्य गुरुदेव, स्वनामधन्य, मगल मूर्ति, चारित्र चूडामणि श्री ऋषिराज जी महाराज थे। इन्ही के चरणो मे बैठ कर गणी श्री जी महाराज

ने अध्यात्मवाद का मंगलमय पाठ पढा था । साधु जीवन की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा गणी श्री जी महाराज ने इन्ही से संप्राप्त की थी, इन्ही के चरणो में विक्रम सम्वत् १९६३ ज्येष्ठ शुक्ला पचमी मगलवार के मंगलमय दिन दीक्षित होकर अपने चिर सकल्पो को कार्यान्वित किया था ।

—श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज ने जीवन के ५४ वर्ष संयम-साधना मे लगाए। इतने लम्बे समय तक आपने अहिंसा-सत्य एवं सदाचार का अमृत घर-घर बाँटा। हजारों द्विपद-पशुओ को मानवता का पाठ पढा कर, उन्हे कल्याणोन्मुख बनाया। उत्तर-प्रदेश, दिल्ली-प्रान्त, हरियाणा-प्रदेश, और पंजाब प्रान्त आप श्री जी के विशेष कृपा पात्र रहे हैं । इन प्रान्तो मे आपने त्याग, वैराग्य, जप, तप, अहिंसा और सत्य के वे महास्रोत प्रवाहित किए हैं जो अद्यावधि आप श्री जी की महत्ता एव यशो गाथा को प्रदर्शित कर रहे हैं । तथा भविष्य में भी जो शुष्क होने वाले नही है। आप जहाँ भी गए, वही आपने समाजोत्थान के क्रान्तिकारी आदर्श कार्यो मे, जन-जीवन मे नव जीवन, नूतन चेतना का सचार किया। अधिक क्या ? जन-हित-साधना मे आपने अपना समग्र जीवन ही अर्पित कर दिया। अन्त मे वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार विक्रम सम्वत् २०१७, मानपाड़ा, आगरा में, आप पार्थिव शरीर को छोड़ कर स्वर्ग-धाम मे जा विराजे ।

❀ सद्गुण सम्पन्न

—श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज, एक सद्गुण सम्पन्न सन्त थे। आपका तपः पूत आदर्श जीवन, साधु जगत में अपना एक विशिष्ट महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सरलता, सौम्यता, मृदुता, सेवा परायणता आदि सद्गुण, गणी श्री जी महाराज के जीवनोद्यान के सुरभित और सुगन्धित पुष्प हैं। गणी श्री जी

महाराज का साधु-जीवन शास्त्रोक्त मर्यादाओ को सदा साथ लेकर चलता रहा है। उत्तराध्ययन सूत्र मे लिखा है—

"निम्ममो निरहकारो, निस्सगो चत्तगारवो।
समो य सव्व भूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निन्दापससासु, समो माणावमाणओ ॥
अणिस्सिओ इह लोए, पर लोए अणिस्सिओ।
वासी चदण कप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥

—अर्थात्-साधु को ममता रहित, निरहंकार, निःसंग, नम्र और प्राणिमात्र पर समभाव युक्त रहना चाहिए। लाभ हो या हानि हो, सुख हो या दुःख हो, जीवन हो या मरण हो, निन्दा हो या प्रशसा हो, मान हो या अपमान हो, सर्वत्र सम रहना ही साधुता है। सच्चा साधु न इस लोक मे आसक्ति रखता है, न पर लोक मे। यदि कोई विरोधी तेज कुल्हाड़े से काटता है या कोई भक्त शीतल एव सुगन्धित चन्दन का लेप लगाता है, तो साधु को दोनो पर एक जैसा ही सम भाव रखना होता है। वह कैसा साधु ? जो क्षण-क्षण राग-द्वेप की लहरो मे वह निकले। न भूख पर नियन्त्रण रख सके और न भोजन पर।

—अस्तु जहाँ तक गणी श्री जी महाराज के जीवन को मैंने समझा है, देखा है, उसके आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का जीवन शास्त्रोक्त गुण-सम्पदा से सर्वथा सम्पन्न था, और इसका आदर्श प्रतीक था। ऐसे महान् जीवन से ससार प्रेरणा ले सके, यही भावना है।

—फिल्लौर : पजाब :
३१—८—६०

[२०]

यशस्वी सन्त की सेवा में :

मुनि श्री रामकृष्ण जी

—श्रद्धेय मुनि श्री रामकृष्ण जी महाराज एक बहुत ही अच्छे लेखक और प्रवचनकार विद्वान् मुनिराज हैं। हिन्दी उर्दू फारसी संस्कृत प्राकृत तथा इंगलिश आदि अनेक भाषाओं के आप अच्छे जानकार हैं। आप श्रद्धेय व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज के ही परिवार के, योगनिष्ठ श्रद्धेय श्री रामजीलाल जी महाराज के सुशिष्य हैं।

—आप बहुत वर्षों से श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से परिचित रहे हैं। प्रस्तुत लेख में आपने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सद्गुणों का बड़ा ही भावपूर्ण चित्रण किया है। जो लेखक के ही शब्दों में अगली पंक्तियों मे पाठकों के पठनार्थ प्रस्तुत है।

—सम्पादक

❀ यशस्वी सन्त

—श्रद्धेय गणीवर्य श्री श्यामलाल जी महाराज स्थानकवासी जैन समाज के एक श्रेष्ठ एव यशस्वी सन्त थे। उनकी सयम-साधना, मात्र कठोरता से ही भरी हुई न थी, वह जल-प्रवाह की तरह सरस एव शीतल भी थी। उस साधना मे प्रेम था, ममत्व था, स्नेह था तथा अपनत्व था। साथ ही थी दूसरो के ताप-सन्ताप बुझा देने की अमर-साध। और एक सच्चे सन्त की साधना मे यह सब विशेषताएँ अवश्य ही पाई भी जानी चाहिएँ।

❀ स्नेह एवं सौहार्द की प्रतिमा

—सन्त को लोगो ने जलाया, पर उसने कभी भी किसी को नही जलाया। अज्ञानी लोग, जिस ताप से स्वयं जलते हुए दूसरो को भी जलाते रहते है, उसी ताप के तापहारी, सन्त-महन्त होते हैं। आगम की भाषा सन्त जीवन के इस सत्य की साक्षी बन कर हमारे सामने आ रही है—

अक्कोसेज्जा परे भिक्खुं,
न तेसिं पडिसंजले।

अर्थात् कोई मारे, पीटे, गाली दे; भिक्षुक उसके प्रति अपना आवेश उपस्थित न करे। प्रतिहिसा की भावना सन्त के लिए त्याज्य है।

—सन्त के अन्दर जब तक ऐसी उपेक्षाशील शक्ति, अपने पर आने वाली मुसीबतो के लिए नही होती, तब तक, सन्त जीवन के साथ राष्ट्रीय जीवन की जिम्मेदारियो को अच्छी तरह से नही उठाया जा सकता। अत. हर हालत मे सन्त को प्रेम, स्नेह, सौहार्द उपस्थित करना है। सन्त इन महान् शक्तियों के द्वारा समाज एवं राष्ट्र की दुर्जनता का अपहरण करके जनता के सामने शान्ति और कल्याण का मार्ग प्रकट करता है।

—श्रद्धेय गणी श्री जी के मुख पर, हमने कभी आवेश की रेखाएँ नही देखी। प्रेम एव स्नेह से उन्हे सर्वदा सिञ्चित ही पाया। अपने-पराए का भेद उनसे बहुत दूर था। जिस किसी से भी उन का सम्पर्क हुआ, अवश्य ही तत्काल उन्होने उस व्यक्ति को स्नेह-सुधा से सिञ्चित करते हुए अपना बना लिया। एक बार दर्शन कर लेने वाला व्यक्ति भी उनके स्नेह एव सौहार्द को जीवन पर्यन्त न भुला सका। आप श्री जी के स्वगवास की सूचना मिली तो ऐसा अनुभव हुआ कि अपना कोई स्निग्ध सहवासी विछुड चला है। हृदय को बहुत खेद हुआ। मानस विषाद की लहरो मे डूबने उतराने लगा।

❁ मंजुल मूर्ति

—इस मजुल मूर्ति श्रद्धेय गणीवर्य श्री जी के साथ पंजाब मे काफी समय तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वही आप को अधिक निकट से देखने और परखने का अवसर भी मिला। इस के बहुत दिनो के पश्चात् आप की याद ने हमे फिर आप श्री जी से मिलने के लिए बाधित कर दिया। आगरा मे आप से अन्तिम मिलन हुआ।

—उस समय आप अपनी संयम यात्रा व्यतीत करते हुए उसके अन्तिम छोर पर आकर खडे हो रहे थे। फिर भी ऐसा विश्वास तो था नही कि इतनी जल्दी आप हमसे विदा ले जाएँगे। आगरा मे जब आप से पुनर्मिलन हुआ था तो उस समय आप का जीवन एक बालक की तरह प्रेम, पवित्रता, निश्छलता एव सरलता से भरा हुआ भाषित होता था। यह आप के जीवन की एक महान् विशेषता थी।

❁ प्रेमव्रती

—दुनिया मे बड़े बड़े ज्ञानी, विद्वान्, एवं कलाकार मिल सकते हैं। पर दूसरों के लिए प्रेम का बलिदान करने वाले कम ही मिला करते हैं। दुनिया की व्यवस्था करने मे जो शक्ति

मानवीय प्रेम से प्रकट हो सकती है, वह हजार-हजार तलवारो से असम्भव है—

"How fair this earth were, if all things be linked in Friendliness" अर्थात्—यह पृथ्वी कितनी सुन्दर होती, यदि इस की समस्त वस्तुए मित्रता से बँधी होती।

× × ×

मुहब्बत से तू दिल तसखीर कर,
यह हज्जे अकवर है।
यह है वह तोशए ऐमाल,
जो वेहतर से वेहतर है॥

—विद्वान्, ज्ञानी, दानी सब मर जाते है, पर प्रेम का उपासक कभी नही मर सकता। ये दूसरे लोग अपनी कीर्ति के पीछे पड़, अपने को मिटा देते है, किन्तु इनकी कीर्तियों के रथ इन्हे छोड़कर आगे भाग जाते हैं। प्रेम का स्थान, उसकी प्रतिष्ठा कीर्ति से भी ऊपर है। मनुष्य का प्रेम कभी दुनिया में मर नही सकता। अतः जिसने प्रेम की साधना की है, वह प्रेमी मनुष्य भी अमर है। भारतीय दार्शनिक रवीन्द्रनाथ टैगोर कहता है—

मृत लोगो को ख्याति चाहिए, अमर लोगो को प्रेम।

—गणी श्री श्यामलाल जी महाराज ने प्रेम के कठोर व्रत का आजीवन पालन कर, अपने को हमेशा-हमेशा के लिए अमर बना लिया। आपकी स्मृति हृदय पटल पर सदैव अंकित रहेगी।

मुनक, अकालगढ़ : पंजाब :
२—८—६०

[२१]

वे अनासक्त योगी थे :

पण्डित श्री त्रिलोकचन्द्र जी महाराज

—श्रद्धेय पण्डित प्रवर श्री त्रिलोकचन्द्र जी महाराज एक विनय-सम्पन्न दीर्घद्रष्टा मुनिराज हैं। आप श्री जी श्रद्धेय श्री भागमल जी महाराज के शिष्य रत्न हैं। आप श्री जी विलक्षण बुद्धि के धनी हैं, इसीलिए आप श्री जी को अर्घ शतावधानी भी कहा जाता है।

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के मधुर सम्पर्क मे आप श्री जी अनेक बार आए हैं। अतएव पूज्य गुरुदेव श्री जी के सयम-साधना-पूर्ण जीवन से आप श्री जी भली प्रकार से सुपरिचित हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के संयम-साधना से परिपूर्ण जीवन की कुछ झाँकियाँ आपने इस लेख में प्रस्तुत की हैं। जिनका शब्द माधुर्य एवं भाव सौष्ठवता देखते ही बनते हैं।

—सम्पादक

❀ विशुद्ध आत्मा

—विनम्र, विनीत, विचारक, विशुद्धतात्मा, श्रद्धेय गणीवर्य श्री श्यामलाल जी महाराज के महान् गुणो का वर्णन करना जड लेखनी के वश से बाहर की बात है। यह प्रयास ऐसा ही है—जैसे सूर्य के सन्मुख दीपक दिखाना अथवा सागर के सन्मुख गागर रखना। तथापि भक्ति प्रेरित करती है कि कुछ लिखा जाय। उस विशुद्ध आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाय।

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज एक महान् सन्त थे। जिनका पवित्र जीवन, विशुद्धता की कोटि मे गिना जाता था। वे एक ऐसी विशुद्ध आत्मा थे, जिनके जीवन मे, क्रोध का, मान का, माया अथवा छल प्रपञ्च का कलुष तनिक भी न था। बच्चो जैसा सरल, उज्ज्वल एव निश्छल हृदय उनकी आत्म विशुद्धता का प्रतीक था। आत्म शोधन एव जीवन-विशुद्धि की ओर ही आप का अधिक ध्यान रहता था। यही कारण था कि उस विशुद्ध हृदय मे, सरलता, सौम्यता, मृदुता, शान्ति, सन्तोष, क्षमा तितीक्षा आदि अनेक-अनेक सद्गुण अपना आश्रय स्थान बनाए हुए थे।

❀ अनासक्त योगी

—वस्तुतः आप अनासक्त योगी थे। ससार की माया-आकर्षण का जादू बहुत बड़ा है, पर वह आप श्री जी पर अपना असर न दिखा सका। आप श्री जी को अपने संयम महामर्ग से ज़रा भी इधर-उधर न कर सका। और करता भी कैसे ? जब कि आप श्री जी ने जीवन के शैशव काल मे ही सयम-साधना, तथा अनासक्ति योग के महामर्ग पर अपने कोमल किन्तु दृढ कदम बढा दिए थे। आप श्री जी ने साधना की इस पवित्र वेदी पर जीवन के प्रथम चरण मे ही अपने आप को उत्सर्ग कर दिया था।

—रत्न-त्रय की विमल अराधना आप श्री ने मात्र १६ वर्ष की आयु से ही प्रारम्भ कर दी थी। फिर भला ससार की वासना या मोह-ममता टिक ही कैसे पाती ? आपने शैशव

काल मे ही जब सांसारिक कार्यों मे अनास्था प्रगट करते हुए उनकी ओर पीठ फेर ली, फिर भला कैसे उस ओर उन्मुख होते ? फलत. आप श्री अध्यात्म-संयम-साधना और अनन्त गुणो के अनुसन्धान मे लीन हो गए। जीवन के ७० वर्ष पूर्ण करते हुए अन्त मे आपने पूर्णता प्राप्त कर ही ली।

❀ पथ-प्रदर्शक

—आप श्री जी का स्वभाव सुकोमल एवं मधुरता से ओत-प्रोत था। जन-साधारण के लिए भी वह आकर्षण का केन्द्र था। सयम-साधना मे आप श्री जी सामान्य साधको के पथ प्रदर्शक रहे हैं। आप का मानस प्रतिक्षण सचेत रहता था। प्रमाद वश सयम-साधना मे कही भूल न हो जाय, इसका आप खास ध्यान रखते थे। वीर-वाणी का अनेक स्थानो मे बडी साहसिकता के साथ प्रचार व प्रसार आपने किया था। जन धर्म की विजय-पताका, क्या उत्तर प्रदेश ? क्या दिल्ली ? क्या हरियाणा ? और क्या पजाब ? आप श्री जी ने सर्वत्र लहराई थी। विनय एव नम्रता के तो आप साकार रूप ही थे। अधिक क्या ? आप श्री जी ने जग-जन-जीवन का जीवन पर्यन्त सुधार और उद्धार किया। आप श्री जी ने समाज का जो सच्चा पथ-प्रदर्शन किया, उसे वह युग-युगान्त तक भी नही भूल पाएगा।

—आप श्री जी के स्वर्गारोहण से जैन समाज की जो क्षति हुई, उस की पूर्ति होना निकट भविष्य मे असम्भव है। फिर भी समाज की कामना है कि ऐसी महान् विभूतियाँ बार-बार समाज मे अवतरित हो और उसे सन्मार्ग दिखाती रहे। इसी भावना के साथ उस सयम-पथ-प्रदर्शक, महान् विभूति के प्रति मै भी अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूँ।

—सदर बाजार : दिल्ली :
२८—७—६०

[२२]

अध्यात्म-साधक :

मुनि श्री फूलचन्द्र जी-श्रमण-

—श्रद्धेय श्री फूलचन्द्र जी महाराज—श्रमण—एक अध्यात्म योगी सन्त हैं। आप श्रद्धेय श्री खजानचन्द जी महाराज के सुशिष्य हैं। आप शास्त्रीय ग्रन्थों के अच्छे मर्मज्ञ भी हैं। आप श्री जी द्वारा लिखित —नयवाद—नामक पुस्तक सन्मति ज्ञान पीठ आगरा से प्रकाशित हो चुकी है। इसके अतिरिक्त आप अध्यात्म एव शास्त्रीय लेख भी लिखते ही रहते हैं।

—आप श्री जी ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की आध्यात्मिक सद् विशेषताओं का बडी ही भावपूर्ण शैली मे प्रस्तुत लेख मे प्रतिपादन किया है। वे कौनसी सद् विशेषताएं हैं? इन का अनुभव तो पाठक सम्पूर्ण लेख पढकर ही लगा सकते हैं।

—सम्पादक

❀ सम्यक् ज्ञानी सन्त

—यह संसार अमृत और विष से परिव्याप्त है। पियूष और हलाहल से परिपूर्ण है। सम्यग्दृष्टि, ज्ञानी और सयमियो के लिए यह संसार अमृतमय है, पियूपमय है, और अजर-अमर बनाने वाला है। क्योंकि वे इस ससार मे ही रह कर जीवन विकास की सर्वोच्च साधना किया करते हैं। इस संसार का अवलम्बन लेकर ही वे अपना कार्य सिद्ध, और लक्ष्य प्राप्त कर लिया करते हैं। परन्तु मिथ्या दृष्टि, विपयासक्त असंयमी जनों के लिए यह ससार ही विप का कार्य कर दिखाता है। उनके लिए यह ससार हलाहल जहर बन जाता है। मारक बन जाता है। ससार मे आसक्त हो कर इस भयङ्कर विष के प्रभाव से विपरीत दृष्टि अज्ञ मानव एक ऐसी भव-भ्रमण श्रृङ्खला में जकड़ जाते हैं, जिससे उन्हे छुटकारा मिल पाना असम्भव नही तो कठिन अवश्य हो जाता है। विकासशील सम्यग्ज्ञानी सन्त तो अपनी अमर-साधना के द्वारा सदा ही अमृत-विप रूप ससार से केवल अमृतपान करते हुए सतत पूजित हुआ करते है, जब कि मिथ्यामती अज्ञानी प्राणी, विष को ही अमृत समझ बैठते है, और उसका आकण्ठ पान करते हुए पतन के गहरे गर्त मे गिर जाया करते हैं।

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज, एक ऐसे ही सम्यक् ज्ञानी सन्त हुए हैं, जिन्होने विवेक एव ज्ञान की अन्तर्वेधिनी दृष्टि से ससार रूप अमृत-विष की, भली भाँति पहचान करके विष को छोडते हुए, मात्र अमृत का ही आण्कठ पान किया था। तभी तो वे समयग्ज्ञानी, शुद्ध-संयमी और परम-विवेकी सन्त कहलाए। तभी तो पूज्य रूप मे उनका नाम आज बच्चे-बच्चे की जबान पर है। तभी तो वे सफल-साधक, श्रेष्ठ अमृतपुत्र का गौरवशील पद पा सके। तभी तो उनकी कीर्ति की विमल पताका अद्यावधि लहरा रही है, और युग-युगान्त तक इसी प्रकार लहराती रहेगी।

❀ सच्चे तैराक

—जिस प्रकार अथाह जल, जहाँ तैरने की कला को भली भाँति जानने वाले तैराक को तैरने के लिए सहयोग प्रदान करता है, वहाँ उस तैराकी की कला से अनभिज्ञ मानव के लिए शीघ्र ही डूब जाने मे भी महत्त्वपूर्ण योग देता है। उसी प्रकार यह ससार और उसके साधन भी तैरने की कला जानने वाले सम्यग्दृष्टि, ज्ञानी और सयमी पुरुषों के लिए लक्ष्य प्राप्त करने अकर्मा, अजन्मा और सिद्ध, बुद्ध, मुक्त होने मे सहायता देते है, तथा तैरने की कला से अनभिज्ञ अज्ञानी मूढ मिथ्यादृष्टि असयमी पुरुषो को यही ससार गहरा—और गहरा डुबाने का साधन भी बन जाता है।

—पूज्य प्रवर श्री श्यामलाल जी महाराज की गणना महानुतम उच्च कोटि के सच्चे तैराकों मे की जाती है। आप तैरने की कला से मात्र जानकार ही नही थे, अपितु ५४-५४ वर्ष के सतत परिश्रम एव अभ्यास से आप इस कला मे पूर्णतया दक्ष हो चुके थे। यही नही इस कला के सच्चे शिक्षक के रूप मे रह कर आपने अनेक तितीर्षु प्राणियो को इस कला का मर्मज्ञ भी बना दिया है। आज आप इस तैराकी कला मे सर्व प्रथम स्थान प्राप्त कर अपना नाम अमर कर चुके है। अदम्य सयम-साधना द्वारा आप अपने लक्ष्य के अति निकट पहुँच चुके हैं। ऐसा मेरा दृढ विश्वास है।

❀ अध्यात्म-साधक

—कुछ एक ससारी आत्माओं ने देव-दुर्लभ मानव-भव को प्राप्त करके, अपने जीवन को विकसित और उन्नत किया है, तथा लक्ष्य के चरमान्त तक पहुँचने का प्रयास भी किया है। उन्ही सुविकसित महान् आत्माओ मे से कुछ एक महापुरुष ऐसे हुए है जो कठोरतम साधना के पथ पर अनवरत एव अविश्रान्त

गति से चलते हुए, मार्ग की अनेक विघ्न-बाधाओ को पावो तले रौंदते, उन पर विजय-ध्वजा लहराते हुए अपने लक्ष्य बिन्दु तक वढते ही चले गए ।

—उन्ही अध्यात्म-साधको मे, श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज ने भी गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया है । सच है—अध्यात्म साधक महापुरुष ही महान् पुरुषो के चरण-चिन्हो का अनुसरण किया करते है । साधारण मानवो के वश की यह बात नही है । ऐसे असाधारण अध्यात्म साधको का जीवन, ससार के लिए आदर्श बन जाता है । जो उन व्यक्तियो के भौतिक शरीर से ओझल हो जाने पर भी, युग-युगान्त तक अपने भास्वर-आलोक से जन-मानस को आलोकित करता रहता है । उनके पवित्र जीवन को दुनिया भूलना चाह कर भी भुला नही पाती । उनकी साधना जनता के लिए प्रेरणा-स्रोत बन जाती है । ऐसे महान् अध्यात्म साधको का जीवन ही वास्तव मे जीवन है ।

❀ जीवन ज्योति

—ऐसे ही महान् व्यक्तियो मे सयम की सुतीक्ष्ण धारा पर चलने वाले, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज थे । आप श्री जी का जन्म विक्रम सम्वत् १९४७ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी को-पोरई ग्राम-जिला आगरा के क्षत्रिय कुल मे हुआ था । तब यह किसे मालूम था कि यह क्षत्रीय वीर ही सयम रक्षक और जिन-शासन का उन्नायक बनेगा । हाँ उस समय माता श्रीमती रामप्यारी जी और पिता चौधरी टोडरमल जी ने अनेक सद् हेतुओ से अनुमान लगाया होगा कि यह होनहार बालक हमारे कुल का दीपक बनेगा । किन्तु सात्विक प्रकृति वाला यह बालक न केवल उनके ही कुल का दीपक बना, बल्कि समस्त जैन समाज का समुज्ज्वल प्रकाशमान दीपक बना । वह दीपक जिसने अनेक बुझते हुए दीपको को पुनः प्रज्ज्वलित किया ।

—आप श्री जी ने ज्येष्ठ शुक्ला पचमी मगलवार विक्रम सम्वत् १९६३ ग्राम ढिढाली जिला मुजफ्फरनगर मे १६ वर्ष की वय मे चारित्र चूडामणि पण्डितरत्न श्री ऋषिराज जी महाराज के कर-कमलो द्वारा जैन आर्हती दीक्षा ग्रहण की। तभी से आपने अपने को सयम और तप से भावित करना प्रारम्भ कर दिया। सच्चे-साधक जिस श्रद्धा से सयम ग्रहण करते है, वे आयु पर्यन्त उसी श्रद्धा से उसका पालन करते है। सशय को सदा के लिए तिलाजलि दे देते है। कहा भी है—

जाए सद्धाए निक्खन्तो, तमेव अणुपालिया
विजहित्तु विसोत्तिय ॥—आचाराग १—३

अरिहत भगवान् की आज्ञानुसार चलने वाले गुरुजन की आज्ञा पालन करना भी भगवान् की ही आज्ञा है—

आणाए मामग धम्म।—आचाराग ६—२

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज ने इस सूत्र वाक्य को अपने जीवन मे उतारा था। आपने गुरु-आज्ञा पालन को सयम का ही एक अश समझा। यही कारण था कि आपके जीवन मे विनय, आज्ञापालन और सेवा भाव आदि सद्गुणो ने अपना चमत्कार दिखाया था। सच्चे गुरु श्री ऋषिराज जी महाराज को पाकर सचमुच आप निहाल हो गए थे। महापुरुषो का समागम जितना आनन्द प्रद होता है, उनका वियोग उससे भी कही अधिक दुःखप्रद होता है। जैन समाज से विक्रम सम्वत् २०१७ वैशाख शुक्ला दशमी के दिन मानपाडा, आगरा मे, आप श्री जी का वियोग हो गया। यह प्रकाशमान जगमगाता दीपक अकस्मात् बुझ गया। वही दीपक देवलोक में तथा हमारे यहाँ इतिहास के स्वर्णाक्षरो मे जगमगाने लगा।

❀ यथार्थ पराक्रमी

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज जन समाज की एक महान् विभूति रहे है। आपने जगत की आशा-लोकेषणा, वित्तेषणा, और स्वच्छन्दता आदि दुर्गुणो को अपने जीवन से निकाल बाहर किया था। कहा भी है—

आस च छन्द च विगिंच धीरे ।। आचाराग २—४

—आपने अपने पराक्रम को कभी नही छिपाया। प्रत्युत ज्ञान-दर्शन की निर्मलता मे, चारित्र, तप, विनय, वैयावृत्य, तथा आत्म-कल्याण के सभी सहयोगी साधनो को, यथा शक्ति कर्मों को क्षय करने के लिए कार्यान्वित किया। आप श्री जी के शुभ दर्शनो का सौभाग्य इस श्रमण को भी अनेक बार सम्प्राप्त हुआ है। उस समय जब भी आपको देखा तो किसी न किसी सयम-सहायक कार्य मे संलग्न एव व्यस्त ही पाया। निष्क्रिय बैठना तो आप जानते ही न थे। सतत-कर्म शीलता तो आपका जीवन मन्त्र ही बन गया था।

—जड़ चेतन समष्टि रूप इस विश्व के विशालतम रत्नाकर मे अगणित महापुरुष अपने पवित्र इतिहास को लेकर अन्तर्लीन हो चुके हैं। इस रत्नाकर से जब-तब अनुसन्धानकर्ता उन मणि-रत्नो का उद्धार करते रहते है। जो जीवन चरित की अमूल्य निधि के रूप मे हमारे समक्ष आते हैं। उनको परख कर सुरक्षित रखना, यह हम सब का कर्तव्य है।

—पटियाला : पंजाब.
१६—६—६०

श्रद्धेय गणी जी महाराज के अगाध-जीवन-सागर से, जो कुछ मैंने पाया :

मुनि श्री सुशील कुमार जी-भास्कर-

—विश्व धर्म के प्रवर्तक, अहिंसा शोध पीठ के संस्थापक, श्रद्धेय श्री सुशीलकुमार जी महाराज के नाम से भला कौन अपरिचित होगा ? विश्व धर्म सम्मेलन के कारण आप की भारतवर्ष मे ही नहीं, अपितु विदेशों तक में ख्याति है। आप विद्वान् एवं स्नेहशील हृदय होने के साथ-साथ एक सफल लेखक भी हैं। श्रद्धेय श्री छोटेलाल जी महाराज के आप शिष्य रत्न हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव से आपका बाल्यकाल से ही अपनत्व एवं ममत्व पूर्ण मधुर सम्बन्ध रहा है। यह मधुर सम्बन्ध केवल आप से ही नहीं, अपितु आपके बाबा गुरु श्रद्धेय श्री गोविन्दराम जी महाराज के काल से चला आ रहा है। आपने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति उसी अपनत्व की श्रद्धा एव निष्ठा पूर्वक भावना से चन्द शब्द लिखे हैं जो आपके ही विद्वत्ता पूर्ण शब्दों में आगे प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

❀ महानता के आदर्श

—उच्च पद पर स्थित होकर, महानता का अभिनय, अक्सर बहुत से लोग कर सकते है। परन्तु लघुता की परिधि मे महानता का दीप सजोए रखना, यह जरा टेढी खीर है। हमारे श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज की यह एक बहुत बड़ी विशेषता ही थी कि उन्होने आजीवन, वडे पद के वलय से वाहिर, महानता के आदर्शो को, व्यवहार की संजीदगियों से एवं चिन्तन की अतल गहराइयो की अपेक्षा, अनुभूतियों की मधुरता से, हम सबको सम्पन्न वनाए रखा है।

❀ निकट सम्पर्क

—वाल्यकाल से ही, निकट या दूर से उनका जीवन, मेरे लिए चिन्तन का केन्द्र, विश्वासो का उजेला, श्रद्धा का दीप एव प्रेम का प्रतीक वना रहा है। मुझे विश्वास है कि पहले मै, उनसे कितनी ही दूर गया, किन्तु वह मेरे से कभी दूर नही हुए। अपनत्व एवं ममता का घेरा उनके सहज सान्निध्य का सदा अनुभव कराता रहा।

❀ सदा अमर

—आज उनका आत्यन्तिक वियोगिक क्षरण मेरे-लिए सम्मिलन का प्रभात वना रहेगा। सरलता, सौजन्य, स्नेह एवं वात्सल्य ही, मेरे लिए उनके दिव्य देह की पूर्ति करते-रहेगे। जैसे उनकी आत्मा अमर है, वैसे ही उनके दिव्य गुणो की तसवीर भी मेरे लिए, समाज एवं देश के लिए सदा अमर रहेगी।

—कलकत्ता :
१२—१०—६०

[२४]

युग पुरुष के चरणों में :

श्री अभय मुनि जी

—श्रद्धेय श्री अभय मुनि जी महाराज एक अच्छे विचारशील युवक सन्तों मे से हैं। पञ्चनद प्रदेश मे आपके प्रवचनों की धूम है। आप प्रखर प्रतिभा के धनी मुनिराज हैं। श्रद्धेय श्री रघुवर दयाल जी महाराज के सुयोग्य शिष्य होने का गौरव आपको सम्प्राप्त है।

—युगपुरुष श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के जीवन रत्नाकर मे गहरी डुबकी लगा कर आपने कुछ अनमोल आबदार मोती चुने हैं, जिन्हे शानदार शब्द के रूप मे सजाकर अगली पक्तियों मे प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है पाठक वर्ग इनकी चमत्कृति से चमत्कृत होंगे।

—सम्पादक

❀ अमर नाम

—ससार में यो तो बड़े-बड़े वैभवशाली, बलशाली एवं बुद्धिशाली मानव हो चुके हैं जो एक से एक बढ-चढ कर थे, पर आज उनका नाम तक कोई नही जानता। लेकिन जिन महापुरुषो ने अपने जीवन को पर-उपकार तथा जन-कल्याण मे लगाया, जिन्होने मानव-समाज का दु ख दूर करने के लिए, अपने प्राणो तक को न्यौछावर कर दिया, उन्ही का नाम अमर है। संसार उन्ही का युगो-युगो तक गुणगान गाता रहता है। वास्तव मे ऐसे सत्पुरुषो का जीवन ही धन्य हुआ करता है।

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, ऐसे ही एक अमर महामानव थे। एक ऐसे ही परोपकारी, जन-हित मे अपना सर्वस्व-समर्पण कर देने वाले नर-रत्न सन्त थे। उनका पवित्र जीवन किसी की तुलना से मेल नही खाता। सम्भव है आपने अपने जीवन काल मे, विद्वत्ता प्रदर्शन के हेतु किसी ग्रन्थ का निर्माण न किया हो। अन्य वक्ताओ की भाति, सम्भव है पाण्डित्य पूर्ण घुआधार भाषण करने मे अपनी रुचि न दिखायी हो। किन्तु जीवन का सार तत्त्व आप से छुपा न रह सका। बल्कि वह तो आपकी साधना का एक अमर अविभाज्य अग ही बन कर रह गया था।

❀ सच्चा कर्मयोग

—आप जवानी की उभरती हुई प्रथम किरणो मे ही कर्मयोग के जीवन-रहस्य को भली भाँति समझ चुके थे। तभी तो आपने अपना सम्पूर्ण जीवन कर्मयोग की अध्यात्म-साधना में लगा दिया था। आत्म-हित के साथ-साथ जन-हित आपके जीवन का चरम बिन्दु रहा है। तभी तो एक कर्मयोगी सच्चे सन्त बनकर आप अध्यात्म-साधना के महामार्ग पर बिना डगमगाए,

बिना हिचकिचाए अपने जीवन की अन्तिम श्वास तक चलते ही रहे, निरन्तर आगे बढते ही रहे।

—आपका जीवन वस्तुत: एक कर्मयोगी का जीवन था। पीछे मुड़कर देखना, आप जानते ही न थे।—कर्मण्येवाधिकारस्ते—का सिद्धान्त आपके जीवन मे पूर्ण-रूपेण विद्यमान था। जिस योग को, सहस्रों योगी भयानक जगलों की नीरव कन्दराओ मे बैठ कर, प्राप्त करने मे सतत सलग्न रहते हैं। उसी योग को आपने जनाकीर्ण नगरों मे रह कर, सहज स्वाभाविक रूप से प्राप्त किया था।

❀ मधुर मुस्कराहट

—आपके जगमगाते सौम्य मुख मण्डल पर सदैव मुस्कराहट छाई रहती थी। विषाद तो आपके पास फटकने तक न पाता था। आप कवि के शब्दो मे कहा करते थे—

हर आन हँसी, हर आन खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा।
जब आलम मस्त फकीर हुए, तब क्या दिलगीरी है बाबा॥

और कोई बच्चा हो या जवान? कोई स्त्री हो अथवा पुरुष? कोई विद्वान्-धनी-मानी हो, या निर्बुद्धि-कगाल? किन्तु आपका हँसता हुआ मुख-मण्डल, मुस्कराता हुआ चेहरा, सबको मोह लेता था।

—आने वाले चिन्तित भक्त, आपके दर्शनमात्र से ही अपने सब दु:ख भूल जाते थे। कभी-कभी आप उपदेशामृत पान कराते हुए-उन्हे कहा करते थे—अरे भोले प्राणी! यह जीवन तुझे चिन्ताओ मे घुल-घुल कर मरने के लिए प्राप्त नही हुआ! इस फिकर चिन्ता को जीवन से एक ओर हटा कर कुछ आत्म कल्याण भी किया कर। फकीरो की व्याख्या-परिभाषा करते हुए आप अक्सर कहा करते थे—

फिकर सभी को खात है, फिकर सभी का पीर।
फिकर का फाका जो करे, उसका नाम फकीर॥

❀ संयम-साधना

—संयम के नाम पर पाखण्ड और ढोंग को आप तनिक भी पसन्द नही करते थे। आपका कहना था कि जहाँ दुराव, आडम्बर, छल, दिखावा आदि दुर्गुण जीवन मे परिव्याप्त हो जाते हैं, वहाँ संयम तो क्या? संयम की छाया तक नही ठहरती। अन्तर एव-वाह्य शुद्धि को, आप एक तुला के दो पलडे मानते थे। आभ्यन्तर शुद्धि अर्थात्-विचारो की पवित्रता, निर्मलता और उज्ज्वलता। वाह्य शुद्धि अर्थात्-आचार की, क्रिया की, मर्यादा की पवित्रता। स्वच्छ परिधान, स्वच्छ विचार और स्वच्छ आचरण—यह था अपका युगानुकूल संयम। और यह थी आपकी सफल जीवन-साधना।

❀ साहित्य-सत्कार

—जव भी कोई नव निर्मित ग्रन्थ आपके नेत्रों के सामने से गुजरता, तो उसे देख कर आपका मन-मयूर नाच उठता। वडी ही तन्मयता के साथ एकान्त मे बैठ कर उसका चिन्तन-मनन, अनुशीलन-परिशीलन युक्त पठन करते। फिर शिष्यों एव सन्त समुदाय को वतलाया करते—देखो! कितना सुन्दर ग्रन्थ है? कितनी सुन्दर व्याख्या है, धर्म-समाज और राष्ट्र की? कितनी हृदय स्पर्शिता विद्यमान है इन विचारो मे? ऐसे ही ग्रन्थ-रत्न सरस्वती भगवती के भण्डार को समृद्ध करेंगे, और ऐसे लेखक हो तो देश-धर्म तथा समाज का उत्थान करेंगे। देखो ·····! यह सत्साहित्य ही तो राष्ट्र की अमूल्य थाती है। और भावावेश मे आप कह उठते—प्रभो! आपकी वड़ी अनुकम्पा है-जो देश को ऐसा साहित्य मिल रहा है।

❀ कवि श्री जी के प्रति आदर

—गुणी व्यक्ति आयु मे, दीक्षा पर्याय मे भले ही छोटा हो, किन्तु गुणी, गुणी का सत्कार करता है। और यही सत्पुरुषो की पहिचान भी रही है। आप मे यह सद्गुण अपने आदर्श रूप मे विद्यमान थ । आप श्रद्धेय श्री कवि जी महाराज से कहा करते थे—कवि जी ! आपकी लेखनी मे बड़ा वल है। तुमने युगानुकूल साहित्य का निर्माण करके—वीतराग-वाणी की जो प्रभावना की है, मेरा मन इससे अतीव-अतीव प्रसन्न है। तुम भले ही दीक्षा या उमर मे छोटे हो परन्तु गुणो मे अपनी पृथक् ही विशेषता रखते हो। तुम्हे देख कर मेरा हृदय गद्गद् हो जाता है। उधर कवि श्री जी भी, आप श्री जी के चरण पकड़ कर नम्रता से कहते—महाराज श्री जी ! आप क्या कह रहे है ? मै तो आपका बच्चा हूँ। यह सब कुछ आप गुरुजनो की ही तो देन है। और आप श्री जी झट उन्हे उठाकर, ससम्मान अपने पास विठा लेते। यह था एक गुणी का दूसरे गुणी के प्रति सत्कार।

❀ दया-मूर्ति

—जैन संस्कृति का मूलाधार दया है। शास्त्रों ने इसे दया माता के नाम से पुकारा है। कथन करने को-दया-शब्द हर मनुष्य की जिह्वा पर गूँजता है; लोग गली-गली गाते फिरते हैं—दया धर्म का मूल है—किन्तु जीवन मे गूँजे—वात तो तब है आनन्द की। श्रद्धेय गणी जी महाराज के जीवन-मे गूँजी थी दया की झनकार तो। दया तो आप के रक्त मे ही रम गई थी किसी भी प्राणी को दुखी देखा, और आपके नेत्र-डबडबा आए। हजारों गृहस्थ अपना-अपना दुःख आपके चरणो मे आकर रोते। आप कहते—

—धर्म का शरण रखो, घबराओ नही, प्यारे भक्त ! दु.ख-सुख तो कर्मो की रेखा है—शान्ति से सहो, समता से सहो, तो दु.ख, दु ख ही नही मालूम देगा। तुम लोग ध्यान नही देते, महामन्त्र नवकार समस्त दु:खो का नाश करने वाला है। जरा गहरी श्रद्धा से पढ़कर तो देखो ! जो शूली से सिहासन बनाने की शक्ति रखता है। जिसने अग्निकुण्ड का पानी बना डाला। फिर आपके दु.ख तो हैं ही क्या ? वह उन्हे क्षण भर मे समाप्त कर सकता है। एकाग्र चित्त हो, शुद्ध मन से नवकार मन्त्र का जाप करो, दु.ख समूल नष्ट हो जाएगा। इस प्रकार आप हर एक को उचित शिक्षा देकर उसके मन से दु खो का भार हलका कर देते। आने वाला अपना दु.ख भूल कर, मन्त्र रटता हुआ हर्ष से अपने घर जाता। लोग आपके सम्बन्ध मे कहते—वे तो सिद्ध पुरुष है। उनके पास जाने की देर है, सब दु.ख स्वयमेव भाग जाते हैं।

—सन्त-जीवन एक रत्नाकर की भाँति होता है। गुरु नानक देव ने कहा है—सन्त की महिमा वेद न जाने—फिर भला युग पुरुष सन्त, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज की महिमा, मेरी यह जड़ लेखनी क्या कर सकती है ? बस मैने तो मात्र अपने मन की उमग को कागज पर उतारा है।

लक्खां वारी प्रणाम, इन्हा जहे वीरा नूं।

—जालन्धर : पजाब .
२०—१०—६०

[२५]

जैन जगताकाश के दिनकर :

मुनि श्री भागचन्द्र जी–विजय–

—मुनि श्री भागचन्द्र जी-विजय-एक मस्त एव रंगीली तबीयत के सन्त है। मानापमान का कुछ भी ख्याल न करते हुए प्रत्येक व्यक्ति से मिलना, आपकी प्रमुख विशेषता है। आप श्रद्धेय प्रधान मत्री श्री मदनलाल जी महाराज के ही परिवार के शान्त मूर्ति श्रद्धेय श्री बनवारीलाल जी महाराज के सुशिष्य है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के शुभ दर्शन का सौभाग्य आपको अनेक बार मिल चुका है और उनकी पवित्र सेवा का शुभावसर भी। स्मृति-ग्रन्थ के लिए आपने प्रस्तुत लेख द्वारा अपना योगदान दिया है। लेख में एक नया ही दृष्टिकोण है जो अगली पक्तियों को पढ़ने से ही ज्ञात हो सकेगा।

—सम्पादक

❀ प्रसन्नता की बात

—परम श्रद्धेय गणीवर्य श्री श्यामलालजी महाराज की की पुण्य स्मृति मे, स्मृति-ग्रन्थ का महत्त्वपूर्ण प्रकाशन किया जा रहा है—यह जान कर परम हर्ष का अनुभव हुआ। यह परम प्रसन्नता की बात है। स्मृति-ग्रन्थ का प्रकाशन होता ही इसलिए है, ताकि आने वाली पीढी, भावी जनता, स्मृति-ग्रन्थ को पढकर उस महापुरुष के सम्बन्ध मे कुछ ज्ञात कर सके जिनकी पुण्य स्मृति मे वह लिखा गया है। और स्मृति ग्रन्थ से प्रेरणा लेकर जन-मानस अपने आपको उन्नति एव अभ्युत्थान के सर्वोच्च शिखर तक ले जा सके, यही तो उद्देश्य होता है स्मृति-ग्रन्थ के प्रकाशन का।

—श्रद्धेय गणी जी महाराज की पुण्य-स्मृति मे, स्मृति-ग्रन्थ का प्रकाशन भी, इसी दिशा मे एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। इस स्मृति-ग्रन्थ को पढकर पाठक जान सकेगे कि श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, जैन जगताकाश के वह समुज्ज्वल-प्रकाशमान दिनकर हो गए हैं, जिनके तप. पूत ज्योतिर्मय जीवन से ससार जगमग-जगमग कर रहा है। और साथ ही यह भी जान सकेगे कि हम भी इस रश्मिकर की ज्योतिर्मय आभा से अपने जीवन-पथ को आलोकित कर, अपना मार्ग प्रशस्त कर सकते है।

—आत्म साधक मानव, जीवन-क्षेत्र मे आने वाले, सघर्षों और विघ्न-बाधाओ के तूफानो और झझावातो से, इस स्मृति-ग्रन्थ के द्वारा प्रेरणा और स्फूर्ति, साहस एव उत्साह प्राप्त करके—लोहा ले सके, मुकाबला कर सके और उन्हे परास्त कर, श्रेयस्कर-मार्ग के मुसाफिर बन सके बस यही तो उद्देश्य रहा है, स्मृति-ग्रन्थ के प्रकाशन का।

❀ जीवन्त स्मृति-ग्रन्थ

—परन्तु कागज के पुस्तकाकार ये स्मृति-ग्रन्थ तो बाद की चीजे है। श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज तो अपने जीवन काल मे ही, एक-दो नही अपितु छह-छह जीवन्त-स्मृति-ग्रन्थो का शानदार निर्माण कर गए है, जो परम्परा से युगो युगो तक उनकी अमर कीर्ति तथा पावन स्मृतियो को सुरक्षित एव अक्षुण्ण रखेगे।

—वे छह स्मृति-ग्रन्थ हैं—श्रद्धेय प्रखर वक्ता श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज, श्रद्धेय तपस्वी श्री श्रीचन्द्र जी महाराज, श्रद्धेय पण्डितरत्न श्री हेमचन्द्र जी महाराज, तथा श्री कस्तूर मुनि जी, श्री कीर्ति मुनि जी, और श्री उमेश मुनि जी—श्रद्धेय गणी जी महाराज के सुयोग्य शिष्य और प्रशिष्य। ये छहो जीवन्त स्मृति-ग्रन्थ आज भी—श्रद्धेय गणी जी महाराज के नाम को समुज्ज्वल किए हुए है तथा उनकी अमर कीर्ति को और अधिकाधिक सुविस्तृत कर रहे हैं।

—सुयोग्य सद्गुरुदेव श्रद्धेय गणी जी महाराज ने, अपनी आत्मा का रस उंडेल-उंडेल कर, अपने सयम-साधना के सलिल से सीच-सीच कर, अपने आदर्श जीवन और मधुर-पावन-सन्देशो से गढ-गढ कर, अपने कडे परिश्रम एव सद्प्रयत्नो से, सुयोग्य शिष्य-प्रशिष्यो का भव्य निर्माण किया और इन छह बोलते हुए स्मृति ग्रन्थ निग्रन्थो को, श्रद्धेय गणी जी महाराज ने जैन समाज को सौप कर एक महान् उपकार किया है। समाज को इन श्रमण-रत्नो से बहुत बडी-बडी आशाएँ हैं।

—श्रद्धेय गणी जी महाराज के ये छहो स्मृति-ग्रन्थ, अपनी पृथक्-पृथक्, भिन्न-भिन्न विशेषताएं रखते हैं। किसी मे प्रखर वक्तृत्व कला के दर्शन-सदर्शन होते है तो किसी मे तपः पूत

जीवन की भव्य झलक मिल जाती है। किसी मे प्रकाण्ड पाण्डित्य दृष्टिगोचर होता है तो किसी मे सुमधुर सगीत की स्वर लहरी कर्ण पथगामिनी बनती है। किसी मे कवित्व एव लेखन-शक्ति का प्रभाव परिलक्षित होता है तो किसी मे मस्ती और फक्कडपन अपनी अलग ही सत्ता बनाए हमारे सामने आते है। गरज कि ये निर्ग्रन्थ महा मुनि जिस ओर भी निकल जाते हैं—उस ओर के ही जन-मानस पर अपनी अमिट छाप और अनोखी धाक जमा देते है। अपने पूज्य गुरुदेव का नाम रोशन करने के साथ-साथ ये जैन समाज के गौरव को भी चार चाँद लगा रहे है। जैन समाज ऐसे सन्त रत्नो को पाकर अपने आपको धन्य मानती है।

❀ अनमोल हीरा

——ऐसे जीवन्त स्मृति-ग्रन्थो के निर्माता श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास की खबर सुनी, तो एकाएक तो यकीन ही नही आया कि जैन समाज की यह आला हस्ती, क्या इतनी-जल्दी उठ सकती है ? जैन समाज के श्याम सलौने महात्मा का भी, क्या इतनी जल्दी स्वर्गवास हो सकता है ? मन सहमा अविश्वास से भर उठा। परन्तु जब-जैन प्रकाश-मे श्रद्धेय गणी जी महाराज के स्वर्गवास के समाचार पढे तो यकीन करना ही पडा कि जैन समाज का यह अनमोल हीरा आज हमसे क्रूर काल द्वारा छीन लिया गया ! सौम्यता-सरलता, और विनोद प्रियता की उस मजुल मूर्ति के अब दर्शन-स्पर्शन कहाँ ?

—श्रमण संघ का यह लाल, देखते ही देखते समाज के नेत्रो के सामने से एकदम तिरोहित हो गया। जैन समाज अपने अनमोल हीरे और चमकते लाल को खोकर, अपने आपको दीन-हीन सा अनुभव करने लगा है। श्रद्धेय गणी जी महाराज के स्वर्गवास से सन्त-समाज मे उनका जो स्थान रिक्त हुआ, उसकी पूर्ति निकट

भविष्य मे तो होनी असम्भव सी ही लगती है। अब जैन समाज को ऐसे महान् आत्मा सन्त कहाँ नसीब होगे।

विरलः स एव

—सन्त बहुत से देखे हैं, अपने भी, पराये भी, जैन समाज के भी और अन्य समाज के भी। परन्तु श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज जैसे महान् सन्त केवल वे ही थे। वैसे तो ससार में सच्चे सन्त ही विरले होते हैं। फिर उन विरले सन्तो मे—श्रद्धेय गणी जी महाराज जैसे सन्त तो और भी विरल ही होते हैं। उन जैसे विरले बस वही थे। इस धरातल पर चिराग लेकर ढूंढने पर भी उन जैसा सन्त मिलना, कठिन ही नही दुर्लभ है।

—ऐसे खन्दा-पेशानी, प्रसन्न वदन सदा हँसमुख रहने वाले, सरलता एव भद्रता से ओत-प्रोत महात्मा श्रद्धेय गणी जी महाराज के पावन दर्शन का सौभाग्य, मुझे भी अनेक वार सम्प्राप्त हुआ है। और उनके सान्निध्य, सेवा मे रहने का शुभावसर भी। जब भी श्रद्धेय गणी जी महाराज के शुभ दर्शन होते थे तो हृदय-आनन्द-विभोर हो उठता था तथा मस्तक उस पावन पुरुष के चरणो मे श्रद्धा-वनत हो जाता था। उनकी पवित्र सेवा मे रह कर मन एक अपूर्व शान्ति का अनुभव करता था। क्योकि उनके मन मे क्रोध, मान, माया और लोभ आदि दुर्गुणो की तो छाया तक भी दृष्टि-गोचर नही होती थी। उनके जीवन में इन कषाय भावो का आभास मात्र भी देखने को नही मिलता था। बल्कि इनके स्थान पर अपूर्व सरलता, मधुर सौम्यता प्रसन्न विनोद प्रियता उत्कृष्ट साधुता और अखण्ड शान्तिका महासागर ठाठे मारता, लहराता हुआ दृष्टिगत होता था।

—काश ! आज का साधु समाज यदि श्रद्धेय गणी जी महाराज जैसी सरलता, भद्रता, निरभिमानता और सौम्यता अपने जीवन में अपना ले, आचरण में ले आए तो उसकी काया ही पलट जाए ;

शान्ति उत्कर्ष और आनन्द का एक अपूर्व समा ही बँध जाए। आपस की वैमनस्यता और एक दूसरे को नीचा दिखाने की जो प्रवृत्ति आज के साधु-समाज मे चल रही है, वह एक दम से समूल ही समाप्त हो जाए। आज का साधु-समाज श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के चरण-चिन्हों पर चल कर वह सफलता और उज्ज्वल प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है, जो युगो-युगो तक पूजा का आदर्श केन्द्र बनी रहे। बस इन्ही शब्दों के साथ मैं उस महान् आत्मा परम पूज्य श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज को अपनी श्रद्धा के कुछ फूल, शब्दों की माला मे गूँथ कर समर्पित करता हूँ। उनकी महान् आत्मा जहाँ भी होगी, आशा है इस तुच्छ भेट को स्वीकार करेगी।

—काछुआ : पञ्जाव :
३०—६—६०

[२६]

दो शब्द :

एक संस्मरण :

श्री छज्जूराम जी महाराज

—श्रद्धेय श्री छज्जूराम जी महाराज, एक हँसमुख और विनोद प्रिय मुनिराज हैं। आप के व्याख्यानों की धाक ग्रामीण जनता में बहुत अच्छी जम जाती है। आप श्रद्धेय गणीवर्य श्री उदयचन्द्र जी महाराज के प्रशिष्य एवं स्वामी श्री निरंजनदास जी महाराज के सुशिष्य हैं।

—आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के प्रति बड़े ही भाव-भीने शब्दों मे दो शब्द लिखे हैं और साथ ही एक सस्मरण भी। जो पाठकों के लिए अगली पंक्तियों मे प्रस्तुत हैं। पाठकों को दो शब्द और एक सस्मरण मे एक निराली ही छटा के दिग्दर्शन होंगे।

—सम्पादक

❀ क्या लिखूँ

—महा भाग्यशाली, शान्त मूर्ति श्री श्यामलाल जी महाराज के सम्बन्ध मे क्या लिखूँ ? कुछ समझ मे नही आता। कहाँ वह पुण्यशाली महान् आत्मा ? और कहाँ मैं अल्प बुद्धि एक छोटा सा तुच्छ सन्त ? कहाँ पूनम का चाँदनी बिखेरता चमकता हुआ चाँद ? और कहाँ अमावस का काला-काला घुप्प अन्धेरा ? और फिर कुछ पढा-लिखा व्यक्ति भी मैं नही हूँ—जो उस महापुरुष के चरणो में शब्दो की कुछ भेंट चढा सकूँ ! मुझ मे इतनी योग्यता ही कहाँ है ? जो उस अनुपम महापुरुष को कुछ उपमाएँ दे सकूँ !

—साथ ही श्रद्धेय कविरत्न उपाध्याय श्री अमरचन्द्र जी महाराज जैसे परम विद्वान् और महान् ज्ञानी सन्तो के होते हुए, मेरा लिखना क्या हस्ती रखता है ? मेरे जैसे अनपढ़ साधु के लिए तो उस महापुरुष के प्रति श्रद्धाञ्जलि के दो शब्द लिखना तो मानो प्रकाशमान सूर्य को छोटा सा टिमटिमाता हुआ दीपक दिखाना मात्र है। फिर भी उस सन्त पुरुष की भक्ति मुझे कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरणा कर ही रही है। इसलिए बस एक छोटा सा संस्मरण लिख कर ही मै अपने को तृप्त समझे लेता हूँ।

❀ एक संस्मरण

—श्रद्धेय शान्त मूर्ति श्री श्यामलाल जी महाराज अपनी शिष्य मण्डली सहित जब सम्वत् १९९५ मे राजाखेड़ी जिला करनाल (पंजाब) पधारे थे, उस समय आप श्री जी के प्रथम शुभ दर्शन मुझे गृहस्थ पर्याय मे ही प्राप्त हुए थे। राजाखेड़ी से बड़सत तक आप श्री जी की पुनीत सेवा मे रहने का शुभावसर भी उस समय प्राप्त हुआ था। उसी समय से आपके सरल जीवन एव पावन उपदेशो से सद्बोध पाकर ही मैं इस सयम महामार्ग की ओर बढने का विचार एव सत्साहस कर सका। धर्माकुर की मेरे हृदय मे वृद्धि तथा सत्प्रयत्न का

अभिसिंचन करने वाले सत्पुरुष आप ही थे। आपकी कृपा से ही मै संयम का साधनामय मार्ग अपना सका। आप के सद्‌गुणों की छाप तभी से मेरे हृदय पर ऐसी पडी है, जिसे इस जीवन मे तो भुला सकना अशक्य ही है।

—आज आप हमारे सामने से चले गये, परन्तु आपके जीवन की मधुर झाँकियाँ और पावन सन्देश आज भी हमें संयम मार्ग मे आगे वढने की प्रेरणा दे रहे हैं। आप की ही अपार कृपा से जीवन और सयम-साधना मे आनन्द ही आनन्द है और भविष्य में भी रहेगा। मेरे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री निरजन दास जी महाराज की मुझ पर दया दृष्टि है। इसी कृपा के कारण ही मै यह टूटे-फूटे दो शब्द लिख सका हूँ। वस, इन्ही शब्दो के साथ मैं उस महा भाग्य शाली आत्मा को अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करता हूँ।

बडौत : उत्तर प्रदेश :
११—१०—६०

निश्चय धर्मरूप पारस के स्पर्श से जीव रूप लोह, मुक्त रूप कनक बन जाता है।

❀ पथ प्रदर्शक, आदर्श सन्त

—भारतीय सस्कृति धर्म प्रधान है। धर्माराधन या धर्ममय जीवन बनाने के लिए जितना बल इस संस्कृति मे डाला गया है, कदाचित् विश्व की अन्यान्य संस्कृतियो मे उतना नही। इस के लिए पथ-प्रदर्शक या तत्त्वोपदेशक के रूप में सन्तो की परम्परा भी काल-प्रवाह की तरह अनादि कालीन है। यद्यपि विश्व के सभी भागो मे सन्त-स्वरूप का दर्शन होता है, किंतु भारत भू की तरह नही; जहाँ कि अध्यात्मवाद के प्रसार और प्रचार के लिए, देश के कोने-कोने में सन्तो की टोलियाँ घूमती और उनकी मधुर बोलियाँ गूँजती रहती हैं।

—वस्तुत. भोगासक्त मानव समाज को योगाकृष्ट करने मे संतो का प्रवल हाथ है। कथनी और करनी के सामंजस्य से जन-मानस को ऊँचा उठाने में इन का सहयोग प्रभावकारी होता है। जन की वाणी मे सत्य, अहिंसा, मैत्री, करुणा और समता का माधुर्य या मुखमण्डल पर ब्रह्म का वर्चस्व और प्रसन्नता, एवं आचरण में ; स्वार्थ परोपकारिता टपकती रहती है। जो आत्म-कल्याण के साथ-थ विश्व-कल्याण के स्वप्नद्रष्टा ही नही, वरन् परम आचार-प्रचार संयोजक भी हैं। उसी तपोधन साधु-समाज मे, श्रद्धेय श्री श्याम ल जी महाराज भी एक आदर्श सन्त हुए हैं।

❀ जीवन विकास

—आप का जन्म विक्रम सम्वत् १९४७ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी के दिन ग्राम सोरई जिला आगरा (उत्तर-प्रदेश) के एक ...ल में हुआ था। आपके पिता का नाम चौधरी टोडरमल ... का नाम श्रीमती रामप्यारी था। विक्रम सम्वत् १९५६ में ...र वय मे, आप ग्राम एलम जिला मुजफ्फर

❀ सर्वोत्तम प्राणी, मानव

—मानव को ससार का सर्वोत्तम प्राणी माना गया है। कहा जाता है कि देव-गण भी, मानव-जीवन प्राप्ति के लिए लालायित रहते हैं। मनुष्य की इस सर्व श्रेष्ठता और महानता का मूल यह नही कि वह रूप, बल, आकार, प्रकार, बुद्धि एवं सुपमा की दृष्टि से, सबसे बढा-चढा है; अथवा कला-कौशल और ज्ञान-विज्ञान मे अपना कोई सानी नही रखता। जल, थल एव गगन का स्वैर विहारी और विविध भौतिक आश्चर्यो का आविष्कारी होने के नाते भी, उसे महा महिम नही कहा जा सकता है। क्यो कि ससार के जीव-जगत् मे कई ऐसे भी जीव हैं, जो उपरोक्त गुणो की प्रतिद्वन्दिता में मानव को पीछे—बहुत पीछे छोड़ सकते हैं। जिन की तुलना मे मानव-मस्तिष्क की करामात, बाल-प्रयास से कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण नही है। फिर भी मानव संसार का आदर्श प्रतीक है—इस चिर कथन के पीछे कुछ न कुछ सार और सचाई अवश्य है। अन्यथा किम्वदन्ती का स्रोत कब का न सूख गया होता ?

—धर्म पारखी, तत्त्वज्ञो ने जन्म-मरण को सर्वत दुःख मूलक माना है। ससार के समस्त जीव इस द्वन्दात्मक दु.ख-चक्र में, अनादि काल से परवश बने पिसते चले आ रहे हैं। दर्शन, ज्ञान और चारित्रिक सम्यक्त्व के बिना या धर्मावलम्बन रहित बन कर वे दुःखोन्मुक्त नही हो सकते। सभी जीव योनियो मे, मनुष्य भव में ही यह विशेपता है कि वह अपनी आत्मा को इस चिर-पीड़ा-पङ्क से बाहर कर, शुद्ध, बुद्ध और मुक्त बना सकता है। नर से नारायण और आत्मा से परमात्मा बनाने के लिए एक मात्र यही भव है—ऐसा शास्त्रीय सिद्धान्त हैं। जिस साधना के द्वारा मनुष्य ऐसा कर सकता है, उसे धर्म कहते हैं। धर्माराधन ही मनुष्य की सर्वोपरि विशेपता है। यही विशेपता उसे लघु से महान् कर देती है। कहा भी है—

धर्मो हि तेपामधिको विशेप.

निश्चय धर्मरूप पारस के स्पर्श से जीव रूप लौह, मुक्त रूप कनक बन जाता है।

❁ पथ प्रदर्शक, आदर्श सन्त

—भारतीय सस्कृति धर्म प्रधान है। धर्माराधन या धर्ममय जीवन बनाने के लिए जितना बल इस संस्कृति मे डाला गया है, कदाचित् विश्व की अन्यान्य संस्कृतियो मे उतना नही। इस के लिए पथ-प्रदर्शक या तत्त्वोपदेशक के रूप में सन्तों की परम्परा भी काल-प्रवाह की तरह अनादि कालीन है। यद्यपि विश्व के सभी भागो मे सन्त-स्वरूप का दर्शन होता है, किंतु भारत भू की तरह नही; जहाँ कि अध्यात्मवाद के प्रसार और प्रचार के लिए, देश के कोने-कोने मे सन्तो की टोलियाँ घूमती और उनकी मधुर बोलियाँ गूँजती रहती हैं।

—वस्तुतः भोगासक्त मानव समाज को योगाकृष्ट करने मे संतो का प्रबल हाथ है। कथनी और करनी के सामंजस्य से जन-मानस को ऊँचा उठाने में इन का सहयोग प्रभावकारी होता है। जिन की वाणी मे सत्य, अहिंसा, मैत्री, करुणा और समता का माधुर्य तथा मुखमण्डल पर ब्रह्म का वर्चस्व और प्रसन्नता, एवं आचरण में नि स्वार्थ परोपकारिता टपकती रहती है। जो आत्म-कल्याण के साथ-साथ विश्व-कल्याण के स्वप्नद्रष्टा ही नही, वरन् परम आचार-प्रचार के संयोजक भी हैं। उसी तपोधन साधु-समाज मे, श्रद्धेय श्री श्याम लाल जी महाराज भी एक आदर्श सन्त हुए हैं।

❁ जीवन विकास

—आप का जन्म विक्रम सम्वत् १९४७ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी के दिन ग्राम सोरई जिला आगरा (उत्तर-प्रदेश) के एक क्षत्रिय कुल मे हुआ था। आपके पिता का नाम चौधरी टोडरमल और माता का नाम श्रीमती रामप्यारी था। विक्रम सम्वत् १९५६ में केवल ९ वर्ष की किशोर वय मे, आप ग्राम एलम जिला मुजफ्फर

नगर (उत्तर-प्रदेश) मे गुरुवर्य पण्डितरत्न श्री ऋषिराज जी महाराज की सेवा मे उपस्थित हुए और उन्ही की देख-रेख मे ज्ञान-ध्यान की अभिवृद्धि करने लगे। विक्रम सम्वत् १९६३ को ग्राम ढिढाली जिला मुजफ्फर नगर मे ज्येष्ठ शुक्ला पचमी मगलवार को १६ वर्ष की आयु मे आपने अपने ज्ञानदाता पण्डितरत्न श्री ऋषिराज जी महाराज की सेवा मे जैन दीक्षा स्वीकार कर ली।

—सन्त पद स्वीकार करने से ले कर मरण पर्यन्त आपने पूर्ण मनो योग पूर्वक साधुता निभायी। उत्तर-प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा तथा पञ्जाब प्रान्त, जो कि आप का प्रमुख विहार-क्षेत्र था, सदा आप की संयमाराधना और साधना से चकित-चित बना रहा। सरलता, मृदुता, सेवा परायणता और गुण ग्राहकता आदि सद्-गुण जो साधु जीवन के आवश्यक सम्बल हैं, आप में प्रचुर मात्रा मे पाए जाते थे। ५४ वर्ष के दीर्घ संयम-जीवन मे, सतत जागरूक रह कर आपने अपने नियम को निभाया और सदा प्रमाद से बचते रहे। स्वभाव उग्र क्षत्रिय कुलोद्भव होकर भी आप साधु जीवन मे मधुर-मानस, मृदुल-स्वभावी और शान्त मुद्रा बन कर, साधुता की अखण्ड मर्यादा निभाने मे सर्वथा सफल सिद्ध हुए।

—आप की सन्निधि मे रहने वाले श्रमण अथवा सम्पर्क मे आने वाले श्रावक-समुदाय, उपरोक्त गुणो के कारण सहसा आप को भूल नही सकेंगे। ७० वर्ष के लम्बे जीवन को व्यतीत कर, विक्रम सम्वत् २०१७ वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार को—मानपाडा, आगरा मे आप दिवंगत हो कर, एक सुरभित कुसुम की तरह, अपनी सुयश सुरभि से समाज-मानस को चिर सौरभ प्रदान कर, सदा के लिए इस विश्व वाटिका से बाहर हो गए। शाशनेश आपकी परम पवित्र आत्मा को चिर शान्ति एव गुण-लुब्ध-वियोग-कातर समाज को दु:ख सहन की शक्ति प्रदान करे, यही कामना है।

—अजमेर : राजस्थान :

३०—१०—६०

[२८]

हे सन्त ! तुझे सादर प्रणाम :

मंत्री श्री पुष्कर मुनि जी

—श्रद्धेय मन्त्री श्री पुष्कर मुनि जी महाराज अधिकतया मरुधर प्रान्त मे विचरण करने वाले प्रसिद्ध सन्त हैं। आप श्री जी श्रद्धेय महास्थविर श्री ताराचन्द्र जी महाराज के शिष्य रत्न हैं। आप श्रमण सघ के मंत्री जैसे सुप्रतिष्ठित पद पर आसीन है। आप एक अच्छे प्रवचन कार हैं, परम विद्वान् हैं अथच शास्त्रों के मर्मज्ञ हैं।

—आप श्री जी विक्रम सम्वत् २०११ में अपने पूज्य गुरुदेव एव शिष्य मण्डली के साथ आगरा पधारे थे। तभी आपने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के शुभ दर्शन किए थे। उसी संस्मरण के आधार पर आप श्री जी ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है। पाठक जिसका अगली पंक्तियों मे रसास्वादन कर सकते हैं।

—सम्पादक

※ मुनिपुङ्गव

—श्रद्धेय मुनि पुङ्गव, सन्त हृदय श्री श्यामलाल जी महाराज त्याग और वैराग्य के, क्षमा और प्रेम के, स्नेह और सरलता के, विनय और वैयावृत्य के साक्षात् प्रतीक थे। वे मुनि पुङ्गव शान्ति एव सौम्यता की साक्षात् मगलमय मूर्ति थे। उनकी सयम एव साधना-मय जीवन यात्रा सतत् लक्ष्य विन्दु की ओर ही अग्रसर रही थी। जिस प्रकार कल-कल करती हुई सरिता की निर्मल अजस्र धारा, लहरो से अठखेलियाँ करती, मार्ग की विघ्न-बाधाओ को चीर कर अपनी विजय-ध्वजा लहराती हुई, सतत प्रवाहमान रहती है। उसी प्रकार उन मुनि पुङ्गव की सरस सयम धारा भी, उछलती-कूदती, विचार उर्मियो से अठखेलियाँ करती, दुर्गुण आदि मार्ग बाधाओ की चट्टानो को चीरती उनके वक्षस्थल पर अपनी कीर्तिगाथा के गौरवमय चिन्हो की स्पष्ट अमिट छाप लगाती हुई, कल-कल, छल-छल, करती निरन्तर लक्ष्य की ओर, उद्देश्य की ओर ही प्रवाहमान रही, गतिशील रही, और निरन्तर बढती ही रही, आगे—और आगे, निरन्तर आगे।

※ प्रथम दर्शन

—उस पुराण पुरुष के प्रथम दर्शन का सौभाग्य हमे आगरा नगरी मे ही सम्प्राप्त हुआ था। भारत की राजधानी देहली मे सम्वत् २०११ विक्रम का, सद्गुरुवर्य महास्थविर परम श्रद्धेय श्री तारा-चन्द्र जी महाराज के साथ शानदार वर्षावास पूर्ण कर, मथुरा और वृन्दावन होते हुए, जब हम आगरा आए, तब आप श्री जी ने स्नेह से उत्प्रेरित हो कर अपने प्रिय शिष्य तपस्वीराज श्री श्रीचन्द्र जी महाराज को हमारे स्वागतार्थ आगरा से ५ मील पर स्थित सिकन्दरा तक भेजा। आप सन्त जनो की प्रेरणा से आगरा श्री सघ ने सद्गुरुवर्य का जो, जय-जय कार के नारों के साथ भाव-भीना स्वागत किया, वह चिरस्मरणीय रहेगा।

—आगरा मे आप श्री जी एव मंत्री प्रवर श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज से लेकर छोटे-बड़े सभी सन्तो मे जिस उदात्त प्रेम के दर्शन-संदर्शन हुए, उसका पूर्ण चित्रण करना लेखनी की शक्ति से परे है। आगरा क्षेत्र आपका निजी क्षेत्र है, वहाँ पर आपने जिस नेह एव सद्भावना का सक्रिय परिचय दिया, वह आज भी स्मृति पट पर स्वर्णाक्षरो की तरह चमक रहा है।

गुजरने को गुजर जाती हैं, उम्रें शादमानी मे।
ये मौके कम मिला करते हैं, लेकिन जिन्दगानी मे ॥

❀ समन्वय के प्रतीक

—आगरा मे चन्द दिनो के अत्यन्त सन्निकट के परिचय मे रह कर मैंने यह अनुभव किया कि श्रद्धेय गरिणवर्य श्री श्यामलाल जी महाराज, एक भद्र एव सरल प्रकृति के सन्त थे। वे मुझे ज्ञान एवं आचरण के समन्वय के प्रतीक लगे। उनके मन-वचन एव कर्म मे मैंने स्वभाव जन्य एकरूपता पाई। कथनी और करणी मे, आचार और विचार मे वे समरस दृष्टिगोचर हुए। उन्हे गणी जैसे महान् पद तक का भी जरा अभिमान न था। नम्रता उनके अन्दर स्पृहणीय रूप मे विद्यमान थी। उन्हे न तो अपने त्याग का गर्व ही था, और न साधना की उत्कृष्टता का थोथा दावा। वे समन्वयमूर्ति इतने सरल एव निश्छल थे, कि विरोधी से विरोधी भी आपकी सरलता को देख कर मुग्ध एवं प्रभावित हुए बिना नही रहता था।

—आज वे भौतिक रूप में बेशक हमारे सम्मुख नही हैं। किन्तु यश-शरीर से वे आज भी हम से विलग नही है। मैं उस महान् सन्त के चरणारविन्दो मे अपनी भावाञ्जलि राष्ट्र कवि मैथिलीशरण 'गुप्त' के शब्दो मे समर्पित करता हूँ।

हे सन्त ! तुझे सादर प्रणाम।

—ब्यावर : राजस्थान :

२१—८—६०

[२९]

एक अप्रमत्त जीवन

मुनि श्री कन्हैयालाल जी -कमल-

—श्रद्धेय श्री कन्हैयालाल जी महाराज—कमल—एक अच्छे लेखक और सात्त्विक मधुर प्रकृति के सन्त हैं। —निशीथ भाष्य— जैसे महान् ग्रन्थ का श्रद्धेय कवि जी महाराज के साथ आपने महत्त्वपूर्ण सम्पादन किया है। आप समस्त जैन आगमों का चार योगों के रूप में सफल सम्पादन एवं संकलन कर रहे हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की पवित्र सेवा में, आगरा आकर आप एक चातुर्मास कर गये हैं। उन्हीं थोड़े से दिनों के सम्पर्क में श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के सद्गुणों की जो छाप आपके मन एवं मस्तिष्क पर पड़ी, उसी का सफल निरूपण आपने इस लेख में किया है। जो उन्हीं के शब्दों में आगे प्रस्तुत है।

—सम्पादक

❀ विकराल काल चक्र.

—दिन और रात का यह विकराल काल चक्र, प्राणी जगत् की जीवन धुरा पर, अमित एवं द्रुत गति से प्रगति कर रहा है। मानव सूर्यास्त के पश्चात् मोहमयी निद्रा से ग्रसित हो, मूर्छित हो जाता है, स्वप्न अथवा सुसुप्ति के आधीन हो निश्चेष्ट हो जाता है। प्रातः काल होने पर फिर कमल की भांति खिलखिला कर हँस पड़ता है, और व्यस्त हो जाता है अपने दैनिक कार्यों मे। प्रात. मध्यान्ह और संध्या, इसी गति-क्रम से समस्त मानव जीवन गतिमान है। प्रतिक्षण, प्रतिपल काल के धक्के सब को लगते ही हैं। इस क्रूर काल को परिक्रमा जाने-अजाने सबको करनी ही होती है। कोई भी तो नही बच सकता इस काल चक्र की चपेट से। यह शास्वत सत्य है।

—मानव इस काल चक्र से बच कर, एक ओर भागने का प्रयत्न करता ही है। वह इस मधुर-संसार मे प्रवेश करना चाहता है। परन्तु बेचारा पूर्णतः प्रविष्ट भी नही हो पाता, कि काल का कराल पंजा उसे आ दबोच लेता है। और काल के इस क्रूर गाल में समा जाना ही पड़ता है मानव को। भला नियती की इस कुटिल चाल को कौन मेट सकता है? अनादि काल से आज तक, इसका यही क्रम रहा है। इसमे न तो हुआ कोई परिवर्तन और न हुआ कोई बदलाव। मानव इस काल के समक्ष दीन-हीन असहाय सा ही तो हो जाता है।

❀ अर्हन्त और सन्त

—हमारे सामने दो प्रकार की आत्माएं हैं—अर्हन्त और सन्त की। अर्हन्त की आत्मा तो अमर हो गई, इस काल चक्र से मुक्त हो गई और विश्व विजयी बन गई। आत्मा, महात्मा और परमात्मा की क्रमिक विकास शील मंजिलो को पार करके, अर्हन्त की आत्मा तो हमारा आराध्य बन गई, प्रातः स्मरणीय हो गई।

—और सन्त की आत्मा एक क्रमिक विकास करते हुए, उस आराध्य, उस अन्तिम लक्ष्य की ओर गतिशील-प्रगतिशील रही है। अपनी अध्यात्म-साधना, एव अभ्युत्थान—मूलक विचार-धाराओ से, जो ससार का आकर्षण केन्द्र रही हैं। सन्त की आत्मा, जो अपने सद्गुणो की सुगन्ध से समस्त विश्व मे एक सुगन्धिमय वातावरण का सृजन करती रही है। जिसका तपः पूत निर्मल जीवन, जन-चेतना का प्रेरणा-स्रोत रहा है। जिसके महान् जीवन के पावन प्रसग, जन-मानस के लिए एक समुज्ज्वल अनुकरणीय आदर्श समुपस्थित करते रहे हैं।

—उसी एक सत की आत्मा, जिनका जीवन एक दिन हमारे बीच था और आज नही है। जिनके साथ उठ-बैठ कर जीवन की सुख दु खात्म अनुभूतियो को सुनते सुनाते रहे। वे थे हमारे श्रद्धेय सरलमति-सरलगति सत गणी श्री श्यामलाल जी महाराज। उनमे जिस ऊँचे दर्जे की साधुता विद्यमान थी, उसका क्या वर्णन करू ? वह अवर्णनीय है।

ॐ अप्रमत्त जीवन

—जिन दिनो मैने उनके पावन दर्शन पाए—उन दिनो वे प्राय अस्वस्थ से रहा करते थे। वृद्धत्व से उनका शरीर शनैः-शनैः शिथिल होता जा रहा था। परन्तु आश्चर्य है कि उनकी आत्मा अधिकाधिक बलवती बनती जा रही थी। श्रद्धेय गणी जी महाराज का उठना, बैठना, चलना, फिरना आदि उन दिनो सब कुछ आत्म बल से हो रहा था।

—आगरा की सुदूर बस्तियो मे भी वे, वात्सल्यपूर्ण हृदय से जाते और भावुक आत्माओ की भावनाओ का समादर करते। मन्द ज्योति होने पर भी, मोटरो, साइकिलो से भरे-पूरे सकीर्ण जन-पद मे कही नही टकराते। अशक्त होते हुए भी वे अप्रतिहत गति

से बढे चलते। मै कहता–भगवन्! इतनी दूर क्यो पधारे? तो वे मुस्करा कर कहते–भैया! घूमने-फिरने से सहज स्फूर्ति आती है, शरीर हलका रहता है। सारे दिन बैठे रहना भी तो अच्छा नही लगता। यह था उस सन्त का अप्रमत्त आराधनामय जीवन।

❀ अपनत्व भावना के आदर्श

—मै उनके समीप यदा-कदा, जब भी पहुँचता तो वे बड़ी ही आत्मीयता के साथ, स्नेह भरे शब्दो मे पूछते–कौन है? कन्हैया भैया! आज भी ममता भरे उनके ये शब्द मेरे कानो मे घूम-घूम कर टकराते और गूंज जाते हैं। जब मैं एकात में होता हूँ तो उनकी प्यार भरी याद मुझे बरबस आ ही जाती है। और मै मन ही मन श्रद्धावनत हो जाता हूँ, उस पावन सत के चरणो मे। चन्द दिनो के सान्निध्य से ही मैने उनसे कितना स्नेह पाया! उन्होने मुझे कितने प्यार से अपना कह कर पुकारा था।

—सरलता और स्नेह उनकी आत्मा का आदि मध्य और अन्त था। साधुत्व के दर्शन मुझे सरल आत्माओ मे ही होते हैं। मेरी ध्रुव धारणा मे साधुत्व की परिभाषा है–जिस व्यक्ति से मिल-भेट कर, प्रत्येक व्यक्ति को यह अनुभव होने लगे कि मै किसी अपने से मिल कर जो सुख पाता हूँ, वही मुझे यहाँ इस सन्त व्यक्ति से भी मिला है, वल्कि उससे भी अधिक मिला है। मेरी धारणा का पूर्ण प्रतिविम्व उस स्नेहशील आत्मा मे था। परत्व को तो श्रद्धेय गणी जी महाराज ने विल्कुल भुला ही दिया था।

—अपनत्व का विकास वे इस हद तक कर पाये थे कि किसी भी मानव, यहाँ तक कि किसी छोटे से छोटे वालक को भी देख कर, उनमे उसके प्रति सात्विक स्नेह, ममत्व और अपनापन प्रगट हो ही जाता था। अगर चलते-चलते अथवा खेलते-खेलते, कोई वालक गिर पडता तो वे झट उसे उठाते और उसके कुशल-क्षेम पूछने

मे इस प्रकार तन्मय और एकात्म हो जाते कि मानो वे उसके ही कोई प्रगाढ आत्मीय हैं। उस बालक का कुशल-क्षेम पूछने के अनन्तर वे उसे अपने ही अतीत जीवन की कोई सीधी-सादी सी बात बता कर प्यार से कहते—जाओ खेलो। वीर बालक ऐसे नही रोया करते। और वह बालक, उनकी अपनत्व से भरी ममतामय वाणी सुनकर, एक दम से चुप हो जाता, तथा कुछ ही देर मे रोना छोडकर, हँसता-मुस्कराता हुआ चला जाता। ऐसा था अपनत्व की भावनाओ से भरा श्रद्धेय गणी जी महराज का मधुर जीवन-व्यवहार। और इन अपनत्व की आदर्श भावनाओ का ही परिणाम है कि आज बच्चे-बच्चे की जबान पर उनका नाम है और हृदयो मे संजोयी हुई उनकी पावन स्मृतियाँ। जैन समाज उन्हें युगो-युगो तक नही भुला सकेगा।

—आज वे कहाँ होगे ? नही कह सकता, नही कहा जा सकता ! किन्तु वे जहाँ कही भी हो, उनकी चारित्रात्मा के पावन चरणो मे मेरे अनेकानेक वन्दन। इन्ही शब्दो के साथ मै उस सन्त आत्मा को अपनी भावाञ्जलि सर्मपित करता हूँ।

—हरमाड़ा : राजस्थान :
१३—१०—६०

[३०]

वे जीवन शिल्पी थे :

श्री देवेन्द्र मुनि-शास्त्री-साहित्यरत्न-

—श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज, एक सुकोमल एवं मधुर प्रकृति के तरुण सन्त हैं . आपका अध्ययन अच्छा सुविस्तृत है। शास्त्री और साहित्यरत्न परीक्षाएँ आपने उत्तीर्ण की हैं इसके अतिरिक्त आप एक अच्छे लेखक भी हैं और सम्पादन कला के मर्मज्ञ भी। आप श्रद्धेय मंत्री श्री पुष्कर मुनि जी महाराज के सुशिष्य हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी को आपने अच्छी तरह समझा है। कुछ दिन आप उनके निकट सम्पर्क में रहे भी हैं। फलतः उनके पवित्र जीवन का जो प्रभाव आपके मानस-पटल पर पड़ा, उसे लेखनी-तूलिका के द्वारा शब्दों के माध्यम से कागज-चित्रपट पर बड़ी ही खूबी के साथ आपने चित्रित कर दिया है। पाठक अगली पंक्तियों में उस भव्य चित्र को देख कर सौंदर्याभिभूत हो उठेंगे।

—सम्पादक

❀ रोशनी की मीनार

—खुशनुमा दुनिया में वह, हाजत रवा मीनार है।
रोशनी से जिस की मल्लाहो के बेडे पार हैं॥

—सुप्रसिद्ध विचारक जेम्स ने लिखा है कि—जब हमे मदद की जरूरत होती है, उस समय हम एक सन्त की सहायता पर जितना भरोसा कर सकते है, उतना किसी दूसरे पर नहीं'। सन्त रोशनी की वह जीती जागती मीनार है, जिस के प्रकाश मे भूले-भटके, पथभ्रष्ट यात्री, अपना सही रास्ता खोज निकालते हैं। सन्त-जीवन के सद्गुण-समुज्ज्वल प्रकाश में अनेक पथिको ने, साधक यात्रियो ने, सम्यक् सत्य-मार्ग का अनुसरण कर, अपनी सही मजिल प्राप्त की है। अनेकों ने अपने हृदयस्थ अन्धकार को निरस्त करके, ज्ञान-ज्योति का जगमगाता आलोक प्राप्त किया है।

—परम श्रद्धेय गणी पद विभूषित पण्डित प्रवर श्री श्याम लाल जी महाराज भी ऐसे ही विशिष्ट सन्त थे। वे जीवन्त प्रकाश-स्तम्भ थे, रोशनी की एक चमकती हुई मीनार थे। एक ऐसी मीनार, जिस का सहारा ले कर हजारो मुसाफिरों ने अपना रास्ता तय किया। एक ज्योतित प्रकाश स्तम्भ, जिसने अज्ञान एवं मोह-तमसावृत, अनेक मार्ग-भ्रष्ट आत्माओ का यथार्थ मार्ग-दर्शन किया, और उन्हे अपने ध्येय तक सकुशल पहुँचा दिया।

❀ जीवन-शिल्पी

—सन्त जीवन का शिल्पी है, प्रबुद्ध एवं उत्क्रान्त कलाकार है। वह कलाकार, जो भोग-क्षोभ से, विभ्रम-विलास मे, सत्ता-महत्ता से, एवं मोह-माया से ग्रसित आत्माओं को, वास्तविक सत्य-तथ्य के संदर्शन कराता है। आत्मस्थ सत्य और

सौन्दर्य पर पड़े हुए घने तमसावरण को हटा कर, सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की समुज्ज्वल ज्योति प्रज्ज्वलित करता है। वह शिल्पी, जो जन-जीवन-निर्माण की महान् साधना में सलग्न रह कर, अपने ज्ञान और चारित्र के औजारों से, अनघड़ जन-मानस प्रस्तर से सौन्दर्य-समन्वित प्रतिमा का भव्य निर्माण करता है। वह चितेरा, जो अपने सदगुणो के रग और तूलिका से विश्वविख्यात भव्य चित्र का निर्माण करता है। ये कलाकृतियाँ ही उस शिल्पी, कलाकार, चितेरे को युग युगान्त-कल्पान्त तक के लिए अजर अमर सुयश और गौरव प्रदान कर जाया करती हैं।

—श्रद्धेय गणी पद सुशोभित श्री श्यामलाल जी महाराज, ऐसे ही सच्चे जीवन-शिल्पी, प्रबुद्ध एवं उत्क्रान्त कलाकार और चतुर चितेरे थे। अपने जीवन निर्माण के साथ-साथ आप ने जन-जीवन का भी भव्य निर्माण किया था। श्रद्धेय प्रखर प्रवक्ता श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज, तपस्वीरत्न श्री श्रीचन्द्र जी महाराज, तथा पण्डित प्रवर श्री हेमचन्द्र जी महाराज, जैसी भव्य एव विख्यात् मुनि रत्न प्रतिमाओ के निर्माता आप श्री जी ही रहे हैं। इसी प्रकार श्री कस्तूर मुनि जी, श्री कीर्ति मुनि जी तथा श्री उमेश मुनि जी, मुनि त्रय आप श्री जी के ही प्रशिष्यों के रूप मे जीते जागते स्मारक हैं। एक-दो नही, शताधिक, सहस्राधिक बल्कि कहना चाहिए लक्षाधिक जनता, आप श्री जी के मधुर एवं उदात्त जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर, आप की गौरव गाथा को अक्षुण्ण रखे हुए है।

❀ रेखा चित्र

—श्रद्धेय पूज्य प्रवर गणी पदालंकृत श्री श्यामलाल जी महाराज ऐसे विशिष्ट सन्त रत्न रहे हैं, जिन्होने अपने निर्मल और निश्छल व्यक्तित्व से अनेक हृदयो पर अमिट छाप छोड़ी है। उन की उदात्त स्नेह एवं सरलता की छाप मेरे मन-

मस्तिष्क पर भी बहुत गहरी पड़ी है। प्रथम दर्शन मे ही उन के प्रेम-पूर्ण व्यवहार से मै इतना अधिक प्रभावित हुआ, मानो वर्षों का उन के साथ घनिष्ट परिचय रहा हो। सन् १६५५ के वे मधुर-क्षण, आज भी स्मृत्याकाश मे आकाशदीप की तरह चमक-चमक कर जगमग-जगमग कर रहे है। बेचारे विस्मृति के काले कजरारे सघन घन उन्हे आच्छादित करने की कहाँ सामर्थ्य रखते हैं ? उन का वह मधुर स्नेह से परिपूरित निश्छल-मानस, हृदय की एक थाती बन कर रह गया है।

—लघु मिश्रीकन्द के आकार का सुन्दर इकहरा शरीर, चिकना चमकता हुआ ललाट, सिर के पीछे फहराती हुई, कुछ-कुछ कुञ्चित तथा विरल श्वेत केशराशि, लाल खरबूजे के समान दमकता हुआ चेहरा, टार्च की तरह निर्मल शीतल प्रकाश से तेजस्वी बने नेत्र युगल, आशीर्वाद के लिए हमेशा उन्नत रहने वाले कोमल कर, गौर तपे हुए कुन्दन के समान वर्ण, बुढापे की झुर्रियों में छलछलाती सरलता तथा मानवता। यह है उस महामना, वयोवृद्ध नर शार्दूल का रेखा चित्र। जो सहज ही मानव-मन को आकृष्ट कर लेता है। ऐसे सन्त रत्न की सौम्य मूर्ति का जब भी पुण्य स्मरण हो आता है, तभी हृदय गद् गद् हो उठता है, और आर्यावर्त के उस महामानव श्रमण भगवान महावीर के यह पावन शब्द कानो में गूंजने लगते हैं—

अहो खंति अहो मुत्ति,
अहो अज्जस्स सोमया।

अर्थात्-अहो ! आर्य की क्षमा, निर्लोभता, और सौम्यता कितनी आश्चर्य जनक है ? वास्तव मे श्रद्धेय गणी जी महाराज तो क्षमा के आगार, सन्तोष के भण्डार और सौम्यता के साक्षात् अवतार ही थे। उन के महापुरुषोचित किन-किन सद्गुणो का वर्णन किया जाए ? उन के एक एक सद्गुण की प्रशसा मे ग्रन्थ के ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। जिस

प्रकार से व्योमस्थ तारागणो की गणना असम्भव है, उसी प्रकार श्रद्धेय गणी जी महाराज की सद्विशेषताओ की गणना भी अशक्य सी ही है। अधिक क्या ?

—आज उस महापुरुष का भौतिक शरीर हमारे चरम चक्षुओ के सामने नही है। पर वे यशः शरीर से आज भी हमारे सामने ही हैं। उन का तपः पूत जीवन आज भी हमे प्रेरणा दे रहा है। मैं मानवता के उस प्रकाशस्तम्भ सन्त के चरणार्विन्दो मे अपनी भाव कुसुमाञ्जलि अर्पण करता हूँ और आशा करता हूँ कि उन के जीवन की मधुर-स्मृति, हमे सयम-साधना, तप. आराधना की मगलमय प्रेरणा युग-युगान्त तक देती रहेगी।

निगाहे कामिलो पर, पड ही जाती है ज़माने की।
कही छिपता है 'अकबर' फूल, पत्तो मे निहां हो कर ॥

—ब्यावर . राजस्थान :
३१—८—६०

[३१]

सेवाव्रती सन्त के प्रति :

मुनि समदर्शी

—मुनि श्री आईदान जी-समदर्शी-एक स्वतन्त्र विचारों के कर्मठ सन्त युवक हैं। आप जिस बात को सोच लेते हैं, फिर उसे कर ही गुजरते हैं, चाहे वह कितनी ही कठिन क्यों न हो! आप श्रमण संघ के श्रद्धेय उपाचार्य श्री गणेशीलाल जो महाराज के सुशिष्य हैं। कुछ दिन आप वाराणसी भी रह कर अपने अध्ययन को सुविशाल बना चुके हैं और सम्प्रति श्रद्धेय आचार्य श्री जी की पुनीत सेवा में रह कर, शास्त्र-सम्पादन एवं अध्ययन विकास का कार्य कर रहे हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के आप दो बार दर्शन कर चुके हैं। जिसका उल्लेख आपने प्रस्तुत लेख में भी किया है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की सेवा परायणता से आप काफी प्रभावित रहे हैं। प्रस्तुत लेख में भी पूज्य गुरुदेव के इसी सद्गुण की प्रमुखतया चर्चा है।

—सम्पादक

❀ साधना का प्राण, सेवा

—साधना निष्ठ जीवन मे सेवा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बल्कि यों कहना चाहिए कि सेवा, साधना का प्राण है। आगम मे बताया गया है कि सेवा का अवसर उपस्थित होने पर साधक, तप तथा स्वाध्याय आदि का त्याग कर सकता है। परन्तु तपश्चर्या एवं स्वाध्याय के लिए, वह सेवा का परित्याग नही कर सकता।

—साधु समाचारी मे स्पष्ट शब्दों में बताया गया है कि साधु प्रात. आवश्यक क्रियाओं से निवृत्त हो कर सर्व प्रथम गुरु से यह पूछे—भगवन्! कोई सेवा-कार्य है? यदि कोई सेवा-कार्य न हो, तभी वह स्वाध्याय, ध्यान एव तप आदि की साधना मे संलग्न हो सकता है। परन्तु सेवा-कार्य को छोड़ कर वह स्वाध्याय-तप आदि की साधना नही कर सकता। क्योंकि सेवा मूल गुण है, और स्वाध्याय-तप आदि साधनाएं उत्तर गुण। इन उत्तर गुणो का अस्तित्त्व सेवा-भावना के साथ ही रह सकता है.। आगम मे सेवा-साधना की उपेक्षा करने वाले साधक को प्रायश्चित का अधिकारी बतलाया गया है। इससे पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि सेवा की साधना कितनी महत्त्वपूर्ण है!

❀ भ० महावीर और गौतम

—श्रमण भगवान् महावीर ने गौतम के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए फर्माया है—गौतम! सेवा निष्ठ साधक सेवा की साधना करते हुए, सात-आठ कर्मों के बन्धन को शिथिल कर देता है। साथ ही यदि सेवा करते समय भावना में उत्कृष्टता आ जावे, तो वह सेवा-व्रती साधक, तीर्थंकर गोत्र का बन्ध तक कर सकता है।

—सेवा साधना जितनी महान् है, उतनी ही कठिन भी है। साधारण साधक का तो कहना ही क्या? बड़े-बड़े विशिष्ट योगी भी इस गहन पथ पर चलने मे असमर्थ हो जाते हैं। तभी तो सेवा को—योगीनामप्यगम्यः—अर्थात् योगियो के लिए भी अबूझ कहा है। इसकी गम्भीरता को प्राप्त कर सकना सरल नही है। इस सेवा-साधना मे उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए साधक को अपने आपको समर्पित कर देना होता है। एक तरह से कहा जाय तो यह सर्वस्व समर्पण का सौदा है। सेवा-व्रती को, बिना नाक-भौं सिकोड़े सब कुछ मुस्कराते हुए सहन करना होता है। कभी-कभी सम्मान के बदले अपमान और तिरस्कार के विषाक्त प्याले भी मिलते हैं, जिन्हे हँसते-हँसते सहर्ष पान करने के लिए, साधक को हर समय तैयार रहना पडता है। भारतीय सस्कृति का इतिहास उन महान् पुरुषो की उज्ज्वल-साधना से आलोकित है, जिन्होने सेवा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन ही समर्पित कर दिया था।

❀ सेवा निष्ठ साधक

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज भी एक ऐसे ही सेवा निष्ठ साधक थे। मुझे सर्व प्रथम विक्रम सम्वत् २००७ दिल्ली मे, आपके दर्शनो का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। और दूसरी बार बनारस जाते समय आगरा मे आप श्री जी के दर्शन किये थे। परन्तु मैने कभी यह नही सोचा था कि आप के यह अन्तिम दर्शन है। इस त्याग निष्ठ और सेवा मूर्ति को मैं फिर कभी नही देख सकूँगा, यह मेरे मन मे कल्पना भी नही थी।

—श्रद्धेय गणी जी महाराज को मैंने काफी निकट से देखा है। उन्हें जब भी देखा, तभी सेवा-साधना मे सलग्न पाया। काफी वृद्ध होते हुए भी वे सन्तो की सेवा मे सलग्न रहते थे। आलस्य एव प्रमाद तो आपको छू तक नहीं पाए थे। शरीर से वृद्ध होते हुए भी उनका मन जवान था और उनके हृदय मे

सेवा करने की हविस थी, उमग थी। इस अवस्था मे कार्य करने का इतना उत्साह कम ही व्यक्तियो मे देखने को मिलता है। रात हो या दिन, वे सदा सेवा मे लगे रहते थे। सर्दियो के समय वे दो-दो, तीन-तीन बार उठ कर छोटे सन्तों को सँभालते थे। किसी का वस्त्र शरीर पर से उतर जाता तो उसे ठीक कर देते। यदि किसी के पास वस्त्र कम देखते, तो फौरन अपनी चादर या लोई उसके शरीर पर डाल देते थे।

—आप श्रमण संघ बनने से पूर्व अपनी सम्प्रदाय के गणी थे। परन्तु सचमुच मे देखा जाय तो आप सरल हृदय के एक सन्त थे। गणी पद का अभिमान आपके जीवन को स्पर्श नही कर पाया था। आपके जीवन में सरलता, सौजन्यता एव माधुर्य की त्रिवेणी सतत प्रवाहमान थी। यदि एक वाक्य मे कहूँ तो आप स्नेह एव सेवा की साकार मूर्ति थे।

※ आपके शिष्य रत्न

—प्रखर प्रवचनकार श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज, तपस्वी रत्न श्री श्रीचन्द्र जी महाराज, पण्डितवर्य श्री हेमचन्द्र जी महाराज, आपके शिष्य रत्न हैं। ये तीनों ही अच्छे व्याख्याता है। आप श्री जी के प्रशिष्यों मे श्री कस्तूर मुनि जी एक त्याग निष्ठ सेवाभावी सन्त हैं। श्री कीर्ति मुनि जी एव श्री उमेश मुनि जी, युवक एव विचारक सन्त हैं, और दोनों कवि हैं। श्रद्धेय गणी श्री जी के शिष्यो-प्रशिष्यो से समाज को बहुत आशाएँ हैं। विश्वास है कि श्री गणी जी महाराज की कमी को ये पूरा करने का प्रयत्न करेगे।

—लुधियाना : पंजाब :
१०—६—६०

[३२]

जीवन-वाटिका के सुरभित सुमन :

श्री मनोहर मुनि जी –शास्त्री–साहित्यरत्न–

—श्री मनोहर मुनि जी महाराज एक मधुर स्वभावी, मिलनसार सन्त रत्न हैं। छोटी सी अवस्था में ही आपने विद्वत्ता में अच्छा विकास प्राप्त कर लिया है। आप सुललित लेखक, सफल प्रवचनकार और कर्मठ अध्यवसायी हैं। आपने शास्त्री तथा साहित्यरत्न की परीक्षाएँ अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण की हैं। आप श्रद्धेय प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमल्ल जी महाराज के सुशिष्य हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के सान्निध्य में एक सफल चातुर्मास आप श्रद्धेय श्री नगीन मुनि जी महाराज एवं श्रद्धेय श्री विनय मुनि जी महाराज के साथ आगरा कर चुके हैं। उसी संस्मरण के आधार पर श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सुरभित जीवन सुमन की भीनी-भीनी सुगन्ध को मुनि श्री जी ने इस लेख में प्रस्तुत किया है। जो पाठकों को सहर्ष समर्पित है।

—सम्पादक

❀ सुवासित सुमन

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के सम्बन्ध में कुछ लिखने बैठा हूँ। पर सोचता हूँ सन्त के सम्बन्ध में क्या लिखूँ? सन्त अपना परिचय स्वयं होता है। फिर उसका क्या परिचय दिया जाय? एक सुवासित सुमन का कोई क्या परिचय देगा? उस महकते हुए फूल से तो, ससार स्वय ही परिचित है। शब्दो की व्यूह रचना उसके रूप-रंग के सम्बन्ध मे, सम्भव है कुछ बता सके, पर उसके मधुर-मीठे सौरभ को जिव्हा देने के लिए उसके पास शब्द नही हैं। पुष्प की सौरभ पुष्प से ही पूछिए या पूछिए उसके प्रिय अतिथि, मधु ग्राहक मधुप से। क्यो कि वह उसके निकट रहा है, उसकी सौरभ का उसने जी भर कर पान किया है।

—जीवनवाटिका के उस सुरभित, सुवासित सुमन, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के सद्गुणों की सौरभ, मुझे भी प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है। जब आगरा मे श्रद्धेय कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज के सानिध्य मे, मैं विशेषावश्यक भाष्य और सन्मतिप्रकरण का अध्ययन करता था; तव वहाँ उस दार्शनिक महान् सन्त के निकट मुझे दर्शन और चिन्तन की गम्भीरता मिलती थी, तो श्रद्धेय गणीवर्य श्री जी के समीप हृदय की निश्छल सरलता और तरलता के दर्शन होते रहते थे।

❀ सरलता की प्रतिमूर्ति

—सचमुच वे सरलता की प्रति मूर्ति थे। भले ही उनके पास हजारो को हिला देने वाली वक्तृत्व कला नही थी। फिर भी वह कला उनके पास थी, जो मिलने वाले के मन को मोह लेती थी, दूसरे को अपना वना लेती थी। सरल जीवन सचमुच मे अपने पास एक जादू रखता है। एक ऐसा जादू जो दूसरे के सिर चढ़कर वोले। सम्पत्ति और ज्ञान की प्रतिभा के द्वारा दूसरे

को आकर्षित किया जा सकता है। किन्तु वह आकर्षण बहुत छोटो जिन्दगी लेकर आता है। जब कि हृदय की निखालसता, मन की सरलता दूसरो को हमेशा-हमेशा के लिए अपना बना लेती है। हृदय की सरलता का आकर्षण एक अजर अमर स्थायित्व ले कर आता है। वस्तुत: सरलता वह सद्गुण है, जो सन्त जीवन में आवश्यक ही नही, अनिवार्य है।

❀ एक रूपता के आदर्श

बाहर और भीतर का द्वैत, मानव को कही का नही रखता। मानव अपने बाहरी रूप के द्वारा कुछ क्षणो के लिए जनता की आँखो मे महान् सन्त बन सकता है। जनता का कुछ समय के लिए वह श्रद्धा भाजन भी बन सकता है। किन्तु वह श्रद्धा और सम्मान उसी क्षण, ताश के पत्तों का ढेर हो जाएगा, जिस भी क्षण जनता की आँखो के सामने उसका असली रूप आएगा। किंतु जिसके भीतर और बाहर अद्वैत है, बाहर मे जनता जिस रूप को देख रही है, वही उसके अन्तर का भी रूप है। जनमेदिनी के सामने जो रूप लेकर वह चलता है, एकान्त के सूने क्षणो मे भी उसका वही रूप है। विशाल नगरो मे जो उसकी साधना चलती है, छोटे गांवो के अपढ ग्रामीणो के बीच भी वही धारा चलती है। तो कहना चाहिए, वह सचमुच सत्य के निकट है।

—सन्त और असन्त की परिभाषा करते हुए किसी ने ठीक ही कहा है—जिसके मन, वाणी और कर्म मे एक रूपता है, वह सन्त है, महात्मा है। फिर चाहे किसी भी रूप में हो और किसी भी वेश मे। वेश और रूप उसके सन्त रूप मे बाधक नही हो सकते। किन्तु जिसके कर्म कोई दूसरी भाषा बोलते हैं, जिसकी वाणी में दूसरा ही स्वर है और मन कुछ तीसरी ही बात सोचता है, वह सन्त शब्द की सीमा रेखा से बाहर है—

मनस्येकं वचस्येकं, कर्मण्येकं महात्मनाम्।
मनस्यन्यद् वचस्यन्यद्, कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्॥

—श्रद्धेय शान्त मूर्ति गणिवर्य श्री श्यामलाल जी महाराज मे अन्तर और बाहर की एकता अविभाज्य थी। और यही कारण था कि जो भी उनके निकट पहुँचता, वह एक मीठी सुवास लेकर ही विदा होता। श्रद्धेय गणीवर्य श्री श्यामलाल जी महाराज का सद्गुणों से चमकता हुआ एक ऐसा ज्योतिर्मय जीवन था कि जो भी श्रद्धा से उन के पास पहुँचता, उसी का जीवन, उस सद्गुण-आलोक से आलोकित हो उठता और वह उनके महान् जीवन अथवा महत्त्वपूर्ण सद् उपदेश से एक चमत्कार ही, जीवन मे ले कर लौटता। यही कारण था कि वे जन-जन की श्रद्धा का आकर्षण-केन्द्र थे। और थे जन-जीवन-विकास के प्रेरणा-स्रोत। ऐसे महान्-पुरुष, सरलता की प्रतिमूर्ति तथा एकरूपता के आदर्श, उस जीवन-वाटिका के सुरभित सुमन के प्रति मैं अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए, उस की भीनी-भीनी मधुर सुगन्ध को हृदय-मे सजोए लेता हूँ। जो समय-समय पर मेरे जीवन को सुवासित करती रहेगी।

कान्दावाडी · बम्बई :
४—९—६०

[३३]

वे शान्ति के देवदूत थे :

श्री भानुऋषि जी महराज—जै० सि० आचार्य—

—श्री भानुऋषि जी महाराज श्रमण-संघ के श्रद्धेय उपाध्याय श्री आनन्द ऋषि जी महाराज के परिवार के सन्त हैं, आप श्री हरिऋषि जी महाराज के सुशिष्य एवं आगमोद्धारक पूज्य श्री अमोलकऋषि जी महाराज के प्रशिष्य हैं। गम्भीर विचार और शास्त्रीय अध्ययन आप की प्रमुख विशेषताएँ हैं। आप जैन सिद्धान्त आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सम्बन्ध में आप ने जो कुछ जाना, जो सुना और जो कुछ पढा, उसी के आधार पर प्रस्तुत निबन्ध लिख भेजा है। जो काफी सुन्दर बन पड़ा है। भाव-गाम्भीर्य और शब्द-सौष्ठव इस लेख की विशेषता है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की जीवन-झाँकी से समवेत मुनि श्री जी की श्रद्धाञ्जलि, आगे उन्हीं के शब्दों में पढ़िए।

—सम्पादक

* प्रकृति के आशीर्वाद

—जब-जब विश्व मे पाप का प्राधान्य होता है, जब-जब भू-मण्डल पाप के भार से सन्त्रस्त हो उठता है। जब-जब मानव अपनी सात्विक मर्यादाओं को भुला बैठता है, जब-जब तामसिक प्रवृत्ति का बोल-बाला हो जाता है, जब-जब धर्म और न्याय मृतप्राय: हो उठते हैं, चारो ओर भीषण रक्तपात, हत्या, लूटमार, अग्निकाण्ड के ही दृश्य दिखलाई देते हैं, और भयंकरता अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है। तब-तब उसकी प्रतिक्रिया अवश्यमेव हुआ करती है। उन पापो की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ही प्रकृति महान् पुरुषों को जन्म दिया करती है। वे महान् पुरुष अपने आत्मिक एवं नैतिक बल से विश्व की यह धारा परिवर्तित कर शान्ति-धर्म, संयम और सदाचार की महान् मन्दाकिनी प्रवाहित कर दिया करते हैं। ऐसे सन्तों, महान् आत्माओ के रूप मे प्रकृति सन्त्रस्त विश्व को आश्वासन और आशीर्वाद दिया करती है।

—प्रात.स्मरणीय श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज भी प्रकृति के ऐसे ही अनुपम आशीर्वाद थे! आपने अपने जीवन की संयम-साधना के ५४ वर्ष संत्रस्त मानवता को अखण्ड शान्ति प्राप्त कराने में ही लगा दिए। अपनी शुभ भावना एवं विशुद्ध चारित्र के बल पर आपने सत्य, अहिंसा, सयम, एव सदाचार आदि जीवन-धर्म का विश्व में एक महान् आदर्श स्थापित किया। जन्म, जरा, मरण अथवा आधि, व्याधि, उपाधि, के त्रय तापो से तपती हुई अनेक आत्माओं को आपने धर्म एवं कर्त्तव्य-मार्ग पर लगा कर, उनको सात्विक शान्ति प्रदान की। अधिक क्या? जन-जीवन के लिए आपका जीवन अनुकरणीय एव वरदान रहा है।

❀ शान्ति के देवदूत

—सन्त जन वैसे भी दुनिया के लिए वरदान होते हैं। ये पाप के भयंकर दावानल से झुलसती हुई दुनिया को शान्ति प्रदान करने वाले देवदूत होते हैं। सन्त मानव हृदय के उजडे और सुनसान रेगिस्तान मे धर्म एव शान्ति की मन्दाकिनी प्रवाहित करने वाले अक्षय स्रोत होते हैं। ये विनाश की ओर तेजी से भागने वाली जनता को सावधान और सतर्क करने वाले प्रकाश स्तम्भ होते है। विश्व मे जो कुछ शान्ति-सुख और सात्विकता के सदर्शन होते है, प्राय उसका श्रेय सन्तो को ही है। सन्त-महात्मा ससार को सुख-शान्ति का सच्चा मार्ग प्रदर्शित करते है। वे अपने परम पावन जीवन से जनता को बोध-पाठ देते हैं। उनके जीवन की जगमगाती हुई ज्योति, भान भूले हुए मानवों के लिए आकाश-दीप के समान मार्ग-दर्शिका होती है। ऐसे सन्तो को पाकर दुनिया अपने आप को धन्य मानती है।

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज भी इसके अपवाद न थे, वल्कि आप तो सन्त वृत्ति के जीते-जागते उत्कृष्ट उदाहरण थे। उन्होने अपने महान् जीवन द्वारा, सहस्राधिक मानवो को प्रेरणा प्रदान की, उत्साह दिया, और दिया अपने लक्ष्य की ओर वढने का अदम्य साहस। अनेक आत्माओ को अशान्ति के गर्त मे गिरने से वचाया। करुणा एव विश्वमैत्री की वह अजस्र धारा आप श्री जी के मानस में प्रवाहित थी, जिसमे आकण्ठ निमज्जन, उन्मज्जन करके वहुतो ने अखण्ड शान्ति एव परम तृप्ति हासिल की। आप शान्ति के तो देवदूत ही थे, यह कहना अतिशयोक्ति न होगी!

❀ परोपकारी महात्मा

—सन्तो की महिमा संसार में, इसलिए भी व्याप्त है कि वे अपने जीवन का कण-कण विश्व-हित के लिए समर्पित कर देते हैं। महापुरुषो का जीवन ससार के लिए होता है, उपकार

के लिए होता है, अथ च प्राणी मात्र के कल्याण के लिए होता है। नीतिकार एक स्थान पर, सन्त पुरुषो की महिमा करते हुए कहता है—

परोपकाराय सतां विभूतिय.।

—अर्थात् सन्त पुरुषो की विभूतियाँ परोपकार के लिए ही होती हैं। सन्त पुरुष इसीलिए महान् होते हैं कि वे स्वार्थ की सकुचित क्षुद्र परिधि से उठ कर परमार्थ एवं विश्व हित के उच्चस्तर पर पहुँच जाते हैं। वे सारे विश्व को अपना समझ कर विश्व-कल्याण को ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लेते हैं। यही सन्तों एव महान् पुरुषो की महत्ता का हेतु रहा हुआ है।

—पूज्य प्रवर श्री श्यामलाल जी महाराज भी इस महत्त्व से अनभिज्ञ नही थे। आपके तो जीवन का महामन्त्र ही सेवा एव परोपकार था। अपने-पराये के भेद-भाव से दूर, आप श्री जी एक उच्च कोटि के परोपकारी महात्मा थे। जन-जीवन के उत्थान की, कल्याण की भावनाएँ आपके हृदय में हर समय हिलोरे लिया करती थी। इसी उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए आप श्री जी ने अनेक स्थानो पर पुस्तकालय, वाचनालय, एवं ज्ञानालय स्थापित किए एवं कराए, जिस से जनता अपने स्तर को उच्च वना सके। अधिक क्या? आप श्री जी हर समय दूसरे के उपकार के लिए अग्रसर रहा करते थे।

❀ मृतः को वा न जायते

—विश्व की विस्तीर्ण वाटिका मे असंख्य पुष्प विकसित होते हैं। ये मनोहारी पुष्प अपनी स्वल्प कालीन सुन्दरता एवं सौरभता पर इठला कर, मन्द-मन्द मुस्करा कर घराशायी हो जाते है। क्षणिक तारुण्य पर इतरा कर धूल मे मिल जाते हैं। यही वात मानव जीवन के सम्वन्ध मे भी है। विश्व में असंख्य मानव जन्म लेते हैं एवं जैसे-तैसे जीवन व्यतीत करके, मृत्यु के

विकराल मुख में समा जाते हैं। जीवन और मरण, सृष्टि के निरन्तर चलने वाले कार्य क्रम हैं। परन्तु जिस प्रकार ससार मे उसी पुष्प का खिलना, खिलना है, जिसके पराग से, जिसकी सुरभि से, जिसकी सुगन्ध एव सुन्दरता से ससार को लाभ पहुँचा हो।

—इसी प्रकार उसी मानव का जीवन सार्थक है, जो दूसरों के लिए जीता है। अपने लिए तो हर एक जीता है, इसमे कोई विशेषता नही है। उस मानव का जन्म सफल है जिसके जीवन से, परिवार, वश, जाति, समाज और राष्ट्र उन्नत हो। मनीषियो ने सत्य ही कहा है—

'परिवर्तिनि ससारे, मृत. को वा न जायते।
स जातो येन जातेन, याति वश: समुन्नतिम् ॥

—जो व्यक्ति अपना जीवन विश्व-हित के लिए समर्पित कर देता है, जो अपने चरित्र एवं आत्म-बल से जन-जीवन मे प्रेरणा एव स्फूर्ति का संचार करता है, जो दूसरो के हितार्थ अपने जीवन का भोग देता है, उसी का जीवन, सफल जीवन है। वही कृत्य-कृत्य है और वही धन्य है। ऐसे ही महान् आत्मा को महापुरुष, महात्मा और सन्त कहा जाता है। सारे ससार मे उसी की महिमा एव गुण-गरिमा का यशोगान होता है।

—परम श्रद्धेय पूज्य श्री श्यामलाल जी महाराज, एक ऐसे ही महात्मा और महापुरुष थे। जिन के ज्योतिर्मय ओजस्वी उपदेशो ने जन-जन के हृदय-मन्दिर मे ज्ञान-विज्ञान, प्रेम एव स्नेह के प्रदीप प्रज्ज्वलित कर दिये थे। आपने मात्र ९ वर्ष की अवस्था से ही अपने जीवन को जन-कल्याण के लिए समर्पित कर दिया था। तभी तो आप एक महान् सन्त कहला सके।

❀ जीवन सौरभ

—आप श्री जी का जन्म उत्तर-प्रदेश मे आगरा के निकट सोरई नामक ग्राम मे विक्रम सवत् १९४७ मे हुआ था। माता श्री का नाम श्रीमती रामप्यारी जी और पिता श्री का नाम चौधरी टोडरमल जी था। आप क्षत्रीय वशी थे। आप श्री जी प्रात: स्मरणीय श्री ऋषिराज जी महाराज की सेवा मे फाल्गुन, विक्रम सम्वत् १९५६ ग्राम एलम, जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर-प्रदेश) मे मात्र ९ वर्ष की अल्पायु मे ही वैराग्य भावना से आ गए थे। आपने संसार को असार समझा था, तभी तो आप श्री जी अपना दृढ ध्येय बना कर, गुरु सेवा मे सम्यक् प्रकार से विद्या का अध्ययन करते हुए समय व्यतीत करने लगे।

—आपने विक्रम सम्वत् १९६३ ग्राम ढिढाली जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में १६ वर्ष की तारुण्य अवस्था मे गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज की सन्निधि मे ही अणगार धर्म को स्वीकार किया और श्री श्यामलाल जी महाराज के नाम से कहलाने लगे। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रत्नत्रय की अराधना करने लगे। आप्त पुरुषो ने ज्ञान एवं क्रिया के द्वारा ही मोक्ष प्राप्त होना बतलाया है। मात्र एकान्त ज्ञान या एकान्त क्रिया मोक्ष के साधन नही बन सकते। क्रिया के बिना ज्ञान पंगु है और ज्ञान के बिना क्रिया अन्धी। ज्ञान और क्रिया का परस्पर सहयोग ही मोक्ष का हेतु है। इसी लिये कहा गया है—

ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः।

आप श्री जी के जीवन मे इसी सूत्र का संचार होता रहा। ज्ञान और क्रिया की निर्मल अराधना ही आप श्री जी के जीवन का लक्ष्य बिन्दु रहा, और इसी लक्ष्य बिन्दु की ओर आप श्री जीका जीवन क्रमश. बढ़ने लगा। आप श्री जी ज्ञान-विकास के साथ ही चारित्र धर्म के आचार-विचार को भी बड़ी उग्रता के साथ

पालन करते थे। आप श्री जी की उत्कृष्ट चारित्र परायणता अन्य मुनि वर्ग के लिये आदर्श रूप थी। इस प्रकार ज्ञान एवं क्रिया समन्वित साधनो के द्वारा आप श्री जी ने सयम की अराधना की और आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

—आप श्री जी के जीवन मे सरलता, सौम्यता, मृदुता, एवं सेवा-भाव कूट-कूट कर भरे थे। आप श्री जी गणी पद से विख्यात एक प्रसिद्ध सन्त थे। किन्तु मिथ्याभिमान से आप कोसो दूर रहे हैं। आप श्री जी ने मुख्यत: उत्तर-प्रदेश, दिल्ली प्रान्त, हरियाणा-प्रदेश, तथा पंजाब प्रान्त मे भ्रमण किया है। जहाँ-जहाँ आप श्री जी ने विचरण किया, वही की जनता को सम्यक् ज्ञान प्रदान कर धर्म-मार्ग पर लगाया। अन्त में इस औदारिक शरीर की स्थिति पूर्ण होने पर आप श्री जी ने वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार विक्रम सम्वत् २०१७ मानपाडा, आगरा में अमर लोक प्राप्त किया।

—आप श्री जी का ७० वर्ष लम्बा जीवन अखण्ड गुण-सम्पदा से परिपूर्ण रहा है। आप श्री जी को यशो-कीर्ति सारे भारतवर्ष में विख्यात है। शाशनेश से यही मंगलमय कामना है कि चतुर्विध श्री संघ की अनमोल सेवा बजाने वाले आत्मा का विमल यश, युग-युगान्तर तक स्थायी रहे।

धूलिया : खान देश :
४—८—६०

[३४]

आत्म साधकों के प्रेरणा स्रोत :

—श्री राजेन्द्र मुनि जी-कोविद-जें०सि० शास्त्री-

—श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज, एक अच्छे मेधावी युवक मुनिराज हैं। आप श्रद्धेय श्री जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमल जी महाराज के परिवार के श्रद्धेय श्री प्रतापमल जी महाराज के सुशिष्य हैं। आप संस्कृत कोविद एवं जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर चुके हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के दर्शन आप ने आगरा में किए थे। उन के जिन विशिष्ट सद्गुणों ने आप को प्रभावित किया, उनका वर्णन बड़ी ही सुमधुर काव्यात्मक शैली में आप ने प्रस्तुत लेख में किया है। जो पाठकों के सात्विक आनन्द में अधिक वृद्धि ही करेगा।

—सम्पादक

❀ सुरभित सुमन

—विश्व के इस विराट पुष्पोद्यान के प्राङ्गण में अनेक सुमन विकसित होते हैं। वे सब ही अपनी मधुर मुस्कान के साथ प्रकृति के उस अटल-अचल नियमानुसार, क्षण भर हँस कर, अपने गौरव पर इतरा कर, झूम कर अन्त मे अतीत के अनन्त-असीम गर्भ मे सदा के लिए विलीन हो जाते है । जिस सौंदर्य-समन्वित-सुमन-समूह से ससार मे सौरभ नही भर जाता, जो निराश हृदयो मे आशा एव उत्साह का निर्मल संचार नही कर देता, जो अपनी हृदयहारिता से जनता के हृदय का हार नही बन जाता, जिसमे अपने असाधारण सद्गुणो से ससार को सम्मोहित करने की क्षमता नही होती, जिसकी निर्मलता, शुभ्रता, मानस के मैल को नही धो डालती, आह ! उस सुन्दर सुमन का भी कोई जीवन है ? उसका जीवन निरर्थक है, उसका सौदर्य निस्तेज है और उसके उन गुणो से ससार को कोई लाभ नही । हाँ जो सुमन, अपने सौदर्य को, सुरभि को, पराग को, सुगन्धि को अथ च अपने आप को दूसरो के लिए अर्पित कर देता है, न्यौछावर कर देता है, सर्वस्व समर्पण कर देता है, दूसरो के हित के लिए अपने आप को मिटा डालता है, वही धन्य है, उसी का जीवन सफल है और वही कृत्य-कृत्य हो जाता है ।

—जिस प्रकार एक सुमन के विषय मे कहा गया है, उसी प्रकार मानव के विषय मे भी कहा जा सकता है । जो मानव अपने जीवन को विश्व-कल्याणार्थ लगा देते हैं, उन्ही का जीवन सफल और सार्थक है । ससार उन्ही महान् आत्माओ का हजारो लाखों वर्षो तक स्मरण किया करता है, जो ससार की मगल कामना के लिये अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया करते हैं । उन्ही महापुरुषो की यशो-गाथा-सुरभि से विश्व महकता रहता है जो विश्व-हित के लिये सर्वस्व समर्पण कर दिया करते हैं । ऐसे आदर्श पुरुष ही संसार मे धन्य-धन्य कहलाया करते हैं, जो आत्म

साधना के उस चरम उत्कर्ष, सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जाया करते है। जहाँ शत्रु और मित्र के प्रति समान भाव रहता है।

❀ परिचय रेखा

—ऐसे ही महान् पुरुषों मे, स्वर्गीय, भूतपूर्व गणी, श्री श्यामलाल जी महाराज का समुज्ज्वल शुभ नाम आता है। आप के पिता श्री का शुभ नाम चौधरी टोलरमल जी और माता श्री का शुभ नाम रामप्यारी बाई था। आप का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी विक्रम सम्वत् १९४७ ग्राम सोरई जिला आगरा (उत्तर-प्रदेश) क्षत्रिय कुल मे हुआ था। कोई व्यक्ति प्रारम्भ मे ही एकदम से महापुरुष नही हो जाता, हाँ महापुरुपत्व के बीज अवश्य ही प्रारम्भ मे मानव की अन्तश्चेतना मे निहित रहते है जो समय एव संयोग पा कर अंकुरित, पुष्पित, पल्लवित और फलित हो जाया करते हैं। इसी कथनानुसार आपके हृदय मे बाल्यावस्था से ही धर्म एव वैराग्य की भावना थी। फलत. आप पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज की पुनीत सेवा में फाल्गुण सम्वत् १९५६ ग्राम एलम जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में केवल ९ वर्ष की वय मे ही आ गए थे। आप ने गुरुदेव श्री जी की सेवा मे लगभग सात वर्षो तक ज्ञानाभ्यास किया।

—आपकी दीक्षा ज्येष्ठ शुक्ला पचमी मंगलवार विक्रम सम्वत् १९६३ मे ग्राम ढिढाली जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) मे चारित्र चूडामणि पण्डितरत्न श्री ऋषिराज जी महाराज के कर कमलो से, बड़े ही धार्मिक समारोह पूर्वक हुई। दीक्षा लेकर आपने निज बुद्धि अनुसार शास्त्राभ्यास किया। इस प्रकार आप भगवान् महावीर का पावन सन्देश लेकर उत्तर-प्रदेश, दिल्ली प्रान्त, हरियाणा, और पजाब आदि स्थानो मे घूमे। जहाँ-जहाँ आप पधारे, धर्म-ध्यान जप-तप और जीवन-विकास के ठाठ लगते रहे। आपने निरन्तर ५४ वर्षो तक आर्हत् अणगार धर्म का अप्रमत्त रूप से पालन किया। आप श्री जी का जीवन सरलता,

सौम्यता- मृदुता, सेवाभाव, एवं सयम आदि सद्गुणों से सुशोभित था। ऐसे गुण निष्पन्न महान् आत्मा श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज के शुभ दर्शन हमने आगरा मे किए थे।

❀ प्रेरणा स्रोत

—श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज का पुनीत जीवन आत्म-साधको के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। अनेक भव्य आत्माओ ने आप श्री जी के जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर अपना साधना-मार्ग प्रशस्त किया है। आप श्री जी के मधुर जीवन के सत्तर-सत्तर वर्ष व्यतीत होने पर भी समाज यही सोचता रहा है कि यह प्रेरणास्रोत, मंगलमय मूर्ति हमारे समक्ष हमेशा-हमेशा के लिए बनी रहे। समाज इस अस्ताचालगामी, जीवन की सध्या की वेला में पैठते हुए सूर्य के प्रति, यही मंगल कामना करता रहा, कि यह सूर्य हमेशा-हमेशा के लिये अपनी प्रकाश-रश्मियों से हमारा मार्ग ज्योतिर्मय करता रहे।

—परन्तु काल का तो नियम ही अटल है। विधि को यह स्वीकार न था। फलतः वह सूर्य अभी-अभी विक्रम सम्वत् २०१७ वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार के दिन मानपाडा, आगरा मे अस्तंगत हो गया, जैन जगत की वह जलती हुई ज्योति इस पार्थिव शरीर का आवरण छोड कर आँखो से ओझल हो गई।

—न सही, भौतिक शरीर से, पर यश शरीर से तो श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज, आज भी जन-मन मे जीवत हैं, विद्यमान है। आपका सद्गुण सम्पन्न, महत्वशाली, महान् जीवन ही हमे, जीवन की सही दिशा की ओर मूक सकेत कर रहा है। हमारा कर्तव्य है, कि भक्ति-भाव से उस महान् ज्योति के दिव्य गुणो को कोटि-कोटि नमन करें और उनके वतलाए हुए मार्ग पर चल कर, जगमग जीवन-ज्योति जगाएं।

रामपुरा : मध्य-प्रदेशः

३—८—६०

[३५]

वे विवेकशील महापुरुष थे :

श्री हीरा मुनि जी-हिमकर-

—श्रद्धेय श्री हीरा मुनि जी महाराज—हिमकर—श्रमण सघ के महास्थविर श्रद्धेय श्री ताराचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य तथा मंत्री श्री पुष्कर मुनि जी महाराज के लघु गुरु भ्राता हैं। आप एक सतत अध्यावसायी कर्मठ मुनिराज हैं।

—आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के प्रथम तथा अन्तिम शुभ दर्शन आगरा में ही किये थे। उन्हीं दिनों के चन्द मधुर संस्मरणों को आप के अपनी लेखनी का विषय बनाया है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की विवेक दृष्टि तथा अन्य महत्त्व-पूर्ण विशेषताएँ कैसी थीं? यह इन मधुर संस्मरणों को पढकर ही ज्ञात हो सकता है।

—सम्पादक

❀ स्नेह मूर्ति

—सन्त हृदय, उदार मना, शान्त मुद्रा, श्रद्धेय गणीवर्य श्री श्यामलाल जी महाराज, साक्षात् स्नेह की मूर्ति थे। एक ऐसे निश्छल हृदय, सरल सन्त, जिनके हृदय मे प्रेम और स्नेह का सहानुभूति और मैत्री का, अथाह सागर ठाठे मारता रहा हो। वैसे सन्त का तो गुण ही है स्नेह और प्रेम से परिपूरित रहना। फिर उसमे आप जैसे महामानव का तो कहना ही क्या? जिसकी प्रेम एव स्नेह से परिपूर्ण सयम-साधना, जीवन के सोलहवे (१६) वर्ष से प्रारम्भ होकर, ठेठ जीवन के अन्तिम छोर सत्तरवे (७०) वर्ष तक उसी अव्याबाध गति से चलती रही, जिस गति से उसका शुभारम्भ हुआ था।

—मार्ग मे अनेक विघ्न आए, बाधाएँ आईं, अनेक-अनेक भय एव प्रलोभन भी उपस्थित हुए, पर आपकी अटल स्नेहमयी सयम-साधना अटल ही रही। वह बरसाती नदी की तरह अपने पूर्ण वेग से बढती ही रही, सतत अपने लक्ष्य की ही ओर, मुस्कराती, गाती, और इठलाती हुई। उस स्नेह मूर्ति महापुरुष के चरणो मे, आज हमारा मस्तक श्रद्धा से प्रणत होकर गर्व अनुभव करता है और उन्ही जैसा बनने का सत्प्रयत्न।

❀ प्रथम परिचय

—उस महामना, महात्मा पुरुष का प्रथम या अन्तिम परिचय आगरा जैसे सुप्रसिद्ध नगर मे हुआ था। श्रद्धेय गुरुवर्य महास्थविर श्री ताराचन्द्र जी महाराज, व पण्डितवर्य मन्त्री प्रवर श्री पुष्कर मुनि जी महाराज के साथ, जब हम आगरा पहुँचे, तो श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज, वहाँ पर सकारण श्रद्धेय मत्री प्रवर श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज के साथ अपनी शिष्य मण्डली सहित विराजमान थे। श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज के प्रथम दर्शन और परिचय ने ही, मेरे हृदय पर जो उज्ज्वल-अमिट चित्र अंकित किया है, वह सुदीर्घ काल के व्यतीत हो जाने पर, आज

भी उसी तरह चमक रहा है। समय के प्रवाह से वह घुलने या धूमिल पड़ने वाला नही है। उन दिनों की वह यात्रा जीवन की एक महान् थाती बन चुकी है।

—मैंने देखा, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज की आँख के मोतिए का उन्ही दिनो ऑपरेशन हुआ था, तथापि वे स्नेह-मूर्ति सन्त, स्नेहाभिभूत होकर, सद्गुरुवर्य आदि हम अतिथियो की सेवा मे सतत सलग्न रहते थे। बडप्पन अथवा पदवी का तो उन्हे अभिमान था ही नही। अत छोटे-छोटे हम जैसे सन्तो से भी वे ऐसे घुल-मिल गए थे, जैसे दूध और मिश्री। श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज जैसी मिलनसारिता, अन्यत्र कम ही देखने को मिलती है।

❀ विवेक दृष्टि

—एक दिन प्रातः सद्गुरुवर्य के साथ श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज भी स्थण्डिल पधारे। आगरा के ऐतिहासिक लाल किले के नजदीक पहुँचते ही एक चाँदी जैसा श्वेत, उज्ज्वल-भव्य विशाल गुम्बदाकार भवन दिखलाई दिया। मैंने पूछा—गणी श्री जी महाराज ? यह क्या है ? इस पर श्रद्धेय गणी श्री जी-महाराज ने फरमाया—यह भारत का ही नही, अपितु विश्व का दर्शनीय स्थान ताजमहल है। जो मोह के दीवाने बादशाह शाहजहाँ और बेगम मुमताजमहल को अपने वक्ष मे समेटे, उनकी मूक कहानी कह रहा है। शरद पूर्णिमा के दिन इसे देखने के लिए यहाँ लक्षाधिक मानवगण एकत्रित होते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से आप भी इसका अवलोकन कर सकते है। बस हमारे कदम अब उसी ओर बढ चले।

—ज्यो ही ताजमहल मे प्रवेश किया, त्यो ही उसकी भव्यता एव उज्ज्वलता को देख कर सद् गुरुवर्य ने कहा—कितन भव्य ! कितना विशाल ! कितना उज्ज्वल ! काश मानव भी ऐसा बन पाता ? यह सुनते ही गणी श्री जी महाराज ने

भी फरमाया—हाँ महाराज ! मानव इससे प्रेरणा ले कर अपने जीवन को बदल सकता है, महान् बन सकता है। हृदय की-विशालता, भव्यता और उज्ज्वलता को अपना कर मानव भी इसी प्रकार चमक सकता है, दर्शनीय बन सकता है। इसी तरह का वार्तालाप, स्थविर द्वय मे काफी समय तक चलता रहा। उस समय मैने अनुभव किया कि सामान्य मानव एव महापुरुषो की दृष्टि मे कितना महदन्तर हुआ करता है। सामान्य मानव जबकि यहाँ से वासना और मोह के रूप में प्रेरणा लेकर जाते है और अपने जीवन को मलिन बनाते हुए पतन का मार्ग पकड़ते हैं। तब महान् पुरुष इसी स्थान से जीवन-विकास और ससार-कल्याण की भावना लेकर जाते हैं। यह अन्तर इनकी विवेक दृष्टि का होता है। महापुरुषो की विवेक दृष्टि प्रतिक्षण जागरूक रहती है। वे प्रत्येक वस्तु को एक गहनतम दृष्टि से देखा करते हैं। उनकी अन्तर्वेधिनी दृष्टि वस्तु के भौतिक आवरण को भेद कर असलियत तक जा पहुँचती है और उससे वे सार एवं प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन तो धन्य बनाते है।

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज की इन्हीं चन्द विशेषताओ का वर्णन करते हुए, अब मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ। और मगल कामना करता हूँ कि ऐसे महान् पुरुप का पवित्र जीवन, हमें युग-युग तक सात्विक प्रेरणा का महान् सन्देश देता रहे। और हम भी आप जैसे महान् आत्माओ के चरण-चिन्हो पर चलकर अपना साधना-मार्ग उज्ज्वल और प्रशस्त बनाएं।

—ब्यावर : राजस्थान:

८—८—६०

[३६]

श्रद्धेय श्री गणिराज के प्रति :

श्री खुशहाल मुनि जी

—श्रद्धेय श्री खुशहालचन्द्र जी महाराज, एक दीर्घद्रष्टा अनुभवी मुनिराज हैं। आप श्री जी वयोवृद्ध पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज के प्रशिष्य एवं श्री ानचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य हैं। मिलनसारिता एवं सौजन्यता आपके फल व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सम्बन्ध में आप ने बड़ी ही श्रद्धा एवं निष्ठा पूर्वक चन्द शब्द लिखे हैं। जो कि सरल भाषा के सुयोग से और अधिक स हो उठे हैं। इनकी सरसता का अनुमान:तो स्नेही पाठक गण पढ़ कर ही ा सकते हैं। अगली पंक्तियों में वे अविकल रूप से प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

❀ भव्य झाँकी

—श्रद्धेय गणीराज, स्वामी श्री श्यामलाल जी महाराज का जन्म विक्रम सम्वत् १९४७ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी (११) को, ग्राम सोरई मे, माता श्रीमती रामप्यारी देवी की पवित्र कुक्षि से हुआ था। गणिराज श्री जी के पिता श्री का शुभ नाम चौधरी टोडरमल जी था। अनन्त पुण्योदय से आपको जगत् प्रसिद्ध, महान् क्रियोद्धारक, आचार्य श्री मनोहरदास जी महाराज की सम्प्रदाय के, विश्व विख्यात, प्रकाण्ड विद्वान्, वादी मान मर्दक, परम पूजनीय, आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज के शिष्यानुशिष्य, कवि सम्राट्, सत्यार्थ-सागर आदि अनेक महान् ग्रन्थों के रचियता, उद्‌भट विद्वान्, परम पूज्य श्री ऋषिराज जी महाराज के, विक्रम सम्वत् १९५६, फाल्गुण मास, एलम ग्राम मे केवल नौ (९) वर्ष की अल्पायु मे ही शुभ दर्शन हुए।

—आपको गुरुदेव श्री जी के दर्शन क्या हुए ? मानो साक्षात् प्रभु ही मिल गए। गुरुदेव की ओजस्वी वाणी ने आपके जीवन को एक नया ही मोड दे डाला। फलत. आप वैराग्य की ओर झुके और गुरु चरणो मे ही रह कर विद्याध्ययन करने लगे। गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज ने लगातार सात (७) वर्षों तक आपको विद्याध्ययन कराया। आपने भी दत्त चित्त होकर विद्याभ्यास पूर्ण किया। आपके ज्ञान-ध्यान, जप-तप, और वैराग्य को देख कर गुरुदेव ने आपको विक्रम सम्वत् १९६३, ग्राम ढिढाली मे, शुभ मिति ज्येष्ठ शुक्ला पचमी (५) मगलवार को सोलह (१६) वर्ष की आयु मे आर्हती दीक्षा दे दी। गुरुदेव ने आपको शास्त्रो के गूढ रहस्य को समझाने मे कोई कसर बाकी नही छोडी। आप भी शास्त्र-अध्ययन एव गुरु सेवा मे निरन्तर तल्लीन रहे। किन्तु खेद है गुरुदेव श्री जी की छत्रछाया आप पर अधिक समय तक न रह सकी। कुछ ही महीने के पश्चात् गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज का स्वर्गवास हो गया।

—उस समय आपने बडे धैर्य से काम लिया और अपने ज्येष्ठ गुरु भ्राता पण्डित श्री प्यारेलाल जी महाराज की छत्रछाया में रह कर उनकी सेवा का लाभ लिया और अपने ज्ञान-ध्यान मे खूब वृद्धि की। कुछ वर्षो के पश्चात् श्री प्यारेलाल जी महाराज का भी करनाल शहर में स्वर्गवास हो गया। पर वाह रे तेरी धैर्य शीलता ! फिर भी आप निराश न हुए। गुरुदेव के सन्देश को सम्मुख रख कर सयम पथ पर आगे बढते ही रहे—बढते ही रहे। कुछ दिन आपने श्री सुखानन्द जी महाराज, श्री लालचन्द जी महाराज आदि के साथ विचरण किया, और श्री गुलाबचन्द जी महाराज के शिष्य घोर तपस्वी श्री पूर्णचन्द जी महाराज की पवित्र सेवा का लाभ ले कर तो आपने अपने जीवन को और भी अधिक उज्ज्वल बना लिया।

❀ शान्त मुद्रा

—श्रद्धेय गणीराज जी महाराज के जीवन मे सेवा के भाव तो मानो कूट-कूट कर ही भरे थे। शान्ति एव क्षमा के तो आप साक्षात् अवतार ही थे। आपकी शान्त एव प्रसन्न मुद्रा, तथा क्षमा भाव को जमनापार, पजाब, तथा नारनौल आदि जहाँ-जहाँ आपने विचरण किया था, वहाँ-वहाँ के श्री संघ का बच्च-बच्चा खूब अच्छी तरह जानता है।

—आप श्री जी ने विक्रम सम्वत् १९८० छपरौली क्षेत्र मे, महान् शान्ति, परम धैर्य, तथा मधुर शब्दो का प्रयोग करते हुए जो उत्कृष्ट क्षमा का आदर्श उपस्थित किया, उन मधुर क्षणो को वहाँ का श्री सघ आज तक भी नही भुला पाया है। इतनी क्षमा, और शान्ति प्रत्येक व्यक्ति मे मिलनी दुर्लभ है। कहते हैं—तीर्थंकर क्षमा के अवतार ही होते हैं, लेकिन आप श्री जी की क्षमा भी उनसे किसी प्रकार कम नही थी। धन्य है आपको तथा आपकी शान्ति एव क्षमा को।

❀ शुभ दर्शन

—जमनापार मे जब हम विचर रहे थे, तो एक श्रावक कह रहे थे, कि श्री गणीराज जी महाराज का मस्तक चन्द्रमा की तरह प्रकाशमान रहता है। इधर मैं अपने गुरुदेव स्वर्गीय पण्डित स्वामी श्री ज्ञानचन्द जी महाराज तथा स्थविर पदालकृत आचार्य प्रवर, पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज के मुखारविन्द से भी आपकी महान् यश शाली महिमा सुना करता था। मुझे गणीराज श्री जी के दर्शनो की काफी समय से उत्कण्ठा रहती थी। सौभाग्य से वह मेरी इच्छा पूर्ण हो ही गई।

—मुझे विक्रम सम्वत् २००२ मे गन्नौर मण्डी मे आप श्री जी के शुभ दर्शनो का सौभाग्य प्राप्त हो ही गया। गणीराज श्री जी से मिल कर पूज्यपाद आचार्य श्री रघुनाथ जी महाराज भी गद्-गद् हो उठे। परस्पर प्रेमालाप खूब ही अच्छी तरह दिल खोल कर हुआ। आप का सुखद सुहामना शान्ति से ओत-प्रोत चन्द्र सदृश शीतल, सौम्य मस्तक एवं मुख मुद्रा देख कर हृदय अतीव प्रसन्न हो उठा।

❀ सद्गुणी सन्त

—श्रद्धेय गणीराज श्री जी एक सद्गुणी सन्त थे। शान्ति एव धैर्य के तो आप सागर ही थे। सेवा व्रती ऐसे थे कि छोटे-बड़े सभी सन्तो की आप तन-मन से, बड़े प्रेम पूर्वक सेवा किया करते थे। सेवा तो आपका जीवन-मन्त्र ही था। आपने आचार्य गुरुदेव श्री मोतीराम जी महाराज की सेवा एक लम्बे अर्से तक अम्लान भाव से की है। तथा उनके पट्टाधिकारी माननीय शिष्य विद्वत् शिरोमणि, आचार्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज की सेवा मे तो आप अपने जीवन के अन्तिम क्षणो तक रहे, और यहाँ तक कि उनकी सेवा में रह कर ही आपने अपना भौतिक शरीर छोड दिया।

—आपके महानतम गुणो से प्रेरित होकर संघ ने आपको गणीराज के पद से अलंकृत किया। गणी का पद कोई छोटा-मोटा पद नही है। यह वडा ही उच्च कोटि का शास्त्रीय पद है, किसी बड़े ही भाग्यशाली को प्राप्त होता है। परन्तु ऐसे उच्च पद पर आरूढ़ होकर भी मान तो आपको छू तक नही गया था। सरलता की तो आप साक्षात् प्रतिमा थे। धन्य है आपकी सरलता एव विनयशीलता को।

—आपको महामन्त्र नवकार तथा आनुपूर्वि से अत्यधिक प्रेम था। आपने अपने कर-कमलो से एक नही, अपितु सैकड़ो आनुपूर्वियाँ कपड़े एव कागजो पर लिख-लिख कर साधु तथा आर्या वर्ग आदि को दी। आपके हस्ताक्षर अतीव सुन्दर थे। आपने अपने जीवन मे साधवोचित अनेक शुभ कार्य किए है। आपकी महिमा कहाँ तक लिखी जाय ? आप महान् गुणो के भण्डार थे।

—मेरी हार्दिक इच्छा थी कि फिर भी आप श्री जी के शुभ दर्शन हों और मै भी आप श्री जी की सेवा का कुछ लाभ ले सकूं। परन्तु वैशाख शुक्ला दशमी (१०) शुक्रवार को आगरा से जब आपके स्वर्गवास का तार मिला तो हृदय वेदना से भर उठा। मेरी दर्शनों की इच्छा मन ही मन मे रह गई। आपके स्वर्गवास के समाचार से आचार्य पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज को भी बहुत खेद हुआ। परन्तु काल के आगे किसी का वश नही चलता। ससार के सब अन्य नियम टल सकते हैं, परन्तु काल का नियम अटल है। एक कवि ने कहा है—

धरती करते एक पग, करते समुद्र फाल।
हाथो पर्वत तोलते, तिन को खाया काल॥
आस पास योद्धा खड़े, सभी बजावें गाल।
मध्य महल से ले चला, ऐसा वैरी काल॥

❀ शिष्य परम्परा

—आप श्री जी के शिष्य भी आप श्री जी के सदृश ही गुण-निष्पन्न है। परम व्याख्यानी, प्रेम के कोष, श्री प्रेमचन्द्र जी, तपोनिधि श्री श्रीचन्द्र जी, कविराज पण्डित श्री हेमचन्द्र जी, आप श्री जी के नाम को समुज्ज्वल करने वाले हैं। आपके पौत्र शिष्य सेवाव्रती श्री कस्तूरचन्द्र जी, कविवर्य श्री कीर्तिचन्द्र जी, मधुर स्वभावी श्री उमेशचन्द्र जी भी, आप श्री जी के बतलाए हुए चरण-चिन्हो पर ही चल रहे हैं। शाशनेश से प्रार्थना है कि आप श्री जी की शिष्य मण्डली दिन दूनी और रात चौगुनी फले फूले।

—चरखी दादरी : पंजाब :
१—८—६०

[३७]

गुरुदेव के पावन संस्मरण :

मुनि यश इन्दु :

—मुनि यशइन्दु : श्री कीर्तिचन्द्र जी महाराज का ही अपर नाम है। कभी-कभी आप इस नाम से भी लिखा करते हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी तरुण मुनिराज हैं। लेख, कहानी, संस्मरण, गद्यकाव्य, अर्वाचीन, अथवा प्राचीन ढंग की कविता, उर्दू गजलें आदि सभी, आप सफलतापूर्वक लिख लिया करते हैं। जो यदा-कदा, जैनप्रकाश-श्रमण तथा जिन-वाणी आदि पत्र-पत्रिकाओं में भी दृष्टि-गोचर होती रहती हैं। इसके अतिरिक्त आप कीर्तिलता, कीर्ति-गीताञ्जलि, वैराग्य बारामासा, धर्मनायक, आदर्श कहानी, गीत-गुञ्जार तथा कीर्ति ना गीतो आदि पद्यात्मक अनेक पुस्तकों के निर्माता भी हैं। आप की प्रवचन शैली भी अति मनोरम एवं हृदय ग्राही है।

—प्रस्तुत रचना में आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री के चन्द पावन संस्मरणों को शब्दों की डोरी में बाँधा है। जो आप के जीवन के साथ ही सम्पर्क रखते हैं। वे संस्मरण कितने हैं, और कौन से हैं ? यह उन्हीं के शब्दों में अगली पंक्तियों में पढ़िएगा।

—सम्पादक

❀ एक समस्या

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के संस्मरण लिखने की बात ध्यान मे आते ही मस्तिष्क-पटल पर स्मृतियो की इतनी भीड लग जाती है कि उनमें से किसे लेखनीबद्ध किया जाय और किसे छोडा जाय? अथवा कौन सा संस्मरण पहिले और कौन सा पीछे लिखा जाय? इसका निश्चय करना, एक समस्या बन जाती है। किन्तु लेखनी जब कुछ लिखने के लिए मचल ही उठती है और मानस तत्पर हो ही उठता है कुछ कहने के लिए, तो फिर इनका मार्ग अवरुद्ध नही किया जा सकता।

—हां तो, मेरी लेखनी भी मचल ही उठी है, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की कुछ स्मृतियो को लिपिबद्ध करने के लिए, और मानस-तत्पर हो उठा है उन्हे दुहराने के लिए। उस महान् आत्मा के विषय मे कुछ कहने के लिए—जो आज से कुछ मास पूर्व हमे छोड कर न मालूम किस अज्ञात लोक को चले गए! जो आज हमारे बीच नही रहे। ६ मई सन् १९६० के दिन उस महान् आत्मा, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज ने इस पार्थिव नश्वर शरीर को त्याग कर, अमर लोक के लिए महाप्रस्थान किया था। हमारा अन्तःकरण जिनकी पावन स्मृतियो से आज भी सुवासित है और भविष्य मे भी युग-युगान्त तक यह स्मृति-सुगन्ध कायम रहेगी, ऐसा हमारा दृढ विश्वास है; उन्ही सद्गुरुदेव के चन्द संस्मरण दुहराने का प्रयत्न यहाँ किया जा रहा है।

❀ वरदान बन कर आए

—मेरे जीवन मे तो श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव वरदान बन कर आए, और वरदान बन कर रहे तथा वरदान बन कर ही विदा हुए। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव क्या नही थे? मेरे लिए तो वह सभी कुछ थे। माता की ममता, पिता का वात्सल्य, गुरु की कृपा, भाई का साहचार्य तथा इष्टदेव की उपास्यता पाई थी मैंने उनके पवित्र जीवन में। उनके सद्गुणोपेत बहुमुखी व्यक्तित्व का ठीक-ठीक अंकन वे ही

तो कर सकते हैं—जो उनके अत्यन्त सन्निकट रहे हों। मेरा जीवन तो एक तरह से उन्ही की गोद मे खेला, पला और बढा है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी ने अपने जीवन का रस दे-देकर, अपनी आत्मा का भोग दे-देकर, मेरे व्यक्तित्व का निर्माण किया। नीचे से उठा कर, जग-पूजा की सम्मानित उच्चश्रेणी मे सम्मिलित किया। अन्यथा इस ससार मे कौन किसी का होता है ? वह श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ही थे, जिन्होने स्वार्थवृत्ति को सर्वथा भुला कर परमार्थ एवं जन-कल्याण को ही अधिक महत्त्व दिया। जिन्होने परत्व के विभेद को भुला कर, सारे ससार को अपना समझा और जग-हित मे आत्म-हित का ही अनुभव किया। अधिक क्या ? श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव सरीखी उदारता, अनुकम्पा, दयालुता और करुणा के दर्शन अब कहाँ ?

❀ परोपकारी गुरुदेव

—आज से लगभग सतरह वर्ष पूर्व विक्रम सम्वत् २००० का श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का शुभ चातुर्मास-कैथल-जिला करनाल मे था। वही आप श्री जी के सर्व प्रथम शुभ दर्शनो का सौभाग्य हमे प्राप्त हुआ था। पूज्य पिता जी ने जब आप की ख्याति सुनी, तो हम दोनो भ्राताओ को साथ ले, दर्शनार्थ जैन स्थानक मे जा पहुँचे। जिस समय हमने जैन स्थानक मे प्रवेश किया, उस समय प्रात काल का समय था और श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव प्रवचन फरमा रहे थे। श्रोताओ से प्रवचन भवन खचाखच भरा हुआ था। हम भी नमस्कार कर, एक ओर श्रोताओ की श्रेणी मे जा बैठे। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव उस समय परोपकार के ऊपर एक दृष्टान्त फरमा रहे थे।

—सज्जनो ! एक राजकुमार था। उसने एक बाज पक्षी पाल रखा था। एक बार वह शिकार खेलने जगल में गया। बाज उसके साथ ही था। घोड़ा दौडाते-दौड़ाते वह राजकुमार अकेला बहुत दूर निकल गया। चलते-चलते उसे दोपहर हो गई। राजकुमार को प्यास इतनी जोर की लगी कि बार-बार उसका गला सूखने लगा। अब राजकुमार शिकार की बात भूल कर, पानी की तलाश में चल

पड़ा। चलते-चलते उसने देखा कि एक बहुत बडे वृक्ष की टहनी से बूँद-बूँद कर पानी टपक रहा है। राजकुमार ने बिना सोचे-समझे एक पत्ते का दोना बनाया और उस पानी को एकत्रित करने लगा। उधर बाज उसके हाथ से उड कर वृक्ष के चारो ओर घूमने लगा। जब राजकुमार का पत्र-पुटक पानी से लबालब भर गया, तो वह उसे पीने के लिए तैयार हुआ। ज्यो ही उसने दोने को मुंह से लगाना चाहा, त्यो ही ऊपर उडते हुए बाज ने एक दम झपट्टा मार कर, राजकुमार के हाथ से दोना गिरा दिया। दोने का सब पानी जमीन पर फैल गया। राजकुमार बडा दुखी हुआ, परन्तु धैर्य के साथ उसने फिर दूसरी बार दोना भरा। ज्यो ही उसे फिर पीना चाहा, तो बाज ने उसे फिर से गिरा दिया। राजकुमार को क्रोध तो बहुत आया, परन्तु उसने परिश्रम करके फिर दोना भर लिया। मुँह तक ले जाते ही बाज ने फिर झपट्टा मारा और पानी का दोना तीसरी बार फिर गिरा दिया।

—अब तो राजकुमार के क्रोध का पार न रहा। उसने झपट कर बाज को पकड़ा और तलवार से उसके दो टुकडे करते हुए कहा—दुष्ट ! तू मुझे प्यासा रख कर मारना चाहता है। ले अपनी करनी का फल भोग। बाज दो टुकड़े होते ही छट-पटा कर मर गया। इतने मे ही उस राजकुमार के सहायक भी उसे ढूँढते-ढूँढते आ पहुँचे। उनके पास पानी की भी व्यवस्था थी। आते ही उन्होने राजकुमार को पानी पिला कर शान्त किया और पूछा—राजकुमार ! इस बेचारे बाज का क्या अपराध था ? जो वर्षो के स्नेह को भुला कर आपने इसको मार डाला।

—राजकुमार ने उनको सारी राम कहानी सुनाई। सुन कर एक सेवक वृक्ष पर यह देखने चढा कि पानी कहाँ से आ रहा है। ऊपर चढ कर जो वह देखता है तो हैरान रह जाता है। उसने देखा कि जिस टहनी से पानी टपक रहा है, वह अन्दर से थोथी है और उसमें एक महाकाय अजगर लेटा हुआ है। उसी के मुँह से बूँद बूँद कर गरल टपक रहा है—जिसे राजकुमार पानी समझे हुए था। नीचे

उतर कर उसने सारी दास्तान राजकुमार को सुनाई। सुनकर राजकुमार तो स्तब्ध रह गया। सोचने लगा—अरे! यह बाज तो मेरी प्राण रक्षा करने वाला था। अपने प्राणो का बलिदान करके भी उसने मेरे जीवन की रक्षा की। और मैंने अपने जोवन-रक्षक, उपकारी पक्षी को मार डाला। हाय, हाय! यह तो मुझ से महान् अनर्थ हो गया। ऐसा सोचकर वह उस बाज के लिए विलाप करने लगा। पर अब उसका रोना-धोना व्यर्थ ही था। सेवक गण समझा-बुझा कर उसे वापिस ले आये।

—हे श्रोता गण सज्जनो! इस दृष्टान्त को सुनाने का अर्थ यही है, कि जिस प्रकार उस पक्षी ने अपने प्राणो की परवाह तक न की और परोपकार मे अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। उसी प्रकार मानव का भी यही कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने जीवन को कष्टो की परवाह किए बिना, परोपकार मे, दूसरों की सेवा मे, दीन-दुखियों के दु:ख मिटाने मे लगा दे। तभी वह सच्चा मानव बन सकता है। तभी उसका जन्म सार्थक एवं सफल हो सकता है। तभी वह मानवता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकता है। संसार परोपकारी सत्पुरुषों को ही युगो-युगो तक याद किया करता है और उनके नाम की मालाएँ रटा करता है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का यह प्रवचन केवल कथन मात्र ही नही था। बल्कि परोपकार तो उनके जीवन के कण-कण मे ही रमा हुआ था। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने परोपकारार्थ ही मानव अवतार ग्रहण किया हो। परोपकार के समय वे भूल जाते थे कि उनकी सुविधाओ का भी कोई अस्तित्व है? वे अपने सुख-दु:ख की, अपनी सुख-सुविधाओ की परवाह किए बिना ही, दूसरे की भलाई मे जुट जाया करते थे। परोपकार ही क्या? वह उन्ही सद्-शिक्षाओ को जनता के समक्ष रखा करते थे, जो उनके स्वयं के जीवन मे अमली स्थान पा चुकी होती। वे स्वय आचरण करने के पश्चात् ही उसका कथन किया करते थे। और तभी तो आपकी वाणी में वह

जादू था, जो श्रोताओ के सिर चढ कर बोला करता था। आपकी आचरण मे पगी वाणी, तत्काल सुनने वाले के हृदय पर असर किया करती थी।

—पूज्य पिता जी पर भी, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सद्गुणोपेत जीवन एवं पवित्र सदुपदेश का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होने अपने दोनो पुत्र, हम दोनो भ्राताओ को, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के श्री चरणो मे सहर्ष समर्पित कर दिया। अब श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की पावन छत्र छाया मे ही, हमारा जीवन-रथ आगे बढने लगा। उन्होने हमारे जीवन निर्माण मे कोई कसर बाकी नही रखी।

❀ सरल एवं भावुक हृदय

—लगभग डेढ वर्ष मुझे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की पावन सेवा मे वैराग्य अवस्था मे रहते हुए होने जा रहा था। तभी श्रद्धेय पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज की आज्ञा आ जाने पर, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी ने अपनी शिष्य मण्डली के साथ-नारनौल-की ओर विहार कर दिया। रोहतक से श्रद्धेय व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज, योग निष्ठ श्री रामजीलाल जी महाराज, घोर तपस्वी श्री निहालचन्द्र जी महाराज आदि मुनि वृन्द भी अपनी-अपनी शिष्य मण्डलियो सहित, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के साथ ही नारनौल की ओर चल पडे।

—मार्ग मे मुझे जब ज्ञात हुआ कि श्रद्धेय वाचस्पति जी महाराज की सेवा मे चार व्यक्ति दीक्षित होने वाले हैं, जिनमे मेरी ही उम्र के दो लडके भी हैं। तभी से मैंने भी श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से आग्रह करना प्रारम्भ कर दिया कि—गुरुदेव! नारनौल चल कर मुझे भी अवश्य ही दीक्षित करने की कृपा करे। नारनौल पहुँचने पर मेरा आग्रह अपनी चरम सीमा पर था। मेरे आग्रह को देख, श्रद्धेय श्री कवि जी महाराज तथा श्रद्धेय श्री वाचस्पति जी महाराज ने भी श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से कहा—गणी जी

महाराज ! बालक ठीक ही तो कह रहा है। इसकी अवस्था और योग्यता देखते हुए, इसे दीक्षा देने मे क्या हर्ज है ? जब कि इस जैसे दो अन्य बालक भी दीक्षित हो रहे है। इस पर श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी ने अपनी सरल वाणी मे कहा—ठीक है, कोई हर्ज नही। जब कवि जी कह रहे हैं और आप भी कह रहे हैं, तो मुझे क्या उज्र है ? उन्होने मुझसे कहा—चल भाई, तैयार हो जा, तुझे भी दीक्षा दे दी जायगी। और माघ शुक्ला पंचमी (वसन्त पञ्चमी) के दिन श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी ने मुझे भी अन्य दीक्षार्थियो के साथ, मुनि धर्म मे दीक्षित कर लिया।

—ऐसे थे सरलमति, भावुक हृदय, पूज्य गुरुदेव। वे किसी का दिल तोड़ना तो जानते ही न थे। वे हर एक की बात को मान-महत्त्व दिया करते थे। वे हर बात को सरलता से स्वीकार कर लिया करते थे। वे सचमुच मे एक भावुक हृदय सन्त रत्न थे। एक ऐसे भावुक जो दूसरे की पीड़ा देख कर ही नही रोता, बल्कि उन्हे विशेष रूप से प्रसन्न एवं सुखी देख कर भी आनन्द के आँसू बहाता है।

❀ स्नेह मूर्ति

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी जैसी स्नेह मूर्ति के अब दर्शन कहाँ ? उनके निश्छल एवं सात्विक स्नेह का जब भी स्मरण हो आता है तो हृदय गदगद् हो उठता है। सम्वत् २००८ की बात है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव चातुर्मासार्थ आगरा पधारे हुए थे। उन्ही दिनो मुझे टाइफाइड ज्वर ने आ घेरा। शरीर इतना कृश एवं शक्तिहीन हो गया कि बिना दूसरे की सहायता के करवट लेना भी कठिन सा प्रतीत होने लगा। उस समय श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, सारी-सारी रात सिरहाने बैठे रहते। और सिर पर ममतामय हाथ फेरते हुए, स्तोत्र पाठ आदि सुनाते रहते। दिन मे भी धैर्य एवं सान्त्वना देते हुए, वे दयालु पुरुष मेरे पास ही बने रहते थे। और यह उन्ही की कृपा थी कि मै चन्द दिनो में ही भला-चंगा हो, उठ बैठा।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की ममता को, सात्विक स्नेह को, मै ही क्या ? वे सभी जानते हैं, जो उनके थोड़े से भी सम्पर्क मे आ चुके हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की दयालुता एवं सेवा परायणता से प्रायः वे सभी परिचित है, जिनको उस पावन मूर्ति के दर्शनों का सौभाग्य एक बार भी प्राप्त हुआ है।

❀ परम कारुणिक

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव एक परम कारुणिक सत्पुरुष थे। एक बार एक सज्जन आए। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के पास बैठते ही वे रोने लगे। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने उनको धैर्य-दिलासा देते हुए कारण पूछा तो उन सज्जन ने आर्थिक अभाव को कारण बताया। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव तत्काल उठे, उस सज्जन को साथ लिया और एक भक्त के पास जा पहुँचे। उस भक्त को स्वधर्मी बन्धु की सहायता का महत्त्व समझाते हुए, उन सज्जन की ओर संकेत कर दिया। बस फिर क्या था, उसका संकट समाप्त था और अभाव खत्म। वह श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के गुणानुवाद गाता हुआ हर्षित हो चला गया।

—उसके चले जाने के पश्चात् पास बैठे एक परिचित सज्जन ने कहा—गुरुदेव ! यह तो एक नम्बर का मक्कार आदमी था। मै इसे अच्छी तरह जानता हूँ। इस का तो यही धन्धा है। आप ने व्यर्थ मे इसकी सहायता कराई। यह सुन कर सरल हृदय श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने मुस्कराते हुए कहा—भाई ! तुम नही जानते, उसका बहाना झूठा हो सकता है, परन्तु आवश्यकता तो झूठी नही हो सकती, वह तो सच्ची ही होगी। और अपना क्या बिगड गया ? देने वाला भी समाज का एक सदस्य था और लेने वाला भी। फिर उसकी आवश्यकता पूरी हो गई। वह उदास था, रोता था, सहायता मिलने पर वह प्रसन्न हो गया, हँसता हुआ चला गया; यह क्या कम बात है ? दूसरे की सहायता करना—यह तो मानव का कर्त्तव्य होना ही चाहिए।

बस, इससे अधिक और क्या हुआ ? मैने अपना कर्त्तव्य पालन किया और दाता ने अपना।

❀ परम सहिष्णु

—एक बार एक व्यक्ति ने, अपनी भ्रांत धारणा और गलत फहमी के कारण श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को अनेक कटु शब्द कहे। परन्तु वे परम शान्ति के साथ उन्हे सुनते रहे। जब वह अपने मन की सारी भड़ास निकाल चुका, तब श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी ने उसकी गलत फहमी एवं भ्रांत धारणा को, वस्तु स्थिति समझा कर निर्मूल कर दिया। तब तो वह व्यक्ति पश्चाताप से भर उठा। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से बार-बार क्षमा मांगता हुआ तथा उनकी सहिष्णुता की प्रशसा करता हुआ लज्जित हो चला गया।

—उसके चले जाने के पश्चात् मैने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से पूछा—गुरुदेव ! आपने प्रारम्भ मे ही क्यो न वस्तु स्थिति समझा कर, उसकी भ्रान्त धारणा को दूर कर दिया होता ? आप को व्यर्थ मे ही कटु वचन तो न सुनने को मिलते ? इस पर श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी ने मुस्कराते हुए कहा—अरे भाई ! इस मे मेरा विगड़ क्या गया ? कोई कटु वचन मुझ से चिपट थोडे ही गए ! अगर मैं पहले ही समझाना शुरू कर देता, तो उसको कभी भी समझ में नही आता ! क्यों कि उसके अन्दर तो एक गुब्बार भरा हुआ था, जब तक वह बाहिर न निकल लेता, उसकी समझ मे थोडे ही आता ! जब उसके अन्दर का गुब्बार निकल गया, तो उसने मेरी बात को शान्ति के साथ सुना और समझा। उसके पश्चात् तो तुमने देखा ही कि वह किस प्रकार पश्चाताप करता हुआ गया।

—ऐसी थी श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की सहिष्णुता, तितीक्षा और सहनशीलता। इन आंखो ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को जीवन का ऐसा-ऐसा कटुतम हलाहल भी पीते देखा है, उसी प्रसन्नता के साथ, और पी कर हँसते-मुस्कराते ही देखा है। न किसी के प्रति रोष न कटुता। वही बाल सुलभ हँसी, वही पर दुःख कातर तत्परता।

विरोधी परिस्थितियो मे, मैंने मुस्कराते आप को—केवल आप को ही देखा है। एक कवि के शब्दो मे—

पतझार खडा रहा सिरहाने,
लेकिन और अधिक तुम महके।

तुम दीपक थे, पर आंधी मे,
बन कर तुम अङ्गारा दहके॥

—विरोधियो के ही क्या? अपनो तक के दंश आप ने झेले, और हंस-हँस कर झेले। जिन से फूल की उम्मीद थी, उन से आप ने पत्थर भी पाए। किन्तु जिस वेदना की अनुभूति से उत्तेजित हो कर, सामान्य पुरुष ईंट का जवाब पत्थरो से देता है, उसी वेदना की अनुभूति को लेकर आप जैसे सज्जन पुरुष, जीवन मे एक प्रेरणा और एक स्फूर्ति ग्रहण कर लेते हैं।

❀ और उन की ही बात सत्य निकली

—बस एक अन्तिम सस्मरण और लिख कर मै अपनी लेखनी को विराम देता हूँ। स्वर्गवास से एक दिन पूर्व—जब कि व्याधि से श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का शरीर जर्जर एव अत्यन्त शिथिल हो चुका था—मुझे आवाज दी—बेटा, कीर्ति! मै फौरन पहुँचा और पूछा—तहत गुरुदेव, फरमाओ। इस पर गुरुदेव ने पूछा—बेटा! आज क्या तारीख है? मैंने कहा—गुरुदेव! आज ५ तारीख है।—और महीना कौन सा है? गुरुदेव ने पूछा। मैंने उत्तर दिया—गुरुदेव महीना मई का है पांचवां। और सन्? गुरुदेव सन् ६० है। जाने क्या सोच कर गुरुदेव बोले—जरा इन्हें जोड़ना तो बेटा, कितने हुए? मैंने कहा—गुरुदेव! ५ और ५=१० और ६०=७० हुए। और मेरी उम्र कितनी है? गुरुदेव—आप अपना सम्वत् १९४७ विक्रम का जन्म बतलाया करते है। अब सम्वत् २०१७ चल रहा है, इस हिसाब से आप की उम्र भी ७० वर्ष ही बैठती है। सुन कर गुरुदेव बोले—अच्छा, बस बेटा मुझे तो ऐसा मालूम देता है। कि आज की रात्रि मेरे इस जीवन

की अन्तिम रात्रि है। इस पर मैंने कहा—नही गुरुदेव ऐसा न कहिए—आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएँगे। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव मेरी बात सुन कर, मुस्कराए और चुप हो रहे।

—और वस्तुतः उनकी ही बात सत्य निकली। वह रात्रि उनकी अन्तिम रात्रि ही रही। अगले दिन अर्थात् ६ मई सन् ६० को ठीक सवा बारह बजे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव इस पार्थिव नश्वर शरीर को छोड कर स्वर्ग धाम मे जा विराजे। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के अभाव से हृदय वेदना से भर उठा। दिल का दर्द और अधिक बढ गया। उर्दू शायर के शब्दों मे—

दिल तो समझ रहा था, तुम्हे आखिरी इलाज।
तुम दर्दे दिल को, और बढा कर चले गए॥

—फिर भी हमे इतना संतोष अवश्य है कि आप के पावन सस्मरण—हमारे हृदयों मे मौजूद हैं, जो जीवन-क्षेत्र मे पग-पग पर हमारा साथ देते हुए, आप की याद को सदैव तरो-ताजा बनाए रखेगे। आप हमारे नेत्रो मे इस प्रकार से विद्यमान हैं, कि दैहिक रूप से चले जाने पर भी गुण रूप मे, संस्मरण रूप मे उसी प्रकार जीवित एवं क्रियाशील हैं, जैसे आप पहले थे। बस इन्ही भावों को एक उर्दू शायर के लफ्जो मे दुहराता हुआ, मै अपनी लेखनी को विराम देता हूँ—

वह कब के आए भी और गए भी, नजर मे अब तक समा रहे हैं।
वह चल रहे हैं, वह फिर रहे है, वह आ रहे हैं, वह जा रहे हैं॥

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१२—११—६०

[३८]

अध्यात्म विजेता के चरणों में :

महासती श्री लज्जावती जी महाराज

—परम विदुषी, परम पण्डिता, महासती श्री लज्जावती जी महाराज, अनेक साधवोचित सद्गुणों से सम्पन्न आर्या हैं। आप परम तेजस्विनी श्री चन्दा जी महराज की सुशिष्या हैं। पञ्चनद जैन समाज की महिला-मण्डली पर आप का अच्छा खासा प्रभाव है।

—अभी सम्वत् २०१६ का चातुर्मास आप अपनी शिष्याओं सहित-आगरा-में कर गई हैं। इस चातुर्मास में आप श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से ज्ञान-ध्यान का अच्छा लाभ लेती रहीं। वैसे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के सद्गुण शाली जीवन से आप का परिचय काफी पुराना है। अध्यात्म विजेता श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के चरणों में, आप ने बड़ी ही सुन्दर एवं भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि समर्पित की है। जो आगे लेख रूप में प्रस्तुत है।

—सम्पादक

❀ तिण्णाणं, तारयाणं

—श्रद्धेय गुरुदेव ! आप श्री जी के चरणो में किस पद्धति से श्रद्धा के पुष्प अर्पित करूँ ? इस विषय मे मै स्वय कि कर्तव्य विमूढ हूँ । सूर्य की प्रत्येक किरण सम ज्योतिर्मय है, फिर किस-किस की विवेचना की जाय ? शीतल सलिल का प्रत्येक घूँट परितृप्तिमय है, फिर किस-किसका वर्णन किया जाय ? आप श्री जी के जीवन की प्रत्येक विशेषता उत्तरोत्तर महत्त्वशाली एव प्रशंसनीय थी, उन सब का विवेचन करना मेरे लिए बाल-चेष्टावत् होगा । तथापि हृदय प्रेरित करता है कि आप श्री के गुणानुवाद गाकर अपनी चर्म-जिह्वा को पावन करूँ ।

—यह तो जगत् प्रसिद्ध सत्य-तथ्य है कि महान् पुरुषो का इस धरा-धाम पर अवतरित होना, केवल अपने ही लिए नही होता । अपितु समाज-उत्त्थान एवं जन-कल्याण के लिए भी होता है । महान् आत्मा स्व-पर-कल्याणक हुआ करते हैं । तभी तो उन्हे तरण-तारण कहा जाता है । अतः आप श्री जी भी शास्त्र की भाषा मे तिण्णाणं-तारयाणं थे ।

❀ जीवन-माधुर्य

—हे दिव्य मूर्ति महामुने ! आप श्री जी ने आगरा के निकट-सोरई ग्राम मे जन्म लेकर माता श्रीमती रामप्यारी तथा पिता श्री टोडरमल जी को ही गौरवान्वित नही किया, वल्कि क्षत्रीय वश को भी आप श्री जी उज्ज्वल, समुज्ज्वल करने आए थे । धीरे-धीरे होनहार विरवान के होत चीकने पात वाली कहावत के अनुसार आप श्री जी लघु वय मे ही स्थिर चित्त, गम्भीर और तेजस्वी, वीर बालक थे । फलतः आपका झुकाव प्रायः धार्मिक कार्यों की ओर ही होने लगा । गुरु सेवा-भक्ति मे प्रति-दिन आपकी रुचि बढती ही गई । परिणामत. ९ वर्ष की वय मे ही आप श्री जी फाल्गुण, सम्वत् १९५९ विक्रम, ग्राम एलम

जिला मुजफ्फरनगर मे, पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज की पावन सेवा मे उपस्थित हो गए। आप श्री जी ने ससार की नश्वरता को प्रारम्भिक वय में ही-पहिचान लिया था। अतः गुरु-सेवा मे ही आप श्री जी को सच्चे आनन्द का अनुभव होने लगा।

—सम्वत् १९६३ विक्रम ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी मंगलवार की शुभ वेला मे आप श्री जी ने १६ वर्ष की अवस्था मे ढिढाली (मुजफ्फर नगर) मे पण्डित रत्न श्री ऋषिराज जी महाराज के चरणो मे अपने आप को पूर्णतया समर्पित कर दिया। अब आप सुयोग्य गुरु के सुयोग्य शिष्य बन गए। तब से लेकर आप श्री जी ने स्थान-थान पर भ्रमण किया। भूली-भटकी जनता को सन्मार्ग-दिखा कर उसका कल्याण किया।

❀ आध्यात्म विजेता

—हे सच्चे साधक ! आप श्री जी के जीवन से त्याग, वैराग्य, इन्द्रिय-निग्रह, सयम-साधना, धैर्य, शौर्य, वीर्य, साहस, प्रोत्साहन के साथ बाह्य और आभ्यान्तर तप के झर-झर झरते हुए झरनो मे स्नान कर, प्रत्येक जिज्ञासु मनस्तोष प्राप्त करता था। सचमुच आप श्री जी ने क्रोध, मान, माया, लोभ, राग द्वेष, एवं मोहादि अपने आन्तरिक शत्रुओ पर उसी प्रकार विजय प्राप्त की थी, जैसे युद्ध-क्षेत्र में अर्जुन ने दुर्योधन पर अथवा राम ने रावण पर प्राप्त की थी। आप श्री जी वस्तुत. सच्चे आध्यात्म विजेता थे।

❀ मधुर स्वभावी

—हे तपो मूर्ति ! आप श्री जी के दिव्य ललाट पर एक अलौकिक प्रकार की आभा देदीप्यमान रहती थी। आप श्री जी की भव्य, शान्त, प्रसन्न, मुस्कुराहट युक्त सौम्य मुखाकृति के, जो भी एक बार दर्शन कर लेता था, आजीवन उसके हृदय-

पट पर उसका भव्य चित्र अकित हो जाता था। आप श्री जी की वाणी से अमृत रस झरता था। जिसका आकण्ठ पान कर प्राणी वर्ग अपने आप को धन्य-धन्य समझता था। आप श्री जी का स्वभाव विनोदप्रिय, सहज सरल और आल्हादकारी था। अपने मधुर स्वभाव के कारण आप श्री जी सन्त मण्डली मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते थे।

—हे विद्वद्वर मुने! आपका ज्ञान-भण्डार कुबेर के अक्षय द्रव्य-कोष की भाँति असीम था। लोक-हित की भावना आपके अन्दर कूट-कूट कर भरी हुई थी। आप श्री जी का अधिकाश समय शास्त्रो के चिन्तन-मनन आदि सत्कार्यो मे ही व्यतीत होता था। आप श्री जी अपने कर कमलो एवं वाणी द्वारा सदैव ज्ञान-दान वितरण करते रहते थे। आप श्री जी की महानता की ख्याति-दूर-दूर देशो तक व्याप्त है।

❀ आदर्श त्यागी

—हे गुणगणालंकृत साधु शिरोमणे! आप श्री जी ने अपने सद्गुणो की अधिकता के कारण प्रत्येक व्यक्ति के हृदय-पट पर अपना अटल साम्राज्य जमाया हुआ है। सरलता, सौम्यता, मृदुता, शान्ति तितीक्षा, सयम, ज्ञान-ध्यान, जप-तप, त्याग-वैराग्य इत्यादि आप श्री जी के किन-किन गुणो का वर्णन किया जाए? विश्व भर के सद्गुणों को आप श्री जी के जीवन मे आश्रय स्थान प्राप्त था।

—हे विद्वद् रत्न! अधिक क्या कहूँ? आप आदर्श मुनि, आदर्श त्यागी, आदर्श तपस्वी, आदर्श मनस्वी, आदर्श यशस्वी, आदर्श बाल ब्रह्मचारी, आदर्श विद्वान्, आदर्श साधक और आदर्श दीर्घ-द्रष्टा थे। आपकी सयमाराधना, आध्यात्मिकता, निर्भीकता, निष्पक्षता की ज्योत्स्ना मे समूचा भूमण्डल ज्योतिर्मय हो रहा है।

—हे सत्यान्वेषक, महर्षे ! आप की सदैव ही यह दृष्टि रही है कि सच्चा सो मेरा। अर्थात्-सत्य जहाँ भी मिला, वही से आप ने उसे निःसकोच भाव से सहर्ष ग्रहण कर लिया। आप ने ऐसा दावा कभी भी पेश नही किया कि मेरा सो सच्चा। अर्थात्-सत्य केवल मेरे पास ही है। नही, आप तो कहा करते थें कि सत्य भगवान् तो सर्वत्र विद्यमान है। केवल आवश्यकता है हमे अपने विवेकमय ज्ञान-नेत्र खोल लेने की और सत्य जहाँ भी मिले वही से सहर्ष ग्रहण कर लेने की। यही कारण था कि आप का जीवन अहंकार से शून्य एवं नम्रता और विनय से ओत प्रोत था। आप सत्य की खोज मे जीवन पर्यन्त लगे रहे और क्रमशः उसे प्राप्त भी करते ही रहे। सत्य की आभा से आप का जीवन सदैव ही चमत्कृत रहा है।

—विश्व वन्दनीय गुरुदेव ! इस समय भले ही आप श्री जी का पार्थिव शरीर हमारे समक्ष नही है, तथापि आपकी अमर संयम एव सद्गुण ज्योति ज्यो की त्यों कायम है और अपने प्रकाश से विश्व को प्रकाशित कर रही है। हमारी हार्दिक कामना है कि आप श्री जी का सुनहरी जीवन एवं उज्ज्वल रुपहरी उपदेश जन-जन को कल्याण का मार्ग सुझाता रहे।

—नाभा : पंजाब :
२८—८—६०

[३९]

विश्व विभूति—
ज्योतिर्धर गुरुदेव :

महासती श्री जगदीशमती जी महाराज

—श्रद्धेया महासती श्री जगदीशमती जी महाराज, एक प्रभावशाली व्यक्तित्त्व वाली, विदुषी आर्या हैं। आप का शास्त्रीय परिज्ञान, एवं गहन गम्भीर विचार समाज में अपना एक पृथक् ही विशिष्ट स्थान रखते हैं। आप परम श्रद्धेया महासती श्री धनदेवी जी महाराज की सुशिष्या हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के सन्त जीवन से आप वर्षों से सुपरिचित हैं। एवं पूज्य गुरुदेव श्री जी के सद्‌गुणोपेत जीवन से प्रभावित भी। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के ज्योतिर्धर जीवन के ज्योतिर्मय सद्‌गुणों का अंकन आप ने इस लेख में किया है। लेख का भाव सौन्दर्य तथा शब्द सौन्दर्य बस देखते ही बनता है। लेखन शैली का चमत्कार पाठकों का मन, बर बस मुग्ध कर देगा।

—सम्पादक

❀ यह प्रयास क्यों ?

—यद्यपि सूर्य के प्रखर प्रकाश के समक्ष एक नन्हा सा मृण्मय प्रदीप प्रज्ज्वलित करना, कोई विशेष अर्थ नही रखता है, तथापि मकान के जिस दूरस्थ आच्छादित भाग मे रवि-रश्मियाँ नही पहुँच पाती, वहाँ दीपक के प्रकाश से कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। ठीक इसी प्रकार मेरा यह प्रयास है।

—यद्यपि अनेकानेक विद्वज्जनों ने श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के सम्बन्ध मे अपने-अपने सुन्दरतम विचार प्रस्तुत किए ही होगे, उनके समक्ष मेरा यह प्रयास तो तुच्छ एव नगण्य ही प्रतीत होगा। फिर भी जिन व्यक्तियो ने स्वर्गीय गुरुदेव श्री गणी जी महाराज के प्रभावशाली प्रवचनों से लाभ नही उठाया अथवा उनके पावन दर्शनों का सौभाग्य जिनको प्राप्त नही हुआ। उन्ही व्यक्तियो के लिए मेरा यह प्रयास है और उन्ही व्यक्तियो को यह चन्द शब्द दीपक के प्रकाश का कार्य करेंगे।

❀ अपूर्व निधि

—सन्त-शिरोमणे ! सचमुच आप सन्त समुदाय की शीर्षस्थ मणि के तुल्य थे। आप का जीवन समाज का जीवन था। आप समाज की अपूर्व निधि थे। मैं आपके सद्ज्ञान और सुविचारो की क्या प्रशसा करूँ ? आप गुणो के भण्डार थे। ज्ञान के समुद्र थे। आप की एक-एक शिक्षा, जीवन-विकास के लिए सहायक होती थी।

—मैं वे दिन नही भुला सकती, जब मैं अपनी साध्वियों के साथ आपकी पावन सेवा मे-रोहतक जैन धर्मशाला मे-धर्म-शिक्षा के लिये जाया करती थी। आपकी वह हँसमुख सौम्य आकृति, माता-पिता के समान निश्छल-सात्विक प्रेम और वात्सल्य, एवं आपके जीवनोपयोगी सद् उपदेश कम से कम मैं तो

जीवन पर्यन्त नही भुला सकूँगी। यह आपके अगाध ज्ञान का ही सुपरिणाम था कि जिसने मेरी बहुत सी विचार-गुत्थियों को अत्यन्त सरलता के साथ सुलझा दिया। एक शिष्या के नाते मैं आपकी सतत आभारी रहूँगी।

* शान्तिप्रिय

—सद् गुरुदेव ! आप का विश्व-प्रेम अवर्णनीय है। संसार के प्रत्येक प्राणी से आपका मैत्री भाव था। आप शान्ति प्रिय थे, विश्व शान्ति के इच्छुक थे। दूसरे शब्दों मे आप शान्ति के देवता थे। आप नही चाहते थे कि ससार के प्राणी एक दूसरे से लड़े। आप नही चाहते थे कि फिर से विश्व युद्ध हो। जनसंहार के पक्षपाती आप कभी नही रहे। आपका कहना वस्तुतः सत्य ही था कि आज प्रत्येक राष्ट्र चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, विश्व युद्ध नहीं चाहता। वह विश्व युद्ध से डरता है और उसे सतत टालने का प्रयत्न करता है। सब को विश्वास है कि यदि अब की बार विश्व युद्ध छिड़ा, तो सम्भव है समस्त मानव जाति ही विनष्ट हो जावे ! इसी लिए आप हमेशा से विश्व शान्ति के पक्ष मे रहे हैं।

* विश्व-विभूति

—विश्व-विभूते ! आप एक व्यक्ति, परिवार, समाज अथवा सम्प्रदाय विशेष की ही नही अपितु विश्व की विभूति थे। सम्पूर्ण संसार की निधि थे। आपके गुणो का वर्णन कहाँ तक किया जाय ? आप एक परम तपस्वी एवं परम ज्ञानी महात्मा थे। परन्तु तप अथवा ज्ञान का आप मे अभिमान नाम मात्र को भी नही था। आप अपने उपदेशामृत का वर्णन करते हुए कहा करते थे—मानव सतत सद्गुणों के विकास में सलग्न रहे, परन्तु सावधान रहे कि कहीं मिथ्या गर्व आकर सब किया-कराया

चौपट न कर दे। आप सद्गुणों की खान होते हुये भी अहकार से सदैव दूर रहे थे ।

—विश्व की दिव्य-ज्योति ! सचमुच आपका दिव्य-जीवन एक प्रज्ज्वलित प्रचण्ड ज्योतिपुञ्ज ही था। आपने अपने महान् सद्गुणो से अपने जीवन को ज्योति सम्पन्न बनाया और फिर इस प्रचण्ड प्रकाश को ससार भर मे फैला कर, संसार को प्रकाशित और चमत्कृत करके आप स्वय प्रकाश रूप मे ही लीन हो गए। जैन समाज का ज्योतिर्धर यह प्रकाश पुञ्ज, आज समाज की आँखो से ओझल हो गया है। आप को खो कर जिस क्षति का अनुभव जैन समाज कर रहा है, उसकी पूर्ति कालान्तर में होनी अत्यन्त कठिन है।

❀ सद्गुण मूर्ति

—सन्तोष, धैर्य, एव सदाचार-मूर्ते ! आप वास्तव मे सद्गुणो की प्रत्यक्ष मूर्ति थे। आपका यह कथन अक्षरशः सत्य है कि सन्तोष, धैर्य और सदाचार मानव की अमूल्य निधि हैं, यह तीनो सद्गुण मानव मे होने आवश्यक ही नही, अपितु अनिवार्य भी हैं। आज ससार को इन सद्गुणों की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आप कहा करते थे—

—सन्तोष तो एक अमृत है, जो मानव को अमर बना देता है। आज समाज मे सन्तोष की परम आवश्यकता है। आज राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक मे सन्तोष होना आवश्यक है। यदि व्यक्ति सन्तोषी होगा तो समाज-राष्ट्र और समस्त विश्व ही सुखी और समृद्धिशाली बन सकेगा। और जब असन्तोष ही समाप्त हो जाएगा, तो यह आपस की छीना-झपटी, वैमनस्यता आदि सभी दुर्गुण दूर हो कर, सच्ची विश्व शान्ति की स्थापना हो जाएगी, जिसकी आज ससार को परम आवश्यकता है।

—धैर्य के सम्बन्ध मे भी आपके विचार गहराई परक तथा श्रेष्ठतम रहते थे। आप फर्माया करते थे–धैर्य वास्तव मे बहुत बडी वस्तु है। यदि मानव के अन्तर-हृदय मे धैर्य नही, तो समझ लीजिए कि कुछ भी नही। धैर्यशील व्यक्ति एक दिन सफलता प्राप्त कर सकता है। धैर्य से सब कुछ हो सकता है। एक जिज्ञासु ने तत्काल आप से पूछ डाला—गुरुदेव! क्या धैर्य से छलनी मे पानी ठहर सकता है? इस पर आपने मुस्करा कर कहा था–हाँ, हाँ क्यो नही, अवश्य ठहर सकता है, यदि पानी के बरफ बन जाने तक धैर्य रखा जावे। आप धैर्य के सम्बन्ध में अक्सर मकड़ी वाली कहानी सुनाया करते थे—एक मकड़ी छत से अपने जाले पर से गिर पड़ी, उसने कई बार प्रयत्न किया ऊपर पहुँचने का, परन्तु वह बीच मे से ही फिर गिर पड़ती। परन्तु उसने धैर्य नही छोडा और अन्त मे वह अपने प्रयत्न मे सफल हुई और अपने लक्ष्य पर पहुँच गई। यही कहानी एक इङ्गलिश कवि ELIZA COOK ने King Bruce and the spider के नाम से बहुत ही सुन्दर ढंग से लिखी है।

—और सदाचार? सदाचार के बिना तो जीवन मे शून्य ही बचता है। बिना सदाचार एवं नैतिक उच्च चारित्र के, मानव कभी भी सफलता नही प्राप्त कर सकता। मानव का यदि धन-वैभव नष्ट हो गया तो समझो कुछ नही गया। यह सब तो पुरुषार्थ एव भाग्य से बँधा हुआ है। अनुकूल भाग्य होने पर प्रयत्न से वह फिर प्राप्त किया जा सकता है। यदि स्वास्थ्य चला गया तो समझो कुछ खो दिया, क्योकि एक बार खोया हुआ स्वास्थ्य फिर से बड़ी ही कठिनता एवं साधना के पश्चात् ही प्राप्त हो सकता है। परन्तु यदि चारित्र एव सदाचार चला गया, तो समझो–सर्वस्व ही चला गया। सम्पूर्ण जीवन ही मानव का, सदाचार के बिना व्यर्थ हो जाता है। आप कवि के शब्दों में कहा करते थे—

धन-धान्य गयो, कछु नाहि गयो, यदि स्वास्थ्य गयो कछु खो दीनो।
चारित्र गयो सर्वस्व गयो, नर-जन्म अकारथ खो दीनो॥

—सदाचार ही मनुष्य जीवन को सफल एव मानव के भविष्य को समुज्ज्वल बना सकता है। सदाचार ही से मानव, अतिमानव एवं महामानव के उच्च पद पर अधीष्ठित हो सकता है।

—सन्तोष-धैर्य एव सदाचार, यह तीनो सद्गुण आपके जीवन मे प्रचुर सख्या मे विद्यमान थे। यही नही अपितु मानव जीवन मे जितने भी सद्गुण हो सकते हैं, वे सब अपनी चरमावस्था मे आपके जीवन मे विद्यमान थे। इस जीवन में अब आपकी पार्थिव देह एव हँस मुख सौम्य आकृति के दर्शन तो प्राय. असम्भव से ही हैं। परन्तु आपके सद्गुणों का प्रकाश ससार मे सदैव अमिट रहेगा। अतः सद्गुण रूप में आप अजर है, अमर हैं, और चिर शाश्वत है। अन्त मे मेरी यही हार्दिक कामना है कि आपके चरण-कमलो मे मेरी अटूट श्रद्धा बनी रहे। और मैं भी आप के चरण-चिन्हो पर चल कर अपने जीवन को कृतार्थ कर सकूं।

रोहतक : पजाब
१९—१०—६०

[४०]

उस महान् आत्मा के प्रति :

महासती श्री सत्यवती जी महाराज

—महासती श्री सत्यवती जी महाराज, एक शान्त प्रकृति एवं सुलझे हुए विचार रखने वाली आर्या हैं। मधुर स्वभाव तथा प्रवचन पटुता आप के समुज्ज्वल–व्यक्तित्त्व की विशेषताएँ हैं। आप श्रद्धेया महासती श्री पद्मश्री जी महाराज की सुशिष्या हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से आप बहुत समय से परिचित हैं। उस महान् आत्मा के प्रति आप की श्रद्धा एवं निष्ठा प्रशंसनीय है। हृदयगत आन्तरिक सद्भावनाओं को आपने शब्दों का रूप देते हुए श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति अपने श्रद्धा–पुष्प समर्पित किए हैं। इन श्रद्धा–सुमनों की सुगन्ध कितना चमत्कार रखती है? यह तो अगली पंक्तियों को पढ़ने से ही ज्ञात हो सकेगा।

—सम्पादक

❀ महान् आत्मा

—परिवर्तन ससार का नित्य-नियम है। इस नियम के अनुसार ससार प्रतिक्षण परिवर्तित होता रहता है। जिस प्रकार काल-चक्र, अतीत को भुला कर, भविष्य की ओर निरन्तर बढता रहता है। उसी प्रकार मानव भी परिवर्तन के साथ आगे—और आगे बढता ही रहता है। भूत काल मे कौन-कौन हुए ? वे कहाँ-कहाँ रहते थे ? क्या-क्या करते थे ? यह सब बहुत कम ही लोगो के दृष्टि-पथ मे आता है।

—लेकिन ससार मे कुछ ऐसे महान् आत्मा मानव भी होते हैं, जो काल के भाल पर अपना अमिट चिन्ह छोड़ जाया करते है। अतीत के गर्भ मे समा जाने पर भी, उन महान् आत्माओ को ससार भूल कर भी नही भुला सकता। उन गौरव-शील महापुरुषो के सत्कार्य आज आदर्श के रूप मे माने जाते है, और ससार उनका मगलमय अनुसरण कर अपने आप को धन्य मानता है। जिन महान् आत्मा, पुत्र रत्नों से भारत माता का सुयश भू तल पर छाया हुआ है, उन्ही महान् आत्माओं मे, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का अग्रणी स्थान है।

जिन के गुण से गौरव पाता है, यह भारतवर्ष महान्।
उस त्यागी गुरुवर का, मानव कौन कर सके सुयश बखान ॥
बहुत दिनो पश्चात् हस्तियाँ, ऐसी भू पर आती हैं।
जिन के गुण गौरव से जनता, धन्य-धन्य बन जाती है ॥

❀ जीवन परिचय

—परम श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के व्यक्तित्व में चन्द्रमा सी शीतल सुषमा, सूर्य सा ओजस्वी प्रताप, और भूकम्प सी विराट शक्ति पाई जाती है। किसी भी महापुरुष मे जो गुण होने आवश्यक हैं, वे आप मे प्रचुर संख्या में

विद्यमान थे। ऐसे नर रत्न जिस कुल परम्परा के प्रसाद से प्राप्त हुए हैं, इसका परिचय प्राप्त करना प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है।

—आप श्री जी का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी विक्रम सम्वत् १९४७ सोरई ग्राम मे एक क्षत्रिय परिवार मे हुआ था। आप श्री जी के पिता श्री टोडेरमल जी का आपने अगाध प्रेम प्राप्त किया था। किन्तु वह प्रेम उन अमीर पूँजीपतियो की भाँति न था, जो अपनी संतान को धन-सम्पति के मद मे बिगड़ने देते हैं। वल्कि उन्होने तो, उस अभाव की पूर्ति के लिए, जिसकी धर्म शास्त्रकारों को आवश्यकता थी, अपने हृदय के टुकड़े को त्याग, तपस्या एव वैराग्य का पाठ पढ़ाया। आप श्री जी की माता श्रीमती रामप्यारी एक श्रेष्ठतम गुणवती, कलावती और धर्मप्रिय नारी का वरदान थी।

—होनहार विरवान के होत चीकने पात की लोकोक्ति के अनुसार आप श्री जी वचपन से ही असाधारण प्रतीत होते थे। आप श्री जी का झुकाव प्रारम्भ से ही वैराग्य की ओर था। फलत. इस संसार को असार जान कर आप श्री जी ने जीवन सुधार का दृढ़ संकल्प किया। जीवन क्या है? पानी का बुलबुला, प्रभात का तारा, या संध्या की ढलकती धूप। फिर भी मानव अज्ञान एवं मोह मे फँस कर अपनी शक्ति को क्यों भुलाए हुए है? क्यों दीन-हीन बन कर रोते हुए समय व्यतीत कर रहा है? इस प्रकार तो इस अमूल्य महान् जीवन को व्यर्थ ही गँवा देना, एक भारी मूर्खता ही होगी। इत्यादि विचारो ने आपके मानस मे हल-चल उत्पन्न कर दी। एक अन्तर्द्वन्द मानस मे चल पड़ा। जिसके फलस्वरूप साधना एवं सयम-मार्ग अपनाने का दृढ़ सकल्प जागृत हुआ। वस फिर क्या था? आप तत्काल पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज की पवित्र सेवा मे जा पहुँचे। उस समय आप की आयु मात्र ९ वर्ष की थी। तत्त्ववेत्ता कहते हैं— महानता

वय से नही, बल्कि स्वाभाविक तेजस्विता से आँकी जाती है—

प्रकृतिरियं सत्ववतां,
न वयस्तेजसो हेतु ॥

—अस्तु 'चाह को राह' के अनुसार विक्रम सम्वत् १९६३ ढिढाली ग्राम में १६-वर्ष की अवस्था में आप श्री जी ने सयम के महामार्ग पर अपने मुस्तैदी कदम बढा ही तो दिए। इसके पश्चात् तो आत्म-साधना के साथ-साथ आप श्री जी जन-कल्याण करते हुए यत्र तत्र सर्वत्र विचरने लगे। जहाँ जाते धर्मोपदेश द्वारा सुप्त हृदयों मे जागृति-मन्त्र फूँकते। अहिंसा, सत्य, संयम एवं सदाचार की दुंदुभि बजाते हुए आप श्री जी ने जीवन के ५४ वर्ष बिता दिए। अन्त में जीवन के ७० वर्ष व्यतीत कर आप श्री जी अभी-अभी विक्रम सम्वत् २०१७ वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार की मध्यान्ह वेला में इस नश्वर देह को छोड, अमर लोक मे जा विराजे। आप श्री जी के दुखद अवसान से जो क्षति जैन समाज को हुई है, वह शीघ्र ही पूरी होनी कठिन है।

❀ नर रत्न

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, एक नर रत्न थे। ऐसे नर रत्नो को पाकर ही पृथ्वी धन्य हुई है। अथ से इति तक, श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज का जीवन, शुद्ध-निर्मल अथच पवित्र रहा है। सद्गुणो के तो आप पुञ्ज ही थे। तपः साधना, सेवा वृत्ति, सरल स्वभाव, शान्त मुद्रा, कठोर साधक-चर्या इत्यादि आपके किन-किन सद्गुणों का वर्णन किया जाय ?

—आप श्री जी, उदार हृदय, त्याग मूर्ति, मधुर भाषी, अहिंसा प्रेमी, परम कारुणिक, परम दयालु, सत्य कामी, सत्य नामी, सत्यवादी, एव महान् आत्मा थे। आप श्री जी की पवित्र वाणी मे अपूर्व चमत्कार था। उत्तर प्रदेश, दिल्ली

प्रान्त, हरियाणा, एवं पंजाब के शताधिक क्षेत्र आप श्री जी के ओजस्वी प्रवचनों का अपूर्व अवसर प्राप्त कर चुके हैं। तथा आप श्री जी के पवित्र जीवन एवं तेजस्वी वचनों से प्रेरणा ले कर कर्तव्य-पथ पर अग्रसर हुए हैं। जिसके चिन्ह अद्यावधि अविकल रूप मे विद्यमान दृष्टिगोचर होते हैं।

—श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज, एक सुविकसित सुगन्धित पुष्प के समान थे। जिनके दर्शन करके, जिनकी पवित्र वाणी सुन करके, जिनकी कुछ सेवा करके भक्त वृन्द अपने को कृतार्थ समझता था। आप श्री जी ने अपने ७० वर्ष लम्बे पवित्र जीवन मे कर्तव्य पालन का वह चमत्कार दिखाया, जिसका गुण-गान आज बच्चे-बच्चे की जबान पर है। जिन्हे युग-युग तक समाज एव राष्ट्र याद रखेगा। आज कौन मानव ऐसा है ? जो आपके गुणों का स्मरण न करता हो ?

—वे महामानव शरीर से बेशक ओझल हो गए हैं, परन्तु अपनी महान् विचार धारा और सद्गुणो के रूप मे आज भी वे जन-मानस मे जीवित हैं, विद्यमान हैं और अमर हैं। उनकी विचार धाराएँ और जीवन-ज्योति आज भी हमारा पथ-प्रदर्शन कर रही है और भविष्य मे भी करती रहेगी। आओ उस नर रत्न के महान् जीवन का अभिनन्दन करते हुए अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करे—

कौन गणक गुण गिनने पाया, बेशकीमती गौहर के।
किसने परखे हैं जौहर, श्री श्यामलाल से जौहर के॥
जब तक चमकें चाँद सितारे, बहती गंगा-यमुना धारा।
तब तक तेरा नाम रहेगा, रटता यह सब संसारा॥

—समाना : पंजाब
२६—८—६०

[४१]

एक दिव्य जीवन की झाँकी :

महासती श्री जगदीशमती जी महाराज

—महासती श्री जगदीशमती जी महाराज ने, प्रस्तुत लेख में, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के दिव्य जीवन की कुछ झाँकियाँ प्रस्तुत की हैं। जो आप की पाण्डित्य पूर्ण लेखनी का स्पर्श पाकर अत्यन्त भव्य हो उठी हैं।

—इन भव्य झाँकियों में पाठकों को एक अपूर्व सौन्दर्य एवं एक विशिष्ट चमत्कार देखने को मिलेगा। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के महान् जीवन तथा श्रेष्ठ सद्गुणों का परिचय भी पाठक, इन भव्य झाँकियों से प्राप्त कर सकेंगे। प्रस्तुत लेख पढ़ने के पश्चात् पाठक गण, महासती जी महाराज की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकेंगे।

—सम्पादक

❀ जाज्वल्यमान नक्षत्र

परिवर्तिनि ससारे, मृत : को वा न जायते ।
स जातो येन जातेन, याति वश : समुन्नतिम् ॥

इस परिवर्तनशील संसार मे ऐसा कौन प्राणी है, जो जन्म न लेता हो और जिसकी मृत्यु न होती हो ? लेकिन जन्म लेना उसी का सार्थक है, जिसके जन्म से वंश-देश तथा ससार उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। इस नश्वर गतिशील संसार मे अनेक युग आएँगे और चले जाएँगे, परन्तु युगो की छाती पर बढते हुए जो साहसी चरण आगे चले जाते हैं, उनके चिन्ह कभी भी मिटने वाले नही हैं। वे तो युगो की छाती पर उसी प्रकार से अमिट हो, सदा-सर्वदा चमकते रहेगे, जिस प्रकार व्योम के विशाल वक्ष पर चन्द्रमा और सूर्य। आने वाले समय की धड़कने, उनकी पूजा के गीत गायेगी, जय-जयकार करेंगी और अपना शीश चरणो मे झुका कर आत्म विभोर हो जाया करेंगी।

—इसी रूप मे श्रद्धेय पूज्य प्रवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज को भला कौन भुला सकता है ? भविष्य चिरकाल तक इस महापुरुष को अपनी श्रद्धाञ्जलियो का अर्घ्य चढाता ही रहेगा। विश्व-भाल पर, अनन्त काल तक श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का अमर नाम स्वर्णाक्षिरो में लिखा हुआ पढा जा सकेगा। युगो-युगो तक आप ा ज्योतिर्मय जीवन, संसार को मार्ग-दर्शन का कार्य करता रहेगा।

—धर्माकाश में आपका नाम एक जाज्वल्यमान नक्षत्र की भांति जगमगा रहा है। अंधकार से भरे विश्व मे आप की उपदेश-ज्योति आज भी अपनी ज्योति-रश्मियाँ बिखेर रही है, और भविष्य मे भी युगो युगो तक आ की यह जीवन-ज्योति जगमगाती ही रहेगी, यह नि सन्देह है। युगो-युगो तक संसार आप के गुणानुवाद गाता ही रहेगा, यह ध्रुव सत्य है।

जय गुरुदेव जय गुणागार,
जय सन्त शिरोमणि हृदयहार।

जय श्यामलाल गुरुवर तुमको;
हो नमस्कार ! हो नमस्कार !

❀ जीवन रश्मियाँ

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी सम्वत् १९४७ विक्रम, उत्तर-प्रदेश के सुप्रसिद्ध नगर आगरा के सन्निकट सोरई नामक ग्राम मे, क्षत्रिय कुल मे हुआ था। माता श्रीमती रामप्यारी और पिता चौधरी श्री टोडरमल जी, आप जैसे पुत्र रत्न को पाकर फूले न समाते थे। बाल्यकाल से ही धर्म एवं सत्सग के प्रति आपका प्रेम रहा है। जहाँ भी धर्म सभा अथवा सत्संग सभा होती, आप झट वहीं पहुँच जाते। धीरे-धीरे धर्म और वैराग्य का यह अकुर आपके हृदय मे पनपता रहा, वृद्धि पाता रहा। एक दिन आपने धर्म-साधना के लिए अपने माता-पिता से आज्ञा माँगी। माता-पिता अपने नन्हे से पुत्र की ऐसी बातें सुनकर आश्चर्य करने लगे। उन्होने आपको संयम मार्ग की कठिनाइयाँ बतलाते हुए कहा—पुत्र ! सयम मार्ग अत्यन्त कठिन है। वहाँ मन को मार कर चलना पड़ता है। रूखी-सूखी, जैसी मिल जाए, उसी पर सन्तोप करना पड़ता है। कठिन से कठिनतर नियमोपनियमो का सूक्ष्मता से पालन करना पड़ता है। तुम अभी सुकुमार बालक हो। कैसे इस दुर्धर्ष पथ पर चलोगे ? किन्तु आपके मन मे तो वैराग्य की तीव्र लहरें जो उठ रही थी, वे कैसे वैराग्य प्राप्त किये बिना शान्त होती।

—फलत : आप माता-पिता से आज्ञा ले कर, श्रद्धेय त्याग-मूर्ति पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज की पावन सेवा मे विक्रम सम्वत् १९५६ फाल्गुण मास में मात्र ९ वर्ष की अवस्था में एलम ग्राम जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर-प्रदेश) मे जा पहुँचे। और वही रह कर ज्ञान एव वैराग्य का अभ्यास करने लगे। लोग आपके वैराग्य को देख कर आपको भक्त अथवा वैरागी बालक कहा करते थे। आप

प्रारम्भ से ही धर्म रंग मे रगे रहने वाले होनहार बालक थे। तभी तो किसी ने सच ही कहा है—

होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

अंग्रेजी मे भी कहावत है—"Coming Events Cast Their Shadows" अर्थात्–आने वाली घटनाएँ अपना प्रभाव पहले ही दिखाना प्रारम्भ कर देती हैं। जिस प्रकार अच्छे वृक्ष का, उसके अच्छे पत्तो से ही पता चल जाता है, उसी प्रकार महापुरुषो का पता भी उनके बाल्य-काल से ही लग जाता है। आपको अपने आप पर पूर्ण विश्वास था। आपका नैतिक बल अत्यन्त उच्च एवं दृढ था। आप एक दृढ़ चरित्री आत्म साधक थे। आपको पता था कि—दुर्बल चरित्र वाला मानव उस सरकण्डे की भाँति होता है, जो हवा के हर झोंके पर झुक जाता है।

—आप ने ७ वर्ष तक सतत ज्ञानाभ्यास करने के पश्चात् १६ वर्ष की यौवनारम्भ अवस्था मे ही-ढिढाली ग्राम-जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर-प्रदेश) मे ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी मगलवार सम्वत् १९६३ विक्रम को, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज के कर-कमलो द्वारा, बड़े ही समारोह पूर्वक आर्हती दीक्षा ग्रहण कर ली। तभी से आपने संयम-साधना मे अपने आप को पूर्णतया सलग्न कर दिया। आपकी यह अमल-उज्ज्वल साधना जीवन पर्यन्त चलती रही। अध्यात्म-साधना के मार्ग मे आप को अनेक कष्ट भी आए, विघ्न भी आए, और आपत्तियाँ-विपत्तियाँ भी आईं, परन्तु आप और अधिक निखरते रहे, और अधिक निर्मल वनते रहे, और अधिक दृढतर होते रहे। इसी लिए तो हिन्दी के एक कवि ने कहा भी है—

आदमी वनता है इन्मा, आफतें आने के वाद।
रंग लाती है हिना, पत्थर पे पिस जाने के वाद॥

—इस प्रकार आप श्री जी निरन्तर ५४ वर्षों तक संयम की आराधना-साधना एवं जन-हित, जन-कल्याण के कार्यो में संलग्न रह कर, अन्त मे ७० वर्ष की अवस्था में सम्वत् २०१७ विक्रमी वैशाख

शुक्ला दशमी शुक्रवार के दिन, मानपाड़ा, आगरा में ऐहिक लीला समाप्त कर स्वर्गधाम मे जा विराजे। कवि के शब्दो में—

दो सहस्र विक्रम तथा, सत्रह सम्वत् घोर।
शुक्ला दशमी वैशाख की, शुक्रवार कठोर॥
मानपाडा, आगरा, श्री श्यामलाल गुरुराय।
कर सथारा भाव से, स्वर्ग विराजे जाय॥

❋ उदारता आदि सद्गुण

—श्रद्धेय पूज्य प्रवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का पवित्र जीवन अथ से इति तक सद्गुणो की चमत्कृति से चमत्कृत जीवन रहा है। सहनशीलता एवं तितीक्षा आप के जीवन मे सर्वोत्कृष्ट रूप मे विद्यमान थी। इस के साथ उदारता का तो मानो आप के रक्त मे सम्मिश्रण ही हो गया था। आप एक सच्चे उदारहृदय सन्तपुरुष थे। जिस प्रकार से एक उदार हृदयी व्यक्ति का हृदय कोमल एव नम्र होना चाहिए, उसी प्रकार बल्कि उस से भी अधिक कोमल एव नम्र प्रकृति आप की थी। आप का मानस, शरद ऋतु की स्वच्छ और निर्मल शीतल चन्द्रिका के समान, शान्ति और तृप्ति प्रदान करने वाला था।

—दु:खितो के प्रति आप के हृदय मे करुणा-सागर हिलोरें लेता रहता था। किसी को दु.खी अथवा रोते देखा नही, कि आप का हृदय तड़प उठता और आँखे पुरनम हो जाती। एक शायर के शब्दो मे—

दुखी को देख कर रोता, तडप उठता था दिल तेरा।
तेरे दिल मे जमाया था, रहम ने आन कर डेरा॥

—अत्यन्त उदारता के साथ आप दुखी के दुख को दूर करने का प्रयत्न करते। यही कारण था कि जो भी आप के पास उदास चेहरा ले कर आता, वह आप से सात्वना पा कर मुस्कराता हुआ लौटता। जो रोता हुआ पहुँचता, वह हंसता हुआ वापिस

आता। आप को लोग-मसीहा-कहा करते थे। ऐसा मसीहा जिस मे मुर्दो तक को जिला देने की शक्ति हो। आप जनता को उदारता एवं करुणा का महत्व कवि के शब्दो में इस प्रकार समझाया करते थे—

हर दुखी को आंसुओ की बूंद दो।
इस खजाने मे न आएगी कमी॥

× × ×

उदासे नयन जिस किसी के भी पाओ।
उसी को हँसा कर गले से लगाओ॥

× × ×

—आप फर्माया करते थे—उदार व्यक्ति के लिए कौन अपना और कौन पराया ? उस के लिए तो सभी अपने है पराया कोई भी तो नही। उदार हृदय व्यक्ति के कुटुम्ब एव परिवार की सीमा रेखा मे तो समस्त विश्व ही आ जाता है। तत्त्ववेत्ताओं के शब्दो मे—उदार चरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम्—अर्थात्-उदार चरित मानव का तो बस, है कुटुम्ब ससार ही सारा; इस उक्ति के आप मानने वाले थे। और यही उदार हृदयता आप सभी मे देखने के इच्छुक थे।

—इस के अतिरिक्त आप के जीवन मे सरलता, सौम्यता, शालीनता, और सेवा भाव कूट-कूट कर भरे थे। आप सरलता एव विनय शीलता से सम्पन्न सन्त रत्न थे। जो सरल होता है वह विनय सम्पन्न होता ही है। क्यों कि कहा जाता है—अत्यन्त मधुर सुगन्ध एवं आकर्षक सौन्दर्य सम्पन्न पुष्प, सुकोमल एव सलज्ज होता ही है। आपने अपना समस्त जीवन ही, गुरुसेवा, धर्म-सेवा, संघ-सेवा तथा जन-सेवा मे लगा दिया था।—सेवा बिन मेवा नही, अथवा "No Pains No gains" वाली अंग्रेजी कहावत को भली-भांति आप हृदयंगम कर, जीवन मे उतार चुके थे।

—आत्म हित के साथ-साथ जन-कल्याण करते हुए आपने दिल्ली, उत्तर-प्रदेश, हरियाणा तथा पजाब में काफी भ्रमण किया। सम्वत् २००६ विक्रम मे आप का चातुर्मास रोहतक (हरियाणा) शहर की जैन धर्म शाला मे हुआ था। जैन स्थानक मे उन्ही दिनो श्रद्धेया गुरुणी जी श्री धनदेई जी महाराज भी विराजमान थी। चातुर्मास मे श्रद्धेया महासती जी महाराज तथा आप श्री जी में खूब ही ज्ञान-चर्चा, प्रश्नोत्तर चलते रहते थे। आप श्री जी ज्ञान सिखाने मे कभी अरुचि प्रदर्शित नही करते थे। क्या छोटे क्या बड़े? सभी को आप बड़े ही उत्साह पूर्वक ज्ञानाभ्यास कराने मे तत्पर रहा करते थे।

—आप श्री जी के स्वर्गवास से हृदय खेद खिन्न हो उठा। और विचार आया कि जिस प्रकार दानवीर कर्ण की मृत्यु के पश्चात् दान का द्वार बन्द हो गया था, उसी प्रकार आज आप के स्वर्गवास के पश्चात् ज्ञान का द्वार भी अवरुद्ध हो गया है। फिर भी सन्तोष इतना है कि आप श्री जी की पावन स्मृतियाँ एवं सद् शिक्षाएँ हृदय में सुरक्षित हैं, जो हम जैसी आत्माओं को मार्ग-दर्शन का काम करेगी।

—रोहतक : पंजाब :
१६—१०—६०

[४२]

एक मंजा-निखरा व्यक्तित्व :

महासती श्री कुसुमवती जी महाराज

—महासती श्री कुसुमवती जी महाराज एक अच्छी पढ़ी लिखी विदुषी आर्य्या हैं। आप ने काशी की संस्कृत व्याकरण मध्यमा तथा पाथर्डी बोर्ड की जैन सिद्धान्त आचार्य परीक्षाएँ, अच्छी सफलता के साथ उत्तीर्ण की हैं। आप अधिकतया राजस्थान प्रान्त में विचरण करने वाली साध्वी रत्न हैं। आप भूतपूर्व सम्प्रदाय की अपेक्षा से, श्रद्धेय मंत्री जी पुष्कर मुनि जी महाराज की सुप्रसिद्ध आर्य्या हैं।

—आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के सफल जीवन, मंजे-निखरे व्यक्तित्व सद्गुण-सुगन्धि तथा आत्म-साधना की, प्रस्तुत लेख में चर्चा की है। जो बड़ी ही सुन्दर अभिव्यक्ति पूर्ण शैली में, शब्द-सज्जा द्वारा सजाई गई है। इस साज-सज्जा पूर्ण लेख का सौन्दर्य पाठक गण इस को भली-भाँति पढ़ कर ही समझ सकेंगे।

—सम्पादक

❀ एक सफल जीवन

—इस विराट विश्व मे, अनेक प्राणी जन्म लेते हैं और कुछ काल अपना जीवन-नाट्य दिखला कर, मृत्यु के मुख मे चले जाते हैं। परन्तु संसार मे जीवन उन्ही का सफल है, जिन्होने अपने मानस एव कर्म को, त्याग-वैराग्य और सयम के सांचे मे ढाला हो। मन-मातग को ज्ञानांकुश से वश करके अपने अधिकार मे रखा हो। तपस्त्याग की चारु चन्द्रिका विश्व भर मे विस्तृत की हो। परोपकार पुष्प के पुनीत पराग से संसार को सौरभ और सुगन्धिमय बनाया हो। दिग्-दिगन्त मे आत्म विजय की वैजयन्ती पताका फहराई हो।

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज का जीवन भी इसी प्रकार का एक सफल जीवन था। आपने मात्र १६ वर्ष के उभरते यौवन मे ही आर्हती दीक्षा ग्रहण कर, ससार के लिए एक महानतम आदर्श उपस्थित किया। आपने ७० वर्ष लम्बे जीवन मे ५४ वर्ष अध्यात्म-साधना, सयम-पालन और लोक-कल्याण मे व्यतीत किए। सयम की साधना मे एक सच्चे सैनिक के समान आपके मुस्तैदी कदम, दृढता के साथ आगे ही वढते रहे। घोर परीषहो अथवा भयंकर विघ्न वाधाओ से भयभीत हो कर कभी भी पीछे नही हटे। एक वीर योद्धा के समान आप कर्म शत्रुओ से लोहा लेते और उन पर विजय प्राप्त करते ही रहे। आपने अपने महान् सफल जीवन के द्वारा माता श्रीमती रामप्यारी जी तथा पिता श्री टोडरमल जी और अपने क्षत्रिय वंश के नाम को तो समुज्ज्वल किया ही, परन्तु अपने आदर्श जीवन के द्वारा आपने जैन धर्म के गौरव मे भी चार चाँद लगा दिए।

❀ एक मंजा-निखरा व्यक्तित्व

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज के पवित्र जीवन मे हमे एक मजे और निखरे हुए व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। यह सब उनके पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज की प्रतिभा तथा श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज की उत्कट साधना का चमत्कार है। आपने

अपने जीवन को, केवल ६ वर्ष की छोटी सी ही अवस्था में, गुरु चरणों मे समर्पित कर दिया था। जैसे पारस के सस्पर्श से लौह, स्वर्ण के रूप में परिवर्तित हो जाता है, वैसे ही सद्गुरू के संसर्ग से आपका जीवन भी मज-निखर कर चमत्कृत हो उठा और अध्यात्म साधकों के लिए एक अनुकरणीय आदर्श वन गया।

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज के जीवन मे सरलता, सौम्यता, मृदुता और सेवा रूप सम्पत्ति अपरिमित रूप मे विद्यमान थी। आपकी सरलता एवं भद्रता, मृदु स्वभाव एव सेवा परायणता के मधुर सस्मरण, श्रद्धेय मन्त्री श्री पुष्कर मुनि जी महाराज के मुखारविन्द से सुनने को मिले है। जिन्हे सुनकर हृदय गद् गद् हो जाता है और मानस आनन्द विभोर। मस्तिष्क वार-बार यही सोचने लगता है कि काश! आपके शुभ दर्शन हमे भी सम्प्राप्त होते।

❀ विश्व-वाटिका के मनोहारी पुष्प

—जिस प्रकार पुष्प-वाटिका में नाना प्रकार के मनोहारी पुष्प उत्पन्न होते हैं और मुकुलित हो कर तथा खिल कर अपनी भीनी-भीनी सुगन्ध एवं मनो मुग्धकर सौन्दर्य से, आस पास का समस्त वातावरण ही सुगन्धि एव सौन्दर्य से परिपूर्ण वना देते हैं। उसी प्रकार इस विश्व-वाटिका में अनेकानेक महान् आत्मा मानव, पुष्प के समान अपने जीवन को विकसित कर, ज्ञान दर्शन चारित्र एवं तप की सुवास और सौन्दर्य से परिपूर्ण वन कर, भ्रमर-भक्त जनो को अपनी सुवास अपना सौरभ एव अपना सौन्दर्य लुटाते ही रहते है।

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज भी विश्व-वाटिका के एक मनोहारी पुष्प थे। आपका जीवन भी एक खिले हुए पुष्प क समान ही था। आपके जीवन-पुष्पों में, सेवा, सौम्यता तथा सरलता की सुवास सदा महकती रहती थी। भ्रमर-भक्त-वृन्दो से आप सदा परिवेष्टित रहते थे। जन-मानस इन सद्गुणों की सुगन्धि को ग्रहण कर

परम तृप्ति का अनुभव किया करता था। आपका जीवन जनता के आकर्षण का भव्य केन्द्र रहा है।

※ जातस्य हि ध्रुवं मृत्युः

—किन्तु जो फूल खिला, वह सदा के लिए खिला ही नही रहता। वह एक दिन कुम्हलाता भी है, मुर्झाता भी है और अपनी सौरभ ससार को प्रदान कर एक दिन समाप्त हो जाता है। यह प्रकृति का अटल नियम है। प्राणि जगत का ध्रुव सिद्धान्त है। तभी तो अनुभवी तत्त्ववेत्ता कहते हैं—

जातस्य हि ध्रुव मृत्युः,
ध्रुव जन्म मृतस्य च।

—अर्थात् जो जन्मा है, उस का मरण निश्चित है, अटल है, और ध्रुव है। जो खिलेगा वह मुर्झाएगा, जो जन्मेगा वह मरेगा, जो आया है वह जाएगा। और जो बना है उस को मिटना भी है—इसी सिद्धान्त के अनुसार श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज भी, कुछ मास पूर्व ही इस नश्वर ससार से चले गए। पार्थिव शरीर को यही छोड आप की आत्मा हम से विदा ले गयी।

—आज आप हमारे सामने स्थूल शरीर रूप में नही हैं, किन्तु सत्य, शील और सयम रूप सद्गुणो से आप सदा जीवित ही है। आप की यश एव कीर्ति रूपी सुगन्धि आज भी सर्वत्र व्याप्त है और यह सुरभि युगो-युगो तक इसी प्रकार से महकती रहेगी। यह जरा भी हलकी पड़ने वाली नही है।

※ एक सच्चे, आत्म-साधक

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज एक सच्चे आत्म-साधक थे। सच्चे आत्म-साधक की सदा यही भावना रहती है कि आत्म-आलोचना करके पण्डितमरण से ही मेरी मृत्यु हो। वीरता के साथ जीवन की अन्तिम साधना मे तन्मय रहते-रहते इस

शरीर का उत्सर्ग कर अपना आत्म-कल्याण करू । सच है मानव आरम्भ से भी अन्त को उत्कृष्ट, उत्तम एव श्रेष्ठ देखना चाहता है । तभी तो एक उर्दू का शायर यो कहता है—

अबस नाज़ करते हैं हम इब्तिदा पर ।
हमे देखना चाहिए इन्तिहा को ॥

मानव, ससार-क्रीड़ा-स्थलो में हँसते-हँसते ही अपना जीवन गुजारे और मृत्यु के अन्तिम समय भी हँसते-हँसते अपने प्राण छोड़े ।

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज भी पण्डित मरण से युक्त आत्मालोचना एवं सथारा करके ही समाधि मरण को प्राप्त हुए । ऐसी पुनीत आत्मा के चरण-कमलो मे शतश. अभिवन्दन हो । इन्ही थोड़े से शब्दो के साथ मैं अपने श्रद्धा-सुमन उस महान आत्मा को चढाती हूँ ।

—ब्यावर राजस्थान
९—१०—६०

[४३]

सफल कलाकार :

श्री कुञ्जलाल जी जैन

—श्री कुञ्जलाल जी जैन ओसवाल, दिल्ली के सुप्रतिष्ठित व्यक्तियों में से हैं। आप धार्मिक वृत्ति और गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति हैं। श्री महावीर जैन संघ, सदर बाजार दिल्ली के आप प्रधान हैं। प्रधान के पद पर रह कर, श्रावक संघ का आप शानदार एवं सफलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आप ने बड़े ही भावपूर्ण सुन्दर शब्दों में श्रद्धाञ्जलि समर्पित की है। संसार-रंग-मञ्च के आध्यात्मिक सफल कलाकार, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की जिन अभिनय कुशलताओं से आप प्रभावित हुए हैं, उन्हीं का वर्णन प्रस्तुत लेख में आप ने किया है। जिन्हें पाठक अगली पंक्तियों में पढ़ सकते हैं।

—सम्पाद

❀ सफल कलाकार

—संसार एक रगमञ्च है, जिस पर प्राणी एक कलाकार-अभिनेता के रूप में प्रगट होते है और अपनी-अपनी कलाकृति-अभिनय दिखा कर, पर्दे के पीछे तिरोहित हो जाया करते है। पीछे केवल उन की कलाकृति अथवा अभिनय की शुभ या अशुभ छाप ही रह जाती है। धन्य है वह व्यक्ति जो इस रगमञ्च पर एक सफल कलाकार-अभिनेता की भाँति अभिनय कर, पीछे आने वाली पीढियो के लिए अपनी अनुकरणीय सौरभमय यशोकीर्ति रूपी कलाकृति की छाप छोड जाते हैं। उन्ही महान् पुरुषों के पद-चिन्हों पर चलने वाले मानव भी अपने जीवन को सफल बना लिया करते हैं।

—श्रद्धेय पूज्य पाद गुरुवर गणी की श्यामलाल जी महाराज भी एक ऐसे ही सफल कलाकार थे, एक सफल अभिनेता थे। आप ने अपनी सद्गुण कलाकृतियो द्वारा संसार के लिए एक महा-मार्ग का निर्माण किया है। आप का पवित्र आदर्श जीवन उस कल्याण कारी महा मार्ग का आज भी उज्ज्वल सकेत दे रहा है। आप का सयम एव सदाचार से परिपूर्ण जीवन-क्षेत्र का सच्चा अनुभव, हमे आज भी उसी पवित्र पथ पर बढने की प्रेरणा और सत् साहस प्रदान कर रहा है। संसार मे आप सरीखे महापुरुष ही वस्तुतः जन्म लेकर, सयम-साधना के महामार्ग पर चलते हुए अपना आत्म-कल्याण किया करते हैं।

❀ उज्ज्वल नर-रत्न

—जिन नर-रत्नो से पृथ्वी धन्य है। जिन नर-रत्नो से ससार प्रकाशमान है। जिन नर-रत्नो से समाज, राष्ट्र एवं परिवार धन्य है। उन्ही महान् नर-रत्नो मे, स्थानकवासी जैन समाज के उज्ज्वल नर-रत्न श्रद्धेय पूज्यपाद गुरुवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का नाम आता है। बाल्य काल से ही परिवार-मोह के सीमा-

वन्धनो को तोड़ कर आप श्री जी अखिल ससार के, अपने बनने के लिए निकल पडे थे। और पूज्य गुरुवर पण्डित श्री ऋषिराज जी महाराज के पवित्र चरणो मे, सात वर्ष की लम्बी अवधि तक पठन-पाठन करके आप श्री जी ने आर्हती जैन दीक्षा धारण की थी।

❁ नर-नाहर

—जिस संयम को शास्त्रकारों ने खांडे की सुतीक्ष्ण धारा से सम्बोधित किया है, उसी खांडे की धार पर श्रद्धेय पूज्यपाद गुरुवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज ने, सहर्ष मुस्कुराते तथा हँसते हुए लगातार ५४ वर्षो तक चल कर दिखलाया। जनता आप की महानता को देख कर दंग थी और साहस को देख कर चकित। इस प्रकार सफलता पूर्वक जीवन के अन्तिम श्वास तक, सयम की सुतीक्ष्ण असि-धारा पर, आप सरीखे नर-नाहर ही चल सकते थे।

—आप श्री जी आधुनिक ढग की व्याख्यान-प्रणाली से परे, एक उत्कृष्ट सयम वृत्ति के धनी, नर-नाहर थे। आप केवल वाणी के मौखिक शेर न थे, वरन् हर समझे बूझे, सत्य-तथ्य को तत्काल जीवन मे ढाल लेने वाले नर-केशरी थे। कथनी सरल है, करनी कठिन। किन्तु आप की करनी के पश्चात् कथनी सर्व विदित है।

—आप श्री जी सच्चे त्यागी, मृदुभाषी, तपस्वी, तेजस्वी तथा सौम्य मुद्रा के धनी थे। आप श्री जी के सम्पर्क मे आने वाले पर, आप के सच्चरित्र एवं मृदुल स्वभाव की छाप पड़े विना नही रह सकती थी। सयम ले कर स्थान-स्थान पर धर्म-प्रचार तथा भगवान् महावीर की पवित्र वाणी का प्रसार करने के लिए, आप श्री जी ने उत्तर-प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा और पजाव के अनेक क्षेत्रो मे पर्यटन किया और भ्रम भरी जनता को सन्मार्ग का दर्शन कराया। अन्ततः जिस प्रकार आपने सिंह वृत्ति से संयम धारण किया था, उसी प्रकार

उसी सिंह वृत्ति के साथ, शान्ति पूर्वक उसे जीवन के अन्तिम श्वास—अर्थात् ७० वर्ष तक शानदार ढंग से निभाया। आप अपने समुज्ज्व जीवन से जनता के समक्ष एक ऐसा अनुपम उज्ज्वल आदर्श छोड़ गए हैं, जिस को अपना कर, प्रत्येक आत्म साधक, अपने जीवन का सफल विकास एवं आत्म-कल्याण कर सकता है। आप अपने महान् पवित्र जीवन के द्वारा संसार की रेती पर उन चरण-चिन्हों का निर्माण कर गए हैं, जिन के सहारे चल कर मानव अपने लक्ष्य को सहज ही मे प्राप्त कर सके। आप अपने सफल जीवन के द्वारा, सदा के लिए अजर अमर हो चुके हैं। आने वाली पीढियाँ आप को युगों-युगो तक न भुला सकेंगी। आप एक महान् योगी थे। आप की तपः पूत योग-साधना स्पृहा की वस्तु रही है। ऐसे पवित्र महा योगी के वियोग में आज हमे खेद है। किन्तु उन का महान् जीवन हमें अब भी सांत्वना और प्रेरणा प्रदान कर रहा है। हम उस महान् जीवन के प्रति श्रद्धा से नत मस्तक हो कर कामना करते हैं कि वह हमे सत्य-पथ पर चलने की समर्थता प्रदान करे।

—सदर बाजार : दिल्ली :

२८—७—६०

[४४]

परोपकार के मार्ग पर :

श्री मांगेराम जी जैन

—श्री मांगेराम जी जैन एक गुरुभक्त सद्गृहस्थ सज्जन हैं। आप मूल निवासी रोहतक (पञ्जाब) के हैं, परन्तु वर्तमान आपका निवास स्थान देहली में है। आप एक कर्तव्य शील सज्जन हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के आप ने अनेक बार शुभ दर्शन किए हैं, उनकी पवित्र वाणी श्रवण की है तथा उन की सेवा का लाभ भी उठाया है। प्रस्तुत लेख में आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के साथ अपने मधुर सम्बन्धों की चर्चा करते हुए, उस परोपकारी, उदार हृदय सन्त के प्रति अपने श्रद्धा-भाव प्रस्तुत किए हैं। जिन्हें, उन्हीं के शब्दों में आगे दिया जा रहा है।

—सम्पादक

❀ **प्रकाश-स्तम्भ**

—भौतिक संस्कारों की माँग का तिरस्कार करके, त्याग-मार्ग का आश्रय लेकर, अपनी आवश्यकताओं को परिसीमित करके, इन्द्रियों तथा मन पर कडा नियन्त्रण करके, खान-पान तथा रहन-सहन मे सादगी उतार करके, आत्मा के रहस्य को जान करके, हृदय को करुणा एवं सहानुभूति का सागर बना करके, ससार के प्रत्येक प्राणी के प्रति बन्धुत्व भाव को उत्पन्न करके, तथा आत्मोत्थान करते हुए, इस नश्वर ससार के प्राणियों के उपकार के लिए, केवल कुछ थोडी सी महान् आत्माएँ ही इस संसार मे जन्म लिया करती हैं।

—पण्डित रत्न श्री ऋषिराज जी महाराज के सुशिष्य, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज भी एक ऐसी ही महान् आत्मा थे। जिनका जन्म श्रीमती रामप्यारी जी की कुक्षि से चौधरी टोडरमल जी के घर सम्वत् १९४७ विक्रम मे ग्राम सोरई जिला आगरा, क्षत्रिय कुल मे हुआ था। जिन्होने अपनी महान् अध्यात्मा-साधना के फलस्वरूप, प्राणी मात्र को ज्ञानोपदेश देकर सच्चा मार्ग बतलाया। यह वह महान् आत्मा थे, जिसने भगवान् महावीर के सन्देश को अपने जीवन मे उतार कर, जन-साधारण मे उसका प्रचार किया। कितना धन्य था उनका जीवन ? जिनका लक्ष्य आत्म-कल्याण के साथ-साथ ज्ञान-प्रचार एवं जन-कल्याण भी रहा।

—शान्ति एव उदारता की साक्षात् मूर्ति, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज जिस समय अपना धर्मोपदेश फर्माते थे, उस समय जनता को स्वय शान्ति का साक्षात् आभास होने लगता था। ऐसे महान् आत्मा सत्पुरुष स्वय अनेक कष्ट उठा कर, लक्ष्य सिद्धि का मार्ग निर्माण करते हैं। वे न केवल दूसरों के लिए अनुपम मार्ग छोड जाते हैं, बल्कि स्वयं प्रकाश-स्तम्भ बन कर, उनका पथ-प्रदर्शन किया करते हैं।

❀ तृप्तिदाता गुरुदेव

—आज का युग विज्ञान का युग है, इस वैज्ञानिक युग मे मनुष्य का जीवन अत्यन्त व्यस्त हो चुका है। वह अपने जीवन की व्यवस्था बनाए रखने में ही बस जुटा रहता है। फिर आज का वातावरण भी बड़ा ही विचित्र है। नाच, गाने, सिनेमा, रगरलियाँ, जिनको हम आज मनोरजन के साधन कह कर पुकारते है, क्या वे मनुष्य का नैतिक पतन कर, उसे अधोगति की ओर नही ले जाते? अवश्य ले जाते है। किन्तु आज का मानव अपनी इन्द्रियो की उत्तेजना को बढाता हुआ, इन में ही आनन्द मानता है, सुखानुभूति करता है, और इन्ही को जीवन की परिधि का केन्द्र-विन्दु समझ कर, इन्ही के इर्द-गिर्द चक्कर काटता रहता है। आज का मानव अपने भविष्य को भुला वैठा है। उसे आगे की कोई भी तो चिन्ता नही होती।

—इन्ही भौतिक आकर्षणों के दूषित वातावरण से दूर रह कर ज्ञानी सत्पुरुष, पथ-भ्रष्ट मानव को सन्मार्ग पर लगाना अपना कर्तव्य समझते हैं। अन्धकार मे भटकते हुए प्राणियो को ज्ञान-प्रकाश द्वारा सही रास्ता दिखाना, ज्ञानी जन अपना लक्ष्य बना लेते हैं। जो मनुष्य थोडी देर के लिए भी इन ज्ञानी सत्पुरुषो का सत्सग कर लेता है अथवा इनकी पवित्र वाणी का श्रवण कर लेता है, वह एक अनुपम सुख, एक सात्विक शान्ति का अनुभव करने लगता है। उसकी आत्मा मे एक अनुपम जागृति, एक नव-चेतना, एक सत्स्फूर्ति उत्पन्न हो जाया करती है। वह अपने आपको कुछ उभारने का प्रयत्न भी करता है। जिस सच्चे सुख की कामना ससार करता है, वह सदगुरुओ, ज्ञानी महात्माओ की पवित्र वाणी से, उनके सदुपदेश से और उनके महान् जीवन उदाहरण से मानव प्राप्त कर सकता है।

—मनुष्य केवल रोटी पर ही नही जीता, उसकी एक मानसिक, एक आध्यात्मिक भूख भी होती है। वह भूख उस समय मिटा करती है, जब वह अपने आपको ज्ञानियों, महान् आत्माओ एव सत्पुरुषों के सन्मुख पाता है, और उनके महान् जीवन एव पवित्र सन्देशों से कुछ जीवन मे ग्रहण कर लेता है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज भी एक ऐसे ही तृप्तिदाता, ज्ञानी महात्मा, सन्त पुरुष अभी हो चुके है। जिनके महान् जीवन एव सद्‌गुणों की सुवास, आज भी जन-मानस को सुगन्धित एव सुवासित कर रही है। जिनकी पवित्र सेवा मे पहुँचने पर प्रत्येक मानव को, एक परम तृप्ति का अनुभव हुआ करता था। जिनका जीवन, मात्र अपने लिए ही नही था, बल्कि वह समस्त मानव जाति के हितार्थ ही था।

❀ उदार-हृदय

—वैसे महात्मा जन, अपने ज्ञान को अपने तक ही सीमित नही रखते, वरन् वे उदार हृदय तो उसका सदुपयोग संसार के कल्याण के लिए ही किया करते हैं। वे अपने आध्यात्मिक सद्‌गुणों के द्वारा जनता को आत्म-दर्शन कराने की भरपूर चेष्टा किया करते हैं। मानव की सुप्त एव माया-जाल मे फँसी आत्मा को वे सतत् जगाने एवं ऊँचा उठाने के सत्प्रयत्न मे संलग्न रहा करते हैं। महान् आत्मा सत्पुरुषो की तेजस्वी वाणी, मानव-हृदय मे उथल-पुथल मचा देती है, और उसे अध्यात्म जागरण की एक नयी दिशा, एक नया सकेत प्रदान करती है।

—कितना महान् उपकार है सन्त पुरुषों का हमारे प्रति ! वे स्वयं जीवन का रहस्य समझने और प्राप्त करने के लिए अपने जीवन को मिटा डालते हैं। रहस्य प्राप्त करने के पश्चात् फिर वे उसी रहस्य को जनता मे प्रचार करने के लिए

अपने आपको समर्पित कर देते है। क्योंकि परोपकार सत्पुरुषों के जीवन का प्रथम लक्षण होता है। एक कवि के शब्दों मे—

जन्म भर उपकार करना, ज्ञानियो का धर्म है।
कर्म से पीछे न हटना, मानियो का मर्म है॥

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज भी एक ऐसे ही उदार-हृदय महात्मा थे। जिन्होने दूसरों की आवश्यकताओ का सम्मान करते हुए, अपनी आवश्यकताओ का सहर्ष वलिदान कर दिया था। मैं और मेरा, तू और तेरा इस भेद-सम्वन्ध को तो उन्होंने भुला ही डाला था। उनके जीवन का तो सिद्धान्त ही था, मैं सब का, सव मेरे, तभी तो वे सत्पुरुष, ज्ञानी महात्माओ की प्रथम श्रेणी में गिने गए।

❀ मेरा सम्बन्ध

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव से यद्यपि मेरा बहुत ही अल्प सा सम्वन्ध रहा, तथापि उस थोड़े से समय मे ही मैं उनकी विशेषताओं से भली भांति परिचित हो गया था। उन परोपकारी गुरुदेव ने लोगों को सन्मार्ग पर लगाने के लिए अनेक प्रकार के कष्ट सहे, अनेक वाधाएं झेली, परन्तु फिर भी आपने परोपकार एवं लोक-कल्याण मे ही अपने जीवन को उत्सर्ग कर सद्गति प्राप्त की।

—मुझे वैसे तो अनेक साधु-सन्तो के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ, परन्तु श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज मे, न मालूम क्या आकर्पण एवं जादू था? जो उनका प्रभाव मेरे हृदय पर सबसे अधिक पडा। प्रथम परिचय में ही मैं उनका अनन्य भक्त वन गया। मन यही सोचता रहता था कि कब गुरुदेव के दर्शन हो? मैं वर्प मे एक वार तो अवश्य, वल्कि कभी-कभी अनेक वार भी पूज्य गुरुदेव के दर्शन करता था। गुरुदेव के चरणो मे वैठ कर मुझे एक अपूर्व शान्ति तथा एक

परम सन्तोष का अनुभव होता था। हृदय परम तृप्ति से भर उठता। अधिक क्या? वह तो एक ऐसी तेजोमय परम शान्त-सौम्य मूर्ति थे, जिनका वर्णन करना, मेरी शक्ति से बाहिर है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के स्वर्गवास की सूचना से हृदय को बड़ी ठेस पहुँची। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का वियोग भला किसको दुःख-विह्वल न कर देगा? फिर मेरे तो वे आराध्य थे। परन्तु काल के समक्ष किसी का वस नही चलता-यह मान कर सन्तोष करना ही पड़ता है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के स्वर्गवास के पश्चात् उनके प्रति अब तो वस हम सब का यही कर्तव्य रह जाता है, कि उनके वतलाए हुए मार्ग पर चल कर अपना जीवन सफल वनाएँ। उनके चरण-चिन्हों पर चल कर उनकी पावन-स्मृति को अक्षुण्ण रखे। इन्ही भावों के साथ मैं उनके पावन चरणो मे अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

—नई दिल्ली :
११—१०—६०

[४५]

तेजस्वी, सन्त पुरुष के चरणो में :

श्री सुमेरचन्द जी जैन

—श्री सुमेरचन्द जी जैन मित्तल, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के अनन्य भक्तों में से हैं। आप—काछुआ-जिला करनाल (पञ्जाब) निवासी हैं, किन्तु अनेक वर्षों से दिल्ली में रह रहे हैं। आप एक मितव्ययी धर्मिष्ठ वयोवृद्ध सज्जन हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आप को अनन्य श्रद्धा है, भक्ति है, और है अपार निष्ठा। इन्हीं सद् भावनाओं के साथ, थोड़े से ही महत्व पूर्ण शब्दों में आप ने उन तेजस्वी सन्त पुरुष के श्री चरणों में, अपनी श्रद्धाञ्जलि पेश की है। जो अगली पँक्तियों में प्रस्तुत है।

—सम्पादक

❀ तेजस्वी सन्त पुरुष

—प्रातः स्मरणीय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज एक तेजस्वी सन्त पुरुष थे। मन मे सद् विचार, सद् चिन्तन एवं सद्भावना, वचन मे सत्यता, सरलता एव मधुरता और कर्म मे संयम तथा सदाचार की सुगन्धि। यह था उस सफल व्यक्तित्व के धनी सत्पुरुष का तेजस्वी जीवन। जिसका प्रभाव समस्त जैन समाज पर ही नही, अपितु अन्य जैनेतर समाज पर भी काफी था। कम से कम इधर हमारे जिला करनाल के क्षेत्रो मे तो क्या जैन ? और क्या अजैन ? गांव का बच्चा-बच्चा आपके तेजस्वी जीवन से परिचित है। जब भी कभी आप हमारे गांव काछुवा-पधारते थे, तो एक अपूर्व ठाठ लग जाता था। पाकिस्तान बनने से पूर्व, यहाँ के मुसलमान तक आपके प्रवचनो से लाभ उठाया करते थे। पूरा गाँव का गाँव आपको श्रद्धा एव सम्मान की दृष्टि से देखा करता था। और आपकी भी विशेष कृपा दृष्टि इधर के क्षेत्रो पर रहा करती थी।

—आपके स्वर्गवास से जैन समाज को और विशेषकर इधर के इन क्षेत्रों को जो क्षति पहुँची है, उसकी पूर्ति नही की जा सकती। फिर भी हमे इतना सतोप अवश्य है कि आप अपने पीछे एक सुयोग्य शिष्य-परिवार छोड़ गए हैं जो आपकी कमी को पूरा करेगा और आपका अभाव जनता को अनुभव नही होने देगा।

❀ श्रद्धाञ्जलि

—बस इन्ही थोड़े से शब्दो के साथ मै उस तेजस्वी सन्त-पुरुष के श्री चरणो मे अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूँ। और शासनेश से यही कामना करता हूँ कि हम मे वह सामर्थ्य और शक्ति प्रदान करें कि हम उन जैसी महान्

तेजस्वी आत्माओं के जीवन स्पर्शी अनुभवों का प्रकाश अपने जीवन मे साथ लेकर चले, जिससे कि हमे संसार-क्षेत्र मे भटकने अथवा ठोकर खाने का भय न रहे। इस सक्रान्ति काल मे स्वय को स्थिर एव सुरक्षित रखने के लिए, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्याम-लाल जी महाराज सरीखे तेजस्वी महान् पुरुषो का स्मरण तथा उनका मूल्याकन एवं उनकी सद् विशेषताओ का जीवन मे आचरण ही एक अवलम्ब है। और इस अवलम्ब के आधार पर ही हम सच्चे सुख की ओर बढ सकते हैं, तथा अपने सतत सत्प्रयत्नो के द्वारा उसे प्राप्त भी कर सकते हैं। जिस प्रकार श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्याम लाल जी महाराज ने अपनी अध्यात्म-साधना एवं नैतिक उत्थान के द्वारा सफलता का वरण किया है; उसी प्रकार हम भी उनके चरण-चिन्हों का अनुकरण करते हुए, जीवन-क्षेत्र मे आगे बढ कर सफलता का वरण कर सकते हैं। तथा उनके सच्चे अनुयायी कहला कर उनकी धवल कीर्ति को युगों-युगो तक अक्षुण्ण रख सकते हैं।

—दरियागंज, दिल्ली :
८—११—६०

[४६]

सफल जीवन के धनी :

श्री अजितप्रशाद जी जैन

—श्री अजितप्रशाद जी जैन एक धार्मिक वृत्ति के सद्‌गुणी गृहस्थ हैं। गुरु भक्ति के साथ-साथ धर्म के प्रति आप की अभिरुचि सराहनीय है। आप मूल निवासी तो—छपरौली-जिला मेरठ के हैं, परन्तु वर्तमान में दिल्ली हैं।

—वर्ष में दो-चार वार आप सपरिवार श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के शुभ दर्शन करते ही थे। उसी श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ आप ने सफल जीवन के धनी उन श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित की है। जो अगली पँक्तियों में प्रस्तुत है।

—सम्पादक

❀ सफल जीवन के धनी

—जीवन सफल उसी मानव का, और उसी से धन्य मही।
जिसने आकर इस जगति मे, मानवता की राह गही॥

ऊपर कहे गए कवि के शब्द, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के महान् जीवन पर, बिल्कुल अक्षरश: खरे उतरते है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, वास्तव मे एक सफल जीवन के धनी सच्चे मानव थे। एक ऐसे मानव, जो स्वयं मानवता के सत्पथ पर आगे बढ़े और जिन्होने उसी मानवता के भव्य मार्ग पर, ससार के अनेक भव्य प्राणियो को चलाया। स्वयं एक सफल जीवन व्यतीत किया और उसी सफल जीवन को व्यतीत करने की मधुर-प्रेरणा ससार के प्राणियो को दी। वास्तव मे आप जैसे सफल जीवन के धनी सत्पुरुषो से ही यह धरित्री धन्य-धन्य कहलाती है।

—सच्ची मानवता अपनाने के लिए श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन का तो एक तरह से उत्सर्ग ही कर दिया था। मानवता के सच्चे सत्पथ की खोज मे, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, मात्र ९ वर्ष की छोटी सी किशोर अवस्था मे ही निकल पड़े थे। १६ वर्ष की अवस्था मे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव पण्डितरत्न श्री ऋषिराज जी महाराज की कृपा से, आप सच्ची मानवता के पथ पर अर्थात्—सयम मार्ग पर आरूढ हुए और जीवन पर्यन्त उसी मार्ग पर निरन्तर बढते रहे। जीवन-के अन्तिम श्वास तक श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की मानवता की सच्ची अखंड आत्म-साधना चलती ही रही। उन्होने ससार को, अपने जीवन उदाहरण से प्रत्यक्ष दिखला दिया कि मानवता के सत्पथ पर किस प्रकार आगे—निरन्तर आगे बढा जाता है। यही नही, अपितु श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव तो आने वाली जनता के लिए, मानवता-मार्ग के पथिको के लिए, एक भव्य मार्ग का निर्माण कर गए हैं। जिस पर चलकर मानव,

निष्कण्टक एव निर्विघ्न अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। धन्य है श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के ऐसे पवित्र सफल जीवन को और धन्य है उनकी सतत चलने वाली अध्यात्म-साधना को।

❀ कल्याणकर गुरुदेव

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव क्या थे? उनका महान् पवित्र जीवन किन-किन कल्याणकर सद् विशेषताओ से परिपूर्ण था? इसका वर्णन कर पाना, इस जड़ लेखनी को सामर्थ्य से बाहिर है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का सद्गुणोपेत जीवन तो सीधा अनुभव से ही सम्बन्ध रखता है। फिर भी उन्होने व्यक्ति-समाज, राष्ट्र एव प्राणिमात्र के कल्याण एव उत्थान के लिए जो-जो सत्प्रयत्न किए, उनका स्मरण करके, इस लेखनी के द्वारा अपने आप को धन्य बना लेना हमारा परम कर्तव्य हो जाता है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव संसार का कल्याण करने वाले एक सच्चे सन्तरत्न थे। उनका सम्पूर्ण जीवन ही जन-हित एव जन-कल्याणार्थ व्यतीत हुआ। आत्मोत्थान के साथ-साथ धर्म, समाज एव प्राणिमात्र का उत्थान ही जिन्होने अपने जीवन का लक्ष्य समझा हुआ हो। परोपकार एवं भलाई करना ही जिनके स्वभाव मे सम्मिलित हो चुका हो। आध्यात्म-साधना तथा संयम-आराधना मे ही जिनका क्षण-क्षण गुजरता हो। विश्व-कल्याण की सदभावनाओ से जिनका मानस सदैव परिपूर्ण रहता हो। भला उस महामानव की महानता मे भी किसी शक की गुंजाइश है? बिल्कुल भी नही। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव सरीखी, विरल विभूतियाँ ही हुआ करती हैं, जिनका जीवन परहितार्थ समर्पित रहता है। ऐसी कुछ गिनी-चुनी हस्तियाँ ही संसार मे हुआ करती हैं, जिनके सान्निध्य मे पहुँचकर, अशान्त मानव को शान्ति, सांत्वना एवं सहानुभूति के शब्द सुनने को मिलें। जिनकी सेवा मे पहुँचकर, मन को अपूर्व शान्ति एव परम सुख का अनुभव

हो, ऐसे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव सरीखे ही सत्पुरुष हुआ करते हैं। जो जग-हित मे अपना हित ही देखा करते हैं, जो जग-पीड़ा का अनुभव अपने ही मानस मे किया करते हैं। ससार मे ऐसे केवल श्रद्धेय-पूज्य गुरुदेव सरीखे ही सन्त पुरुष हुआ करते है, जो जग-पूजा तथा विश्व सम्मान के केन्द्र स्थल हों।

❀ मेरी श्रद्धाञ्जलि

—ऐसे महान् सन्त, महान् ज्ञानी, महामानव, सद्गुरुदेव के श्री चरणो में, मै किस प्रकार से श्रद्धाञ्जलि समर्पित करूँ ? उन्हे कौन से सुमन समर्पित करूँ ? मुझ पर तो श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की अपार कृपा और महद् अनुकम्पा रही है। मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की कृपा का ही फल है। उनके उपकारो से तो मेरा रोम-रोम ऋणी है। उनकी कृपाओं को, उनके अनुग्रहो को, इस जीवन मे तो क्या ? जन्म-जन्मान्तर मे भी भुला सकना कठिन है। वस इन्ही थोडे से शब्दो के साथ मेरी श्रद्धाञ्जलि, उस महान् आत्मा सद् गुरुदेव के प्रति समर्पित है।

वकीलपुरा : दिल्ली :
६—११—६०

[४७]

उस आध्यात्मिक विभूति के प्रति :

श्री सेठ मनसाराम जी जैन

—श्री सेठ मनसाराम जी जैन रईस, जींद शहर (पञ्जाब) के एक सुप्रतिष्ठित सज्जन हैं। विचारों की परिपक्वता तथा गम्भीरता, हृदय की गुण ग्राहकता एवं धार्मिक वृत्ति, और कर्म की कर्तव्यशीलता एवं सदाचरण, यह आप की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं, जिन के कारण आप लोक प्रिय हैं। आप—Ex. M. L A. M. C. etc. हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति बड़ी ही श्रद्धा पूवक आपने चन्द शब्द लिखे हैं। उस आध्यात्मिक विभूति, प्रेरणा स्रोत, विशिष्ट व्यक्तित्व सम्पन्न, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के गुण-स्मरण करते हुए उन को भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि आप ने समर्पित की है। जो अगली पँक्तियों में प्रस्तुत है।

—सम्पादक

❀ आध्यात्मिक विभूति

—समादरणीय, महान् व्यक्तियो के प्रति, श्रद्धाञ्जलि अर्पित-करना, सद्गुणो के प्रति आस्था रखना है। अतएव श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के चरणों मे, श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना भी आध्यात्मिक विभूतियों के प्रति आन्तरिक निष्ठा व्यक्त करना ही है। श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज की चरण-सेवाओ का पावन श्रेय हमे भी प्राप्त होता रहा है।

—महाराज श्री जी एक आध्यात्मिक विभूति थे। उनका जीवन तप एव सयम-साधना से निखरा हुआ एक सफल आध्यात्मिक जीवन था। आध्यात्मिक साधना के महामार्ग मे वे जीवन के प्रथम चरण मे ही चल पड़े थे। यही कारण था कि महाराज श्री जी का जीवन उस आध्यात्मिक अमृत-रस से परिपूर्ण था, जिस का एक घूंट भी मानव को महान् बना सकता है। सच्ची अध्यात्म-साधना का दम भरना और बात है, और उसे जीवन का एक अविभाज्य अग बना कर चलना बिल्कुल दूसरी। महाराज श्री जी ने कभी अध्यात्म साधक होने का दावा पेश नही किया। परन्तु उनका जीवन, एव उनके कार्य-कलाप पुकार-पुकार कर स्वय कह देते थे कि यह एक महान् आध्यात्मिक विभूति हैं।

❀ विशिष्ट व्यक्तित्व

—महाराज श्री जी का व्यक्तित्व साधारण नही था, वह अध्यात्म साधक सयमी पुरुषो मे एक अलग ही विशिष्ट स्थान रखता था। इसी विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण ही हजारो साधको मे से उन्हे अलग पहिचान लिया जाता था। महाराज श्री जी शान्त स्वभावी, तत्त्वज्ञ, श्रेष्ठ विचारक, पाप भीरू, विवेकी और सतत जागरूक आत्मा थे। वे कुशल अध्यात्म जीवी थे। इस प्राप्त मानव जीवन को अध्यात्म-साधक-चर्या मे सार्थक व्यतीत करना ही उनका परम लक्ष्य था।

—त्याग, वैराग्य मे ओत-प्रोत, सयमी, पुरुषार्थ में लीन, सेवा-भाव-सलग्न, वीतराग-प्रवचन में रत तथा आत्म-चिन्तन-मनन मे व्यस्त, ऐसा था श्रद्धेय गणी जी महाराज का विशिष्ट व्यक्तित्व। आप को समाधि युक्त, संघर्षों से रहित, जीवन यापन करना ही अभीष्ट था। अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण ही आप जिधर भी विचरे, जिस व्यक्ति के भी सम्पर्क मे आए, उस पर अपने वैशिष्ट्य की छाप छोड़े बिना न रहे।

❀ प्रेरणा स्रोत

—आत्म शोधक साधको के लिए श्रद्धेय गणी जी महाराज का जीवन प्रेरणा का स्रोत रहा है। महाराज श्री जी की सरलता, नम्रता, सौम्यता, मृदुता, तथा सेवा परायणता का अनुसरण करना, आज भी आत्मशोधक, सयमी पुरुष, अपना परम कर्तव्य समझते है, और आप के जीवन से प्रेरणा ले-ले कर, आध्यात्मिक क्षेत्र मे सतत आगे बढते हैं। श्री गणी जी महाराज की जीवन चर्या युग-युगान्त तक इसी प्रकार से आध्यात्म साधको के लिए प्रेरणा का सन्देश देती रहेगी, ऐसा हमारा विश्वास है। शाशन देव से प्रार्थना है कि हम उनके पद्-चिन्हो पर चल सके, ऐसी भावना प्रदान करें।

जींद पंजाब :
१७—८—६०

[४८]

वे समाज के प्राण थे :

श्री पद्मप्रकाश जी जैन

—श्री पद्मप्रकाश जी जैन एक उत्साही एवं सत्साहसी तरुण कार्यकर्ता हैं। आप करनाल जैन संघ के एक कर्मठ एवं कर्तव्य शील युवक हैं। समाज में चेतना-जागृति एवं धार्मिक प्रवृत्ति बनाए रखने में आप का महत्त्व पूर्ण हाथ है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव आप के समकित प्रदाता रहे हैं। वैसे भी श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का मधुर-सम्पर्क तो आपकी पीढ़ियों से चला आ रहा है। प्रस्तुत लेख में आप ने अपने अत्यन्त भावपूर्ण हृदयोद्‌गार व्यक्त किए हैं। पूज्य गुरुदेव के पवित्र चरणों में आप ने भाव-सुमनों की भेंट चढाई है। जो उन्हीं के शब्दों में आगे प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

❀ समाज के प्राण

—समाज एक शरीर के समान है और भिन्न-भिन्न व्यक्ति उस समाज-शरीर के अग-प्रत्यग होते हैं। जिस प्रकार शरीर के अग-प्रत्यंग जितने सुदृढ, स्वस्थ और सुन्दर होगे, उतने ही अधिक समय तक वह शरीर स्थिर रह सकेगा। अपनी अवधि को ठोक प्रकार से, निर्भय होकर स्वाभिमान के साथ व्यतोत कर सकेगा। इसी प्रकार वह समाज भी उतना ही वलिष्ट एव ससार में उन्नत होकर जी सकेगा, जिसमे सुदृढ़, चरित्रवान्, नैष्ठिक ब्रह्मचारी, सद्गुणी, विद्वान्, सत्पुरुष होगे। वे सत्पुरुप समाज के प्राण होते हैं और आने वाले युग के लिए ज्ञान रूपी रोशनी की मीनार होते हैं।

—भारत की तो भगवान आदिनाथ के समय से ही यह विशेषता रही है। आदि परम्परा से महापुरुषो का तो यही सन्देश रहा है कि—स्वयं जागो और संसार को जगाओ—अर्थात् अपना आत्म-विकास करो और दूसरो को विकास-मार्ग का दर्शन कराओ। भगवान् आदिनाथ की परम्परा से चला आया यह जैन-धर्म, आज भी मान-सम्मान पूर्वक जीवित है। ऐसा क्यो ? केवल इसीलिए कि भगवान् की सम्प्रदाय के मान-चिन्ह—ये साधुगण आज भी अपनी मान-मर्यादाओ पर कायम हैं, अडिग रह कर उन का पालन कर रहे हैं।

—भारत की ऋषि-मुनियो की उसी परम्परा के अनुसार, स्वर्गीय श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, सरलात्मा, शान्त मूर्ति श्री श्री १००८ गणी श्री श्यामलाल जी महाराज भी एक सत्पुरुप, समाज उद्धारक मुनिराज थे। आप समाज के प्राण थे। आपने अपना समस्त जीवन ही समाज हित में लगा दिया था। जिनका महान् जीवन, स्वय ज्योतिमय था और जिसकी अमर ज्योति ने संसार को भी सन्मार्ग दिखाया, भूले-भटके प्राणियो को भी सही रास्ता बत-

लाया, उन सद्गुरुदेव की महान् विशेषताओ का वर्णन किस प्रकार किया जा सकता है ?

❀ पूज्य गुरुदेव

—बेचारी जड लेखनी समझ ही नही पाती, कि किस प्रकार ऐसी महान् आत्मा के सम्बन्ध में लिखना प्रारम्भ करे ? इस महान् वर्णन के लिए तो महान् लेखनी और महान् साधन की ही आवश्यकता है। परन्तु यहाँ तो न लेखनी ही महान् है और न लेखक ही, साथ ही साधन भी तो अति तुच्छ हैं, कुछ भी तो महान् नही, और प्रयास इतना महान्, मानो एक मेंढक एक ही छलाग मे समुद्र पार कर जाना चाहता हो।

—लेकिन लेखनी विवश है, लेखक के भावों को स्पर्श करके, और लेखक विवश है, हृदय के तूफान के आगे। क्योकि जिस महान् तेजस्वी आत्मा के जीवन को अंकित करना है, वे लेखक के पूज्य गुरुदेव थे। उनके जीवन का स्मरण आते ही हृदय मे एक हलचल सी मच जाती है। क्योंकि मार्ग-दर्शक महान् गुरुदेव को वर्तमान मे न पाकर, हृदय एक अशान्ति सी अनुभव करता है। आज यह अभाव की वेदना केवल मुझे ही अनुभव नही हो रही, वरन् समस्त समाज इस अभाव वेदना का अनुभव कर रहा है। क्योकि ऐसे महान् व्यक्तित्व के रिक्त स्थान की पूर्ति होना सहज सम्भव नही है।

❀ एकता के उपासक

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव तो एकता के उपासक थे। वे समाज संघटन के प्रबल पक्षपाती थे। वह सम्पूर्ण मानव-समाज को अत्युन्नत दशा मे देखना चाहते थे, और इसी प्रयत्न मे वे सतत प्रयत्नशील भी रहे। और यह जानी-पहचानी बात है कि जो एकता के उपासक और प्रेरक व्यक्ति होते है, वह समाज के दूषित

विषाक्त-वातावरण को अपने प्रभाव से समाप्त कर दिया करते हैं। वे शस्त्र के भी शस्त्र और वज्र के भी वज्र होते हैं। वे अपने समान असंख्य बन्धुओं-सहयोगियो के साथ कर्तव्य-मार्ग पर निरन्तर आगे बढते हुए, समाज मे फैले समस्त अवगुणो को निरस्त करके उसे सद्गुणो से ओत-प्रोत कर देते है।

—स्वर्गीय आत्मा, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव आज हमारे मध्य में नही है, लेकिन उनके द्वारा जलाए गए ज्ञान-दीप और उनके द्वारा फैलाया गया ज्ञान-प्रकाश, आज जीवन में पग-पग पर साथी है। और यही प्रकाश युग-युगान्त तक भविष्य में भी, आने वाली जनता का मार्ग-दर्शन करता ही रहेगा।

❀ प्रथम दर्शन

—जब भी श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का मै स्मरण करता हूँ, तो विचार आता है कि कितना मृदुल स्वभाव था उस शान्तात्मा का। वे गहन-गम्भीर, ज्ञानवान और सद्गुणी आत्मा होते हुए भी, अपने स्वभाव में कितना परिवर्तन कर लेते थे, कि बूढों के साथ अनुभव सम्पन्न गम्भीर, युवको के साथ साहस युक्त उत्साही तथा बच्चो के साथ सरलता एवं विनोद प्रियता पूर्ण बच्चो सा व्यवहार एवं आचरण करते थे।

—प्रथम बार जिस समय श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के दर्शनो का शुभावसर मिला, उस समय वे—काछुआ ग्राम-पंजाब मे विराजमान थे। मेरी आयु उस समय लगभग आठ वर्ष की होगी। मैने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को वन्दन कर जब चरण स्पर्श किए, तो वे मुझसे पूछने लगे—तेरा नाम क्या है? कहाँ से आया है? किस का पुत्र है? और कौनसी कक्षा में पढता है? मैंने कहा—गुरुदेव! मेरा नाम पद्म प्रकाश है। मैं करनाल से आया हूँ। और तीसरी कक्षा मे पढता हूँ। मैं अभी अपना परिचय दे ही रहा था—कि पूज्य ताऊ जी आ गए और लगे मुझे कहने—ओ पद्दो! ओ

पद्दो ! गुरु जी को वन्दना की या नही ? सहसा सम्बोधन सुन कर श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव हँस पडे और कहने लगे—क्यो भाई ! तू झूठ भी बोलता है ? मै हैरान, कि कौन सा झूठ मैने बोला है ? गुरुदेव स्वयं ही कहने लगे—तूने अपना नाम गलत बताया है। तेरा नाम पद्म प्रकाश है या पद्दो ? सुन कर सभी हँसने लगे। उस समय मैं लगभग १५ दिन, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के चरणो मे रहा। नमस्कार मन्त्र और सामायिक के पाठ कण्ठस्थ किए।

—अगले ही वर्ष श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास-करनाल-ही स्वीकृत हो गया। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो घर बैठे ही गंगा आ गई हो। दो समय व्याख्यान, रात्रि मे धर्म-चर्चा, चार महीने धर्म का वह ठाठ लगा, जिसका स्मरण अद्यावधि बना हुआ है, और जो भविष्य मे भी भुलाया नही जा सकेगा। उसी चातुर्मास मे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से मैने गुरु-मन्त्र ग्रहण किया।

❀ उपकार स्मरण

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज के इसी सम्वत् २००१ के शुभ चातुर्मास मे, करनाल जैन स्थानक मे स्थान की कमी को अनुभव करते हुए, दूसरे जैन भवन की आवश्यकता श्री संघ को प्रतीत हुई और उसी के परिणाम स्वरूप, आज वही छोटा सा अंकुर विस्तृत वृक्ष के रूप मे एक बहुत विशाल जैन स्थानक का रूप धारण कर चुका है, जिस पर लगभग ७५-८० हजार रुपया व्यय हो चुका है।

—यह सब श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का ही पुण्य-प्रताप है। यह सब पूज्य गुरुदेव श्री जी की अपार कृपा का ही सुफल है। इसी जैन स्थानक के एक भव्य भवन मे, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की इच्छानुसार उनके पूज्य गुरुदेव परम प्रतापी, पण्डित रत्न, श्री ऋषिराज जी महाराज के नाम पर, श्री ऋषिराज जैन

पुस्तकालय" एवं श्री "ऋषिराज जैन वाचनालय" भी खोला जा चुका है। जो नगर के समस्त पुस्तकालयों एव वाचनालयों मे एक अग्रगण्य प्रमुख स्थान रखता है।

—करनाल का जैन श्री सघ श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का सर्वदा ही ऋणी रहेगा। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव कृत उपकारों को आजन्म न भुला सकेगा। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की करनाल श्री सघ पर विशेष कृपा दृष्टि रही है। वैसे तो करनाल समाज ही क्या? सम्पूर्ण जैन समाज ही आप श्री जी का सर्वदा आभारी रहेगा।

❀ करनी पूर्वक कथनी

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव फर्माया करते थे कि—मनुष्य का जन्म मिलना अति कठिन है। मानव-तन पाकर, जीवन का अर्थ यह नही कि केवल अपने ही स्वार्थ में लीन और सुखोपभोग की चिन्ता मे संलग्न रहे। यह तो पशुत्ववृत्ति का द्योतक है। किन्तु मानव तो आत्म-शक्ति मे से परमात्म-शक्ति को प्रकट कर, उसका ज्ञान-तेज विश्व भर मे फैलाने वाला होना चाहिए। और यही महान् गुण था उस स्वर्गीय आत्मा मे। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव किसी भी बात की शिक्षा देने से पूर्व, उस सद्गुण को अपने जीवन मे स्थान दते थे। उनका जीवन-करनी पूर्वक कथनी-का जीता-जागता प्रभास्वर उदाहरण था।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी ने अपनी श्वेत जीवन-चादर पर जरा भी दाग-धब्बा नही लगने दिया। बल्कि उस जीवन-चादर को उन्होने अपनी अध्यात्म-साधना की उज्ज्वलता मे और अधिक निर्मल एवं पवित्र बना लिया था। जो भी व्यक्ति एक बार उनके मधुर सम्पर्क में आ गया, वह मानो उनका ही हो कर रह गया, और फिर सारी उम्र उनके व्यक्तित्व को नही भुला सका।

❀ श्रेष्ठ वृत्ति के प्रतीक

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का जीवन श्रेष्ठ वृत्ति का प्रतीक था। उनके स्वभाव मे मानवता भरी हुई थी। वे कहा करते थे कि—व्यक्ति का स्वभाव है समष्टि का एक अग होना। यदि यह सत्य है, अनुभव सिद्ध है, तो हमें अपना आत्म-विस्तार करना चाहिए। इसके विपरीत चलने वाला व्यक्ति, मानव-स्वभाव के प्रतिकूल कार्य करता है और अस्वाभाविक कार्य करने के कारण वह अपनी प्रगति की राह में स्वयं काँटे बिखेरता है। दूसरे शब्दों मे वह स्व-धर्म से विद्रोह करता है। वह नास्तिक है, पाखण्डी है। ऐसी परिस्थिति से मानव को हमेशा ही दूर रहना चाहिए। उसे सामान्य स्तर से ऊँचा उठ कर, धर्म एव समाज का व्यापक विस्तार करना चाहिए। यही श्रेष्ठ वृत्ति है और यही सर्व श्रेष्ठ करणीय कार्य।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव जनता को बार-बार यही सदुपदेश किया करते थे—मानव! संसार मे जो तुम सर्व श्रेष्ठ कहलाते हुए, जग सम्मान का केन्द्र बने हुए हो, देवताओ के भी वन्दनीय कहलाते हो, यह सब सम्मान, यह सब प्रतिष्ठा तुम्हारी श्रेष्ठ वृत्तियो, श्रेष्ठ विचारो और श्रेष्ठ स्वभाव के ही कारण तो है। अन्यथा श्रेष्ठ वृत्तियो से शून्य मानव, कब ऊँचा उठ सका? किसका सम्मान पा सका? किसी का भी तो नही। इसलिए जहाँ तक बन सके मनुष्य को अपनी दुर्वृत्तियो का दमन करते हुए, श्रेष्ठ वृत्तियों का विकास करना ही चाहिए। मनुष्य को किसी भी प्रकार के रगड़े-झगड़े में न पडते हुए, अपने जीवन को मानवता से परिपूर्ण बनाना चाहिए। तभी उसका जीवन सफल और धन्य बन सकेगा।

—और ठीक इसी प्रकार अन्त तक निरपेक्ष भाव से कार्य करते हुए श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, किसी भी दल के आपसी मत-भेद मे न पडते हुए, सब झगडो-झमेलों से दूर, एकमेव भग-

वान् महावीर के बतलाए हुए सत्य-पथ पर आरूढ़ रह कर, जीवन का आधार शुद्धतम एव उच्चतम बना कर, आत्म-विकास की ओर निरन्तर बढते गए और जीवन के अन्तिम-श्वास तक इसी आदर्श को निभाते हुए, वे स्वर्गीय आत्मा बने।

❀ तुच्छ भेंट

—भला ऐसी महान् आत्मा के बारे मे, मैं तुच्छ बुद्धि क्या वर्णन कर सकता हूं ? वस, केवल यही चन्द टूटे-फूटे शब्द लिख पाया। मेरी तो श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के श्री चरणो मे यही छोटी सी तुच्छ भेंट समर्पित है। मेरी शासनदेव से यही आकांक्षा है कि श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का स्मरण सदैव बना रहे और उनके पवित्र जीवन एव सद् उपदेशों से रोशनी पाकर, आत्मा विकास-मार्ग की ओर बढ़ती रहे।

—करनाल : पंजाब :
४—१०—६०

[४९]

एक गौरवशील जीवन :

श्री ताराचन्द जी जैन–प्रभाकर–

—श्री ताराचन्द जी जैन-प्रभाकर-एक परिश्रमी, सतत अध्यवसायी विचारक सज्जन हैं। धार्मिक वृत्ति और समाज-सेवा का भाव, आप के मानस में प्रमुख रूप से विद्यमान है। इसी समाज-सेवा-वृत्ति के कारण आप करनाल जैन संघ के मंत्री के पद पर चुने गए हैं। वैसे आप का मूल निवास स्थान-महम-(पञ्जाब) है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के गौरवशील जीवन की कुछ महान् विशेषताओं को आप ने शब्दों का रूप दिया है। जिन का सौन्दर्य देखते ही बनता है। पाठक गण जिन्हें पढ़ कर भाव-विभोर हुए बिना नहीं रह सकेंगे।

—सम्पादक

❀ मार्ग-निर्माता

—मंजिले-राहे-हकीकत को बताने के लिए।
छोड जा नक्शे-कदम औरो को आने के लिए।।

ऊपर जो बात एक शायर ने कही है, वही बात एक पाश्चात्य विद्वान् इस प्रकार कहता है—महापुरुष समय की बालुका पर, अपने पद-चिन्ह छोड़ जाया करते हैं। वे ही पद-चिन्ह, पीछे आने वाली जनता के लिए, मार्ग-दर्शन का काम करते है। तथा उन्ही चरण-चिन्हो के सहारे चल कर संसार के भूले-भटके प्राणी भी सत्पथ के अनुगामी बन सकते हैं। इन्ही भावों को हिन्दी का एक कवि अपनी भाषा मे इस प्रकार व्यक्त करता है—

महापुरुष जिस पथ पर चल कर, स्वयं लक्ष्य को पाते।
उसी मार्ग पर चरित रूप हैं, चरण-चिन्ह बन जाते।।
उन पग चिन्हो का आश्रय ले, मनुज लक्ष्य पाता है।
चरित नाव पर चढ कर नर, भव-सागर तर जाता है।।

—त्याग मूर्ति पूज्य गुरुदेव, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, ऐसे ही एक मार्ग-निर्माता महापुरुष थे। आप का कृतिशील-सदारचरणमय महान् जीवन, एक ऐसा ही मार्ग है, एक ऐसा ही चरण-चिन्ह है, जिसका अवलम्बन लेकर. जिस पर चल कर मानव सिद्धि प्राप्त कर सकता है। पूज्य गुरुदेव अपने समय के एक महान् आत्मा, महान् त्यागी, और महान् पुरुष थे। आप—जन्म से नही, कर्म से महापुरुष बने थे। सतत एव निरन्तर अर्द्ध शताब्दी से भी ऊपर संयम-साधना, और सद्गुणाचरण का अभ्यास करने के पश्चात् ही आप महान् पुरुष की श्रेणी मे पहुँच सके थे। जीवन के कण्टकाकीर्ण, विघ्न एवं बाधाओ से परिपूर्ण अन्धकारमय मार्ग को, आपने अपनी आत्म-साधना द्वारा, अपने सद्गुणो के विकास के द्वारा, अपने जाज्वल्यमान सम्यग्-ज्ञान के द्वारा, निष्कण्टक,

सुविधाओं एवं समृद्धि से परिपूर्ण एवं प्रकाशमय बना डाला था। यह लक्ष्य प्राप्ति का सर्व श्रेष्ठ मार्ग था, जिसका आपने-अपनी आत्मा का भोग देकर निर्माण किया। जो आज भी आपके चरण-चिन्हो से अंकित हो कर जगमगा रहा है, और आपकी अमर कहानी कह रहा है, तथा जो भविष्य मे भी आने वाली जनता का प्रेरणा-स्रोत रहेगा, युगो-युगों तक भूली भटकी जनता का मार्ग-दर्शन करता रहेगा, उसे लक्ष्य तक पहुँचने में बहुत बड़ा सहयोग देता रहेगा।

❀ गौरवशील जीवन

—गौरव गरिमा युत् सत्पुरुषो के जीवन हमे सिखाते हैं।
कैसे वढें कर्तव्य-मार्ग पर ? वन आदर्श वताते हैं॥

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का शुभ जन्म, ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी सम्वत् १६४७ विक्रम, ग्राम सोरई जिला आगरा (उत्तर-प्रदेश) क्षत्रिय कुल में हुआ था। आपके पिता श्री चौधरी टोडरमल जी, धर्म-संस्कारी मानव थे। तथा माता श्रीमती रामप्यारी जी भी धर्म परायणा एव सुगृहिणी महिला-रत्न थी। आप वचपन से ही, माता-पिता के धार्मिक संस्कारो मे पले थे। साथ ही आपकी धर्म-श्रद्धा और धर्म के प्रति स्वाभाविक रुचि ने इन सस्कारो को और भी अधिक समृद्ध किया। त्याग-वृत्ति का अंकुर आपके जीवन मे पहले से ही विद्यमान था। अनुकूल सयोग पा कर वह दिनों दिन, और अधिक वृद्धिगत होता गया। आपके सामने वैभव-विलास से भरी दुनिया थी। ससार के आकर्पण भो चारों ओर विखरे ही थे। परन्तु वे आपको आकर्पित न कर पाए, आप उनके वन्धनो मे फँसे ही नही। अपितु उन सवकी ओर से मुख मोड़कर, पीठ फेर कर, आप फाल्गुण सम्वत् १६५६ विक्रम, एलम ग्राम में, पूज्य गुरुदेव श्री ऋपिराज जी महाराज के चरणों में जा पहुँचे,

और वही रहकर विद्याध्ययन, गुरु-सेवा तथा आत्म-साधना का अभ्यास करने लगे।

—अभ्यास पूर्ण होने पर, ज्येष्ठ शुक्ला पचमी, सम्वत् १९६३ विक्रम के दिन ढिढाली ग्राम मे, आपने सयम-मार्ग पर कदम बढ़ा ही तो दिए। और आत्म-साधना के इस जलते हुए कठिनतम महामार्ग पर निरन्तर बढते ही चले गए, आगे—और आगे। ज्ञान-साधना तथा आचार-साधना की अमर-ज्योति आपके जीवन मे, प्रखर से प्रखरतम रूप मे प्रज्वलित होती गई, और जीवन-क्षेत्र के साथ संसार के मानव-मानस-क्षेत्र को भी आलोकित करती गई। इस प्रकार कठोरतम सयम-साधना के द्वारा, आपने अपने मन को साधा, जीवन को माँजा और जन-मानस को जागृति का सदेश देते हुए, एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त घूमते हुए, सत्य और अहिंसा धर्म का प्रचार किया। उत्तर-प्रदेश, हरियाणा, पञ्जाब और दिल्ली का इलाका आपके सदुपदेशो से गु जायमान होने लगा। अनेक-क्षेत्रो मे आपने धर्म-सस्कारो का बीज बोया, जो आज अकुरित, विकसित, पल्लवित-पुष्पित और फलित हो कर, आपकी गौरवगाथा का मुखर उदाहरण बना हुआ है।

—स्वास्थ्य ठीक न होने से, तथा नेत्र-ज्योति मन्द पड़ जाने के कारण आप गत कई वर्षो से आगरा मे, पूज्य प्रवर श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज की सेवा में रह रहे थे। आपकी सयम-साधना के ५४ तथा जीवन के सत्तर वर्ष पूर्ण होने हो जा रहे थे कि समय ने फेर खाया और यह महान् आत्मा, मार्ग-निर्माता महापुरुष, कुटिल काल ने सर्वदा के लिए हम से छीन लिया। वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार विक्रम सम्वत् २०१७ मानपाड़ा, आगरा मे आपका स्वर्गवास हो गया। एक महापुरुष हमारी आँखो के सामने से तिरोहित हो गया। यद्यपि पूज्य गुरुदेव, आज ससार मे नही रहे। किन्तु उनका कृतिशील जीवन, एवं उनके द्वारा निर्माण किया हुआ साधना-मार्ग, आज भी हमारे समक्ष विद्यमान

है। और भविष्य मे भी हमेशा-हमेशा के लिए अजर-अमर रहेगा।

❀ सर्व जन हितैषी

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, सर्व जन हितैषी महापुरुष थे। उनके हृदय मे सभी के उत्थान की मगल कामना निहित थी। वे सबका उत्थान चाहते थे, कल्याण चाहते थे। वे सबके हित मे संलग्न रहा करते थे। अनुकम्पा, दया और करुणा उनके अन्तर हृदय मे इस प्रकार से कूट-कूट कर भरी थी कि वे किसी को दुःखी नही देख सकते थे। किसी को दुखी देखते ही वे उसके दुःख को दूर करने के प्रयत्न मे जुट जाते। उनका मानस, मानव-कल्याण की कामना से ओतप्रोत था। वे अत्यन्त सहृदय, सज्जन पुरुष थे। वे सद्गुण के समूह ही थे। एक सच्चे मानव मे, एक सच्चे साधक मे, जो लक्षण होने चाहिएं वे सब, आप मे विद्यमान थे। एक कवि के शब्दो मे, आपका व्यक्तित्व ऐसा था—

आंखो मे था तेज, तेज मे सत्य, सत्य मे ऋजुता।
वाणी मे था ओज, ओज मे विनय, विनय मे मृदुता॥

अथवा एक शायर के शब्दो मे आपकी पवित्र वाणी की विशेषता इस प्रकार रही—

मुंह मे जवा, जवा मे लुफ्ते-बया रहा।
लब पे सखुन, सखुन मे लताफत अया रही।

—उनके स्वर्गवास के सम्बन्ध मे, एक उर्दू शायर की बात कह कर मैं, पूज्य गुरुदेव श्री गणी श्यामलाल जी महाराज के चरणों मे अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ—

अजब मौत थी तेरी, ऐ मरने वाले!
न भूलेगी दुनिया, तुझे लाखो वर्षों॥

करनाल : पञ्जाब :
२३—६—६०

[५०]

उन्होंने हमें प्यार सिखाया :

श्री रामनारायण जी जैन-रसिक-

—श्री रामनारायण जी जैन-रसिक-एक बड़ी ही मिलनसार फक्कड़ तबीयत के सज्जन हैं। मस्त तबीयत, सात्विक विचार और धार्मिक वृत्ति आप के व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं। आप निवासी तो झाँसी के हैं, परन्तु, आगरा का दौरा आप का लगता ही रहता है। आप में साहित्यिक वृत्ति के प्रति भी काफी अभिरुचि है।

—जब भी आप आगरा आते हैं, सन्तों के दर्शन-स्पर्शन अवश्य ही करते हैं। इसी रूप में श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के पवित्र जीवन एवं मधुर सम्पर्क से जो प्रेरणा आप को मिली, उसे आप ने इस लेख में व्यक्त किया है। लेख अपनी क्या विशेषता रखता है? यह तो पाठक गण को पढ़ने के पश्चात ही ज्ञात हो सकेगा।

—सम्पादक

❀ परम सौभाग्य

—पूज्य प्रवर श्रद्धेय मंत्री श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज के गत अनेक वर्षो से सकारण आगरा विराजने के कारण, आगरा निवासियों का यह परम सौभाग्य है कि जैन साधुओ के उन्हे दर्शन प्राप्त होते रहते हैं और उन्हे सत्सग का लाभ मिलता ही रहता है। श्रद्धेय मत्री जी महाराज की कृपा से प्रति वर्ष चातुर्मास हुआ ही करते है। पूज्य श्री जी के यहाँ विराजने के कारण कुछ न कुछ साधुओं का जमाव यहाँ रहता ही है और सन्त-सत्सग का लाभ जनता को मिलता ही रहता है। मैं भी जब से श्रद्धेय पूज्य श्री जी के सम्पर्क मे आया, तब से बराबर जब भी आगरा आता हू तो दर्शन अवश्य करता हूँ।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज भी लगभग ८-९ वर्षों से, श्रद्धेय पूज्य श्री जी की सेवा में ही विराजमान थे। इधर कुछ वर्षों से उनका स्वास्थ्य भी कमजोर सा हो चला था। कुछ न कुछ व्याधि-बीमारी चलती ही रहती थी। आँखो मे मोतिया उतर आने के कारण, उनकी दृष्टि भी कुछ कुछ मन्द पड गई थी। एक आँख का आपरेशन भी कराया गया, परन्तु कोई विशेष लाभ न हुआ। वैसे तो आप शरीर से काफी दुर्बल हो गए थे, परन्तु ऐसी हालत में भी अपनी धार्मिक दिनचर्या में, आपने कोई न्यूनता या शिथिलता नही आने दी। जहाँ तक होता था, अपने ही हाथो से आप अपना सारा कार्य कर लिया करते थे। वृद्ध अवस्था एव दुर्बल शरीर होने पर भी आपके जीवन मे जरा भी आलस्य या प्रमाद दृष्टिगोचर नही होता था। आप शरीर से शिथिल होने पर भी कभी कर्तव्य से विमुख नही हुए, अपितु कर्तव्य के प्रति आप सतत कर्मशील रहते थे। कभी मानपाड़ा और कभी लोहामण्डी के जैन भवन मे आपके शुभ दर्शन हो ही जाया करते थे।

❀ शान्तात्मा

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव एक पवित्र एवं शान्तात्मा साधु जन थे। आपके मुख मण्डल पर अखण्ड शान्ति एव परम सौम्यता सतत विराजमान रहती थी। यही नही, बल्कि आपके सम्पर्क मे आने वाले प्रत्येक मानव को भी, आपके दर्शन करके, आपकी पवित्र वाणी को सुन कर, एक अपूर्व शान्ति का अनुभव हुआ करता था। मनुष्य कितना ही हार्दिक रज मे या घरेलू झझटो से तग क्यों न हो, परन्तु आप के दर्शन करते ही आनन्द की एक मधुर झलक उसके चेहरे पर अवश्य आ ही जाती थी। एक प्रकार की सांत्वना पा कर, वह सुखानुभव करने ही लगता था। उन्होने हमे सत् शिक्षाएँ दी। उन्होने हमे एक दूसरे से प्रेम, स्नेह, मित्रता, एवं एकता करना सिखाया। हम उनके उपकार से उऋण नही हो सकेगे। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव सलाह भी सच्ची और उचित दिया करते थे। एक वार कुछ भाई रोहतक के वैठे थे। श्रद्धेय पूज्य गुरु-देव से उनकी वाते हो रही थी। मै भी जा वैठा। बातचीत का आधार घरेलू समस्या थी। गुरुदेव फरमा रहे थे—वँधी मुठ्ठी लाख की, खुली मुठ्ठी खाक की। जव तक हीरा है, वहुमूल्य है, उसे खरीदने की हर एक मे शक्ति नही होती, परन्तु जहाँ हीरा, कणी के रूप मे हुआ कि जरा-जरा से मूल्य पर ही दुकान-दुकान विकने लगा। इस लिए आपस का मेल-मिलाप और सघटन वहुत जरूरी चीज है। मैंने सुना तो शान्ति मिली, एक नयी प्रेरणा मिली, कुछ चेतना आयी, परन्तु मैं जल्दी मे था, दर्शन करके चल दिया।

❀ सौम्य स्वभाव

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज का कितना मृदु-सरल एवं सौम्य स्वभाव था? यह किसी से छिपा हुआ नही है। साधुओं के जीवन की साधना मे तप,

ज्ञान, संयम एव सद्‌आचरण की ही विशेषताएं होती है । श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के जीवन को जहाँ तक मैंने देखा है, उसमे ये सभी विशेषताएं अपनी अत्युन्नत अवस्था में थी । परन्तु उनकी जिस प्रमुख विशेषता ने मुझे आकर्षित किया, वह थी उनकी सौम्य प्रकृति । उग्रता या आवेश मैंने तो कम से कम उनके जीवन में कभी भी नही देखा । सदा स्वय हँसते रहना तथा दूसरे को हँसाते रहना, यह था उनकी सौम्य प्रकृति का चमत्कार ।

—और, जीवन के अन्तिम समय में भी आपने उसी सौम्यता के साथ हँसते-हँसते, सहर्ष मृत्यु का आलिङ्गन किया तथा बोलते-बोलते ही अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया । इसका प्रत्यक्ष साक्षी वह स्त्री-पुरुषों का समुदाय है, जिन्होंने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के अन्तिम दर्शन किए हैं । आत्मा के अज्ञात दिशा की ओर प्रयाण कर जाने के पश्चात्, निश्चेष्ट मुख मण्डल पर भी वही सौम्यता, वही शान्ति एवं वही मन्द हास्य की रेखा, सहस्रा-विक मानव गण ने देखी है । साधुत्व की साधना, तप का तेज एव आचरण की पवित्रता श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की सौम्य आकृति से ही परिलक्षित हो जाती थी ।

❀ सच्ची श्रद्धाञ्जलि

—हम जैसे वह अकिंचन प्राणी, जिनका तन-मन सासारिक व्याधियो में दिन-रात फँसा रहता हो और एक दूसरे के जीवन के साथ, धन की लिप्सा में जो खिलवाड़ करते रहते हों । भौतिक सुखेच्छा एवं धन-लिप्सा ही जिनका जीवन-ध्येय हो और जो रात-दिन अधर्म के कार्यों में ही जुटे रहते हों । भला वे ऐसे तपस्वी, त्यागी, संयमी एव साहसी साधु, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज को क्या श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकते है ?

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के निधन से प्रेरणा ले कर हम सासारिक प्राणी, उनके जीवन की एक न एक साधना का, एक न एक विशेषता का, अथवा एक न एक शिक्षा का, जीवन मे सही रूप से आचरण करे, तो मेरी समझ मे, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के प्रति यही सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। यही उनकी पावन स्मृति को जीवन पर्यन्त हमारे मानस मे सुरक्षित रख सकेगी। यही नही, इस से हमारे जीवन का चरम विकास भी होगा, हमारा लोक-परलोक भी सुधरेगा और एक दिन दुःखो से भी हम छुटकारा पा सकेंगे। तभी हम उन सद्गुरुदेव के सच्चे शिष्य सच्चे अनुयायी कहला कर, अपने को धन्य बना सकेगे। उस महापुरुष के प्रति, बस मुझे यही कहना था।

—झांसी : मध्य प्रदेश :
८—१०—६०

[५१]

ज्योतिर्धर जीवन :

श्री धर्मदास जी जैन

—श्री धर्मदास जी जैन-दोघट-जिला मेरठ निवासी हैं। आप कर्तव्य परायण धार्मिक वृत्ति के सज्जन हैं। आप श्री रु गामल जी जैन के सुपुत्र हैं। समाज-विकास-कार्यों में आप हमेशा आगे रहते हैं। सन्त जनों के प्रति आप श्रद्धा एवं निष्ठा पर पूज्य भाव रखते हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आप को धर्मानुराग पैतृक विरासत में मिला है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के एक पुरातन संस्मरण, सम्वत १९७५ विक्रम के दोघट चातुर्मास को आधार बना कर, आप ने उन के चरणों में कुछ श्रद्धा के फूल चढाये हैं। जो अपनी पृथक ही सुवास रखते हैं।

—सम्पादक

❀ खेद की बात

—अचानक ही भाई ओमप्रकाश ने आकर कहा—आगरा से पत्र आया है, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास हो गया। इस दुःखद समाचार के सुनते ही हृदय विह्वल हो उठा और नेत्र अश्रुपूर्ण। हृदय को इस आघात से संभलने मे कुछ समय लगा। फिर तो जिसने भी सुना वही खेद-खिन्न हो उठा। समाज मे से ऐसे महान् आत्मा, सरल स्वभावी, शान्त मूर्ति सन्त का हमेशा के लिए चले जाना वडे खेद की बात है।

—श्रद्धेय गणी जी महाराज के स्वर्गवास से जैन समाज का जो स्थान रिक्त हुआ है, उसकी पूर्ति होना अशक्य है, सहज सम्भव नही है। जिसने भी यह समाचार सुना, उसी के मुख से यही शब्द निकले-आज जैन समाज ने अपना एक अमूल्य लाल खो दिया। विशेषकर उत्तर-प्रदेशीय जैन समाज को, आप श्री जी के स्वर्गवास से जो खेद हुआ है, वह वर्णनातीत है। क्योंकि इस ओर के क्षेत्र आप श्री जी के पूर्वजो द्वारा ही निर्माण किए हुए हैं। और फिर आप श्री जी का भी अधिकाश जीवन, इन्ही क्षेत्रो का उपकार करते हुए व्यतीत हुआ था। अत खेद होना स्वाभाविक भी है।

❀ ज्योतिर्धर जीवन

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी सम्वत् १६४७ विक्रम में सोरई नामक ग्राम मे एक क्षत्रिय परिवार मे हुआ था। आप श्री जी की माता श्रीमती रामप्यारी जी और पिता श्री टोडरमल जी, उस ग्राम के सम्मानित व्यक्ति थे। तत्पश्चात् ६ वर्ष की आयु मे आप गुरु-सेवा मे पहुँचे और विक्रम सम्वत् १६६३ ज्येष्ठ शुक्ला पचमी मगलवार के दिन पण्डित श्री ऋषिराज जी महाराज के चरणो मे दीक्षित हो गए। उस समय आप की आयु १६ वर्ष की थी। इस प्रकार संयम ले कर आप श्री जी ने, उसका ५४ वर्षो तक अखण्ड पालन किया। स्थान-स्थान पर धर्म-

प्रचार करते हुए आप वीर-वाणी का प्रसार करते रहे। आप स्व-मत तथा पर-मत के अच्छे जानकार रहे हैं। एक पण्डित तथा संयमी गुरुदेव के शिष्य हो कर भला आप विद्वान् और सयमी क्यो न होते ? गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज का स्वर्गवास हो जाने पर भी, आप श्री जी को महान् तपस्वियों तथा विद्वान् मुनिराजों की सेवा मे रहने का अवसर मिला था।

❀ एक संस्मरण

—विक्रम सम्वत् १९७५ के साल का, आप श्री जी का चातुर्मास हमारे क्षेत्र अर्थात् दोघट मे था। आप श्री जी के साथ ही श्रद्धेय तपस्वी रत्न श्री पूर्णचन्द्र जी महाराज भी थे। मुनि द्वय ने उस चातुर्मास मे धर्म का वह ठाठ लगाया, श्रद्धेय पूर्णचन्द्र जी महाराज ने तपस्या की, तथा आप श्री जी ने व्याख्यान की वह झड़ियाँ लगाई कि जन-मानस आप्लावित हो कर रह गया। उस महान् चातुर्मास को यहाँ के वृद्ध जन आज भी उसी श्रद्धा से स्मरण करते हैं।

—एक बात और। उन्ही दिनों ग्राम मे मलेरिया बुखार और खाँसी आदि का काफी प्रकोप था। परन्तु मुनि द्वय की कृपा दृष्टि से, तथा मागलिक श्रवण के चमत्कार से सम्पूर्ण ग्राम की व्याधि शान्त हो गई। कहा भी है—

फकीरो की निगाहो मे, अजब तासीर होती है।
निगाहे-मेहर से देखें, तो खाक अक्सीर होती है॥

आप श्री जी की महिमा का वर्णन कहाँ तक किया जाय ? आप तो अपनी उपमा बस स्वय ही थे।

❀ श्रद्धा-भाजन

—आप श्री जी जन-जन के श्रद्धा-भाजन थे। ऐसा कौन सा क्षेत्र होगा, जो आपको याद न करता हो ? ऐसा कौन सा व्यक्ति होगा, जो आप श्री जी के सद्‌गुणो से परिचित न हो ? इधर जमुनापार के क्षेत्रो के श्रावक समुदाय तो आप श्री जी के उपकारो को कदापि नही भुला

सकते। ये क्षेत्र एक तरह से आप श्री जी की ही सम्पत्ति हैं। क्योंकि श्रद्धेय महामुनि पण्डित श्री रत्नचन्द्र जी महाराज, जो कि आप श्री जी के ही पूर्वज पुरुष हुए हैं, इन क्षेत्रो के निर्माता थे। उन्होंने ही अपने पवित्र संयम एवं सदाचार से इनका सिंचन कर, इनमे धर्म का बीज बोया था। जो आज पल्लवित, पुष्पित एव फलित हो कर उनकी अमर कहानी कह रहा है। उन्ही महान् सन्त रत्नो के आप शिष्य रत्न थे।

—आप श्री जी का तथा उन पूर्वज पुरुषो का उपकार, ये क्षेत्र कैसे भुला सकते हैं? आप श्री जी के निधन का दुःख तो असहनीय है, फिर भी हमे इस बात से सन्तोष है कि आप श्री जी ने अपना शिष्य मण्डल बड़ा ही सुयोग्य एव अपने और पूर्वजो के गौरव को अक्षुण्ण रखने वाला छोड़ा है। जो हमारे इन क्षेत्रो मे सत्य धर्म का प्रचार कर, इन्हे सुरक्षित रख सकेगा।

—दोघट : उत्तर प्रदेश :
३—८—६०

[५२]

युगप्रवर्तक, उस महान् योगी के प्रति :

श्री मदनलाल जी जैन

—श्री मदनलाल जी जैन एक अच्छे विचारक सज्जन हैं। आप श्री बनारसीदास जी जैन रावलपिण्डी वालों के सुपुत्र हैं। वर्तमान में आप-जालन्धर-(पञ्जाब) में रह रहे हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की पुण्य स्मृति में, स्मृति-ग्रन्थ-प्रकाशन की बात जान कर, आप ने स्वयं ही उन के प्रति श्रद्धाञ्जलि के कुछ शब्द लिख भेजे हैं।

—जो श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आप की श्रद्धा के प्रतीक हैं। जिन से उस महान् योगी के प्रति आप की निष्ठा एवं पूज्य भाव स्पष्टतया झलक उठते हैं। आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति क्या कुछ लिखा है ? और कैसा लिखा है ? यह उन्हीं की लेखनी द्वारा अगली पंक्तियों में प्रस्तुत है।

—सम्पादक

❋ महान् योगी

—विश्व मे समय-समय पर महान् विभूतियाँ, मानवता के कल्याण के लिए शुभ जन्म लेती रहती हैं। ससार के जिन महान् पुरुषो ने अपने जीवन को, ससार के भोग-विलासो मे नष्ट न करके, सत्य तथा ज्ञान के समुज्ज्वल अन्वेषण मे लगाया, उन्ही महान् पुरुषो मे से परम श्रद्धेय महान् योगी, स्वर्गीय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज थे। जो सच्चे संयमी, श्रमण सस्कृति के उज्ज्वल प्रतीक बन कर इस महान् विशाल देश, भारत की सुन्दर भूमि पर अवतरित हुए।

—श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज का, प्रारम्भिक बाल्य-काल से ही त्याग, तप और वैराग्य की ओर लक्ष्य रहा है। आप सदैव ही ससारी झझटो से दूर रहे हैं। आपके जीवन मे सरलता, सौम्यता, मृदुता और सेवा भाव मुख्य रूप से कूट-कूट कर भरे थे। आप किशोर वय मे ही गुरु-चरणो मे पहुँच गए थे और यौवन के प्रारम्भ मे ही आपने जैन मुनि दीक्षा धारण कर ली थी। इसके बाद आपने अपने शरीर के सुख-दुःख की निरपेक्षता का, अपने जीवन की प्रयोगशाला के द्वारा जो महान् प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया, वह सदैव याद रहेगा।

❋ युग प्रवर्तक

—श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज, युग प्रवर्तक महापुरुष थे। वे एक ऐसे महान् योगी थे, जिन्होने सदा ही ससार मे सुख और शान्ति को स्थिर रखने के लिए समता, सत्य तथा अहिसा को ही परम आवश्यक बतलाया। श्रमण भगवान् महावीर के–अहिसा परमो धर्म.- सिद्धान्त को अपने जीवन में पूर्ण रूप से उतारने वाले तथा इसका घर-घर प्रचार करने वाले, श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज ही थे। उन्होने समाज-सेवा और धर्म-रक्षा के निमित्त जो अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया, वह चिर स्मरणीय रहेगा। श्रद्धेय श्री

गणी जी महाराज, जैन जगत के एक प्रकाश स्तम्भ (Light pillar) थे। जिनके जीवन का लक्ष्य, केवल सत्य प्राप्ति और आध्यात्मिक विकास था।

—महान् सन्त अपने वचन से नही, अपितु अपने आचरण से ही जनता को सन्मार्ग-दर्शन कराया करते है। श्रद्धेय श्री गणीजी महाराज का जीवन अहिसा, सत्य, त्याग व तपश्चर्या का सजीव प्रतीक था। आपने अपना समस्त जीवन मानवता की रक्षा और आत्मिक विकास-तत्त्वों की खोज में व्यतीत कर दिया था। जीवन भर वे आचरण मे पवित्रता, सात्विक एव उदार भाव विकसित करने के लिए कषायभावों तथा दुर्गुणों से सघर्ष करते रहे। उन्होने अपने आपको जन-कल्याण के लिए, मनुष्य के विकास के हेतु अर्पित कर दिया था। ऐसी ही, देश की इन कर्मठ, त्याग से ओत-प्रोत महान् विभूतियो के आदर्शों पर, आज मानव-समाज का स्तर टिका हुआ है।

❀ एकता के अग्रदूत

—श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज एक सघटन प्रिय मुनि-राज थे। वे एकता के अग्रदूत थे। उनकी प्राणी मात्र के प्रति मैत्री एवं समता की सद्‌भावनाएँ रहती थी। उस महान् योगी को सयम, सदाचार और नैतिक उत्थान अत्यन्त प्रिय थे। दुर्वृत्तियो तथा दुर्भावनाओ से वे हमेशा दूर रहे थे। आपका मुनि-जीवन स्वच्छ, निर्मल और उज्ज्वल, पवित्र जीवन था, जो युग-युग तक, आने वाले साधको के लिए पथ-प्रदर्शक रहेगा।

—आज के विपमताओ से युक्त समाज मे, जन-साधारण के लिए, उनके पवित्र अमृत प्रवचनो का अनुसरण अत्यावश्यक है। ऐसी महान् विभूति, जिस समाज, देश और धर्म को प्राप्त हो, सचमुच वह कितना भाग्यशाली होता है? जैन समाज को तो खास कर, ऐसे महान् सन्त को पा कर महान् गौरव का हो

अनुभव होता है। आप श्री जी ने ७० वर्ष लम्बा जीवन पाया, जिसमें से ५४ वर्ष आपने संयम पालन किया। इस लम्बे समय मे आपने देश भर मे पैदल यात्रा करके, सत्य-अहिंसा का वह दीप प्रज्ज्वलित किया, जिसकी उज्ज्वल ज्योति, चिर काल तक भावी पीढियों को आलोकित करती रहेगी और हम सब देशवासियो को मगलमय प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

—श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज के सद्गुणो का कहाँ तक वर्णन करूँ? मेरी तुच्छ लेखनी मे इतना बल ही कहाँ है? जो उस महानात्मा के दिव्य गुणो का चित्रण कर सके। फिर भी श्रद्धावश उनके प्रति कुछ शब्द लिख पाया हूँ, जो श्रद्धाञ्जलि के रूप मे उन्हे ही समर्पित है।

—जालन्धर शहर : पंजाब :
१८-११-६०

[५३]

श्री श्यामलाल जी महाराज :

एक प्रेरणा :

श्री शान्तप्रकाश जी–सत्यदास–

—श्री शान्तप्रकाश जी-सत्यदास-एक विशिष्ट व्यक्तित्व से सम्पन्न युवक हैं साहित्यिक क्षेत्र की आप अच्छी जानकारी रखते हैं। कविता निर्माण की ओर भी आपकी अभिरुचि है। आप श्री सूरजचन्द्र जी डॉगी के लघु भ्राता हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के नाम को ले कर आप ने प्रस्तुत लेख में एक नया ही दृष्टिकोण उपस्थित किया है, जो आपकी विकासशील बौद्धिक प्रतिभा का द्योतक है। वह दृष्टिकोण क्या है? यह उन्हीं के प्रेरणात्मक शब्दों में आगे दिया जा रहा है।

—सम्पादक

❀ एक प्रेरणा

—श्याम का अर्थ है—काला ; इस लिए यह शब्द कषायो का या कर्मो का प्रतीक है। और 'लाल' एक वर्ण है जो युद्ध का प्रतीक माना जाता है। इस प्रकार 'श्याम लाल' इन दोनो शब्दो का सम्मिलित अर्थ हुआ—कषायो या कर्मो से युद्ध। भगवान महावीर ने भी यही किया था और उनके हजारो-लाखो अनुयायी भी यही करते रहे हैं। कषायो के या कर्मो के विरुद्ध युद्ध किया जाय तो आत्मा शुद्ध ही क्यो ? बुद्ध और सिद्ध तक बन सकती है।

—यह प्रेरणात्मक उपदेश जिनके नाम से ही हमे मिल सकता था, वे मुनिराज श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, आज हमारे बीच नही रहे। यह खेद की बात है। फिर भी उनका नाम तो है ही, और उससे वैसी प्रेरणा भी मिलती ही है—मिलेगी भी, आवश्यकता है सिर्फ प्रेरणा लेने वालो की। इस आवश्यकता की पूर्ति तभी हो सकेगी—जबकि हम उन महापुरुषो की स्मृति को ग्रन्थों तक ही सीमित न रखकर, अपने हृदयो की वस्तु बनाएंगे।

—बार्शी . शोलापुर :
१—८—६०

[५४]

उस सच्चे साधु के प्रति—
दो शब्द :

श्री सेठ अचलसिंह जी जैन —एम. पी.—

—श्री सेठ अचलसिंह जी जैन को, भला कौन नहीं जानता ? स्थानकवासी जैन समाज उन से पूर्णतया परिचित है। आप केन्द्रिय संसद दिल्ली में एम. पी. के प्रतिष्ठित स्थान पर हैं तथा अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स के अध्यक्ष पद को आप सुशोभित कर रहे हैं।

—आप आगरा निवासी होने के कारण, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्याम लाल जी महाराज से पूर्णतया सुपरिचित रहे हैं और उनकी सच्ची साधुता से प्रभावित भी। स्मृति-ग्रन्थ के प्रकाशन की बात जान कर आप ने हर्ष व्यक्त किया है और अपनी ओर से-दो शब्द-लिख भेजे हैं। जो उन्ही के शब्दों में आगे दिए जा रहे हैं।

—सम्पादक

❀ सराहनीय प्रयास

—यह जान कर मुझे परम हर्ष का अनुभव हुआ कि श्री श्री १००८ श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज की पुण्य-स्मृति मे एक स्मृति-ग्रन्थ के प्रकाशन का आयोजन किया जा रहा है। ऐसे सच्चे साधु पुरुषो की पुण्यस्मृति को अक्षुण्ण एवं युग-युगान्त तक कायम रखने का, यह भी एक उत्तम और अच्छा तरीका है। जिस प्रकार उस साधु पुरुष की महान् विशेषताएँ, हमारे हृदयो मे सुरक्षित हैं, उसी प्रकार इस स्मृति-ग्रन्थ से आने वाली पीढ़ी भी, उस महापुरुष की महान् विशेषताओ को पढ़ कर हृदयगम कर सकेगी और उससे प्रकाश एवं प्रेरणा ग्रहण करके अपने जीवन-पथ को भी आलोकित एवं प्रशस्त कर सकेगी। इस दिशा मे यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाएगा।

❀ सच्चे साधु

—वैसे तो प्रत्येक साधु का जीवन ही आध्यात्मिक महान् विशेषताओ से परिपूर्ण हुआ करता है। साधु, शब्द ही आत्म-कल्याण तथा जन-कल्याण की ओर प्रवृत्त होने वाले सत्पुरुष के लिए प्रयोग हुआ करता है। फिर उनमे भी जैन साधु का साधना मार्ग तो प्रारम्भ से ही, कठिनतम और उच्च कोटि का माना जाता रहा है। जैन साधु की ही कठिनतम साधना को लक्ष्य मे रख कर सम्भवतः यह लोकोक्ति बनी हो—

वड़ी दुष्कर जैन फकीरी, जिन्दा ही मर जाना।

वास्तव मे इस अध्यात्म-साधना के लिए तो साधक को जीवित ही मर जाना होता है। अध्यात्म-साधना की वलि-वेदी पर, तिल-तिल कर अपने को न्योछावर कर देना, यह किसी विरले ही साहसिक महापुरुष का कार्य होता है।

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज, एक ऐसी ही कठिनतम अध्यात्म-साधना मे प्रवृत्त रहने वाले सच्चे साधु थे। जीवन के प्रारम्भिक चरण मे ही वे इस अध्यात्म-साधना की ओर आकृष्ट हुए तथा यौवन की प्रारम्भिक अवस्था मे ही, वे इस कठिनतम महा मार्ग पर बढ चले। पाँच-पाँच दशाब्दियो से भी अधिक समय, उन्होने आत्म-कल्याण एव जन-कल्याण करते हुए व्यतीत किया। अध्यात्म-साधना के दुष्कर पथ पर, मुस्कराते चलते और बढते हुए, वे लक्ष्य के सन्निकट ही पहुँच गए।

—एक अध्यात्म साधक सच्चे साधु मे, जो-जो सद्गुण और सद् विशेपताएं होनी चाहिएँ, वे सभी श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज के जीवन मे विद्यमान थी। सद्गुणों की सुगन्धि से सुवासित जीवन, संसार के आकर्षण का केन्द्र हुआ ही करता है। फलतः श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज का पवित्र जीवन भी आत्महित-चिन्तक, जिज्ञासु भक्त वृन्द के आकर्षण का महत्त्वपूर्ण केन्द्र-स्थान रहा है। क्या दिल्ली ? क्या उत्तर प्रदेश ? क्या हरियाणा ? और क्या पञ्जाब ? जिधर भी आप ने विचरण किया, उधर के क्षेत्र ही, आपके सद्गुणो की सुवास से सुवासित हो उठे। और उन के सद्गुणो की सुवास भी ऐसी सुवास है, जो अद्यावधि उसी तरह से महक रही है, और जो भविष्य में भी सदा-सर्वदा के लिए इसी प्रकार महकती रहने वाली है।

❀ आगरे पर उपकार

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज का आगरे की जैन समाज पर तो वडा भारी उपकार है। क्योंकि गत ८-१० वर्षो से वे, श्रद्धेय मत्री श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज की सेवा मे आगरा ही विराजमान थे। आगरे की जैन समाज का तो बच्चा-बच्चा उन की सद्-विशेपताओं से प्रभावित है। उनके हृदयो पर तो उनकी वह अमिट छाप लग चुकी है, जो परम्परा रूप से युगो-युगो तक कायम रहने वाली है।

—अन्त मे आत्म-कल्याण एवं जन-कल्याण करते हुए, श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज ने आगरा मे ही अपने पार्थिव नश्वर शरीर को त्याग करके, स्वर्गधाम प्राप्त किया। अब तो बस उनके प्रति हमारा यही कर्तव्य रह जाता है कि हम उस महापुरुष की उन सद्‌विशेषताओ को, अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण अग बनाएँ, जिन के द्वारा वे महान् बने थे। यदि हम ऐसा कर सके, तभी हम उन के सच्चे अनुयायी कहला सकेंगे, साथ ही हमारा जीवन भी उन्ही की तरह पवित्र, महान् और पूजनीय तभी बन सकेगा, जब कि हम उन्ही के समान, अपने मानस को सरल, अपनी वाणी को मधुर तथा अपने व्यवहार को सरस बनाएंगे। और तभी उनके प्रति समर्पित हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि सफल कहला सकेगी। बस इन्ही भावनाओं के साथ, उस सच्चे साधु के पावन चरणों मे, मै अपने दो शब्द भेट करता हूँ।

—सदर, आगरा उत्तर-प्रदेश :
१६—१०—६०

[५५]

उस आदर्श सन्त के प्रति :

श्री सेठ नेमीचन्द जी जैन -लोंकड़-

—श्री सेठ नेमीचन्द जी जैन -लोंकड़- आगरा क्षेत्र की शान हैं।-आत्मध्यानी आगरा—की जो लोकोक्ति जैन संसार में प्रसिद्ध है, उस के आप प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। गृहस्थ अवस्था में रहते हुए भी आप का त्याग आदरणीय है और आप की आध्यात्मिक साधना अनुकरणीय। अध्यात्म-साधना के कर्मठ साधक होते हुए भी आपकी शान्त प्रकृति और गम्भीरता, अपने आप में प्रशंसनीय विशिष्ट स्थान रखती है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का अनेक वर्षों से निकट सम्पर्क रहने के कारण, उनके भव्य आदर्शों की जो प्रतिच्छाया आप के मन-मस्तिष्क पर पड़ी, उसे ही आप ने अत्यन्त सरलता एवं निष्ठा के साथ प्रस्तुत लेख में व्यक्त कर दिया है। जो उन्हीं की सरल भाषा और मनोरम शैली में पाठकों को अगली पँक्तियों में देखने को मिलेगी।

—सम्पादक

❀ आदर्श सन्त

—प्रातः स्मरणीय, श्री श्री १००८ स्वर्गीय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज साहब, वास्तव मे एक महान् और आदर्श सन्त थे। इधर कई वर्षो से महाराज श्री जी वृद्धावस्था के कारण, आगरा मे ही विराजमान थे, इससे उनके सम्पर्क मे आने का काफी सुअवसर प्राप्त हुआ। महाराज श्री जी की वाणी मे काफी ओज एवं माधुर्य था। त्याग और तप की तो वह साक्षात् मूर्ति ही थे। कैसी भी विपरीत परिस्थिति हो, परन्तु कभी उनमे क्रोध देखने मे नही आया। जब-जब दर्शनो का अवसर मिलता, सदैव माला उनके हाथ मे देखने मे आती। वह जप मे ही अधिकतर सलग्न रहते थे। उनकी सरल और शान्त प्रकृति के कारण उनके श्री मुख पर भी, शान्तिमय ओज की अनुपम छटा विद्यमान रहती थी।

❀ शीलवान, महान् सन्त

—आज महाराज श्री जी पार्थिव रूप मे हमारे सम्मुख नही हैं, परन्तु उनकी शान्तिमय मूर्ति सदैव नेत्रो के सामने ही ज्ञात होती है। उनका सरल वाणी मे दिया हुआ उपदेश तो कभी भी विस्मृत हो ही नही सकता। नवयुवको को वे सदा आध्यात्मिक ग्रन्थो के स्वाध्याय की प्रेरणा देते रहते थे। क्षमा और समभाव के तो वह साक्षात् अवतार ही थे। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

ज्ञानी ध्यानी सजमी, दाता सूर अनेक।
जपिया तपिया बहुत हैं, शीलवन्त कोई एक॥

सो महाराज श्री जी बालब्रह्मचारी और शीलवान महान् सन्त थे। एक आदर्श महान् सन्त, पञ्चत्व को प्राप्त होने पर भी अमर ही हैं।

—उनके सुयोग्य शिष्य श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज, श्री श्रीचन्द्र जी महाराज तथा श्री हेमचन्द्र जी महाराज आदि भी आशा है, अपने आदर्श गुरुदेव के पद्चिन्हो पर चल कर, महान् यश को प्राप्त करें, बस यही शुभ कामना है।

—बेलनगंज, आगरा · उत्तर-प्रदेश : १३—११—६०

[५६]

प्रेरणाशील जीवन :

श्री सितावचन्द जी जैन

—श्री सितावचन्द जी जैन, मानपाडा श्री संघ के सतत अध्यवसायी कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आप संघ के मंत्री हैं। सामाजिक कार्यों में आप की स्वाभाविक रुचि है और इस ओर प्रयत्न शील रहते हुए आप समाज-सेवा में अपना सक्रिय योगदान देते ही रहते हैं। वैसे स्वभाव से भी आप धार्मिक प्रवृत्ति के सज्जन हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के आप निकट सम्पर्क में रहे हैं। और समय-समय पर आप उन की सेवा का लाभ भी लेते ही रहे हैं। उनकी पुण्य स्मृति में, प्रस्तुत लेख में आपने उनके प्रेरणाशील, सद्‌गुणी जीवन का स्मरण किया है जो अगले पृष्ठों में, उन्हीं के शब्दों में दिया जा रहा है। आशा है पाठक गण इसे पढ कर लाभान्वित होंगे ही।

—सम्पादक

❀ प्रेरणाशील जीवन

—इस धरा पर अनादि काल से मनुष्य जन्म लेता आया है। लेकिन उनमे से विरले ही मनुष्य वह आलोक छोड़ जाते हैं, जो भविष्य मे आने वाले मानव-जीवन को उस आलोक से आलोकित करते रहते हैं। वही जीवन धन्य माना जाता है, जिसमे से सद्गुणों की सुगन्ध प्रसारित होती रहती है, जो अखिल विश्व मे अपने आदर्शमय जीवन की वह सुरभि फैलाता है, जिसको ग्रहण करने वाला व्यक्ति अपने कलुपित जीवन को त्याग कर, अपने जीवन के अन्तर्हित सद्गुणो को पहचान जाता है, और अपने जीवन के लक्ष्य—अमरत्व की प्राप्ति मे, एक सच्चे साधक के रूप मे बढ़ता ही जाता है।

—उन अनेको महान् विभूतियों मे से, जिन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज एव राष्ट्र को जागृत करने मे और धर्म के प्रचार एव प्रसार में ही व्यतीत किया—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का वह क्रांतिकारी, शान्ति दायक, प्रेरणाशील जीवन हमारी स्मृति को अपनी ओर बरबस खीच लेता है। यद्यपि आज वे हमारे बीच नही रहे; तथापि उनकी कीर्ति रूपी स्मृति सदैव ही समाज के पथ-भ्रष्ट साधकोंका पथ प्रदर्शन करती रहेगी।

❀ मानपाड़ा श्री संघ के पथ-प्रदर्शक

—पूज्य गुरुदेव की पुण्य-स्मृति मे प्रकाशित होने वाला यह स्मृति-ग्रन्थ, उनकी अमर कीर्ति को अक्षुण्ण रखने के लिए एक सराहनीय प्रयत्न है। इनसे उनके विशिष्ट एवं महान् जीवन की विविध विशेपताएँ सहज ही समाज के सम्मुख आ जाती हैं। यह स्मृति-ग्रन्थ आने वाली पीढी का पथ-प्रदर्शक बने, यही मेरी अभिलाषा है।

—मानपाडा श्री संघ का २५ वर्ष से व्यवस्थापक होने के नाते मैं गुरुदेव के काफी निकट सम्पर्क मे रहा। यह मेरा सौभाग्य है कि गुरुदेव की सेवा का लाभ मुझे, समय-समय पर मिलता ही रहा है। गुरुदेव मे अनेको विशेपताएं अन्तर्हित थीं, जो व्यक्ति को सहज ही

अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। उनका सरल एवं सयमी जीवन हमारे लिए एक आदर्श है।

—गुरुदेव का जीवन विशेषताओं का ऐसा भण्डार था, जहाँ गुण ही गुण थे। आगरा नगर मे वे अपने अन्तिम १० वर्ष के लम्वे कार्य-काल, मे सदैव ही समाजोत्थान कार्यो मे प्रयत्नशील रहे और अपनी संयम-साधना मे वे सदैव जागरूक रहे। आपने समय-समय पर अपनी मधुर-ओजस्वी वाणी से समाज को जागृत किया। मानपाडा श्री संघ के विकास मे आने वाली बाधाओं को दूर करते हुए, आप समय-समय पर श्री संघ को साधु-मर्यादा मे उचित सलाह देते रहते थे। श्री सघ के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए गुरुदेव के विचार एव परामर्श का समय-समय पर मुझे लाभ मिलता ही रहा। श्री सघ को जागृत करने मे आपका प्रयास सराहनीय रहा।

❀ सरल संयमी जीवन

—गुरुदेव सरलता के सौम्य रूप थे। उन के विचार, वाणी और कार्य मे सरलता एव सयम का झरना बहता रहता था। जो उनके विचार में था, वही उन की वाणी मे था और जो उन के विचार एवं वाणी मे था, वही उनके कार्यो से परिलक्षित होता था। ऐसी त्रिगुण विशेपता विरले ही जीवन मे मिलती है। उनका विचार था कि समाज मे सर्वत्र शान्ति तथा एकता वनी रहे। यदि समाज के कार्यों में कभी विभेद उत्पन्न हो जाता था तो गुरुदेव, अपने मधुर विचारो से उस को दूर कर देते थे। वृद्ध हो या जवान, सभी के लिए उनका प्रेम एकसा था।

—नवयुवको एव वच्चो को वे सदैव ही प्रेरणा देते रहते थे। आज मानपाड़ा स्थानक में वच्चों की वह मण्डली दिखाई नही देती, जो सदैव ही गुरुदेव को घेरे रहती थी, तथा धर्म-ध्यान करती रहती थी। वच्चो से आप का प्रेम, आपके मधुर एवं सरल स्वभाव का ही परिचायक था। जहाँ आपके जीवन मे इतनी सरलता

थी, वहाँ त्याग भी उत्कृष्ट रूप मे था। आपने साधना-काल मे अनेको लम्बी-लम्बी तपस्याएँ भी की। जीवन को तप और सयम की कठोर साधना से भावित करके, आपने समाज के समक्ष एक आदर्श उपस्थित किया था। यद्यपि आप शरीर से वृद्ध अवश्य थे; तथापि आप के शरीर में वह कान्ति विराजमान थी, जो आप के संयमी तथा तपस्वी जीवन की परिचायक थी। अपनी बीमारी के काल मे, कभी भी आपने, अपने दुःख को व्यक्त नही किया। शरीर मे महान् वेदना होते हुए भी आपकी वाणी मे मधुरता ही बनी रही।

—गुरुदेव का जीवन एक सच्चे साधु का जीवन था। आप का अभाव सदैव ही साधु समाज एवं श्री सघ को खटकता रहेगा। जिसकी पूर्ति सर्वथा असम्भव है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति आपके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करता रहे, तथा समाज एवं राष्ट्र के कार्यो मे दत्त चित्त रहे, यही मेरी आकाक्षा है।

—मोतीकटरा, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
२२—१२—६०

[५७]

सरलता एवं सौम्यता के ज्वलंत प्रतीक :

श्री रतनलाल जी जैन

—श्री रतनलाल जी जैन, लोहामण्डी आगरा के उत्साही सज्जन हैं। समाजोत्कर्ष के कार्यों में आप अच्छा खासा रस लेते हैं और उन में अपना सक्रिय सहयोग भी देते ही रहते हैं। श्री एस. एस. जैन संघ लोहामण्डी आगरा के आप मन्त्री पद पर कार्य कर रहे हैं। श्री वसन्तलाल जी जैन के आप सुपुत्र हैं।

—सरलता एवं सौम्यता के ज्वलन्त प्रतीक, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से आप वर्षों से परिचित रहे हैं। उन के पावन चरणों में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, आपने उन के कुछ विशिष्ट गुणों का स्मरण भी किया है। वे कौन से गुण हैं ? और आप की श्रद्धाञ्जलि में क्या कुछ विशेषता है ? इस का पता तो पाठक गण पढने के पश्चात् ही लगा सकेंगे। पाठकों के अनुशीलन-परिशीलन के लिए, आप की श्रद्धाञ्जलि अगले पृष्ठों में प्रस्तुत की जा रही है।

—सम्पादक

❀ सरलता एवं सौम्यता के ज्वलन्त प्रतीक

—सम्पूर्ण कुम्भो न करोति शब्द मर्धो घटो घोपमुपैति नूनम् ।
विद्वानु कुलीनो न करोति गर्व गुणैर्विहीना वहु जल्पयन्ति ।।

अर्थात्—जिस प्रकार भरा हुआ घड़ा शब्द नही करता, अधभरा घड़ा ही बोलता है। उसी प्रकार विद्वान् एव कुलीन पुरुप अभिमान नही करते, वल्कि गुण हीन पुरुप ही व्यर्थ का प्रलाप करते रहते है।

—चारित्र चूड़ामणि, पण्डित रत्न श्री ऋपिराज जी महाराज के परम प्रिय शिष्य पूज्यपाद गणी श्री श्यामलाल जी महाराज सरलता सौम्यता एव सहिष्णुता के ज्वलन्त प्रतीक थे। अनेक वार मैने आप श्री जी के दर्शन किए है। सागर से शान्त, गम्भीर एव अथाह रत्न राशि के आगार ; जिन शासन के सजग प्रहरी श्री श्यामलाल जी महाराज, देव तुल्य महामानव थे। मुनियो मे वे एक श्रेष्ठ मुनि रत्न थे।

❀ धर्मानुरागी मुनिराज

—वे एक धर्मानुरागी मुनिराज थे। वाल्यावस्था से ही जैन धर्म के प्रति उनके निश्छल एव निष्कपट मन मे अटूट-अपरमित श्रद्धा-भक्ति थी। केवल ९ वर्प की अवोध अवस्था मे ही आपने चारित्र चूड़ामणि पण्डितरत्न पूज्यपाद श्री ऋपिराज जी महाराज के पावन चरणो मे, अपने आप को अर्पित कर दिया था। आत्म-समर्पण की उस मगलमय वेला मे, आध्यात्मिक जीवन की जो ज्योति प्रज्ज्वलित हुई, वह अनवरत जीवन की अन्तिम सास तक जैन धर्म का पवित्र प्रकाश फैलाती रही।

—वाल जीवन में ही वह जिन शासन के सजग प्रहरी के रूप मे जिस प्रकार प्रकट हुए, यह दैवी चमत्कार का ही एक अद्भुत उदाहरण था। यद्यपि श्री श्यामलाल जी महाराज को गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज की छत्र-छाया मे रहते-रहते छ-सात साल व्यतीत

[५८]

वे शान्त स्वभावी थे :

श्री विजयसिह जी जैन—दूगड—

—श्री विजय सिह जी जैन—दूगड़—आगरा मानपाडा जैन श्री संघ के एक कर्मठ कार्यकर्ता हैं। संघ एव सन्त-सेवा आप बड़े ही अनन्य भाव एवं कर्तव्य निष्ठा के साथ करते हैं। वैसे तो आप मूल निवासी-वहरोड़-के हैं, परन्तु अब तो अनेक वर्षों से आगरा ही रह रहे हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की आपने अनन्य भाव से सेवा की है, उन के अन्तिम चरणों तक आप उन के सम्पर्क में रहे हैं। फलतः उन शान्त स्वभावी महापुरुष की जिस सरलता एवं भद्रता से आप विशेष रूप में प्रभावित हुए हैं, उसी का जिक्र प्रस्तुत श्रद्धाञ्जलि परक लेख में आप ने किया है। साथ ही श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के, श्री गणी जी महाराज-कहलाने के इतिहास पर भी आप ने अच्छा प्रकाश डाला है।

—सम्पादक

❀ शान्त स्वभावी

—श्रद्धेय वयोवृद्ध मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज, जिनका कि स्वर्गवास अभी हाल मे ही हुआ है, बड़े ही शान्त-स्वभावी मुनिराज थे, बडे ही सरल प्रकृति के भद्र सन्त थे। ऐसी प्रकृति वाले सन्त विरले ही देखने मे आते हैं। उनका शान्त स्वभाव, उनकी सरल प्रकृति और उनकी स्वाभाविक भद्रता, उनके महान् व्यक्तित्व को सबसे अलग बनाए हुए थी, जो सामान्य साधको मे सहज ही अलग से पहिचाना जा सकता था। उनके हृदय की शान्ति, उनके सौम्य एव शान्त मुख मण्डल पर झलका करती थी। उनकी सरलता, उनकी सरल एव मधुर वाणी से प्रकट हुआ करती थी। और उनकी भद्रता, उनके सीधे-सादे, निश्छल कर्म मे प्रत्यक्ष हो जाया करती थी। उनकी ये सद् विशेषताएँ बनावटी नही थी, बल्कि ये तो उनमे स्वाभाविक थी, नैसर्गिक थी, और थी उनको उनकी प्रकृति के द्वारा सहज-सुलभ। यही कारण था कि वे सबको, सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लिया करते थे।

—श्रद्धेय महाराज श्री जी अनेक वर्षों से आगरा ही विराजते रहे हैं। फलत. उनकी सेवा का अवसर-अक्सर पडता ही रहा है। उन्हे निकट से देखने और उनकी सद् विशेषताओ को अच्छी तरह परखने के मौके भी मिलते ही रहे हैं। इसीलिए ऊपर वर्णन की गई उनकी कुछ सद् विशेषताएँ, अधिकार पूर्वक लिखी गई हैं।

❀ गणावच्छेदक

—श्रद्धेय मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज को सम्वत् १९९३ विक्रम-नारनौल-मे समस्त श्री सघ के द्वारा गणावच्छेदक का महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किया गया था। तभी से आप-गणी श्री जी महाराज-के शुभ नाम से प्रख्यात हुए।

सादडी साधु सम्मेलन के महत्त्वपूर्ण-श्रमण सघ-के निर्माण के समय, पदवी दान यज्ञ मे, अपनी शास्त्रीय-गणी-पदवी को समर्पण कर देने के पश्चात् भी, जन वृन्द आपको गणी श्री जी के नाम से ही सम्बोधित करता रहा।

—लेकिन आप तो इतने नम्र थे कि आपने अपने मुख से कभी नही कहा कि मैं गणी हूँ। किसी भी अपरिचित से परिचय पूछे जाने पर, आप अपना छोटा सा नाम मात्र-श्यामलाल-ही बतलाया करते थे। यही आपकी सबसे बड़ी महत्ता थी।

—आज श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज, हमारे सामने प्रत्यक्ष रूप मे नही रहे, लेकिन उनकी जीवनोपयोगी शिक्षाएँ तथा उनके जीवन की सरलता, भद्रता तथा शान्ति एव नम्रता आदि सद् विशेषताए हमे सदैव चेतन रखती रहेगी। बस इन्ही शब्दो के साथ मै उस स्वर्गीय आत्मा को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पण करता हूँ।

—नमकमण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :

३०—१०—६०

[५९]

मूक श्रद्धाञ्जलि :

श्री बहादुर सिंह जी-सुजन्ती-

—श्री बहादुर सिंह जी-सुजन्ती-मोतीकटरा, आगरा के एक धर्मनिष्ठ सज्जन हैं। समाज के आप वर्षों कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं। समाज में आप नेताजी के नाम से प्रसिद्ध हैं। श्री इन्द्रचन्द्र जी सुजन्ती के आप सुपुत्र हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से, आप वर्षों से परिचित रहे हैं और उनके सरल जीवन से प्रभावित भी। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की पुण्य स्मृति में आपने उन को अपनी मूक श्रद्धाञ्जलि समर्पित की है। प्रस्तुत श्रद्धाञ्जलि में आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की कुछ विशेषताओं का स्मरण भी किया है। वह विशेषताएँ कौन सी हैं ? और यह मूक श्रद्धाञ्जलि क्या कहती है ? यह सब अगले पृष्ठों में पढ़िएगा।

—सम्पादक

❀ प्रसन्न मुद्रा

—यह एक ध्रुव सत्य है कि स्वर्गीय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के सम्पर्क मे रहने का, कई वर्षो तक, इस सेवक को भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने उनको सदैव ही अत्यन्त शान्त मुद्रा तथा हँसमुख मुखारविन्द मे ही पाया। कभी भी उनके चेहरे पर विषाद की रेखा या नाराजी की झलक दृष्टिगोचर नही हुई। वार्तालाप के समय उन्हे किसी के प्रति भी आक्षेपयुक्त भाषा का प्रयोग करते हुए नही देखा। वह सदैव प्रसन्नमुद्रा मे ही विचरण करते थे। वे प्रत्येक आने वाले दर्शनार्थी बन्धु से स्नेह एव प्रेम का मृदुल व्यवहार करते थे।

❀ बाल दुलारे

—उनका बालको पर विशेष प्रेम रहता था। उनके दुःख-तकलीफ को सुनकर उनको बडा कष्ट होता था। उनकी आत्मा बडी ही सरल तथा कोमल स्वभाव की थी। वह चाहते थे कि सभी बालक वृन्द उनसे कुछ न कुछ धार्मिक शिक्षा तथा ज्ञान प्राप्त किया करे। जिससे उन्हे अपने उज्ज्वल धर्म के प्रति दृढ आस्था एव अडिग विश्वास उत्पन्न हो। वे बच्चो के दुलारे थे। उन्हे बच्चों से प्रेम था और बच्चो को उनसे।

❀ कुछ विशेषताएँ

—श्री गणी जी महाराज बालब्रह्मचारी थे। उन्होंने अपने जीवन मे ५० वर्ष से ऊपर संयम का आराधन किया और अन्तिम समय मे पण्डित मरण प्राप्त किया। ऐसी विशेषताएँ मानव को सौभाग्य से ही प्राप्त होती हैं। उनका निधन समाज की सबसे बड़ी क्षति है।

—इस आगरे शहर को बड़ा गौरव है कि श्री गणी जी महाराज का देवलोक इसी शहर मे हुआ, जबकि उनकी मातृभूमि भी यही जिला आगरा है। यहाँ से लगभग १५ मील दूर-सोरई-गाँव मे उनका जन्म हुआ था। इसके साथ एक विशेषता यहाँ और भी है, कि उनकी पुण्य-स्मृति मे यहाँ एक छोटा सा भव्य स्मारक भी बन गया है जो उनकी याद, आने वाली पीढी को सैकड़ों वर्ष तक दिलाता रहेगा। किन्तु सेवक तो इससे भी अधिक आशावादी है और आशा करता है कि स्मारक का असली ध्येय तो तभी सुरक्षित एव चिरस्मरणीय रह सकेगा, जबकि उनके पण्डित एवं विद्वान् शिष्य-प्रशिष्य, उनकी विमल-कीर्ति-पताका चहुँ दिशि फहराने मे सफलता प्राप्त करेंगे। ऐसी मेरी शुभ कामना है, और शाशनदेव इसे अवश्य ही पूरा करेंगे। इन्ही चन्द शब्दो के साथ, मैं अपनी मूक श्रद्धाञ्जलि गुरु-चरणो मे समर्पित करता हूँ।

मोतीकटरा, आगरा · उत्तर-प्रदेश ·
२३—१२—६०

[६०]

अहिंसा के उस पुजारी के प्रति :

श्री सोहनलाल जी जैन

—श्री सोहनलाल जी जैन, लोहामण्डी, आगरा के एक अध्यवसायी कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आप पी. सी. सी. कांग्रेस कमेटी लखनऊ के सम्माननीय सदस्य हैं। साथ ही शहर कांग्रेस कमेटी के आप सभापति भी रह चुके हैं। सामाजिक कार्यों में भी आप अच्छी खासी दिलचस्पी रखते हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को आप ने काफी निकट से देखा है। उस अहिंसा के पुजारी की अनेक सद् विशेषताओं से आप प्रभावित रहे हैं। इसी से आपने उन की कुछ विशेषताओं का जिक्र इस लेख में भी किया है। आपने जो श्रद्धाञ्जलि के विभिन्न फूल उस महापुरुष को चढ़ाए, वे ही प्रस्तुत लेख में शब्दों का रूप दे कर पाठकों के लिए, सजा-सवार कर रख छोड़े हैं।

—सम्पादक

❀ महान् व्यक्ति

—संसार मे मानव जन्म लेते हैं और विदा भी होते रहते हैं। जो आते हैं, वे जाते भी हैं ; परन्तु महान् व्यक्ति वे है, जो जाने के बाद भी अमर-कीर्ति इस क्षण भंगुर संसार में छोड जाते हैं। ऐसे महामानव जन्म लेते हैं मानव-कल्याण के लिए, तथा समाजोत्थान के लिए। वे अपने जीवन को सद्-विशेषताओ के द्वारा महान् बना लेते हैं तथा महानता के उसी आदर्श को जनता के सामने रख कर, उनको उस पर चलने की प्रेरणा देते रहते हैं।

—ऐसे ही महान् व्यक्ति जो भगवान् महावीर के अहिंसा-संदेश को संसार मे फैलाने के लिए, हमारे सामने आए, वह थे, महामानव श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज। हमारे नगर का यह बडा गौरव है कि ऐसे महापुरुष, सरल स्वभावी, सन्त का इसी आगरा के सन्निकट-सोरई-ग्राम मे जन्म हुआ।

❀ अहंकार रहित

—श्रद्धेय मुनि जी को अपनी विशेषताओ का बिल्कुल भी अहंकार नही था। वे त्यागी थे, परन्तु अपने त्याग अथवा तप का प्रचार वे कभी भी नही करते थे। सरलता के साथ, प्रचार एवं अहंकार भावना से दूर रह कर, कर्म-क्षेत्र मे निरन्तर आगे ही बढ़ते रहना, उनके जीवन का विशेष कार्यक्रम था। आगरा क्षेत्र पर श्रद्धेय मुनि जी की विशेष कृपा दृष्टि रहती थी। मेरा श्रद्धेय मुनि जी से करीब १०-१२ वर्षो से निकट का सम्पर्क था। अपनी बात को वे बड़ी ही सरलता के साथ इस प्रकार से सुव्यवस्थित ढंग से जनता के सामने रख देते थे, कि सुनने वालो के हृदयो पर उसका गहरा और अमिट प्रभाव पड जाता था। दूसरे को बडे ही मृदु एवं सरल ढंग से समझाने

को कला उन मे विद्यमान थी। यही कारण था कि सभी को आपके प्रति एक आकर्षण, एक खिचाव सा रहता था।

—उनके जीवन मे सौम्यता, सेवा, सरलता और सरसता-आदि सद्गुण सदैव विद्यमान रहे है। कुछ वर्षो से उनका स्वास्थ्य कुछ ढीला-ढाला सा रहने लगा था; परन्तु अपनी धार्मिक क्रियाओ मे वे कभी ढील नही करते थे। धैर्य, उत्साह, एव साहस की कमी अन्त तक भी उनके जीवन से नही झलकी। वे उसी प्रकार से सतर्क और सावधान रह कर अपना कर्त्तव्य पालन अन्त तक करते रहे।

❀ सुयोग्य शिष्य

—श्रद्धेय मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज, एक सुयोग्य गुरु के सुयोग्य शिष्य थे। पण्डितरत्न पूज्य गुरुदेव श्री रत्नचन्द्र जी महाराज, जिनका आगरा पर महान् उपकार है, उनकी ही शिष्य परम्परा मे से आप थे। जिस प्रकार श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज ने, भगवान् महावीर के दिव्य अहिंसा-सन्देश को घर-घर मे फैलाया उसी प्रकार उनकी सुयोग्य शिष्य मण्डली भी, अपने सद्गुरुदेव के ही चिन्हो पर चलकर, गुरुदेव के सन्देश को निरन्तर आगे बढा रही है।

❀ श्रद्धाञ्जलि के फूल

—अन्त मे इसी आगरा नगर मे ७० वर्ष की आयु मे आपने अपनी अन्तिम यात्रा, जनता को सत्य-अहिंसा का सन्देश देते हुए समाप्त कर दी। इन्ही शब्दो के साथ, ऐसे तपस्वी, यशस्वी जैन मुनिराज, उस महामानव श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज के चरणो मे, मै अपनी श्रद्धाञ्जलि के फूल भेट करता हूँ।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर प्रदेश :
२—११—६०

[६१]

पूज्य गुरुदेव की स्मृति में :

बोहरे, श्री रामगोपाल जी-महेश्वरी-

—बोहरे, श्री रामगोपाल जी-महेश्वरी-एक गुणग्राहक, उदारहृदय सज्जन हैं। आप अजैन कुलोत्पन्न होते हुए भी, जैन धर्म एवं जैन सन्तों के प्रति आस्था, श्रद्धा एवं अनुराग रखते हैं। वैसे आप आगरा शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से हैं। म्युनिसिपल कार्पोरेशन आगरा के आप कौन्सलर हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के अनेक बार आप ने दर्शन किए हैं और उनके सरल तपस्वी जीवन से आप प्रभावित भी रहे हैं। उन की पुण्य स्मृति में आप ने पूज्य गुरुदेव को बडी ही भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित की है। जिसे उन्हीं के श्रद्धा-निष्ठ शब्दों में अगले पृष्ठों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

❀ अविस्मरणीय दिन

—मुझे आज अपने व्यथित हृदय से, एक महान् आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने का अवसर प्राप्त हुआ है। इसके लिए मै अपने को धन्य समझता हूँ। पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास, आगरा महानगरी की मेरी ही गली मानपाड़ा मे स्थित जैन स्थानक मे, मिति वैसाख शुक्ला दशमी शुक्रवार, सम्वत् २०१७ को हुआ था। यह दिन जैन समाज के हृदय पर दुःख की छाप छोड़ गया है। इसी दिन ने पूज्य गुरुदेव को हम लोगों से छीन लिया है, अतः इस दिन को हम कभी भी नही भूल सकते।

❀ सद्गुणी गुरुदेव

—पूज्य गुरुदेव बड़े ही सरल एव सौम्य प्रकृति के सन्त थे। जिन्हे देख कर, प्रत्येक व्यक्ति के हृदय मे उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जाती थी। वे इतने मृदुभाषी एवं हँसमुख थे कि उनके दर्शनो को आने वाला व्यक्ति, अपने दु.ख-दर्द को भूल जाता था। मुझे केवल कुछ क्षण का ही, ऐसे महान् व्यक्ति के दर्शन एवं वार्तालाप करने का अवसर मिला है, और उसी के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि पूज्य गुरुदेव में मानवीय सद्गुण कूट-कूट कर भरे थे।

❀ उच्चकोटि के धर्मोपदेशक

—पूज्य गुरुदेव उच्चकोटि के धर्मोपदेशक थे। उन्होने अपने बाल्यकाल अर्थात्—६ वर्ष की अल्पायु मे ही पण्डितरत्न श्री ऋषिराज जी महाराज की चरण-सेवा स्वीकार कर ली थी। उन्ही से आपने उपदेश व ज्ञान और विद्या का अपार भण्डार प्राप्त करते हुए, १६ वर्ष की अवस्था मे जैन साधु-दीक्षा ग्रहण कर ली। पूज्य गुरुदेव का जन्म स्थान, आगरा के निकट का ही मोरई नामक ग्राम है, जहाँ आप एक क्षत्रिय परिवार

मे उत्पन्न हुए थे। चारित्र चूड़ामणि पण्डितरत्न श्री ऋषिराज जी महाराज के सुशिष्य होने के कारण आप परम विद्वान्, महान् उपदेशक और जैन धम के प्रचारक थे।

❀ तपस्वी सन्त

—पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन काल के ५४ वर्ष संयम, जप, तप, साधना मे व्यतीत किए। और अपने ज्ञान द्वारा जैन धर्म का प्रचार और प्रसार किया। आपके सदुपदेशो से हजारो-लाखो व्यक्तियों ने लाभ उठा कर आत्म-कल्याण किया। आज के युग मे ऐसे तपस्वी, यशस्वी एवं मनस्वी साधु का होना अत्यन्त ही दुर्लभ है। जिसने अपने जीवन के ७० वर्षों मे से ५४ वर्ष एक तपस्वी साधु के रूप मे व्यतीत किए हो। जिन्होंने संसार की समस्त सुख-सुविधा को त्याग कर, आत्म-चिन्तन एवं जन-कल्याण मे ही अपना समय व्यतीत किया हो।

—मुझे बचपन से ही जैन धर्म से प्रेम है। और यही कारण है कि मै अपने बाल्यकाल से ही, जैन मुनियों के सदुपदेश सुनने के पश्चात् जमीकन्द का प्रयोग नही करता। वैसे मैं एक महेश्वरी कुल मे उत्पन्न हुआ हूँ।

—मानपाडा, आगरा . उत्तर-प्रदेश :

२१—१२—६०

[६२]

अपने आराध्य के पावन चरणों में :

श्री लालमणि जी-वाल्मीकि-

—श्री लालमणि जी-वाल्मीकि, एक सद्गुणी एवं सरल हृदय के सज्जन हैं। आप को जैन धर्म से गहरा अनुराग है और जैन सन्तों के प्रति अटूट श्रद्धा। आप अपनी बिरादरी में काफी प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। समाज-कल्याण एवं सद्गुण-प्रचार कार्य में आप सक्रिय भाग लेते रहते हैं। सरल एवं मधुर व्यवहार और अहिंसा परक कांग्रेस और गांधीवाद से प्रभावित श्रेष्ठ विचार, आपके व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव से आप को काफी स्नेह था, और थी उन के प्रति गहरी निष्ठा एवं आस्था। उन के पावन चरणों में आप ने भी अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित की है और अपने आप को गौरव शाली अनुभव किया है। अगली पंक्तियों में आप की श्रद्धाञ्जलि दी जा रही है।

—सम्पादक

❀ मेरे आराध्य

—श्री श्री १००८ पूज्य प्रवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के पावन चरणो मे, श्रद्धाञ्जलि अर्पण करने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हो रहा है; इस लिए मै अपने आपको गौरवशाली समझता हूँ। श्री गणी जी महाराज के लिए, मेरे हृदय मे गहरी श्रद्धा है। उनकी पावन शिक्षाएँ मेरे हृदय मे सुरक्षित है। उनके शुभ दर्शन एवं पावन चरण स्पर्शन से तो मै कृतार्थ ही हो उठा हूँ। उनके महान् जीवन को देख कर, तथा उनकी पावन शिक्षाओ को सुन कर, मुझे जो सच्चा लाभ पहुँचा है; उसका वर्णन करने की शक्ति मेरी जिह्वा मे नही है। उसे तो बस मेरा हृदय ही जानता है। मेरी दशा तो उस भील के समान है, जिसे सिवाय वन-फलो के और कुछ खाने को ही नही मिला था किन्तु एक दिन किसी राजा की कृपा से उसे सुन्दर-सुन्दर, स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ खाने का अवसर प्राप्त हुआ। तो वह जंगल मे पहुँच कर अपने साथियो को किस प्रकार बतलाए कि उसने क्या-क्या खाया और क्या-क्या देखा ? जिस प्रकार वह भील सब कुछ जानते हुए भी, बयान नही कर सकता; उसी प्रकार मेरा हृदय भी, श्री गणी जी महाराज की प्रभावशाली महान् विशेषताओ को जानते हुए भी वर्णन कर पाने मे सर्वथा असमर्थ है।

—फिर भी मै इतना तो कह ही सकता हूँ कि जो शान्ति मुझे श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज के चरणों मे बैठ कर तथा उनकी पावन शिक्षाओ को सुन कर प्राप्त होती था, वह अपूर्व थी। जो सुख और जो सन्तोष मैं उनके दर्शन पाकर अनुभव करता था, वह अनुपम था। वे मुझ पर बड़ी ही कृपा और सात्विक स्नेह रखते थे। मैं जब भी उनके चरणो मे पहुँचता, तो वे मुझे सदा-पण्डित लालमणि जी- कह कर सम्बोन्धित किया करते थे। उनके सरल स्वभाव एवं मधुर व्यवहार को मैं कैसे भुला सकता हूँ ? वह तो मुझे जीवन पर्यन्त स्मरण रहेगा।

—मै उनकी किस-किस विशेषता का वर्णन करूं ? मै तो उनकी कृपाओ का आभारी हूँ और हमेशा रहूँगा। मै ही क्या ? उनके महान् उपकारो को तो जैन तथा जैनेतर समाज आजन्म स्मरण रखेगा। उनके महान् जीवन तथा उनकी अनमोल शिक्षाओ को युगो-युगों तक भारतवर्ष नही भुला सकेगा। उन्होने अपने जीवनकाल मे मानव समाज पर जो-जो उपकार किए है, उनके ऋण से उऋण हो सकना सर्वथा असम्भव है। ऐसे जन-मन के आराध्य देव, सरलात्मा सन्त का वियोग हो जाना, मै तो अपना अभाग्य ही समझता हूँ। इस बात का मुझे गहरा दुःख है कि उनका दामन मेरे हाथ से छूट गया है। खैर कोई बात नहीं मै तो आशा वादी हूँ और इस प्रयत्न मे प्रयत्नशील हूँ कि उनको अब नही, तो अगले जन्म मे तो अवश्य ही प्राप्त कर लूँगा। वे प्रत्यक्ष शरीर से न सही, परन्तु गुण शरीर एवं यशः शरीर से तो मेरे हृदय मे मौजूद है ही। और इस रूप में तो वे मेरे हृदय मे जन्म जन्मान्तरों तक मौजूद रहेगे ही। पहले मैं उनके पावन दर्शनों तथा अमृत वाणी से प्रेरणा प्राप्त करता था। अब मै अपने हृदय मे सुरक्षित उनकी पावन स्मृतियो एव अमर सन्देशो से प्रेरणा प्राप्त करता रहूँगा। बस अब तो यही कामना है कि इस रूप मे उनका साथ, मेरे जीवन से कभी न छूटे।

—लोहामण्डी, आगरा · उत्तर-प्रदेश :

२३—१२—६०

[६३]

पूजनीय सन्त की सेवा में :

श्री रोशनलाल जी जैन

—श्री रोशनलाल जी जैन पञ्चनद-प्रदेश के ग्राम-मजीठा-जिला अमृतसर के रहने वाले, एक कर्तव्य शील सज्जन हैं। यहाँ आप स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के प्रमुख व्यवस्थापक के पद पर प्रतिष्ठित हैं। आप के विचार धार्मिक एवं हृदय अत्यन्त उदार है। आप भावुक हृदय, एव सरल स्वभाव के सज्जन पुरुष हैं।

— श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपकी अत्यन्त श्रद्धा है, निष्ठा है और है एक पूज्य भावना। इन्हीं विचारों के अनुसार आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सम्बन्ध में श्रद्धाञ्जलि परक चन्द शब्द लिखे हैं; जो अगली पँक्तियों में प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

❀ पूजनीय सन्त

—सन्त, भारतीय संस्कृति का पूजनीय देवता है। सन्त एक ऐसा पूज्य-स्थल रहा है, जहाँ श्रद्धाशील हर मानव को उस के समक्ष झुकना ही होता है। मानव को, सन्त-जीवन एवं सन्त-वाणी से जीवन मे एक नयी प्रेरणा मिलती है, एक नयी दिशा प्राप्त होती है, आत्म-विकास की एक नयी स्फूर्ति हासिल होती है और कर्तव्य-पथ पर आगे बढने के लिए एक नया प्रकाश मिलता है। यही कारण है कि सन्त-जीवन जन-चेतना का श्रद्धा-केन्द्र और पूजा-पात्र बना हुआ है।

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज भी, सन्त परम्परा के एक ऐसे ही पूजनीय सन्त अभी-अभी हो चुके हैं। उन्होने आत्म-साधना का मार्ग, बहुत ही छोटी सी अवस्था मे पकड़ लिया था। संकटो एवं विघ्न और बाधाओ के बीच मे अडिग रहते हुए वे कर्तव्य-मार्ग पर सतत बढते चले गए थे। अध्यात्म-साधना तथा जप-तप की अग्निदीक्षा से स्पर्श पाया हुआ उन का व्यक्तित्व, इन दिनो और अधिक-आकर्षक, पवित्र तथा निर्मल हो चुका था। मानवीय सद्गुण उन पूज्य पुरुष के जीवन मे सहज स्वाभाविकता प्राप्त कर चुके थे। अध्यात्म-साधना के तेज से तेजस्वी बना उन का सौम्य एव शान्त मुख-मण्डल, प्रत्येक आने वाले व्यक्ति को आकर्षित कर ही लेता था। और जो एक बार भी उनके मधुर सम्पर्क में आता, उसके हृदय-पटल पर उस सत्पुरुष का एक ऐसा अमिट एव स्थायी प्रभाव अंकित हो जाता था, जो सदा-सर्वदा के लिए चिर स्थायी एव अक्षुण्ण बन जाता था।

❀ मेरा परिचय

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज से मेरा परिचय आगरा मे ही हुआ। प्रथम परिचय मे ही उन का प्रभाव मेरे मानस मे घर कर बैठा। कोई विशिष्ट परिचय-सम्बन्ध तो मेरा नही हो पाया, उनसे। परन्तु सामान्य परिचय से ही, मैं उन से काफी प्रभावित हुआ। जब भी मै उनके दर्शनार्थ गया, उन के समीप पहुँच कर मुझे एक आध्यात्मिक शान्त तथा एक अपूर्व सुख का अनुभव हुआ।

—आज श्रद्धेय पूज्य मुनिराज श्री श्यामलाल जी महाराज, हमारे बीच मे नहीं रहे। वे इन पार्थिव सम्बन्धो को तोड़ कर, एक अज्ञात दिशा की ओर प्रयाण कर गए, परन्तु उनका चमकता हुआ परोपकारी आकर्षक व्यक्तित्व, तथा उन की उपयोगी शिक्षाएँ, आज भी हमारे सामने विद्यमान हैं। उन का तेजस्वी अमिट एव चिर स्थायी प्रभाव, आज भी हम जैसे हजारो-लाखो व्यक्तियो के मानस मे सुरक्षित हैं। यही हमे अब तो कर्तव्य-दिशा का सकेत एव मानवता का मार्ग-दर्शन कराता हुआ, उन की स्मृति को युगो-युगों तक अखण्ड बनाए रखेगा। इन्ही शब्दो के साथ मै अपनी श्रद्धाञ्जलि, उस पूजनीय सन्त के प्रति अर्पित करता हूँ; और कामना करता हूँ कि उन के महान् जीवन एवं पूजनीय सद्गुणो की पुण्य स्मृति, हमारे हृदयो मे इसी प्रकार बनी रहे।

—स्टेट बैंक, आगरा उत्तर-प्रदेश
३१—१०—६०

[६४]

श्री गणी जी महाराज : एक क्रान्तिकारी व्यक्तित्व

श्री मास्टर, प्यारेलाल जी जैन-सकलेचा-

—श्री मास्टर, प्यारेलाल जी जैन-सकलेचा-मोती कटरा, आगरा के एक वयोवृद्ध सज्जन हैं। आप शरीर से वूढे होते हुए भी, जवानों का सा हौंसला और उत्साह रखते हैं। धार्मिक कार्यों में आप सदा आगे रहते हैं। नए-नए ग्रन्थों एवं पुस्तकों की स्वाध्याय का, आप का कार्य क्रम काफी निर्विघ्नता से चला करता है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के विशिष्ट व्यक्तित्व के आप परम प्रसंशक रहे हैं। प्रस्तुत लेख में आप ने उन के सफल व्यक्तित्व को एक नये ही दृष्टिकोण से देखा है। उन का वह दृष्टिकोण कौन सा है ? यह उन्हीं के शव्दों में अगली पँक्तियों में पढिएगा।

—सम्पादक

❀ क्रान्तिकारी सन्त

—सरल एवं सीधी राह पर आगे बढते रहना, इतना महत्त्वपूर्ण नही है, जितना कि ऊबड़-खाबड, पग-पग पर ठोकर लगने वाले कङ्कडो और पल-पल मे चुभ जाने वाले कण्टक समूह से आकीर्ण पथ पर बढते रहना। ऐसे कठिनतम पथ के राही, कोई विरले ही क्रान्तिकारी महापुरुष हुआ करते हैं। जीवन-क्षेत्र की सीधी और सरल राह पर चलने वाले तो अनेक साधक मिल सकते है, परन्तु त्याग, सयम एव तप के उस महा मार्ग पर विरले ही साधक यात्री दृष्टिगोचर होते है, जो विघ्न एवं बाधाओ से, कठिनाइयो से परिपूर्ण है। इस महामार्ग पर तो वे ही महायात्री आगे बढ़ सकते हैं—जो अपना सर्वस्व ही त्याग, तप एवं सयम के लिए उत्सर्ग कर दिया करते हैं। इन्हे ही संसार क्रान्तिकारी महापुरुष के नाम से सम्बोधित किया करता है।

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, एक ऐसे ही क्रान्तिकारी सन्त हुए है। जीवन के प्रथम चरण मे ही आप, इस जलते हुए महामार्ग पर कूद पडे थे, और अपने उत्कट साहस और अदम्य आत्म तेज से, इस सयम और त्याग के महा मार्ग पर आगे से आगे बढते ही गए। साधना के उस क्रान्तिकारी पथ पर चल कर, आपने आत्म-साधको के सम्मुख एक ज्वलत आदर्श समुपस्थित किया। अपने उपदेशो से जन-मानस मे, आपने एक क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। धर्म एव जीवन के प्रति रही हुई जनता की भ्रान्त धारणाओ को निर्मूल किया, और भगवान् महावीर का दिव्य सन्देश जन-जन के हृदय मे पहुँचाया। तत्कालीन समाज व्यवस्था मे जो भी कुरूढियाँ, गलत एव भ्रान्त धारणाय चल रही थी, उन पर आपने कठोर प्रहार किया और भूली हुई जनता को सम्यक्त्व के सही स्वरूप का निदर्शन कराया। अनेक स्थानो पर आपने देवी-देवताओ के सम्मुख होते हुए मूक

प्राणियो के बलिदान को रोका, और जनता को अहिंसा, करुणा, दया, एव विश्वमैत्री का पावन सन्देश दिया। अनेक स्थानो मे मृत्युभोज, श्राद्ध, गङ्गा आदि नदियो में अस्थि विसर्जन तथा अन्य भी अनेक कुप्रथाओ को आपने निर्मूल कराया। आपके ही क्रान्तिकारी सद्उपदेशो और प्रयत्नों से अनेक स्थानो मे पर्व के विशिष्ट दिनो में कतलखाने आदि हिसा जनक कार्य बन्द रहे। बहुत से सज्जनों को आपने शराब, मांस, जुआ तथा अन्य दुर्व्यसनो के त्याग कराए।

❀ ज्ञान प्रचारक महात्मा

—क्रान्तिकारी, त्यागी सन्त के साथ-साथ श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, एक सद्ज्ञान प्रचारक महात्मा थे। जनता के आध्यात्मिक ज्ञान को आप अत्यन्त उन्नत दशा मे देखने के इच्छुक थे। इस प्रयत्न मे आपने कोई कसर न उठा रखी। ज्ञान साधना के लिए समाज को आप सदैव प्रेरित करते रहते थे। इसी के परिणाम स्वरूप आप ने अनेक-अनेक स्थानो पर पुस्तकालय एव वाचनालय प्रस्थापित कराये। श्री ऋषिराज जैन पुस्तकालय एव वाचनालय-करनाल, श्री ऋषिराज जैन पुस्तकालय-एलम, और श्री ऋषिराज जैन पुस्तकालय परासोली—आज भी आप श्री जी के ज्ञान-प्रचार की अमर कहानी कह रहे हैं। जहाँ भी आप श्री जी का शुभ चातुर्मास होता, वही ज्ञान की यह प्याऊ हमेशा-हमेशा के लिए लग जाती।

—धार्मिक ज्ञान के आप कट्टर पक्षपाती थे। बच्चो मे धार्मिक सम्कार उत्पन्न करने मे आप स्वय सक्रिय भाग ले कर आदर्श उपस्थित करते थे। शताधिक बल्कि कहना चाहिए सहस्राधिक मानव गण ने आपके द्वारा धार्मिक ज्ञान का लाभ प्राप्त किया। सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल, नव तत्त्व और जैन थोकडों का, जन समुदाय को परिज्ञान कराने के लिए आप सदैव तत्पर रहा करते थे।

※ उपकारी अध्यवसायी

—श्रद्धेय गणी जी महाराज के उपकारों को जैन समाज युगो,युगों तक नही भुला सकेगा। आप अपने जीवन को किसी न किसी परोपकारी कार्य मे ही लगाए रखते थे। आगरा शहर की सभा मे, बहुत से प्राचीन हस्तलिखित एव मुद्रित अमूल्य शास्त्र और ग्रथ थे। जो यहाँ नवयुवको ने जानकारी न होने के कारण रद्दी खाने मे पटक रखे थे। आपने उनको देखा और जुट गये व्यवस्थित करने मे। सभी ग्रथों एव शास्त्रो को क्रमश सुव्यवस्थित ढङ्ग से रजिस्टर मे चढ़वाया, उनके परिचय के रूप मे बहुत कुछ बाते लिखवाई, और उनको गत्ते के डिब्बो मे, कागजो मे लपेट कर, प्रत्येक का परिचय लिखवा कर रखवाया। उनके इस निष्काम उपकार से वे शास्त्र और ग्रन्थ आज पूर्ण सुरक्षित दशा मे रहे हुए उनके अध्यवसाय की दाद दे रहे हैं। उन शास्त्रो को अव बडे-बडे विद्वान् मुनिराज पढ कर हर्ष व्यक्त करते है, साथ ही उनकी सुव्यवस्था की प्रशसा भी। परन्तु यह सव उन्ही उपकारी अध्यवसायी महात्मा की कृपा का फल है।

—अधिक क्या ? आपकी प्रकृति बड़ी शान्त और सरल रही है। आपका स्वभाव अति सुन्दर एव मधुर था। आप वच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री, पुरुष जैन या अजैन, सभी के आकर्षण के केन्द्र थे। आप सभी के हित चिन्तक थे, अत. सभी को आपमे धर्मानुराग था। आप जैन समाज के एक वहुमूल्य रत्न थे। आपके स्वर्गवास से जैन समाज को जो भारी क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना निकट भविष्य मे तो असम्भव सा ही है। अव तो समाज का यही कर्तव्य है कि वह आपके वतलाये हुए मार्ग पर चल कर, आत्म-कल्याण करे।

—मोती कटरा, आगरा : उत्तर प्रदेश :

३०—८—६०

[६५]

अविस्मरणीय महापुरुष :

श्री जादौराय जी जैन

—श्री जादौराय जी जैन; एक खुश तबीयत के धर्मनिष्ठ सज्जन हैं। श्री मास्टर, कन्हैयालाल जी के सुपुत्र हैं। श्री वीर पुस्तकालय एवं वाचनालय लोहा मण्डी आगरा के, आप सफल प्रबन्धक हैं। समाज के जिस कार्य को भी आप अपने हाथ मे लेते है, उसे बड़ी ही निष्ठा एवं कर्तव्य बुद्धि के साथ सम्पन्न करते है।

—जिस समय श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का स्वर्गवास हुआ, उस समय आप बाहर गए हुए थे। मार्ग मे जब आप को उनके स्वर्गवास के समाचार मिले तो आप ने अपनी मूक श्रद्धाञ्जलि वहाँ श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को अर्पण कर दी। इसी सस्मरण के साथ श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के जिन-जिन गुणों का स्मरण आप ने किया है, वे अगली पँक्तियों में दिए जा रहे है।

—सम्पादक

❀ प्रात. स्मरणीय सन्त

—वैसे तो जो भी प्राणी इस ससार में जन्म लेता है, उसे अपने जीवन की अवधि पूर्ण हो जाने पर, मृत्यु का आलिंगन करना ही पडता है। जो जन्मता है वह मरता है, जो खिलता है वह मुर्झाता है, जिसका उदय है उसका अस्त भी है, जो चढता है वह गिरता है, जो बनता है वह बिगड़ता है, इत्यादि ये सब प्राकृतिक ध्रुव सिद्धान्त हैं। इनमे परिवर्तन असभव है। परन्तु इसी ससार में कुछ अविस्मरणीय ऐसी भी महान् आत्माएँ हुआ करती हैं, जो इन प्राकृतिक नियमो का अपवाद होती हैं। ऐसे महामानव, मर कर भी अमर होते हैं मिट कर भी अमिट हुआ करते हैं और अस्त हो कर भी सतत उदीयमान रहा करते हैं। ऐसी महान् आत्माएँ ही संसार के वैभव, परिवार तथा परिजनो के मोहावरण को तोड़ कर, त्याग एवं साधना-मार्ग अपनाती है तथा अपने जीवन को देश, धर्म, और समाज की सेवा में लगा दिया करती हैं। यही महान् आत्माएँ चिर स्मरणीय रहा करती हैं। उन्ही का पवित्र जीवन युगो-युगो तक आदर्श एवं पूज्य रहा करता है।

—ऐसी ही महान् पवित्र आत्माओ मे, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का नाम भी, ससम्मान लिया जा सकता है। वे प्रात: स्मरणीय सन्त थे। आप श्री जी ने एक अजैन कुल मे जन्म ले कर भी जैन धर्म का गौरव बढ़ाया था। केवल नौ वर्ष की छोटी सी आयु मे ही, आप श्री जी ने त्याग एवं सयम-मार्ग अपनाने के लिए, पण्डित रत्न श्री ऋषिराज जी महाराज की पुनीत सेवा का लाभ लिया। गुरुदेव के चरणों मे बैठ कर, निरन्तर सात वर्षो तक अध्ययन एवं जप-तप और संयम-मार्ग का अभ्यास किया। तत्पश्चात् सोलह वर्ष की यौवनारम्भ अवस्था में ही आप श्री जी सन्यास मार्ग मे दीक्षित हो गए थे। सयम-साधना का महामार्ग अपना कर आप श्री जी अर्द्ध शताब्दि से भी ऊपर तक उस महामार्ग पर,

जीवन के अन्तिम श्वांस तक चलते रहे। एक सच्चे त्यागी, बाल ब्रह्मचारी, और परम तपस्वी के रूप मे आप श्री जो विख्यात रहे हैं। साधु-जीवन मे बाधाओं के झंझावात और विघ्नो के प्रबल तूफान भी आए, परन्तु आप जैसे वीर सैनानी साधक का वे कुछ न विगाड़ सके। संघर्षो की प्रवल लहरे आपसे टकरा कर लौट गई, लेकिन आप एक अचल चट्टान की भाँति अडोल रहे। प्रलोभनो की भयकर आँधियाँ भी आप को साधना-मार्ग से न उखाड़ सकी। सरलता, सादगी, प्रसन्न मुद्रा, सब को समान रूप से समझने की भावना आपके साधु जीवन की विशेषताएँ रही हैं।

❀ विनयी महात्मा

—श्रद्धेय प्रातः स्मरणीय श्री श्यामलाल जी महाराज के महान् सद्गुणशाली जीवन मे विनय एवं नम्रता को महत्व पूर्ण स्थान प्राप्त था। वे एक विनयी महात्मा थे। इधर आगरा में वे लगभग १०-११ वर्षो से श्रद्धेय पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज के साथ ही विराजमान थे। अतएव उन के शुभ दर्शनो का सौभाग्य मुझे भी मिलता रहा है। उन के श्री मुख से मैने कभी कोई कठोर शब्द नहीं सुना। श्रद्धेय पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज को उन्होने सदैव विनय एव सम्मान के साथ देखा है। एक वड़े भाई की तरह, वे उन का आदर और सम्मान किया करते थे। साथ ही छोटे सन्तो के साथ भी उनका स्नेह और नम्रता का ही व्यवहार रहता था। अपने-पराए की भेद रेखा से दूर—बहुत दूर रह कर वे सब को समान भाव से आदर देते थे। यही कारण था कि सब उन्हे श्रद्धा एवं सम्मान की दृष्टि से देखते थे। उनके अन्तिम समय मे, अस्वस्थता की दशा में, महान् दार्शनिक कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज ने भी उन की अनन्य सेवा की, महान् सन्त की इस सेवा के शुभावसर का उन्होने खूब लाभ उठाया।

❀ मूक श्रद्धाञ्जलि

—जिस समय पूज्य गुरुवर श्री श्यामलाल जी महाराज का, स्वर्गवास हुआ, उस समय मैं बम्बई के मार्ग मे, रेल मे था। बम्बई पहुँचने, पर फोन द्वारा जब यह समाचार सुना तो बस, यही सोच कर कि यहाँ किसी का बस नही चलता, सन्तोष कर लिया और वही खड़े-खड़े गुरुवर को मूक श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर दी। गुरुवर अपने पीछे- हरा भरा ससार, त्यागी एवं सुयोग्य मुनि शिष्यो-प्रशिष्यो के रूप मे छोड़ गए हैं। जो उनके स्थान का सच्चा प्रतीक है।

❀ हमारा कर्तव्य

—गुरुवर के चले जाने के पश्चात् अब तो हम सब का, उनके प्रति यही कर्तव्य-कार्य हो जाता है, कि हम उन ही के चरण-चिन्हों पर चलें। उन ही के बतलाए मार्ग का अनुसरण करे। श्रद्धेय गुरुवर जिस अध्यात्म की मशाल हमे थमा गए हैं, उस को सर्वदा ज्योतिर्मय रखे। उस का प्रकाश कभी फीका न पड़ने दे। जिस मिशन को ले कर, वे जीवन पर्यन्त कार्य करते रहे, उसी मिशन को हम आगे बढाएँ। बस यही उन के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। और तभी हम उन के सच्चे सेवक, सच्चे अनुयायी, तथा सच्चे भक्त कहला सकेंगे।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश .

२५—७—६०

[६६]

मेरी यही श्रद्धाञ्जलि होगी :

श्री पूरणचन्द जी जैन

—श्री पूरणचन्द जी जैन, एक अच्छे विचारक एवं मिलनसार धर्मिष्ठ सज्जन हैं। शरीर से वयोवृद्ध होते हुए भी आप का मन तरुणोचित उत्साह, साहस एवं जिन्दादिली से परिपूर्ण रहता है। आप आगरा रोशन मुहल्ला के निवासी हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव स्वर्गीय श्री श्यामलाल जी महाराज की पुण्य स्मृति में, आपने अपनी श्रद्धाञ्जलि, रवि ठाकुर की काव्यात्मक भाषा में लिख भेजी है। जो स्वल्प से शब्दों में होते हुए भी, अपना पृथक ही विशिष्ट स्थान रखती है। अगली पँक्तियों में प्रस्तुत श्रद्धाञ्जलि का पाठक गण समुचित रूप से अवलोकन कर सकेंगे।

—सम्पादक

❀ उस महात्मा से

—आमार माथा नत करे दाओ···· ········ (रवि, ठाकुर)

मेरा मस्तक अपनी चरण-धूलि तक झुका दो, क्योंकि वर्षों तक अन्तरात्मा की जिस आवाज को सुन कर, आज मैं अपनी मन-वीन पर गीत गाने आया हूँ, उसके मार्ग मे मेरा अहंकार आ-आकर मेरा विरोध कर रहा है। मैं वार-वार भटका हूँ, परन्तु एक आवाज मुझे लगातार खीच रही है—तुम कहाँ चले जा रहे हो ? देखो · ! ध्यान से देखो ! और मुझे लग रहा है, यह आपकी ही आवाज है, जो अनेकानेक महापुरुषो के मार्ग का अनुसरण करने वाले, आपके ही पवित्र-जीवन से आ रही है।

—हे महात्मा ! मेरे समस्त अहकार को, अपने जीवन की ज्योति मे जला दो , मुझे प्रकाश दो। मै आपके आदर्शों पर चल पाऊँ, वस, यही मेरी श्रद्धाञ्जलि होगी।

—रोशन मुहल्ला, आगरा : उत्तर-प्रदेश :

२३—११—६०

[६७]

उन के श्री चरणों में :

श्री मदनसिंह जी जैन–नाहर–

—श्री मदनसिंह जी जैन–नाहर, एक गम्भीर प्रकृति के धर्मिष्ठ सद्गृहस्थ सज्जन हैं। आप आगरा मानपाड़ा निवासी श्री अयोध्याप्रशाद जी -नाहर- के सुपुत्र हैं। आप बी कॉम हैं। लाइफ इन्श्योरेन्स कम्पनी आगरा के आप प्रथम श्रेणी के ऑफिसर हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आप की अत्यन्त निष्ठा रही है, उन के सरल जीवन से आप काफी प्रभावित रहे हैं। और अनेक वर्षों से उन के मधुर सम्पर्क में रहने से, उन की जीवन-विशेषताओं से सुपरिचित भी। उस महान् सन्त के चरणों में, आप ने भी अपने श्रद्धा-पुष्प समर्पित किए हैं। जो अगली पँक्तियों में पाठकों के लिए सजा कर रख छोड़े हैं।

—सम्पादक

❀ मेरी श्रद्धाञ्जलि

—विगत वैशाख शुक्ला दशमी, शुक्रवार, सम्वत् २०१७ विक्रम को, सरल स्वभावी, परम प्रतापी, परम तपस्वी श्रद्धेय मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज का, एक छोटी सी बीमारी के पश्चात् स्वर्गवास हो गया। इस प्रकार एक महान् साधु हमारे बीच से यकायक उठ गया। आपके स्वर्गवास से स्थानकवासी जैन श्रमण सघ की महान् क्षति हुई, जिसकी पूर्ति होना बड़ा ही कठिन है।

—आप बालब्रह्मचारी थे। आपने निश्चल एव अखण्ड रूप से चउव्वन वर्षो तक संयम का पालन किया। आपका जीवन सौम्यता और मृदुता से ओत-प्रोत था। आप त्याग व तपस्या की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। आपका जीवन सराहनीय और हम सबके लिए अनुकरणीय था। आप जहाँ कही पर भी हों, यह श्रद्धा के पुष्प सादर श्री चरणों मे समर्पित है। स्वीकार कीजिएगा।

—मानपाड़ा, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
२८—११—६०

[६८]

उस ज्योतिर्मय जीवन की याद में :

श्री डा० केदारनाथ जी जैन

—श्री डाक्टर केदारनाथ जी जैन, एक भद्र प्रकृति के सद्गुणी सज्जन हैं। सन् १९४२ से सन् १९४७ तक आप जेल में डाक्टर रह चुके हैं। १९४७ से आप मोती कटरा, आगरा में प्रैक्टिस कर रहे हैं। आप की सेवाओं से प्रभावित हो कर जनता ने आपको आगरा नगर महापालिका का सदस्य चुना है। सेवा वृत्ति और जन-कल्याण की भावना, आप के सफल व्यक्तित्व का प्रमुख अंग है। गरीबों पर आप विशेष अनुकम्पा रखते हैं, और उन्हें औषधी आदि भी अमूल्य ही वितरण करते हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से आप काफी दिनों से परिचित रहे हैं। और उन के जीवन के अन्तिम दिनों में तो आपने, उन की अनन्य भाव से वह सेवा की है, जो भुलायी नहीं जा सकती। प्रस्तुत लेख में आपने उस ज्योतिर्मय जीवन की याद में, अपने श्रद्धा भाव प्रगट किए हैं, जिन्हे अगली पंक्तियों में दिया जा रहा है।

—सम्पादक

❀ महान् आत्मा

—महान् आत्माएँ ससार मे समय-समय पर नवीन सन्देश फैलाने आती है। वह सन्देश, जो मानव को असत्य से सत्य की ओर एवं मृत्यु से मुक्ति की ओर प्रेरित करता है। इस धरा पर, समय-समय पर अनेको महापुरुषो का प्रादुर्भाव होता रहता है। ऐसे महापुरुषो का, जिन्होने अपनी अमृतमयी वाणी के द्वारा, ससार-चक्र मे फँसे हुए मानव-समाज को, उसके निर्दिष्ट लक्ष्य मुक्ति—मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। जिनका एक ही नारा रहा—जीओ और जीने दो।

—जिन महान् आत्माओ ने, अपने जीवन को त्याग एव संयम की दीप्ति से दीपित किया, जिनकी रग-रग मे मानव-कल्याण का अजस्र महान् स्रोत बहता रहा ; उन्ही महान् आत्माओ मे से एक, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज थे। यद्यपि आज उनका नश्वर शरीर, इस असार संसार मे नही रहा, किन्तु उनका कीर्ति रूपी शरीर, अनन्त काल तक मानव-समाज को मुक्ति का सन्देश सुनाता रहेगा।

❀ त्याग और संयम की पराकाष्ठा

—मैं तो बहुत थोड़े समय ही उनके सम्पर्क मे रहा। लेकिन जब भी मैं उनसे मिला, एक नयी प्रेरणा ही मुझे उनसे प्राप्त हुई। उनके विचार धार्मिक होने के साथ-साथ व्यवहारिक भी थे, जिससे जैन समाज को ही नही, अपितु अन्य अजैन बन्धुओ को भी यथेष्ट लाभ प्राप्त हुआ। उन्होने उनके क्रियात्मक श्रेष्ठ उपदेशो को ग्रहण करके जीवन का विकास किया। हरि-जनो के बारे मे भी उनके विचार, रूढिवादी न होकर, युगानुकूल सुधारवादी थे।

—उनकी बीमारी के समय, मुझे थोड़ा सा उनकी सेवा का अवसर मिला था। उस समय मैंने उनका वह सयम तथा शान्त रूप देखा, जिसे मैं अपने जीवन पर्यन्त न भुला सकूँगा। मोतीझरे का तेज बुखार, आन्त्रशोथ, दस्त तथा उदरशूल आदि असह्य व्यथाओ के होते हुए भी, मैंने उन्हे विचलित होते हुए नही देखा। बल्कि अन्तिम समय तक बड़े ही साहस एव धैर्य के साथ शान्ति पूर्वक, उन व्यथाओ को उन्हे बरदाश्त करते देखा। यही थी उनके त्याग और सयम की पराकाष्ठा। अभाग्यवश हम अपनी पूरी कोशिश करने के बाद भी, उस त्यागमूर्ति को न बचा सके और वह देवात्मा हमसे विमुख हो कर मुक्ति-पथ पर अग्रसर हो गई।

—परन्तु उनके चले जाने पर भा हमें इतना सन्तोष अवश्य है कि उस महान् आत्मा की स्मृति, सदैव ही हमारे अन्धकारमय जीवन में त्याग एवं सयम का प्रकाश फैलाती रहेगी। उस महान् आत्मा के प्रति, अपने इन मार्मिक शब्दो के साथ, मैं श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

—मोतीकटरा, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
३१—१२—६०

[६९]

वे एक सुसंस्कारी सन्त थे :

श्री वीरेन्द्रसिंह जी जैन-सकलेचा-

एम. ए. इतिहास, एम.ए. राजनीति

—श्री वीरेन्द्रसिंह जी जैन-सकलेचा, एक उत्साही एवं क्रान्तिकारी विचार के नवयुवक हैं। ओसवाल जैन समाज के आप कर्मठ कार्यकर्ता हैं, तथा श्री साधुमार्गी जैन उद्योतनी सभा मानपाड़ा, आगरा के सक्रिय सदस्य। युवकों में धार्मिक जागृति और प्रेरणा आप करते ही रहते हैं। आप इतिहास और राजनीति में डबल एम. ए. हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के काफी सम्पर्क में रहने के कारण, आप उन की सद् विशेषताओं से खूब परिचित हैं। प्रस्तुत लेख में भी आपने उन के सुसंस्कारी व्यक्तित्त्व की कुछ विशेषताओं को लेखनी का विषय बनाया है; जो उन्हीं की भावपूर्ण शैली में आगे दी जा रही हैं।

—सम्पादक

❀ महान् आत्मा

—यो तो विश्व के विशाल रगमच पर अनेको आत्माएँ, नाना प्रकार के रूपो मे हमारे समक्ष आती है और कुछ समय तक अपनी अच्छी-बुरी प्रवृत्तियों की क्रीडा दिखा कर चली जाती है कोई सुखमय जीवन बिता कर, कोई जीवन की दु खमय घडियाँ गिन कर, इस ससार से प्रस्थान कर जाती है। ससार उनका न जीना जान पाता है और न मरना। उसकी विशाल दृष्टि मे, ऐसे जीवो का जन्म और मरण दोनो ही नगण्य हैं। जन्म पर हर्ष नही, मृत्यु पर शोक नही।

—किन्तु उन्ही आत्माओ मे से, कुछ महान् आत्माएँ ऐसी भी होती हैं, जो विश्व को, नव जागृति का मधुर सन्देश देती हैं, जो ससार मे नव चेतना जागृत-करती हैं, जो ससार को नवजीवन प्रदान करती हैं और जो अपने ज्ञान से दु.खित, क्लेशित, शोक ग्रस्त मानवो के अशान्त मस्तिष्क एव हृदय को शान्ति प्रदान करती है। वस्तुत. वही आत्माएँ ससार मे महान् आत्मा कहलाने की अधिकारिणी हुआ करती हैं। ऐसी भव्य आत्माओं को प्राप्त कर. ससार के व्यक्ति अपने अन्त.करण में एक विशेष प्रकार की सत्स्फूर्ति अनुभव किया करते है।

—ऐसी ही महान् आत्माओ मे, हमारे मार्ग-दर्शक श्रद्धेय-गणी श्री श्यामलाल जी महाराज भी अपना एक विशिष्ट एव ऊंचा स्थान रखते है। जिन्होने अपने ज्ञान सौरभ, उदारता, मृदुता एव सयम की महान् साधना की सुगन्धि से, मानव समाज के उद्यान को सुरभित किया। अपने आत्मवल से देश के कोने-कोने मे मानवता का मधुर सन्देश जिन्होने पहुँचाया। भगवान् महावीर के पावन सन्देश और उपदेशो का जिन्होने यत्र तत्र सर्वत्र प्रचार और प्रसार किया। स्थानकवासी जैन समाज, इसके लिए जितना भी गर्व करे, उतना ही कम है।

❀ सद्गुणी सन्त

—श्रद्धेय गणी जी महाराज स्थानकवासी जैन समाज के एक सद्गुणी सन्त थे। आपका स्वभाव बडा ही शान्त और सरल था। स्नेह और सौजन्य की तो आप मूर्ति ही थे। आपको सभी से स्नेह था, फलतः सभी को आप से अनुराग था। आपकी वाणी मधुर एव सरस थी। आप सभी के साथ समान व्यवहार रखते थे।

—बच्चों से आपको अधिक स्नेह था। बच्चो मे धार्मिक प्रेरणा जागृत करने के लिए, आप सदैव प्रयत्नशील रहे है। आपकी मधुर प्रेरणा से एकत्रित हो कर बहुत से बच्चे, आपके पास बैठ कर सामायिक एव स्वाध्याय किया करते थे। आप भी बडे ही स्नेह और प्रेम के साथ उन भावी भारत के नागरिको मे धर्म के सस्कार उत्पन्न किया करते थे। बडे ही स्नेह से उन्हे आप कहानियो का आधार ले कर समझाया करते थे और उनमे धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न कर दिया करते थे। वृद्ध अवस्था मे मोतिया उतरने के कारण आपको नेत्रो से जरा कम दिखाई देता था, परन्तु समाज की गति विधियो से आप, तब भी परिचित रहते थे।

—मुझे याद है जब भी मैं आप के चरण स्पर्श करने आता, तभी आप मुझसे हमारी सभा के पुस्तकालय और वाचनालय के बारे मे अवश्य पूछा करते थे। श्रद्धेय गणी जी महाराज के हृदय की आकाक्षा थी कि युवको मे सगठन हो और उनका अपने धर्म के प्रति स्नेह जागृत हो। उनका हृदय उदार, वाणी मधुर और विचार सर्वोदयी थे। वे समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के प्रति जागरूक देखना चाहते थे।

—श्रद्धेय गणी जी महाराज ने अपने ७० वर्ष लम्बे जीवन मे ५४ वर्ष सयम-साधना और जन-कल्याण मे व्यतीत किए थे। आपका स्वर्गवास वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार सम्वत्

२०१७ विक्रम को मानपाड़ा, आगरा मे हुआ। आपके स्वर्गवास से समाज के सभी व्यक्ति शोकाकुल हो उठे, और उन बच्चों के दुःख की तो कोई सीमा नही थी, जो नित्य आपके चरणो में बैठ कर सामायिक और धर्म का अभ्यास करते थे। यद्यपि आज आप हमारे सम्मुख नही हैं, तथापि आपके आदर्श उदार विचार, सरलता, सौम्यता, मृदुता आदि सद्‌गुण, आज भी हमारे हृदयो मे आपके प्रति श्रद्धा जागृत कर रहे हैं। यह श्रद्धा कभी भी मिटने वाली नही है। बस मै अपने इन्हीं महत्वपूर्ण शब्दों के साथ, उन सुसंस्कारी सन्त को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, कामना करता हूँ कि आप जैसे महान् सद्‌गुण, हम सब के जीवन में भी उत्पन्न हो, तथा हम सब उन सद्‌गुणो का विकास करके आत्म-कल्याण और समाज-उत्थान करते रहें।

—मोतीकटरा, आगरा : उत्तर-प्रदेश :

६—६—६०

[७०]

एक ज्योतिर्मय जीवन :

श्री सुरेन्द्रकुमार जी जैन–रत्न–एम. ए.–

—श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन–रत्न–एक अच्छे विचारक युवक हैं। धर्म एवं सन्तों के प्रति आप की आस्था अत्यन्त गहरी है और निष्ठा परिपूर्ण। आप श्री सतावचन्द जी जैन के सुपुत्र हैं। आप एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण होने के साथ-साथ साहित्यिक अभिरुचि भी रखते हैं। यदा कदा कविता-निर्माण भी आप कर लेते हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के ज्योतिर्मय जीवन को ले कर आपने बड़ी ही लगन एवं निष्ठा के साथ जो कुछ लिखा है। वह उन्हीं की प्रभावशाली शैली में आगे प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठक गण इसे पढ़ कर लेखक की प्रशंसा किए विना नहीं रह सकेंगे।

—सम्पादक

❀ चंद सूरसम पभा

—मानव को अनादि कालीन परम्परा से ही, आकाश मण्डल मे सचरण करने वाले चन्द्रमा और सूर्य, जीवन-विकास की महत्वपूर्ण कला का ज्ञान कराते आए है। और सुनाते आए है एक ज्योतिर्मय अमर सन्देश—मानव ! अन्धकार जीवन का पतन है, ह्रास है, और विनाश है, जब कि प्रकाश जीवन का उत्थान है, विकास है और एक नव निर्माण है। इस लिए मानव ! तू बढ़ चल, सतत प्रकाश की ओर, जाज्वल्य ज्योति की ओर।

—तमसो मा ज्योतिर्गमय— इसी प्रेरणा सूत्र के सहारे सदैव ही मानव, अन्धकार को चीर कर, प्रकाश की ओर बढने का प्रयत्न करता है। आध्यात्मिक क्षेत्र का साधक मानव, अज्ञान एव मोहान्धकार के शताधिक आवरणो को चीरते हुए, उस अध्यात्म प्रकाश-पुञ्ज के दर्शन-संदर्शन पाना चाहता है। निरन्तर प्रयत्न से जो मानव इस कार्य मे सफल हो जाते हैं, वही तो महान् पुरुष ससार के लिए आदर्श बन जाया करते है। उन्ही सयम—साधको की गणना उच्च कोटि के महापुरुषो मे हुआ करती है। महापुरुषो के जीवन का उद्देश्य यही रहा है, कि उनका जीवन, अध्यात्म-साधना की उन उंचाइयो तक पहुँच सके, जहाँ व्यक्ति के व्यक्तित्व की नाप-तोल, केवल उस के बाह्य रूप एव सौन्दर्य से न की जाती हो। बल्कि इस के विपरीत, वहाँ जीवन के अन्तर्निहित आध्यात्मिक सद् गुणो से आंकी जाती हो।

—अत्यन्त प्राचीन काल से ही, यहाँ समय-समय पर अनेकानेक ऐसी भव्य आत्माओ का प्रादुर्भाव होता आया है। जिन्होंने अन्धकार मे निरत मानव-जीवन को झकझोरा और मानव-जीवन को चन्द्र और सूर्य के समान अनन्त प्रकाश प्रदान किया। इन्ही भव्य आत्माओं मे से एक चन्द्र और सूर्य के सदृश प्रभा वाले, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज थे। जो आज हमारे बीच नही रहे।

किन्तु उन के सद् विचार, सद् कार्य एवं सद् वचन, विश्व मे पथ-भ्रष्ट साधकों का आज भी मार्ग-दर्शन कर रहे है, तथा समय-समय पर भविष्य मे भी करते रहेंगे, ऐसा दृढ विश्वास है।

❀ मुनि रत्न

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, उन्ही महान् जैन मुनियो मे से एक मुनि रत्न थे, जिनका समस्त जीवन विश्व के पथ-भ्रष्ट साधको को साधना-मार्ग पर अग्रसर करने मे लगा रहा। आप श्री जी ने त्याग, तपस्या, दया, दान, निर्भयता ब्रह्मचर्य, शील संतोष, सरलता एवं नम्रता आदि विषयो पर अपने प्रभावशाली प्रवचन फरमा कर जनता, को सन्मार्ग पर लगाने का प्रयत्न किया। आप श्री जी के हृदय मे अपने पराए, धनी-निर्धन, ऊँच-नीच और छोटे बडे का कोई भेद-भाव न था। आप श्री जी की संयम-साधना सम रस साधना थी। भेद-रेखा से आप कोसो दूर थे।

—आप श्री जी के उपदेशामृत का पान करने, जैन-अजैन, नर-नारी, बाल, वृद्ध, युवक-युवती, सभी जन बडे ही उत्साह एव प्रेम के साथ एकत्रित हुआ करते थे। आप श्री जी अनुलोम-प्रतिलोम, सभी प्रकार के परिषहो को सहन करते हुए संयम-साधना मे पूर्णतः दृढ रहे, तथा अपनी-सौम्य मुद्रा, शान्त प्रकृति, महान तितीक्षा, स्नेह सद्भाव और क्षमा वीरता का आप श्री जी ने महान् परिचय दिया। जिसे याद करके आज जैन-अजैन समाज, उनका गुणानुवाद गाए विना नही रहता।

❀ मधुर स्मृतियाँ

—यद्यपि श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज का वह नश्वर शरीर आज हमारे बीच मे नही रहा है, तथापि उनकी मधुर स्मृतियाँ आज भी जन-जन के हृदय कोष मे सुरक्षित हैं। उनका सद्गुण मय यशः शरीर, आज भी हमारे हृदयो मे मौजूद है। वह नष्ट होने वाला

नही है। वह तो सदैव अमर रहेगा। उनके जीवन की विशेषताएँ सदैव शाश्वत रहेगी।

—आज जब उनका ध्यान आता है, तो पूर्व स्मृतियाँ, सजीव हो कर नेत्रो के सामने, उनका चित्र सा खीच देती है। उनकी उस सौम्य मुद्रा का ध्यान आते ही, मन बरबस उनकी स्मृतियो मे खो जाता है। उनका वह सरल महान् जीवन, सहज आकर्षण का केन्द्र था। उनके बाल-वृद्ध एव युवक जनों के प्रति स्नेह-प्रेम और वात्सल्य में एक ऐसी विशेषता अन्तर्निहित थी, जो आज भी हमारे हृदय-पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ गई है। उनके जीवन मे सरलता-स्नेह और सद्भाव का वह प्रखर झरना बहता रहा, जिसने समाज के व्यथित व्यक्तियों एव शुष्क हृदयो को हरा-भरा कर दिया।

—आज हमे बच्चो की वह टोलियाँ नजर नही आती, जो श्रद्धेय गणी श्री जी के प्रेम और स्नेह से प्रभावित हो कर सामायिक एव धर्म-ध्यान करने के लिए उनके चारो ओर एकत्रित रहा करती थी। गणी श्री जी उनके हृदयों पर स्नेह एव धर्म-रुचि की वह पवित्र छाप छोड़ गए हैं, जो भविष्य मे उनका पथ-प्रदर्शन करती रहेगी। आप श्री जी ने बच्चों और नव-युवको को स्वाध्याय का महत्त्व बतला कर, उन्हे धर्म-साधना क्षेत्र में आगे बढने की महान् प्रेरणा दी।

—आप श्री जी ने सदैव ही नवयुवकों के सगठन की आवश्यकता पर बल दिया, और धर्म के प्रति लगन पैदा करने के लिए जागृति-सन्देश दिया। आप श्री जी ने सदैव ही युवको के उज्ज्वल भविष्य को सामने रखकर समाज के उत्थान को ध्यान मे रखा। उनके इस स्नेह और प्रेम युक्त जागरण मन्त्र ने नवयुवको में धर्म के प्रति लगन मे वृद्धि की। वे नवयुवको मे ज्ञान का वह प्रकाश प्रज्ज्वलित करने के लिए प्रयत्नशील रहे जो भविष्य में समाज एवं धर्म की प्रतिष्ठा मे चार चाँद लगाएगा।

आँखो से कम दिखायी देने पर भी, वे समाज की प्रत्येक गति विधि पर नजर रखते थे, तथा उचित परामर्श प्रदान करके समाज के उत्थान मे अपना योग-दान देते थे। आपको सबसे स्नेह था, अतः सबको आपसे स्नेह था। आपके मन की सरलता ने, हृदय के स्नेह ने, तथा मानस के सद्भाव ने आपको सर्व जन-प्रिय बना दिया था। इस प्रकार वे सबके थे और सब उनके।

—विधि के विधान को कौन मिटा सकता है? ६ मई सन् १९६० के दिन वह महाकाल की घड़ी आई, जिसने आपके नश्वर भौतिक शरीर को हमसे छीन लिया। शरीर से रुग्ण होते हुए भी, आप अपने-आत्मभाव मे सजग और सचेत रहे। शरीर की दारुण वेदना उनकी अन्तरात्मा को विचलित न कर सकी। अन्त समय तक आप प्रभु-स्मरण करते रहे। वे महान् आत्मा थे। उनका जीवन हमारे लिए आदर्श है। शासनेश से मगल कामना है कि उनकी महानता हमारे जीवन का भी एक अविभाज्य अग बन कर विकास प्राप्त करे।

—मोतीकटरा, आगरा : उत्तर-प्रदेश

९—९—६०

(७१)

मनुष्य समाज के दिनकर :

श्री जगदीशप्रशाद जी जैन–एम.ए.–

—श्री जगदीशप्रशाद जी जैन–एम. ए.–लोहामण्डी आगरा जैन समाज के उत्साही कार्यकर्ता युवक हैं। आप के धार्मिक विचार और समाजोत्थान की अभिरुचि प्रसंशनीय है। आप श्री बट्टोलाल जी जैन के सुपुत्र हैं। लोहामण्डी जैन समाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्था के आप सुयोग्य उच्च पद पर आसीन हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आप ने भाव भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है। जो अपना अलग ही विशिष्ट स्थान रखती है। उस मनुष्य समाज के दिनकर, प्रकृति के सच्चे प्रतिनिधी, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की किन-किन ज्योतिर्मय रश्मियों को पाठकों के समक्ष आप ने रखा है ? यह तो उन का पूरा लेख पढ़ कर ही पाठक गण ज्ञात कर सकेंगे।

—सम्पादक

❀ मनुष्य समाज के दिनकर

—"History is a biography of the great men and the biography is an account of an individual man" अर्थात्–इतिहास महान् व्यक्तियो की जीवन गाथा है और जीवन गाथा एक व्यक्तिगत मनुष्य की घटनाओं का सकलन है।

—उपरोक्त कथन सर्वांशतः सत्य प्रतीत होता है। उक्त कथन मे अतिशयोक्ति किञ्चित् मात्र भी दृष्टिगोचर नही होती। जिस समय हम श्रद्धेय मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज के जीवन पर एक दृष्टिपात् करते है, तो उपरोक्त कथन का प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे नेत्रों के समक्ष उपस्थित हो जाता है।

—वैसे तो इस ससार मे अनेकानेक प्राणी आते हैं, और इस ससार रूपी रगमच पर, जीवन रूपी नाटक का प्रदर्शन कर विलीन हो जाते हैं। परन्तु वही पात्र प्रशसा के अधिकारी होते है, जो अपने सुन्दर सफल अभिनय के द्वारा, दर्शको पर एक अमिट छाप छोड़ जाते हैं। यह ही अमिट प्रभाव, पीढी दर पीढी चलता जाता है। ससार में, महान् पुरुपो के कार्यो से प्रेरणा ले कर ही, आने वाली पीढ़ियाँ अपने जीवन को महान् और उज्ज्वल बनाने का प्रयत्न करती हैं।

—संसार मे हमे अनेकानेक जीव धारी प्राणी दृष्टिगोचर होते हैं। परन्तु उन सब मे एक मात्र मनुष्य ही श्रेष्ठतर स्थान-रखता है। मनुष्य से वढ कर ससार मे अन्य कुछ नही है। उपनिषद्कार ऋपि इस सम्बन्ध मे कहते हैं—

नहि मानुपात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्

अर्थात्-मनुष्य से श्रेष्ठतर कोई नही है। परन्तु मनुष्यो में भी जो सच्चे आध्यात्मिक जीवन से परिपूर्ण मानव होते हैं, उनकी श्रेष्ठता तो सर्व विदित ही होती है। ऐसे ही सच्चे मानव, प्रकृति के

सच्चे प्रतिनिधि और मनुष्य समाज के लिए दिनकर सिद्ध हुए है और होते रहेगे। इस समार मे जैन तथा जैनेतर अनेक महान् आत्मा महामानव सत्पुरुप हो चुके हैं, जिन्होने परमार्थ मे ही अपना समस्त जीवन व्यतीत किया है। भगवान् महावीर, जिनके नाम मे ही सहज स्फूर्ति निहित जो है, आध्यात्मिक जीवन की ही साक्षात् मूर्ति थे। महात्मा बुद्ध, महर्षि व्यास, आचार्य शकर और सौक्रेटीज, जरस्थुस तथा पाइथागोरस आदि महात्माओ ने इसी मार्ग का अनुसरण किया और पारमार्थिक जीवन बिता कर यह सिद्ध कर दिया कि मनुष्य, मात्र अपने लिए ही नही, बल्कि दूसरो के हित के लिए भी उत्पन्न हुआ है। वह केवल जीने के लिए ही नही अपितु जिलाने के लिए भी ससार मे आया है। ऐसे महान् व्यक्ति ससार मे होते आये है और होते ही रहेगे।

—ऐसी ही एक उच्च आत्मा के विषय मे, मैं आज कुछ लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। इस उच्च आत्मा को श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के नाम से, आज का जैन ससार पहिचानता है। श्रद्धेय मुनि श्री जी का जीवन, एक आदर्श जीवन था। जीवन के प्रारम्भिक चरण मे ही आप आध्यात्मिक साधना के मार्ग पर चल पडे थे। जिस अवस्था मे सामान्य बालक को उचित-अनुचित का परिज्ञान तक नही हो पाता, उसी छोटी सी अवस्था मे, आप ने सयम-साधना का असिधारा-व्रत ग्रहण कर लिया था। यही कारण था कि आप जैसे दृढ व्रती आत्म साधक का, मार्ग की बाधाएँ और विपत्तियाँ कुछ भी तो नही बिगाड सकी। कष्टों और विघ्नों के तूफान, साधना-पथ के इस अविश्रान्त पथिक को तनिक भी तो पथ-भ्रष्ट नही कर सके। आप जीवन के अन्तिम क्षणों तक इसी अध्यात्म-साधना के जाज्वल्यवान पथ पर निरन्तर बढ़ते ही रहे।

❀ महान् व्यक्तित्व

—श्रद्धेय मुनि श्री जी ने बड़ी ही दृढता एव धीरता से, अपने कर्त्तव्य का पालन किया। यह आपके लिए बडे ही गौरव की बात है कि आप सब कुछ सहन करते हुए सयम-साधना मे पूर्णतया दृढ रहे। अपनी शान्त प्रकृति, परम सहिष्णुता तथा क्षमा वीरता का आदर्श उदाहरण, आप ने ससार के सामने उपस्थित किया। ऐसा करके आपने वस्तुत अपने महान् व्यक्तित्व का ही हमे परिचय कराया। दुख एव कठिन समय ही, मनुष्य की सच्ची कसौटी होता है। ऐसे समय मे जो मनुष्य अडिग रहे, अपने चारित्रिक सद्‌गुणो को न छोडे, वही महान् व्यक्ति कहलाता है। श्रद्धेय मुनि श्री जी की इस महानता के सदर्शन हमे उनकी आत्म-साधना के प्रारम्भिक काल मे ही हो जाते हैं। अतएव यह निस्सन्देह सिद्ध हो जाता है कि मुनि श्री जी एक महान् व्यक्तित्व से सम्पन्न सत्पुरुष थे।

❀ महान् प्रचारक

—श्रद्धेय मुनि श्री जी ने आत्म-कल्याण के साथ-साथ जन-कल्याणार्थ, शास्त्रानुसार विचरण कर, भगवान् महावीर का दिव्य सन्देश जन साधारण तक पहुँचाया। अहिंसा धर्म का घर-घर मे प्रचार किया। भगवान् महावीर के दिव्य सन्देश—जीवित रहो और जीवित रहने दो—को फिर मे दोहराया। अनेक-अनेक ग्रामो और नगरो मे भ्रमण करके मनुष्य जाति को जीवन के सच्चे मार्ग के दर्शन कराए। अनेक-अनेक भव्य आत्माओ को आत्म-विकास के श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर उपाय वतलाए। इस प्रकार इस महा श्रमण श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज ने ७० वर्ष के लम्बे जीवन मे ५४ वर्ष सयम की कठोर साधना, आत्म-विकास की दिव्य आराधना तथा सत्य-धर्म के महान् प्रचार में व्यतीत किए।

—श्रद्धेय मुनि श्री जी ने अपने जीवन काल मे ही, अनेक स्थानो पर मृत्युभोज, श्राद्ध, तथा गंगा आदि नदियो मे अस्थि विसर्जन जैसी मिथ्यात्ववर्द्धक कुप्रथाओं को जनता के हृदयो से निकाल कर, उसे सच्चे धर्म का अनुयायी बनाया। अनेक स्थानो पर सम्वत्सरी जैसे महापर्व की महत्ता बतला कर, इस दिन की आम छुट्टी करवाई, जिससे सुविधा के साथ जनता धर्माराधन कर सके। अहिंसा धर्म की महानता वतलाते हुए अनेक स्थानो पर देवी-देवताओं के सन्मुख होती हुई जीव हिंसा को श्रद्धेय मुनि श्री जी ने बन्द करवाया। अनेको विचलित आत्म साधको के अस्थिर विश्वासो को सुदृढ एव सुस्थिर किया। इसके साथ-साथ अनेक क्षेत्रो मे ज्ञान के अभाव को दूर करते हुए, पुस्तकालयो एव वाचनालयों की स्थापना करवाई। तत्कालीन समाज में चलते हुए विचार-सघर्ष और सत्य एव धर्म के प्रति असहिष्णुता के दुर्भाव को, श्रद्धेय मुनि श्री जी ने अपने महत्व-पूर्ण धर्म-प्रचार के द्वारा नाम शेष किया। इस प्रकार आत्म-कल्याण के साथ-साथ जन-कल्याण तथा धर्म-प्रचार के दायित्व को सफलता पूर्वक निभाते हुए, श्रद्धेय मुनि श्री जी ने अभी-अभी कुछ मास पूर्व ही इस नश्वर देह को त्याग कर अमर लोक प्राप्त किया।

❀ शान्त प्रकृति

—श्रद्धेय मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज की प्रकृति बड़ी ही शान्त एव सरल रही है। आपको सभी से समान रूप मे प्रेम था। और आप से भी सभी को प्रेम था। आपका स्वभाव अति सुन्दर एवं मधुर था। बच्चे, बूढे, जवान, अपने, पराये, सभी के साथ आप समभाव का व्यवहार करते थे। इसी से आप सभी के आकर्पण का केन्द्र थे। अपने सेवाभाव के लिए तो आप प्रसिद्ध ही थे। एक वार के ही आपके दर्शन एव प्रवचन लाभ से मानव देह कृत्य-कृत्य हो उठती थी।

—वही स्वर्गिक आत्मा आज हमारे बीच नही रही—
इसी से हम आज अपने समाज को अभागा समझ बैठे तो अत्युक्ति नही होगी। किन्तु इतना सन्तोष हमे अवश्य है, कि न सही श्रद्धेय मुनि श्री जी, परन्तु उनका महान् जीवन तथा पावन सदुपदेश तो हमारे हृदयो मे सुरक्षित तथा विद्यमान है ही। बस हम उन्ही से प्रेरणा ले और अपने जीवन को अध्यात्म-विकास के महामार्ग की ओर ले जाने का प्रयत्न करे।

—इस प्रकार से इन महा मुनि के सम्बन्ध मे कुछ लिखने
का प्रयत्न मैंने किया है। वैसे तो इनके विषय मे जितना भी चिन्तन किया जाए, उतना ही अल्प है। इसका कारण है कि मेरे दृष्टिकोण मे, उन जैसी इतनी विशुद्धता कहाँ ? जो मै ऐसी महान् आत्मा के जीवन चरित्र का सही रूप से मूल्याङ्कन कर सकूँ। सोचता हूँ कि मै तुच्छ मानव, जिसका आध्यात्मिक परिज्ञान, नही के बराबर है, किस प्रकार उस महापुरुष की विराटता का, अपनी इस लेखनी द्वारा चित्रण कर सकता हूँ ? यह प्रयास तो उस महान् आत्मा के प्रति एक श्रद्धाञ्जलि मात्र है।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश
५—१०—६०

(७२)

साधना पथ के अविश्रान्त पथिक :

श्री महावीरप्रशाद जी जैन–एम. ए.–

—श्री महावीरप्रशाद जी जैन–एम ए.–एक हँसमुख और मिलनसार प्रकृति के युवक हैं। आप लोहामण्डी, आगरा के श्री जादौराय जी जैन के सुपुत्र हैं। आप धर्म निष्ठ माता-पिता की सुयोग्य सन्तान हैं। अतएव आप में श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धा और निष्ठा का होना, स्वाभाविक ही है।

—संस्कृति के आधार स्तम्भ, साधना-पथ के अविश्रान्त पथिक, उन श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के विशेषताओं से परिपूर्ण महान् जीवन पर आप ने एक विहंगम दृष्टि डाली है। और उसी उपती नजर में जो कुछ आप को जँचा, वह शब्दों का रूप दे कर पाठकों के लिए रख छोड़ा है।

—सम्पादक

❀ सस्कृति के आधार स्तम्भ

—भारतवर्ष को अपनी महान् सस्कृति पर सदा से सात्विक गर्व रहा है। यह सस्कृति क्या है? यदि गहरे मे जा कर विचार करे, तो हमे भास होगा कि वास्तव मे यह सस्कृति अन्य कुछ नही, केवल कुछेक महान् आत्माओ के त्याग, तपस्या एव कठोर आत्म-साधना आदि का ही मूल रूप है। ये ही महान् विभूतियाँ भारतीय सस्कृति के आधार स्तम्भ मानी जाती है। भारतीय सस्कृति से श्रमण या सन्त सस्कृति को यदि निकाल दिया जाय, तो केवल शून्य ही बचेगा।

—अत्यन्त प्राचीन काल से ही ये महान् हस्तियाँ अपना अपना चमत्कार विभिन्न रूपो मे दिखाती रही हैं। विभिन्न युगो मे ये महामूर्तियाँ, मानव को अपने पथ की याद दिलाती हुई, अपने विभिन्न रूपो मे जन्म लेती रहती हैं। उदाहरणार्थ त्रेता के राम, द्वापर के कृष्ण तथा घोर हिंसा और अराजकता के युग मे भगवान् महावीर हमे प्रकाश—स्तम्भो की भाँति दीख पडते हैं। वैसे तो संसार के प्रत्येक क्षेत्र मे ही महान् मूर्तियाँ यदा-कदा जन्म लेती ही रहती हैं। किन्तु भारतवर्ष का तो ढाँचा ही मानों ऋषि, मुनि और त्यागियो की हड्डियो पर रखा हो। भारतवर्ष की यह महानता केवल अपने प्राचीन काल तक ही सीमित नही रही है, बल्कि आधुनिक युग मे भी जबकि राज्य, समाज, धर्म और व्यक्ति एक नई करवट ले रहे हैं। हर क्षेत्र मे परिवर्तन और क्राँति अपना विकराल मुख खोले सम्मुख है, पूज्य बापू अपना महान् सन्देश लिये हमारे सम्मुख उपस्थित है।

—पूज्य गुरुवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, भी इन्ही त्यागियो के समूह के एक रत्न थे। सस्कृति के महाप्रासाद के एक आधार-स्तम्भ थे। सादा जीवन, मधुर वचन और उच्च भावनाओ के संगम से सुसज्जित गुरुवर की आत्मा,

सयम-साधना के लिए सदैव तत्पर रहती थी। सेवा-वृत्ति तो मानो उनके जीवन का एक अङ्ग ही रही है। अटल शान्ति गुरुदेव के मुख पर सदैव ही विराजती रहती थी। पूज्य गुरुवर उस मिलन बिन्दु पर उपस्थित थे, जहाँ पर एक ओर से त्याग, दूसरी ओर से वैराग्य और तीसरी ओर से साधना तथा चौथी ओर से सिद्धि आकर, अपने-अपने अस्तित्व को पूज्य गुरुवर के चरणो मे अर्पित करती थी। उत्साह और धैर्य के ताने-बाने से बनी हुई वह महामूर्ति सदैव ही श्रद्धा का एक अपरिसीम कोष सा लगती थी। जिसमें साधु जीवन का प्रत्येक नियम कूट-कूट कर भरा हो। प्रत्येक धारा उस शरीर मे अपना तीव्र प्रवाह रखतो थी।

❀ साधना-पथ के अविश्रान्त पथिक

—वैसे तो जैन साधु का जीवन अन्य साधको की अपेक्षा अधिक कठिन एवं त्याग पूर्ण रहा है। जिन्हे अपनी साधना के मार्ग मे घोर कटक मय पथ पर नगे पांव पैदल ही चलना पडता है। नाम मात्र के थोड़े से ही वस्त्र-पात्रो से अपनी जीवन-यात्रा चलानी होती है। पूज्य गुरुवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, इसी कठोरतम साधना-पथ के अविश्रान्त पथिक थे। वहुत ही मामूली वस्त्रो मे—सर्दी की सनसनाती हुई वर्फीली रातो को आप सहज साधना के वल पर हँसते हुए बिता डालते थे। कही कम्पन नही, कही जरा भी स्खलन नही, पूज्य गुरुवर एक अटल तथा सफल सैनानी की भाँति अपने कर्तव्य-पथ मे अडिग हो निरन्तर वढते गए, इन्ही कण्टकमय राहों, पर, अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए, अपने जीवन की सफलता के लिए।

—पूज्य गुरुवर के जीवन की एक और सफलता जिसे कि मैं महान् सफलता ही कहूँगा, तथा जिसका परिचय मुझे, पूज्य गुरुवर कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज के एक प्रवचन से हुआ, जो आप, पूज्य गुरुवर श्री श्यामलाल जी महाराज

की स्मृति-सभा मे कर रहे थे, कि गुरुवर कठिनाइयो मे कभी हारे नही, झिझके नही, जरा भी ठिठके नही। उन्होने कष्टो से, सघर्षो से सफल मोर्चा लेना सीखा था। जब कभी गुरुवर के साथ साधुओ को ऐसे ग्रामो मे जाने का अवसर मिलता, जहाँ सन्तों के भोजन-पानी की समस्या भी जटिल रूप ले लेती अथवा वह स्थान जहाँ से आहार-पानी समुपलब्ध हो सके, दूर होता, तो पूज्य गुरुवर श्री गणी जी महाराज, उस समय स्वय ही दूरी की या भीषण गर्मी की परवाह किये बिना इस कार्य-सम्पादन का भार अपने हाथो मे ले लेते और सहर्ष उसे बहुत ही अच्छे ढंग से पूरा कर डालते। कठिनाइयो की उलझी हुई माला पहन कर-उसे सुलझाना गुरुवर की महान् सफलता का ही प्रतीक है।

❀ गुरुवर के जीवन पर एक विहंगम दृष्टि

—पूज्य गुरुवर का जन्म भारत के महान् प्रान्त, उत्तर-प्रदेश के महानगर मुगलो के शासन केन्द्र, आगरा के निकट सोरई नामक ग्राम मे ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी विक्रम सम्वत् १९४७ को हुआ था। आपने त्रेता के प्राण भगवान् राम के क्षत्रिय वश मे उत्पन्न हो कर भी अपने आपको शान्ति और सयम के मार्ग पर इस तरह अर्पित कर दिया था, मानो क्षत्रियो की तलवार से उन्हे कोई मोह न हो। चौधरी टोडरमल जी एव श्रीमती रामप्यारी जी के यहाँ उस महान् आत्मा ने जन्म ले कर, मानो युगो-युगों तक अपने जीवन को पवित्र कर लिया हो।

—पूज्य गुरुवर ने केवल ९ वर्ष की अल्पायु मे ही वैराग्य जीवन का प्रारम्भ कर दिया था। नौ वर्ष की आयु में ही गुरुवर को जीवन के अन्धकार पक्ष का कितना परिज्ञान हो चुका था? यह गुरुवर के इस अल्पायु मे ही त्यागमय जीवन व्यतीत करने से स्वय दर्शित है। पूज्य गुरुवर की दीक्षा १९ वर्ष की अवस्था मे उस समय हुई, जबकि बचपन के मीठे स्वप्न

सयम-साधना के लिए सदैव तत्पर रहती थी। सेवा-वृत्ति तो मानो उनके जीवन का एक अङ्ग ही रही है। अटल शान्ति गुरुदेव के मुख पर सदैव ही विराजती रहती थी। पूज्य गुरुवर उस मिलन विन्दु पर उपस्थित थे, जहाँ पर एक ओर से त्याग, दूसरी ओर से वैराग्य और तीसरी ओर से साधना तथा चौथी ओर से सिद्धि आकर, अपने-अपने अस्तित्व को पूज्य गुरुवर के चरणो मे अर्पित करती थी। उत्साह और धैर्य के ताने-बाने से बनी हुई वह महामूर्ति सदैव ही श्रद्धा का एक अपरिसीम कोष सा लगती थी। जिसमे साधु जीवन का प्रत्येक नियम कूट-कूट कर भरा हो। प्रत्येक धारा उस शरीर मे अपना तीव्र प्रवाह रखती थी।

❀ साधना-पथ के अविश्रान्त पथिक

—वैसे तो जैन साधु का जीवन अन्य साधको की अपेक्षा अधिक कठिन एव त्याग पूर्ण रहा है। जिन्हे अपनी साधना के मार्ग मे घोर कटक मय पथ पर नंगे पाँव पैदल ही चलना पड़ता है। नाम मात्र के थोडे से ही वस्त्र-पात्रो से अपनी जीवन-यात्रा चलानी होती है। पूज्य गुरुवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, इसी कठोरतम साधना-पथ के अविश्रान्त पथिक थे। वहुत ही मामूली वस्त्रो मे—सर्दी की सनसनाती हुई बर्फीली रातो को आप सहज साधना के वल पर हँसते हुए बिता डालते थे। कही कम्पन नही, कही जरा भी स्खलन नही, पूज्य गुरुवर एक अटल तथा सफल सैनानी की भाँति अपने कर्तव्य-पथ मे अडिग हो निरन्तर बढते गए, इन्ही कण्टकमय राहों, पर, अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए, अपने जीवन की सफलता के लिए।

—पूज्य गुरुवर के जीवन की एक और सफलता जिसे कि मैं महान् सफलता ही कहूँगा, तथा जिसका परिचय मुझे, पूज्य गुरुवर कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज के एक प्रवचन मे हुआ, जो आप, पूज्य गुरुवर श्री श्यामलाल जी महाराज

सयम-साधना के लिए सदैव तत्पर रहती थी। सेवा-वृत्ति तो मानो उनके जीवन का एक अङ्ग ही रही है। अटल शान्ति गुरुदेव के मुख पर सदैव ही विराजती रहती थी। पूज्य गुरुवर उस मिलन विन्दु पर उपस्थित थे, जहाँ पर एक ओर से त्याग, दूसरी ओर से वैराग्य और तीसरी ओर से साधना तथा चौथी ओर से सिद्धि आकर, अपने-अपने अस्तित्व को पूज्य गुरुवर के चरणो मे अर्पित करती थी। उत्साह और धैर्य के ताने-बाने से वनी हुई वह महामूर्ति सदैव ही श्रद्धा का एक अपरिसीम कोष सा लगती थी। जिसमे साधु जीवन का प्रत्येक नियम कूट-कूट कर भरा हो। प्रत्येक धारा उस शरीर मे अपना तीव्र प्रवाह रखती थी।

❀ साधना-पथ के अविश्रान्त पथिक

—वैसे तो जैन साधु का जीवन अन्य साधको की अपेक्षा अधिक कठिन एव त्याग पूर्ण रहा है। जिन्हे अपनी साधना के मार्ग मे घोर कटक मय पथ पर नगे पाँव पैदल ही चलना पडता है। नाम मात्र के थोडे से ही वस्त्र-पात्रो से अपनी जीवन-यात्रा चलानी होती है। पूज्य गुरुवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, इसी कठोरतम साधना-पथ के अविश्रान्त पथिक थे। वहुत ही मामूली वस्त्रो में—सर्दी की सनसनाती हुई वर्फीली रातो को आप सहज साधना के वल पर हँसते हुए विता डालते थे। कही कम्पन नही, कही जरा भी स्खलन नही, पूज्य गुरुवर एक अटल तथा सफल सैनानी की भाँति अपने कर्तव्य-पथ मे अडिग हो निरन्तर वढते गए, इन्ही कण्टकमय राहों, पर, अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए, अपने जीवन की सफलता के लिए।

—पूज्य गुरुवर के जीवन की एक और सफलता जिसे कि मै महान् सफलता ही कहूँगा, तथा जिसका परिचय मुझे, पूज्य गुरुवर कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज के एक प्रवचन से हुआ, जो आप, पूज्य गुरुवर श्री श्यामलाल जी महाराज

की स्मृति-सभा मे कर रहे थे, कि गुरुवर कठिनाइयों मे कभी हारे नही, झिझके नहीं, जरा भी ठिठके नही। उन्होने कष्टो से, सघर्षो से सफल मोर्चा लेना सीखा था। जब कभी गुरुवर के साथ साधुओ को ऐसे ग्रामो मे जाने का अवसर मिलता, जहाँ सन्तो के भोजन-पानी की समस्या भी जटिल रूप ले लेती अथवा वह स्थान जहाँ से आहार-पानी समुपलब्ध हो सके, दूर होता, तो पूज्य गुरुवर श्री गणी जी महाराज, उस समय स्वय ही दूरी की या भीषण गर्मी की परवाह किये बिना इस कार्य-सम्पादन का भार अपने हाथो मे ले लेते और सहर्ष उसे बहुत ही अच्छे ढंग से पूरा कर डालते। कठिनाइयों की उलझी हुई माला पहन कर-उसे सुलझाना गुरुवर की महान् सफलता का ही प्रतीक है।

❀ गुरुवर के जीवन पर एक विहंगम दृष्टि

—पूज्य गुरुवर का जन्म भारत के महान् प्रान्त, उत्तर-प्रदेश के महानगर मुगलों के शासन केन्द्र, आगरा के निकट सोरई नामक ग्राम मे ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी विक्रम सम्वत् १९४७ को हुआ था। आपने त्रेता के प्राण भगवान् राम के क्षत्रिय वश मे उत्पन्न हो कर भी अपने आपको शान्ति और सयम के मार्ग पर इस तरह अर्पित कर दिया था, मानो क्षत्रियों की तलवार से उन्हे कोई मोह न हो। चौधरी टोडरमल जी एवं श्रीमती रामप्यारी जी के यहाँ उस महान् आत्मा ने जन्म ले कर, मानो युगो-युगों तक अपने जीवन को पवित्र कर लिया हो।

—पूज्य गुरुवर ने केवल ९ वर्ष की अल्पायु मे ही वैराग्य जीवन का प्रारम्भ कर दिया था। नौ वर्ष की आयु मे ही गुरुवर को जीवन के अन्धकार पक्ष का कितना परिज्ञान हो चुका था? यह गुरुवर के इस अल्पायु मे ही त्यागमय जीवन व्यतीत करने से स्वयं दर्शित है। पूज्य गुरुवर की दीक्षा १६ वर्ष की अवस्था मे उस समय हुई, जबकि बचपन के मीठे स्वप्न

धूमिल पड रहे होते हैं और यौवन अंगडाई ले कर अपना आगमन प्रारम्भ कर देता है। इसी कुमार अवस्था में गुरुवर ने इस असार ससार से, पूज्य माता-पिता आदि परिवार से विदा ले कर ऋपिकुल सपूत श्री ऋपिराज जी महाराज की सेवा मे ढिढाली गांव जिला मुजफ्फरनगर मे दीक्षित हो कर अपने साधु जीवन का शुभारम्भ किया। साधना के इस महामार्ग पर चलते-चलते पूज्य गुरुवर ने कितने ही प्रान्तो का भ्रमरण किया। वैसे गुरुवर का मुख्य विचरण-क्षेत्र उत्तर-प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा-प्रदेश, तथा पंजाब-प्रान्त रहा है। उपरोक्त प्रत्येक स्थान पर गुरुवर ने धर्म-प्रचार का महान् कार्य किया, जैन धर्म के मूल स्वरूप का जनता को दिग्दर्शन कराया।

—इधर कुछ वर्षों से शारीरिक क्षीणता के कारण, गुरुवर आगरा मे ही श्रद्धेय मन्त्री श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज के साथ रह रहे थे। वे पूज्य श्री जी को ज्येष्ठ भ्राता की तरह मान कर सदैव उच्च आसन देते थे। शिष्यो तथा छोटे साधुओ मे उनका पवित्र पुत्रवत् स्नेह भी, उनकी महानता का ही प्रतीक था। कुछ वर्षों से मोतिया उतरने के कारण गुरुवर की दृष्टि कुछ ओझल सी हो चली थी। उन्हे किसी को भी पहचानने मे कुछ कष्ट का आभास होता था। किन्तु फिर भी प्रत्येक दर्शन कर्त्ता का नाम वे अवश्य ही पूछा करते थे। मै जव भी उनके निकट पहुँचता था तो वे पूरी कोशिश करते पहचानने की, कभी-कभी पहिचान भी लेते थे, और बड़े प्रसन्न दीख पड़ते थे। अन्तिम कुछ दिनों से गुरुवर के पेट मे कुछ कष्ट के कारण अधिक बेचैनी रहती थी। किन्तु इस महा कष्ट के समय भी गुरुवर शान्त रहते थे।

—वैशाख शुक्ला नवमी की सायं से गुरुवर की दशा अधिक गिरती गई। तथा वैशाख शुक्ला दशमी दोपहर ग्यारह बजे से तो यह प्रतीत होने लगा कि गुरुवर की महान् आत्मा अब हाड-मास के इस जीर्ण-शीर्ण पुरातन पुतले मे अधिक देर तक बन्द न रह सकेगी। आत्मा अब स्वतंत्रता के लिए छटपटा रही थी। और ठीक १२-१५ पर वह इस क्षण भगुर ससार के समस्त भौतिक वन्धनो को त्याग कर, एक अटल दैवी शक्ति मे मिल गई। ५४ वर्षों तक साधना और सयम की अग्नि मे पडा तप्त स्वर्ण-जैसा गुरुवर का शरीर निश्चल हो गया था। एक आलोकित मुस्कान अब भी गुरुवर के मुख पर खेल रही थी। प्रतीत होता था कि गुरुवर निद्रा निमग्न हो गए हैं और अभी-अभी फिर निद्रा त्याग कर उठ बैठेगे, किन्तु गुरुवर की आत्मा तो अभी भी जाग रही थी और वढ़ रही थी अपने साधना-मार्ग पर, लक्ष्य की ओर।

—थोड़ी देर मे ही यह दु खद समाचार समस्त आगरा मे फैल गया, शोक की एक लहर उमड पड़ी। जनता अत्यधिक सख्या मे गुरुवर के पार्थिव शरीर के दर्शन हेतु आने लगी। सायंकाल गुरुदेव की अन्तिम महायात्रा मे, नर-नारियो तथा बच्चो की कोई गिनती नही थी। असख्य-जन समूह गुरुवर की जय-जयकार करता हुआ विमान के साथ आगे वढ रहा था। जैन हृदय सम्राट् पूज्य गुरुवर श्री रतनचन्द्र जी महाराज की छत्र छाया मे गुरुवर का निश्चल शरीर, अग्नि देवता की भेट कर दिया गया। और देखते-देखते उस सत्तर वर्ष के साधक शरीर को अग्नि ने अपने बाहुपाशो मे आवद्ध कर लिया।

—पूज्य गुरुवर के निधन से जैन समाज का एक सच्चा प्रचारक, सच्चा सेवक, तथा साधना-क्षेत्र का एक सफल सैनानी उठ गया है। अपने पीछे गुरुवर अपनी शिष्य मण्डली मे अपनी प्रतिभा का आलोक भर गए हैं। जिनसे हमे आगे भी

उसी रूप मे साधना के सफल सैनानी मिलेंगे, जो गुरुदेव की याद युगों-युगों तक हमे दिलाते रहेगे। जो गुरुवर की अमर कीर्ति को सर्वदा अक्षुण्ण रखेंगे, तथा जो गुरुवर के गौरव मे और अधिक वृद्धि-समृद्धि करते हुए चार चाँद लगाएँगे। जो गुरुवर के ही सच्चे प्रतीक बन कर उन की स्वस्थ परम्परा को युगो-युगो तक कायम रखेंगे। अधिक क्या? गुरुवर की महान् स्मृति हमारे हृदयों में सदैव ताजा रहेगी—अनन्त-अनन्त काल तक।

❀ श्रद्धा-पुष्प

—इस प्रकार अपने हृदयस्थ श्रद्धा-पुष्पो को मै गुरुवर के पावन श्री चरणो मे समर्पित करता हूँ। आशा है गुरुवर जहाँ भी होगे, उन्हें स्वीकार करेंगे। इन श्रद्धा-पुष्पो मे भले ही मन मोहक सुगन्धि न हो, भले ही इन मे सौरभ या पराग अत्यल्प मात्रा मे हो, भले ही इन श्रद्धा-सुमनों में आकर्षक रूप-रग न हो, फिर भी ये श्रद्धा-पुष्प मेरे हृदय से सिञ्चित हैं, और हैं उन गुरुवर के प्रति गहरी आस्था और सच्ची निष्ठा मे भीगे हुए। अतएव जो कुछ मेरे पास है, उसे छोड कर अन्य कहाँ से लाऊँ? जैसे भी है, जितने भी हैं, सेवा मे समर्पित हैं। स्वीकार कीजिए गुरुवर! और मुझे यह मगलमय वरदान दीजिए कि मैं भी आपके चरण-चिन्हों का अनुसरण करके जीवन के सही ध्येय, सच्चे लक्ष्य, एवं पावन उद्देश्य तक पहुँच सकूँ।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
२६—८—६०

[७३]

गणी श्री श्यामलाल जी महाराज : एक अमिट स्मृति :

श्री शैलेन्द्रकुमार जी जैन–एम० कॉम०–

—श्री शैलेन्द्रकुमार जी जैन, एक अच्छे विचारक प्रतिभाशाली होनहार युवक छात्र हैं। आप श्री सेठ रतनलाल जी जैन–मित्तल–के सुपुत्र हैं। इस समय आप एम० कॉम०-के अन्तिम वर्ष में हैं।

—प्रस्तुत लेख में श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपने बड़ी ही सुन्दर एवं भावपूर्ण शैली में अपने मनोभाव व्यक्त किए हैं। उस अविस्मरणीय महापुरुष की जीवन सुषमा का उदाहरण देते हुए, अन्त में आपने आधुनिक वैज्ञानिक युग में अपने कर्तव्य का स्मरण करते हुए, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की अमिट स्मृति को कायम रखने का महत्त्वपूर्ण संकेत दिया है। जो अगली पंक्तियों में पाठकों के मननार्थ उपस्थित है।

—सम्पादक

❀ अविस्मरणीय महापुरुष

—प्रकृति का यह कठोर नियम है कि जिस वस्तु की उत्पत्ति होती है, उसका विनाश भी अवश्य ही होता है। निर्माण और ध्वस-की यह कहानी अव्याबाधरूप से चलती ही रहती है। प्राणी इस पृथ्वी पर जन्म लेता है, और समय आने पर मृत्यु के रूप मे उसका शरीर विनष्ट हो जाता है। लेकिन उस दिवगत प्राणी के लोप हो जाने से ही, उसका सम्पूर्ण लोप नही हो जाता। उसके जीवन-सम्पर्क की अमूल्य घटनाएँ तथा अमूल्य कृतियाँ, अन्य प्राणियो के मानस मे अपनी अमिट स्मृति छोड जाया करती है।

—इस सम्पूर्ण भू मण्डल पर, समय-समय पर अविस्मरणीय महान् आत्माएँ अवतरित होती रही हैं। यह दृष्टिकोण न केवल एक सम्प्रदाय या देश-विशेप के लिए है, बल्कि विश्व के समस्त भागो मे, जहाँ धर्म की आन और मानवता की मर्यादा का प्रश्न उठा, वहाँ महान् पुरुष अवतरित हुए। जिन्होने अपने उपदेशो और सन्देशो तथा बलिदानो के द्वारा मानव जीवन मे एक नई क्रान्ति, एक नव चेतना, एक सत्स्फूर्ति उत्पन्न की। यद्यपि उन महान् आत्माओ का शरीरान्त हुए, काफी समय व्यतीत हो चुका है, लेकिन वे आज भी अपने उपदेशों और सन्देशो के रूप मे हमारे हृदय मे, जन-जीवन मे साक्षात् विद्यमान है। उनके वे अमूल्य बोल आज भी मानवीय जीवन को आलोकित कर रहे है। स्वर्गीय पूज्य प्रवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज भी ऐसे ही एक अविस्मरणीय महान् पुरुप थे। एक ऐसे महान् आत्मा थे जो कि अपने तप, त्याग और सयम की, मानव जीवन पर एक अमिट छाप लगा गए हैं।

❀ जीवन सुषमा

—आप श्री जी का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी सम्वत् १९४७ विक्रम, ग्राम-सोरई-जिला आगरा, क्षत्रिय कुल में हुआ था। आप श्री जी की माता का शुभ नाम श्रीमती रामप्यारी जी तथा पिता श्री जी का शुभ नाम चौधरी टोडरमल जी था। आप श्री जी ने सम्वत् १९६३ में श्री ऋषिराज जी महाराज के कर कमलों द्वारा मुनि दीक्षा ग्रहण की। आज के युग मे जहाँ आत्म-संयम, ब्रह्मचर्य तथा वैराग्य आदि सद्गुणों के विकासशील जीवन के उदाहरण कम मिलते है, इसके विपरीत आप श्री जी ने अर्द्ध शताब्दि से भी अधिक समय तक, सद्गुणों के विकास मे ही अपना जीवन व्यतीत किया। यही कारण था कि आप श्री जी के जीवन में, सरलता, सौम्यता, मृदुता तथा सेवाभाव आदि सद्गुण कूट-कूट कर भरे थे।

—आप श्री जी अपने जीवन से, जनता का सतत उपकार करते रहे। लेकिन जैसा कि आम मत है कि महापुरुषों का सम्पर्क दीर्घ कालीन नही होता। उसी प्रकार आप श्री जी का मधुर सम्पर्क भी वहुत लम्बे काल तक न मिल सका, और आप श्री जी का स्वर्गवास, वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार सम्वत् २०१७ विक्रम, मानपाड़ा आगरा मे, ७० वर्ष की अवस्था मे हो गया। आज यद्यपि वे हमारे समक्ष नही हैं। तथापि उनके संजीवनोपदेश एवं सदेश हमारे हृदयो में एक अमूल्य निधि के रूप मे सुरक्षित वने हुए है।

❀ एक कर्तव्य

—आज स्पूतनिक युग का आरम्भ और अणुयुग का विकास हमे फिर से प्रेरित कर रहा है कि हम अपनी सस्कृति पर एक गहरी दृष्टि डालें और फिर से जीवन स्पर्शी सिद्धान्तो का अन्वेपण करे। यदि हमें इस संक्रान्ति काल में अपने

आपको सुरक्षित रखना है तो हमे अपने महान् पुरुषों का, उन महान् पुरुषों का, जिन्होंने हमें आगे बढने के लिए अनुभव एव सद् ज्ञान की प्रज्ज्वलित मशाल दी, जिन्होने हमें जीवन-क्षेत्र में सफलता पूर्वक आगे बढने के लिए, एक मधुर प्रेरणा दी, एक नव सन्देश दिया, और जिन्होंने अपनी अध्यात्म-साधना के द्वारा एक विशिष्ट मार्ग से सफलता प्राप्त करने का प्रत्यक्ष उदाहरण उपस्थित किया, मूल्यांकन करना ही होगा। उनके द्वारा दी गई मशाल को अपने जीवन का तेल दे कर यदि हम आगे बढ़ सके, तो फिर लक्ष्य हमारे निकट ही होगा। साथ ही हम उस लक्ष्य तक बिना ठोकर खाए, विना भटके, बिना झिझके, निरन्तर बढ़ सकेंगे। उन महान् पुरुषों की मधुर प्रेरणा से, यदि हम सन्मार्ग ग्रहण करके उस पर निरन्तर आगे बढते ही रहे, तो सफलता निश्चित रूप से एक दिन हमारे चरण चूमेगी। यदि हम उन अनुभवशील महापुरुषों के महान् सन्देशों को अपने हृदयों की तथा अपने आचरण की वस्तु बना सके, तब तो फिर कहना ही क्या ? संसार हमारी ओर भी उसी चकित दृष्टि से श्रद्धा पूर्वक देखेगा, जिस दृष्टि से आज हम अपने इन महापुरुषों को देख रहे हैं। और यदि हम उनके जीवन उदाहरण को सम्मुख रख कर, उन्हीके चरण-चिन्हों पर, कदम दर कदम आगे बढते चले गए, तो एक दिन हमारी भी उन्ही की तरह, महापुरुषों की श्रेणी मे गणना हो सकेगी। बस इसी अपने एक कर्तव्य की ओर थोड़ा सा संकेत करते हुए, अब मै अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश।
२०—६—६०

[७४]

जैन पुष्पोद्यान के माली के प्रति :

श्री जगदीशप्रशाद जी जैन-बी० ए०-

—श्री जगदीशप्रशाद जी जैन-बी० ए०-एक सुलझे हुए विचारों के सज्जन प्रकृति के युवक हैं। आप श्री रतनलाल जी जैन हाथरस वालों के सुपुत्र और श्री दीनानाथ जी जैन, लोहामण्डी, आगरा के लघु भ्राता हैं। आप दर्शन साहित्य से बी० ए० कर रहे हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के आप गत कई वर्षों से काफी निकट सम्पर्क में रहे हैं। अतएव आप की उन के प्रति गहरी निष्ठा एवं आत्यन्तिक पूज्य भाव का होना, कोई आश्चर्य की वात नहीं है। उसी पूज्य भावना से, उस जैन पुष्पोद्यान के माली के प्रति आप ने अपने श्रद्धा-कण, बड़ी ही सुन्दर काव्यात्मक भाषा में प्रस्तुत किए हैं, जो अपना एक अलग ही विशिष्ट स्थान रखते हैं।

—सम्पादक

❀ श्रद्धा करण

—उस महानता, उदारता और सौजन्यता की मूर्ति, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज की पवित्र स्मृति मे, मेरे अन्तरहृदय से यही उद्गार शब्दो का रूप ले कर निकलते है—

"Dear Beauteous Saint ! more white than day
When in his naked, pure array ;
Fresher than morning Flowers which shew
As thou in tears do'st, best in dew,—
How art thou changed !"

वाह रे ! दिव्य पुरुष, जनता के हृदय सम्राट्, सौम्यता की विराट् मूर्ति, क्या तू फिर दर्शन न देगा ?

—आज जैन पुष्पोद्यान का माली, अपनी कमनीय पुष्प वाटिका को हमेशा के लिए छोड़कर, कही दूर चला गया है। अब उसकी यह वाटिका कुछ-कुछ सूनी सी प्रतीत हो रही है। हम तुच्छ भक्तों को, कौन प्रसन्न रखेगा ? वह अनोखा माली, जिसने सदैव अपने ज्ञान एवं प्रतिभा की, अथक मेहनत से, हम पौधों को सीचा था, आज किधर से आवेगा ? जिसका जीवन-साहचर्य असख्य धन-राशि से भी असख्य गुणा अधिक अनमोल था, वह अब हमको कैसे प्राप्त होगा ? जिसने अपने जीवन को धँधकती हुई सयम-साधना रूपी भट्टी मे डाल कर, धातु रूपी आत्मा को, एक सफल शोधक कलाकार की भाँति, शुद्ध करने का सफल प्रयत्न किया, उस अद्भुत मूर्ति के दर्शनार्थ, हमारी आन्तरिक इच्छाए प्रवल हो उठी हैं।

—जिसने अपने जीवन का उद्देश्य, केवल जनता का जीवनोद्धार ही समझा था, वह अनुपम माली, अपनी जैन वाटिका से दूर—बहुत दूर चला गया है। जिसके हृदय की ओर से स्वार्थ, माया, हिंसा, और असत्य आदि सांसारिक बुराइयों ने अपना मुख, सदा-सर्वदा के लिए मोड़ लिया था और जो उनके

नजदीक आते भी भय खाती थी। जिनके हृदय की निर्मलता, गंगा के पवित्र-जल से भी अधिक-पावन एवं परम उज्ज्वल थी, जिनके मुखारविन्द रूपी मंच पर मुस्कराहट हमेशा नृत्य किया करती थी, जिनकी जिह्वा, सदा-सर्वदा सत्य-वचन का ही उद्घोष किया करती थी, जिनके हृदय से ज्ञान-जल, जैन सरिता मे, अविरल गति से प्रवाहित होता रहता था, जिनके दर्शनमात्र से, दिन भर की खुशी और मंगल की निश्चितता समझी जाती थी, तथा जिनकी भाषा, कमल के पुष्प से भी अधिक कोमल, सरस, तथा आनन्द दायिनी थी, अब वह समस्त गुण-प्रासादो से सन्निहित सौम्य-मूर्ति हमारे भौतिक चक्षुओ से ओझल हो गई है।

—जब मुझे स्वप्न मे आपके पवित्र दर्शनो की झाकी मिलती है, तो हृदय और मस्तिष्क स्वयं ही प्रेम और श्रद्धा के वशीभूत हो कर एक हो जाते हैं, और अस्फुट वाणी मे यह शब्द निकल ही तो पड़ते हैं—

"Fair Dream ! If thou inted'st me grace
Change that heavenly face of thine,
Paint despised secred love in thy face;
And make it t'appear like mine."

—आपने जिस तन्मयता, तल्लीनता, तथा सात्विक भावनाओं से, जो अलौकिक प्रेम का बीज, हमारे हृदयो मे वोया है, उसका वर्णन करना, जिह्वा को सुखा देना है। वह तो मात्र अनुभव की ही वस्तु है। हम तो सिर्फ टूटी हुई आवाज़ मे यही व्यक्त कर सकते हैं कि उन्होने जिस उदारता का परिचय हमारे समक्ष रखा, उसका ऋण हम जन्म-जन्मान्तरो में भी, कभी नही चुका सकेगे।

❀ एक मधुर स्मृति

—जब कभी भी, उस दिव्य मूर्ति की स्मृति, मेरे मस्तिष्क पटल पर अंकित होती है, तो उस समय मुझे–सत्यं, शिवं सुन्दरम्–का वाक्य एक हल्की सी झलक दिखला देता है, और तब मुझे यकायक मालूम पड़ने लगता है, कि एक महान्तम सौम्य मूर्ति, नगे सिर, नंगे पॉव, एक सफेद वस्त्र से पूरा शरीर ढॉपे हुए, मुख वस्त्रिका मुख पर लगाए हुए, और ओघा (रजोहरण) हाथ में लिए हुए; समस्त प्राणियो के मित्र, सत्य के साधक, अहिंसा के पुजारी, ज्ञान के खजाने, प्रेम के सागर दूसरो के दु:ख को दूर करने का सामर्थ्य रखने वाली पवित्र वाणी के धारक, ईश्वर के प्यारे, तथा महान् उपदेशक; मुस्कराते हुए अपने कर्तव्य-पथ पर, चले जा रहे हैं, निरन्तर वढे जा रहे है।

—ओ, मानव हितैषी ! तुझे शत-शत वन्दना हमारी है। लेकिन, विपाद ! तुम कहाँ हो ? तुम्हारे दर्शनो को, मेरा हृदय, चोट खाया हुआ सा विह्वल हो, कराह उठा है। आवाज दो ? अपनी पवित्र वाणी को, इस ताजमहल रूपी ससार मे-गु जा दो। आज मेरे तृषित नेत्र तुमको पत्ते-पत्ते मे, कण-कण मे ससार के प्रत्येक कोने-कोने मे खोये-खोये हुए से, ढूँढ़ रहे हैं—

ढूँढा जो मैने तुम्हे कंकडो मे,
न पाया अभी तक जहाँ की तहो मे
सोचा, मिलोगे, प्रकृति की छाया मे—
वहाँ भी न मुझको झलक दीख पाई॥

—उस जैन पुष्पोद्यान के माली से शून्य, जब मैं इस जैन वाटिका पर दृष्टिपात करता हूँ, तो मेरा हृदय इस जैन समाज की क्रमश. वढ़ती हुई अवनति को देख कर, द्रविभूत

हुए बिना नही रह सकता । आडम्बर ने आज फिर से जैन-समाज मे, अपना जाल बिछाना प्रारम्भ कर दिया है। आज समाज में, धर्म की आड़ मे एक खासा सट्टा खेला जा रहा है । और दुर्भाग्य से ऐसे दुर्दिनो में, आप हमसे दूर, बहुत दूर चले गए है। क्या ऐसे समय पर आपकी आत्मा, इस जैन वाटिका को छोड़ जाने पर भी, इसे हरा-भरा देखना पसन्द न करेगी ?

वागवा ओ जैन गुलशन के ! निगहवा धर्म के !
देवता औसाफ के ! चिराग अमल ओ इल्म के !

सुन मेरे पुरदर्द नाले, आज यहाँ सुनसान है।
तेरे विन गुलशन तेरा यह, हो रहा वीरान है ॥

फूँक वो नाकूसे-उल्फत जाग उट्ठें जिससे सव ।
तुझसे ले तनवीर, पहुँचें मजिले-मकसूद पर ॥

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश ।
२६—६—६०

[७५]

उन सन्त महापुरुष के प्रति :

श्री सत्यप्रकाश जैन-बी० ए०-

—श्री सत्यप्रकाश जी जैन-बी० ए०-एक भावुक प्रकृति वाले धर्म निष्ठ सज्जन हैं। आप -राजपुर-जिला मुजफ्फरनगर निवासी हैं। वर्तमान में आप आगरा ही सर्विस कर रहे हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के आप अनन्य भक्तों में से हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के महान् जीवन से, आप वर्षों से सुपरिचित रहे हैं। साथ ही श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के प्रभावशाली तेजस्वी व्यक्तित्व से आकर्षित भी। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के स्वर्गवास से कुछ घण्टे पूर्व तक, आप उन की सेवा में उपस्थित थे। प्रस्तुत लेख में आप ने उन सन्त महापुरुष पूज्य गुरुदेव के जीवन एवं उन की कुछेक विशेषताओं का स्मरण करते हुए, उन को अपनी श्रद्धा के शुभ पुष्प अर्पित किए हैं। जिन से श्रद्धा, भक्ति, एवं गुण पूजा की हृदयहारी सुवास आ रही है। पाठक गण भी अपने जीवन को इस सुवास से सुवासित कर सकें, इसी लिए अगले पृष्ठों में आप का लेख उपस्थित किया जा रहा है।

—सम्पादक

❀ सन्त महापुरुष

—सन्त महापुरुषो का स्थान, हमारे भारतवर्ष के इतिहास मे ही नही, अपितु ससार के इतिहास में उच्चतम तथा महत्त्वपूर्ण है। सन्त महापुरुष अपने पवित्र जीवन एव सद्‌उपदेशों के द्वारा, संसार के समक्ष एक महान् आदर्श उपस्थित करते हैं। यदि हम सन्त महापुरुषों के जीवन का अवलोकन करे तो हमे ज्ञात होगा कि इन्ही सन्त महापुरुषो की दिव्य ज्योति के द्वारा ही विभिन्न धर्मों का आविष्कार हुआ। समय-समय पर इन्ही सन्त महापुरुषों ने, धर्म से पतित मानव-समाज को, विनाश के महासमुद्र मे डूबने से बचाया।

—जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान् ऋषभदेव एवं अन्य तेईस तीर्थंकर, बौद्धधर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध, ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसामसीह, मुस्लिम धर्म के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद साहब, तथा सिक्ख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानकदेव आदि, इसके ज्वलन्त उदाहरण हमारे समक्ष विद्यमान हैं। गीता मे श्री कृष्ण भी यही कहते हैं—

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत !
अभ्युत्थान धर्मस्य, तदात्मान सृजाम्यहम् ॥

अर्थात्—जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, मनुष्य अपने कर्तव्य को छोड़ कर कर्तव्य तथा अकर्तव्य, उचित-अनुचित एव घृणास्पद कार्यो मे सलग्न हो जाता है। तब-तब धर्म के अभ्युथानार्थ मैं अवतार लेता हूँ। वस्तुतः सन्त महापुरुष ही पतित एवं पथ-भ्रष्ट मानवो को श्रेय मार्ग प्रदर्शित करने के लिए ससार में अवतरित हुआ करते हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्री १००८ श्री श्यामलाल जी महाराज भी, इन्ही सन्त महापुरुषो की श्रेणी के उत्कृष्ट सन्त महापुरुष थे।

※ बाल्य जीवन एवं दीक्षा

—गुरुदेव बाल ब्रह्मचारी थे। शिशु अवस्था में ही इन मे सन्त एवं महान् पुरुषों जसे लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे थे। ९ वर्ष की अवस्था मे ही इनके माता-पिता ने, अपनी प्रतिज्ञानुसार इनको सन्त बनाने का संकल्प किया और श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज के चरण कमलों मे छोड़ आए। गुरुदेव सर्वगुण सम्पन्न थे; ओज एव तेज उनके मस्तक पर, हीराकणी पर सूर्य की आभा के समान चमत्कार पूर्ण झलकता था। उन्होने इस शिशु में महान् पुरुषों के लक्षण देखे। बड़ी ही तल्लीनता एव सलग्नता के साथ प्रेम पूर्वक गुरुदेव ने इनको पढ़ाया। इन्होने भी बड़े-बड़े धर्म-ग्रन्थो का सहज ही मे अध्ययन कर लिया।

—सब प्रकार से योग्य हो जाने पर १६ वर्ष की अवस्था मे इनका दीक्षा संस्कार किया गया। गुरुदेव ने इनको ढिढाली नामक कस्बे में वड़ी ही घूम-धाम के साथ असख्य नर-नारियो के समक्ष मुनि दीक्षा प्रदान की। धन्य है वह पावन नगरी, जहाँ असख्य नर-नारियो ने गुरुदेव से धर्म-लाभ ग्रहण किया।

※ आकर्षक व्यक्तित्व

—गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज का व्यक्तित्व वड़ा ही प्रभावशाली तथा आकर्षक था। इनका स्वभाव अत्यन्त ही सरल एवं सौम्य था। वाणी मे सरसता थी। क्रोध तो इनके कान्तिमय मुख-कमल का, जल मे कमल की भाँति, स्पर्श तक भी न कर पाता था। विनय एवं नम्रता तथा सेवा भाव तो इनके जीवन में प्रचुर मात्रा मे विद्यमान थे। दीक्षा लेने के उपरान्त इन्होंने लगातार ५४ वर्षों तक अनेक स्थानों पर भ्रमण किया। जैन धर्म का प्रसार एव प्रचार किया।

—एक बार भी जो व्यक्ति इनके सरस एवं हृदयग्राही प्रवचन का आस्वादन कर लेता था, वह चुम्बकीय आकर्षण की भाँति खिचा ही चला आता था। इन्होने अपने सौम्य एवं आकर्षक व्यक्तित्व के कारण सहज में ही अन्य छ. शिष्यो एवं प्रशिष्यों का दीक्षा संस्कार किया।

—भारतवर्ष के अनेक नगरो मे, अनेक वर्षों तक भ्रमण करने के पश्चात् इन्होने आगरा नगरी मे पदार्पण किया। धन्य है यह पावन नगरी जहाँ गुरुदेव ने अपने ७० वर्ष के ओजस्वी जीवन के अन्तिम १० वर्ष व्यतीत किये। गुरुदेव के समक्ष आत्मोन्नति का ही लक्ष्य रहता था। इनकी आकाँक्षा सदा यही रही कि प्रत्येक व्यक्ति सत्य धर्म का पालन कर अपने जीवन का उद्धार करे। दर्शन के समय गुरुदेव के श्री मुख से-दया पालो-शब्द ही सदा नि सृत होता था।

❀ मेरा सौभाग्य

—यह मेरा सौभाग्य ही है, कि मुझे भी इसी पावन आगरा नगरी मे गुरुदेव के शुभ दर्शनों का अवसर प्राप्त हुआ। गुरुदेव मे इतनी मोहकता थी कि मैं उनके दर्शनो का सदैव आकाक्षी रहा। जब भी मै गुरुदेव के दर्शन करने जाता तो गुरुदेव मुझे धर्म को ही ओर सकेत करते थे। गुरुदेव छोटे या बडे, धनी या निर्धन, सभी व्यक्तियों को समान दृष्टि से देखते थे। गुरुदेव के हृदय मे सभी के प्रति प्रेम था। मै अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि जब कभी मुझे दर्शन किए अधिक समय हो जाता था, तो गुरुदेव समाचार द्वारा मुझे बुला भेजते थे। यह उनके सात्विक प्रेम का ही प्रतीक गिना जा सकता है।

—गुरुदेव अत्यन्त ही सहनशील थे। जीवन की अन्तिम घड़ियों मे गुरुदेव ने व्यथा के दारुण असह्य दुःख को बड़ी ही शान्ति के साथ सहन किया। मैं अपने को धन्य हो

समझता हूँ कि मैने उन सन्त महापुरुष के अन्तिम दर्शनों का लाभ भी प्राप्त किया।

❀ सन्त पुरुषों के जीवन का आदर्श

—मै तो, गुरुदेव सदृश, सन्त महापुरुषों के जीवन एव उनकी शिक्षाओं को, देख कर, सुन कर और पढ कर, इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि वर्तमान युग में, जो बड़े-बड़े राष्ट्र एक दूसरे को विध्वस करने के लिए, विनाशकारी एटमिक अस्त्र-शस्त्रो का निर्माण एव पर्यक्षेपण करने मे प्रयत्नशील हैं, यदि वे इन सन्त महापुरुषो के उपदेशो को ग्रहण कर, इस एटमिक शक्ति का प्रयोग, मानव-कल्याण के लिए करे, तो विश्व के समस्त प्राणी स्वतन्त्रता पूर्वक अपने जीवन को, श्रेष्ठतम, उच्चतम तथा महानतम बना सकते हैं और समस्त सुख-निधियो को अनायास ही प्राप्त कर सकते हैं।

—भगवान् महावीर का शुभ सन्देश Live and let-live अर्थात्—स्वय रहो और दूसरो को रहने दो, का प्रचार इन्ही सन्त महापुरुषो द्वारा होता है। सत्य और अहिसा की महत्त्वपूर्ण देन भी इन्ही सन्त महापुरुषो की ही कृपा का फल है।

—अन्त मे, दिवगत गुरुदेव के प्रति मै अपनी श्रद्धाञ्जलि के शुभ पुष्प अर्पित करता हुआ शाशनेश से यही प्रार्थना करता हू कि जिस प्रकार श्रावण-भादो को घनघोर अन्धकारमय रात्रि में, बिजली की कडक से उत्पन्न प्रकाश, भूले-भटके पथिको को मार्ग-प्रदर्शन करता है, उसी प्रकार गुरुदेव की जीवन-ज्योति का प्रकाश भी हमें श्रेष्ठतम न्याययुक्त सन्मार्ग दिखाता रहे। जिस प्रकार आकाशदीप, भयकर आँधियो से, तूफानो से और प्रबल झंझावातो से भी नही बुझता; उसी प्रकार गुरुदेव की जीवन-ज्योति का प्रदीप भी युगो-युगो तक सदैव दैदीप्यमान रहे।

कुतलुपुर, आगरा : उत्तर-प्रदेश :

७—१२—६०

[७६]

उस महापुरुष की याद में :

श्री निर्भयसिंह जी, ज्ञानेन्द्रसिंह जी–नाहर–

—श्री निर्भयसिंह जी नाहर तथा श्री ज्ञानेन्द्रसिंह जी नाहर, दोनों ही सीधे-सादे रहने वाले मेधावी युवक हैं। आप दोनों बी० एस-सी० के अन्तिम वर्ष के छात्र हैं। आप दोनों सगे भाई, श्री अयोध्याप्रशाद जी नाहर के पौत्र तथा श्री विजेन्द्रसिंह जी नाहर के सुपुत्र हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के मधुर सम्पर्क में आप दोनों भ्राता बचपन से ही रहे हैं। फलतः उस महापुरुष की सद्‌विशेषताओं से आप का सुपरिचित हो जाना स्वभाविक ही है। प्रस्तुत लेख में उस महापुरुष की याद में, आप दोनों ने सम्मिलित रूप से चन्द शब्द लिखे हैं। जो अगली पँक्तियों में अविकल रूप से दिए जा रहे हैं।

—सम्पादक

❀ परोपकारी महापुरुष

—इस दुनिया मे अनेक जीवात्मा, मानव रूप में जन्म लेते हैं, अपने जीवन में मग्न रहते हैं और फिर यहाँ से चले जाते हैं। उनको कोई याद करता है और कोई नही करता। उन्हे याद करने वाले भी उनके सगे सम्बन्धी ही होते हैं। लेकिन काल बीतने पर, वे भी उसे भूल जाते है। इस प्रकार दुनिया के ये सामान्य मानव, सबकी स्मृति से बाहिर हो जाया करते हैं।

—लेकिन इन्हीं जीवात्माओ में कुछ ऐसे मानव आत्मा भी होते हैं, जो सभी के द्वारा हमेशा याद किए जाते हैं। जो दूसरों के लिए जीवित रहते है, दूसरो की सेवा मे अपना जीवन व्यतीत कर देते हैं और जो दूसरों के लिए ही मृत्यु का वरण करते हैं। जो मानव आत्मा दुनिया का उपकार करते हैं, दुनिया को सत्य और सदाचार का सन्मार्ग दिखलाते है, उन्हीं महान् मानव आत्माओ को सब याद करते हैं। वे सर्व साधारण की तरह नही भुला दिए जाते। उन्हे याद रखने के लिए, उनकी जयन्तियाँ और पुण्य-तिथियाँ मनायी जाती हैं। उनके सम्बन्ध मे अनेक-अनेक पुस्तके लिखी जाती हैं और उन्ही की याद को कायम रखने के लिए बडे-बड़े स्मारक खडे किए जाते हैं। ऐसे ही परोपकारी आत्माओं को महापुरुष की सज्ञा दी जाती है।

—हम भगवान महावीर को क्यो याद करते हैं? क्यों कि उन्होंने हमे सत्य और अहिसा का मार्ग दिखाया। प्रभु महावीर ने परोपकार की राह अपनाई और इसके लिए उन्होने जीवन के सभी सुखो का त्याग किया। भारतवर्ष की जनसख्या करोड़ो मे है, लेकिन सभी तो दूसरे के लिए त्याग नही करते। अतः सभी व्यक्ति एक दूसरे को नही जानते। गांधी जी को क्यो याद किया जाता है? क्योकि उन्होने त्याग किया था। मनुष्य दूसरो के लिए त्याग करता है, इसी वजह से वह याद किया जाता है।

—ऐसे ही परोपकारी महापुरुष श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज थे। आपने दुनिया के उपकार के लिए, भूले-भटको को राह दिखाने के लिए, सन्मार्ग के निर्देशन के लिए, किशोरावस्था में ही सन्यास धारण कर लिया था। इतनी छोटी अवस्था में, दुनिया के सुखो को दूसरो की भलाई के लिए छोड़ देना—यही एक छोटी सी घटना आपकी परोपकारी भावना को स्पष्ट कर देती है।

❀ समभावी सन्त

—आप एक उच्चकोटि के समभावी सन्त गिने जाते थे। आपका व्यवहार सभी के प्रति समभाव का रहा। आपने कभी भी पक्षपात् की भावना को अपने अन्दर न उठने दिया। आपके लिए क्या छोटा, क्या वड़ा ? क्या ऊँच, क्या नीच ? क्या धनी, क्या निर्धन ? सभी समान रहे। यही समभाव की भावना, हृदय पर आपकी अमिट छाप छोड़ गई है। महावीर, बुद्ध, और गाधी के लिए सभी बराबर थे। इसी कारण वे याद किए जाते हैं। यही समभाव श्रद्धेय महाराज श्री जी मे जीवन पर्यन्त रहा।

—क्योकि महापुरुषों का नाम उनके सत्कार्यों से ही प्रसिद्ध होता है। परोपकारी और सद्गुणी व्यक्तियो को महापुरुप के रूप मे हमेशा याद किया जाता है। फलतः इसी कारण श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का नाम भी हमेशा मन पर अंकित रहेगा।

—मानपाडा, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
२७—११—६०

[७७]

एक आदर्श सन्त के प्रति :

श्री रामधन जी शर्मा—साहित्यरत्न—प्रभाकर—

—श्री रामधन जी शर्मा, एक अच्छे विचारक और सरल तबीयत के तरुण सज्जन हैं। गुण ग्राहकता और सतत अध्यवसाय आप के व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं। आप-साहित्यरत्न-और प्रभाकर हैं। सन्मति ज्ञान पीठ आगरा के आप प्रमुख व्यवस्थापक के पद पर आसीन हैं तथा श्री वीर लाइब्रेरी के आप लाइब्रेरियन भी हैं। वैसे तो आप-रठौड़ा-जिला मेरठ के निवासी हैं, परन्तु इधर अनेक वर्षों से आप आगरा ही रह रहे हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के गत अनेक वर्षों से आगरा विराजने के कारण, आप उन के काफी निकट सम्पर्क में रहे हैं तथा उन की अनेक-अनेक सद् विशेपताओं से प्रभावित भी। उन्हीं चन्द विशेषताओं में से कुछेक का जिक करते हुए, आप ने उस आदर्श सन्त के प्रति अपने श्रद्धा-भाव व्यक्त किए हैं। जो अगली पंक्तियों में प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

❀ एक महान् सन्त

—ससार में तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं। प्रथम वे—जो हमेशा दूसरों की भलाई चाहते हैं और स्वय कष्ट उठा कर भी दूसरों को सुख और शान्ति पहुँचाया करते हैं। उन्हे दुनिया महामानव कहा करती है। उन की गणना सन्त पुरुषो की कोटि मे हुआ करती है। दूसरे वे—जो अपना भला चाहते हुए, दूसरो का भला चाहते हैं, और जो अपनी भलाई करने के साथ-साथ समय आने पर दूसरों का भला भी कर दिया करते हैं। उन्हे दुनिया मानव कहा करती है। उन की गणना कर्तव्य पालक सद्गृहस्थो के रूप मे हुआ करती है। और तीसरे वे—जो मात्र अपना ही भला चाहते हुए दूसरो का बुरा चाहते हैं। और जो दूसरो को कष्ट अथवा हानि पहुँचा कर केवल अपना ही भला किया करते हैं। उन्हे दुनिया नराधम अथवा दानव के नाम से सम्बोधित किया करती है। उन की गणना उत्पीडक शोपक अथवा राक्षसो की श्रेणी मे हुआ करती है।

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, जिन का अभी कुछ दिन हुए स्वर्गवास हुआ है, प्रथम पुरुषो की श्रेणी मे आते हैं। वे महामानव एक महान् सन्त थे। जिनका महान् जीवन सतत जन-कल्याण के लिए अर्पित रहा। जिनकी पवित्र वाणी हमेशा नव जागरण का सन्देश देती रही। वस्तुत उन की महानता इसी बात से भापित होती है कि जो भी मनुष्य एक बार उन के सम्पर्क मे आ गया, वह उन के जीवन से अथवा पवित्र वाणी से एक मधुर प्रेरणा ही ले कर गया। उनके शान्त स्वभाव व दयार्द्र कोमल मानस से जन-समाज प्रभावित हुए बिना न रहा। भोला मन, सरल जीवन, मधुर स्वभाव एव कोमल वाणी, भला किसे प्रभावित न करेगी? आप की इन विशेपताओ मे जादू की शक्ति रखने वाला आकर्षण था। सद्गुणों की तो आप साक्षात् प्रतिमा ही थे। आप अपने पास चाहे किसी सन्त को पाते या गृहस्थ को, वृद्ध को पाते या बच्चे को, परिचित को पाते या अपरिचित को, बस सभी से प्रसन्न मुद्रा मे और सरल स्नेह से बात करते।

जीवन की इस एक रूपता के कारण ही तो आप श्रद्धा-भाजन और जन-हृदय-सम्राट वन सके। आप श्री जी के कोमल एव मधुर वचनो से वह अपूर्व शान्ति प्राप्त होती थी, जिसे आप के सम्पर्क मे आने वाले ही जानते हैं।

❀ नम्रता के आदर्श प्रतीक

—जीवन मे संयम लेने का सब से प्रथम गुण यही होना चाहिए कि साधक के अन्तर और बाह्य जीवन मे नम्रता और विनय कूट-कूट कर भर जाय। सयम-साधना का सार, यदि देखा जाय तो विनय और नम्रता में ही निहित है। यदि जीवन मे अहकार या गर्व की एक क्षीणकाय धूमिल रेखा भी उभर आई तो वह जीवन, न तो सयम मार्ग पर चल कर, और न ही गृहस्थ मार्ग पर चल कर सफलता प्राप्त कर सकता है। श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज से मेरा परिचय लगभग पन्द्रह वर्षो से था। और दस-ग्यारह वर्षों से तो वरावर मै उनके निकट सम्पर्क मे रहा हूँ। अतः मैने उन्हे काफी निकटता से अनुभव किया है। परन्तु मैने कभी भी उन के जीवन मे गर्व या अहकार नही देखा। उनको अहंकारवश किसी से एक शब्द भी कहते नही सुना। इसी से मैं नि सकोच कह सकता हूँ कि श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, नम्रता के आदर्श प्रतीक थे।

❀ त्याग मार्ग के नेता

—आज अध्यात्म-साधना के नाम पर, आडम्बर फैला कर तो अनेक साधको को वैठे पाया। किन्तु सच्ची साधना का पथिक कोई विरला ही दृष्टिगोचर हुआ। अध्यात्म-साधना अपनाने से पूर्व साधक को त्याग के उस जलते हुए महामार्ग से हो कर गुजरना होता है, जहां धन-जन, परिवार, इज्जत-प्रतिष्ठा, सब कुछ जल कर स्वाहा हो जाते हैं। आज का मानव तो पैसे का गुलाम वन कर, इधर-उधर भटक रहा है। उसने पैसे को ही सर्वोच्च साधना समझ लिया है। न्याय और अन्याय, कुछ नही देखता आज का मानव। उस का तो

बस एक मात्र लक्ष्य रह गया है - पैसा और पैसा ? फिर कहाँ शान्ति ? कहाँ सुख ? कहाँ चैन ? मानव त्याग से तो आज कोसो दूर जा पड़ा है। किन्तु शास्त्र पुकार-पुकार कर कह रहे हैं - त्याग के बिना शान्ति कहाँ ? सुख कहाँ ? चैन और आनन्द कहाँ ? मानव को यदि अपना लक्ष्य प्राप्त करना है तो उसे त्याग की ममतामयी गोद मे शरण प्राप्त करना ही होगा ! यदि हमे कुछ पाना है तो त्याग मार्ग के उन नेताओं के पद-चिह्नो का अनुसरण करना ही होगा, जो अपने लक्ष्य के सन्निकट ही पहुँच चुके हैं।

—ऐसे ही त्याग मार्ग के नेता श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज से हम महान् प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं, जिन्होने मात्र ९ वर्ष की अल्पायु मे ही त्याग के इस महामार्ग पर अपने चरण बढा दिये थे। और १६ वर्ष की अवस्था मे तो जिन्होने अध्यात्म-साधना ही प्रारम्भ कर दी थी। ऐसे त्याग मार्ग के नेताओ के चरण-चिन्हो पर चल कर ही, हम भी परिवार, समाज एव राष्ट्र के गौरव को समुज्ज्वल कर सकते हैं।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
३०- ७—६०

[७८]

चन्द मधुर संस्मरण :

श्री डा० देवेन्द्रकुमार जी जैन

—श्री डाक्टर देवेन्द्रकुमार जी जैन, एक मस्त तबीयत के मिलनसार युवक हैं। आप श्री रतनलाल जी जैन मित्तल लोहामण्डी आगरा के सुपुत्र हैं। आप ने अभी-अभी होम्योपैथी में—एच० एम० डी० एस०—का डाक्टरी डिप्लोमा प्राप्त किया है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के चन्द संस्मरण आपने बड़ी ही भावुकता के साथ लिखे हैं। जिन में श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के निर्मल जीवन की चन्द झाँकियाँ आप की लेखनी का संस्पर्श पा कर अत्यन्त ही सजीव हो उठी हैं। पाठक गण अगली पंक्तियों में उन का अवलोकन कर सकते हैं।

—सम्पादक

❀ मधुर संस्मरण

—पूज्य गुरुवर गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, वैसे, तो लगभग दस-ग्यारह वर्षों से यहाँ विराजमान थे। किन्तु उनके मधुर सम्पर्क में मै गत सात-आठ वर्षो से ही आया था। सेठ जी का पुत्र होने के नाते, वे तो मुझे प्रारम्भ से ही जानते थे। किन्तु मै उनको कई वर्षों के पश्चात् जानने लगा। ज्यों ही मै उनके निकट सम्पर्क मे आया, मेरे हृदय पर उन की प्रभावशाली अमिट छाप पड़ी, जो दिन प्रतिदिन और अधिकाधिक गहरी ही होती गई।

—पूज्य गुरुवर की सरल हृदयता ने तो मुझे मुग्ध ही कर लिया। छल एव प्रपंचो से दूर, दुनिया के ढंग-ढर्रो से अनभिज्ञ उन के निश्छल हृदय का प्रेम पा कर तो मै धन्य हो उठा।

—मैं जब भी उनकी सेवा मे पहुँचा, एक मधुर एव विराट हृदय के ही संदर्शन पाए। हम बच्चो के प्रति तो उन का इतना अधिक स्नेह भाव था, जिसे हमारा हृदय ही जानता है। एक अनुपम प्रेम उस सौम्य मूर्ति के हृदय मे हिलोरें लेता रहता था। वे प्रत्येक बच्चे मे भी अपने उसी प्रेम की प्रतिमूर्ति देखना चाहते थे। इसी लिए तो वे सतत प्रयत्न करते रहते थे, बच्चों मे धर्म के प्रति, समाज के प्रति, माता पिता और परिवार के प्रति, तथा राष्ट्र के प्रति प्रेम एव सद्भावानाएँ उत्पन्न करने का। यही कारण था कि उन्हे हमसे स्नेह था और हमे उन से। वे प्रेम को तो मानो मंगलमय मूर्ति ही थे।

❀ जिज्ञासु हृदय

—जब भी मै दर्शनार्थ पौषधशाला जाता तो पूज्य गुरुवर श्री गणी श्यामलाल जी महाराज की सेवा मे अवश्य ही कुछ समय लगाया करता था। और वे उस समय जिज्ञासु बुद्धि से अनेक बातें पूछा करते थे। कभी कभी आधुनिक विज्ञान के विषय को छेड़ देते तो घण्टा आधा घण्टा मुझे उनसे वार्तालाप करने का शुभावसर मिल ही

जाता। वे पारिवारिक, राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय, सामाजिक या अन्य भी कोई प्रश्न छेड़ देते और मुझ से बात चीत कर, अपनी जिज्ञासा वृति का समाधान कर लिया करते थे। उस समय मै उनके सरल एव निर्मल जिज्ञासु हृदय को देख कर गद् गद् हो जाया करता था, और उस मंगल मूर्ति के चरण स्पर्श कर अपने आप को भाग्यशाली अनुभव करता था। वे मुझे नवयुवको का संगठन करने और उनमें धार्मिक भावनाएँ भरने के लिए प्रे रणा किया करते थे। मैने उन की आज्ञा शिरोधार्य कर, इस दिशा में कुछ प्रयत्न भी किया, किन्तु खेद है कि मै इस विषय मे पूर्ण सफलता प्राप्त न कर सका।

ॐ जीवन पराग

—बातो-बातो मे एक दिन पूज्य गुरुवर श्री गणी श्यामलाल जी महाराज ने मेरे आग्रह पर अपना जीवन परिचय भी मुझे कराया था। उन्होने बताया था, कि मेरा जन्म यही आगरा के निकट सोरई ग्राम मे, विक्रम सम्वत् १६४७ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी के दिन हुआ था। माता का नाम रामप्यारी एव पिता का नाम टोडरमल जी था। मुझे यह जान कर हर्ष हुआ कि श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज हमारे निकटस्थ प्रदेश के ही एक नररत्न थे। मेरे पूछने पर उन्होने अपनी दीक्षा सम्वत् १६६३ विक्रम ज्येष्ठ शुक्ला पचमी, ढिढाली ग्राम में पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज के कर कमलो द्वारा होनी बतलाई थी। आपने १६ वर्ष की उमर में ही जैन साधु बन कर जहाँ-जहाँ परिभ्रमण किया, उनमे उत्तर-प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा और पजाब का मुख्य तया आप श्री जी उल्लेख किया करते थे।

—पूज्य गुरुवर श्री गणी श्यामलाल जी महाराज, इधर कई वर्षों से अस्वस्थ से रहा करते थे। कोई न कोई शारीरिक व्यथा उन्हे परेशान किए ही रहती थी। परन्तु वे इतने धैर्य एव सहनशील साधक थे, कि सब व्यथा और कष्टो को मुस्कराते और हँसते हुए सहन कर जाया करते थे। मै जब उनसे शारीरिक अस्वस्थता के

बारे मे पूछता था तो प्रायः वे यही कहा करते थे—मुन्ना ! क्या बताऊं ? इस शरीर से यह रोग तो दूर होने मे ही नही आते ! लेकिन यह मेरा क्या बिगाड़ सकेगें ? अब तो मै इस ओर अधिक ध्यान भी नही देता। एक दिन मैंने उन्हें बताया गुरुदेव ! अब मैंने डाक्टरी पास करली है। होम्योपैथिक (H.M.D.S) परीक्षा मे मै आप की कृपा से सर्व प्रथम आया हूँ। यह सुन कर वे बहुत प्रसन्न हुए और मुझे अपना चिकित्सक चुना। परन्तु दुर्भाग्य से मुझे इस रूप मे उनकी सेवा करने का अवसर ही न मिल सका। अभी वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार सम्वत् २०१७ विक्रम के दिन, मानपाड़ा आगरा मे, पूज्य गुरुवर का स्वर्गवास हो गया।

—आज पूज्य गुरुवर हमारे बीच मे नही हैं। किन्तु उन की वे मधुर स्मृतियाँ, जो हमे एक महान् प्रेरणा दे सकती हैं, आज भी उन की अमूल्य निधि के रूप मे, हमारे हृदयो मे सुरक्षित हैं। और मुझे तो ऐसा ही भास होता है, कि पूज्य गुरुवर हमसे दूर नहीं हैं किंतु वे हमारे सन्निकट ही हैं। उनका भौतिक शरीर अवश्य दिखाई नही देता, परन्तु उन का मधुर सन्देश अब भी हमें सुनाई दे रहा है। इस सदेश को यदि हम ग्रहण कर सके, तो वह हमे अपने कर्तव्य-मार्ग पर सदा अग्रसर करता रहेगा।

—लोहामण्डी आगरा : उतर-प्रदेः
२२—८—६०

[७९]

उस देवता पुरुष के प्रति :

श्री डा० सुभाषचन्द्र जी जैन

—श्री डाक्टर सुभाषचन्द्र जी जैन, एक आला दिमाग एवं तीव्र बुद्धि के धनी युवक हैं। आप श्री बाबू शम्भू नाथ जी जैन के पौत्र तथा बाबू कपूरचन्द जी जैन स्यालकोट वालों के सुपुत्र हैं। अनेक वर्षों से आप आगरा ही रह रहे हैं। आप अपने नाम के साथ—एच. एल. एम. एस, एम. बी. बी एस., एम. डी., तथा एच. डी. सी. आदि डाक्टरी उपाधियों का प्रयोग करते हैं।

—उस देवता पुरुष श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपने अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक संस्मरणात्मक कुछ शब्द लिखे हैं, जो पाठकों के मननार्थ अगली पंक्तियों में प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

—सम्पादक

❀ ज्ञान दाता, मधुर प्रेरक

—हम जैन लोग अपने नाम के पीछे—जैन-शब्द का टाइटिल तो बडी तबीयत के साथ लगा लेते हैं, ताकि इससे दूसरो को यह पता चल जावे कि हम भी किसी ऊँचे कुल से हैं। लेकिन हम मे से कितने व्यक्तियों को यह मालूम है कि यह-जैन—शब्द आया कहाँ से? और इसका सही मतलब क्या है? इसे हमे किस के लिए, कब और कहाँ प्रयोग करना चाहिए? इन बातो से हम जैसे अनेको व्यक्ति अनभिज्ञ हैं।

—मैं भी आज से कुछ वर्ष पूर्व तक इन बातो से अनभिज्ञ ही था। और धर्म-कर्म के मामले मे तो पीछे—बहुत पीछे, सब से पीछे था। किन्तु अब जो कुछ इस विषय मे मैं जान सका हूँ, और धर्म-कर्म के क्षेत्र मे प्रवेश करने का नही, तो कम से कम उस ओर झाँकने का प्रयत्न और सकल्प करने लगा हूँ; इन सब का एक-मात्र पूर्ण श्रेय श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज को ही है। इन्ही की मधुर प्रेरणा से मै इस ओर प्रवृत्त हुआ हूँ।

❀ एक संस्मरण

—उन के जीवन के सम्बन्ध मे तो मुझ से पूव अनेक लेखक लिख ही चुके होगे। इस लिए मै तो केवल एक छोटा सा संस्मरण लिख कर ही उस महापुरुप के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त किए देता हूँ। वह संस्मरण यह है कि मैं इन के सरल, एव प्रेम रस से परिपूर्ण मधुर जीवन एवं व्यक्तित्व की ओर किस प्रकार आकर्पित हुआ, और उन की मधुर प्रेरणा से किस प्रकार धर्म-ध्यान की ओर प्रवृत्त हुआ?

—मै एक दिन रविवार को, पूज्य माता जी के कहने पर, दर्शनार्थ जैन भवन पहुँचा। मेरे पास उस समय टाइम बहुत कम था। केवल दस मिनिट मे ही लौट आने का विचार

ले कर मैं श्रद्धेय, पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज के पास पहुँचा था। परन्तु उनके सरल एव महान् व्यक्तित्व का मुझ पर ऐसा प्रभाव पडा कि १० मिनिट के बजाए मैं पूरे दो घण्टे तक उन की चरण सेवा मे बैठा वार्तालाप करता रहा।

—उन के मृदु वाक्यों ने मेरे ऊपर ऐसा प्रभाव डाला कि मैं पूर्णतया तरबतर हो उठा। पानी अथवा पसीने से तरबतर नही, बल्कि उनके प्रेम और मृदुल स्नेह रस ने मुझे तरबतर कर डाला। उनके प्रभाव शाली एवं सरल व्यक्तित्व ने मुझे उन के पास लगातार दो घटे तक बैठे रहने के लिए मजबूर कर दिया। फिर तो मैं प्रतिदिन उनकी सेवा में पहुँचने लगा। और उन की ही मधुर प्रेरणा से धर्म-ध्यान की ओर प्रवृत हुआ।

❀ देवता पुरुष

—पाठक गण इसी बात से अन्दाजा लगा सकते हैं कि श्रद्धेय महाराज श्री जी का स्वभाव कितना अच्छा हो सकता है। वैसे तो लगभग सभी साधु, स्वभाव से श्रेष्ठ होते ही है। परन्तु किसी न किसी सद्गुण की व्यक्तिगत विशेषता भी तो रहती ही है। श्रद्धेय श्री श्याम लाल जी महाराज—जो श्री गणी जी महाराज के शुभ नाम से भी प्रसिद्ध थे—एक शान्त, सौम्य और सरल स्वभाव के साक्षात् देवता पुरुष थे। उन्होने भारतवर्ष के विभिन्न स्थानो मे भ्रमण करके जनता को एक नवीन चेतना दी, एक नई जागृति दी और जो धर्म-ध्यान से अनभिज्ञ थे, उन्हे एक नई दिशा प्रदान की। आध्यात्मिक महान् साधना के द्वारा जो कुछ भी उन्हे प्राप्त हुआ, उन्होंने मुक्त हस्त से वह सभी मे बाँट दिया। उन्होने अपना समस्त जीवन ही समाज-कल्याण मे लगा दिया। जैन समाज का बच्चा-बच्चा उन के उपकारो को नही भूल सकेगा।

❀ सरल हृदय, शान्ति मूर्ति

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज की किस-किस विशेषता का वर्णन किया जावे ? उन् का जीवन तो विशेपताओ का अगाध समुद्र रहा है। ऐसी कौन सी विशेपता थी, जो उनके पवित्र जीवन मे विद्यमान न हो। ऐसा कौन सा सद्गुण था, जिसे पूज्य गुरुदेव के जीवन-व्यवहार मे स्थान न मिला हो। परन्तु मुख्यतया मुझे उनकी दो महान् विशेपताओं ने तो वहुत ही अधिक प्रभावित किया। वह विशेपताएं थी—उनकी महान् सरलता एव परम शान्ति। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव सरल हृदय, सरलवाणी, एवं सरल व्यवहार से सम्पन्न सन्त रत्न थे। मैने ही क्या ? किसी ने भी उनकी वाणी मे, अथवा उनके व्यवहार मे वक्रता अनुभव नही की। और इसी से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका हृदय भी सरल ही था। उनकी दूसरी विशेपता थी शान्ति। वे कभी भी आवेश अथवा रोप मे तो देखे ही नही गए। मधुरवाणी, सरस व्यवहार, हृदय मे सव के प्रति शुभ भामना; इन्ही लक्षणो से उनके सौम्य मुख-चन्द्रमा से सदैव शान्ति की ही चाँदनी छिटका करती थी। हर सयय उनके चेहरे पर मुस्कान रहती थी। यही कारण था कि वे इन दो महान् विशेपताओ के कारण सव के प्यारे वने हुए थे। एव उनमे अन्य भी वहुत सी विशेषताएँ थी। जिनका प्रत्येक दर्शक के मन पर पूर्णतया प्रभाव पड़ता था।

—आज वह क्षमा मूर्ति, सरलहृदय, शान्त स्वभावी, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज, हमारी आंखो के सामने नही हैं, परन्तु हमारे हृदयो मे तो वे अव भी विद्यमान हैं, और युगो-युगो तक विद्यमान रहेगे। वस इन्ही शब्दो के साथ मै उन देवता पुरुप के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करता हूँ।

—नाई की मन्डी, आगरा . उत्तर-प्रदेश:
११—१२—६०

[८०]

श्रद्धेय श्री गणी जी म० के चरणों में :
श्रद्धा के फूल :

श्री नेमीचन्द जी जैन–चोरडिया–

—श्री नेमीचन्द जी जैन चोरड़िया-एक अच्छे विचारक धार्मिक वृत्ति के सज्जन हैं। आप रोशन मुहल्ला आगरा निवासी श्री बलवंत सिंह जी जैन के सुपुत्र हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के जीवन से आप निकट से सुपरिचित रहे हैं।

—उस पावन आत्मा के चरणों में आपने भी अपनी श्रद्धा के कुछ फूल चढाए हैं। जो अपनी निराली ही महक रखते हैं। विभिन्न दृष्टि कोणों से श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की विभिन्न विशेषताओं को आपने शब्दों का रूप दिया है। जो उन्हीं के शब्दों में आगे दी जा रही हैं।

—सम्पादक

❀ महाव्रती

—आज जब कि विज्ञान अपने प्रगति-पथ की चरम सीमा पर पहुँच गया है और जिस विज्ञान से मनुष्य को राकेट, हवाई-जहाज, बेतार का तार तथा इसी प्रकार के अन्य बहुत से गुणकारी तत्त्व मिले हैं, वहाँ उसी विज्ञान से उसे एटम, हाइड्रोजन तथा मेघाटन बम जैसे विनाश तथा संहारकारी अस्त्र-शस्त्र भी प्राप्त हुए हैं। इन विनाशकारी तत्त्वो को प्राप्त कर, आज का मनुष्य एक ऐसे मोड़ पर आ खड़ा हुआ है कि उसका जरा सा भी गलत कदम, सारे संसार को, विनाश की धँधकती हुई ज्वाला मे ध्वस्त कर सकता है।

—आज की महान् शक्तियो ने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि यदि आज दुनिया मे शान्ति हो सकती है, तो सिर्फ उन्ही पाँच सिद्धान्तो पर अमल करने से हो सकती है, जिन्हे आज से करीब पच्चीस सौ वर्ष पूर्व भगवान् महावीर ने संसार के सामने रखा था। वे पाँच सिद्धान्त हैं— १—अहिंसा, २—सत्य, ३—अस्तेय, ४—ब्रह्मचर्य तथा ५—अपरिग्रह। जिन्हे आज के युग नेता पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने— पञ्चशील—के रूप मे संसार के सामने रखा है।

—इन्ही पाँच महाव्रतो को अपने जीवन मे सहज भाव से धारण करने वाले, महान् आत्मा—जिनके कि पावन चरण-कमलो मे हम अपने श्रद्धा के फूल चढाने जा रहे हैं—श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज अभी-अभी हो चुके हैं। जो स्थानकवासी जैन संसार के एक प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध हुए। आज का जैन ससार जिनको श्री श्री १००८ गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के नाम से पहिचानता है। जो वाल ब्रह्मचारी, गम्भीर ज्ञान सम्पन्न, उच्चकोटि के तपस्वी तथा उदार सेवा भावी सन्त थे। जिन की मधुर वाणी से नि.सृत ज्ञानमय विचार धारा का अमृत रस पान कर, भावुक भक्त-समुदाय को अपार आनन्द प्राप्त होता था।

❋ एक विशेषता

—छोटे-छोटे बच्चो की धार्मिक क्रियाओ के प्रति आसानी से रुचि उत्पन्न करके, उनमे धार्मिक भावना पैदा करना, तथा उन्हे धार्मिक ज्ञान का अभ्यास कराते हुए, धार्मिक पाठ कण्ठस्थ कराना—यह आपकी एक महान् विशेषता थी। देश के भावी कर्णधारो मे, जिनके कन्धो पर समाज तथा देश को उन्नत करने का भार आना है, उनके जीवन रूपी प्रासाद को खडा करने के लिए, धार्मिक तथा शुभ संस्कारो की, प्रारम्भ से ही एक मजबूत नीव डालने की कला आप श्री जी मे विद्यमान थी।

❋ भेदभाव से दूर

—आप बडे ही सरल स्वभावी सन्त थे। कोई भी बडे से बड़ा अथवा छोटे से छोटा (धन-सम्पत्ति से, या उम्र से) व्यक्ति जब आपके सम्पर्क मे आता था, तो आप सब से समानता तथा सरलता का व्यवहार करते थे। आप को किसी प्रकार का भेदभाव छू तक नही गया था। आप भेदभाव से हमेशा दूर रहने वाले सन्त थे। कोई भी छोटे से छोटा नासमझ बालक, जब आप से कुछ सीखने की इच्छा व्यक्त करता, तो आप उसे बडे ही प्रेम से सिखाते और समझाते थे। यदि एक ही बात को अनेक-अनेक बार समझाने की भी जरूरत पड़ती, तो आप के मन मे सीखने वाले के प्रति जरा भी रोष अथवा घृणा उत्पन्न नही होती थी। वरन् उसे और अधिक प्रेम से समझाते थे। आपकी यही भावना रहती थी कि कही सीखने वाला ऊब न जाय। इस प्रकार आप जीवन-निर्माण के एक महान् कलाकार थे।

❋ महान् विभूति

—ऐसी महान् विभूति हम आगरे वालो के बीच मे काफी समय तक रही, तथा धर्म-देशना दे-दे कर हमारा आप ने अन्त समय तक पथ-प्रदर्शन किया। इसे हम अपना अहोभाग्य ही मानते हैं। आप

श्री जी इतने वृद्ध होते हुए भी, जब कि आपका स्वास्थ्य भी ठीक नही रहता था तथा नेत्रो मे मोतिया उतर आने की वजह से निगाह भी काफी कमज़ोर हो गई थी, आपको साफ-साफ दिखाई नही देता था। फिर भी आपकी स्मरण शक्ति इतनी विलक्षण थी कि आपका पुराने से पुराना परिचित व्यक्ति भी, यदि आवाज से वन्दन करता था, तो आप उसे झट से पहिचान लेते थे। आने वाले व्यक्ति की आवाज से ही आपको उसका नाम स्मरण हो आता था। आपने सत्तर वर्ष लम्बे जीवन का तीन चौथाई से अधिक भाग, यानी चउव्वन वर्ष का लम्बा काल, सयम की आराधना-साधना मे व्यतीत किया।

❀ आदर्श जीवन

—श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज के स्वर्गवास से समाज और देश की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति निकट भविष्य मे होना असम्भव है। मगर हमे श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज ने, कभी भी निराश होना नही सिखाया, क्योकि श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज, स्वय एक आशावादी सन्त थे। फिर हमे निराशा कैसे होगी ? आज श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज का शरीर, जरूर हमारे बीच मे नही है, मगर फिर भी आज हम उन्हें, अपने बीच मे विद्यमान ही महसूस करते हैं। क्योकि अपने विचारो के रूप मे और अपने उन आदर्शो क रूप मे, जो उन्होने हमारे सामने रखे, आज भी वे जीवित है, और हमारे हृदयो मे विद्यमान है।

—श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज का जीवन, एक आदर्श जीवन रहा है। उनके जीवन का एक सद्गुण भी यदि आज का मानव अपने जीवन मे उतार ले, उनकी एक भी विशेपता को आचरण मे ले आए, उनके बतलाए हुए त्याग-मार्ग पर एक कदम भी आगे बढ़ जाए, तो उसका जीवन यहाँ भी शान्ति और सुखमय बन सकता है तथा आगे भी उसके सामने विकास का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। संसार जिस खतरनाक मोड़ से इस समय गुजर रहा है यदि वह श्रद्धेय

श्री गणी जी महाराज द्वारा जीवन में अपनाए गए अथवा उनके द्वारा बतलाए गए सिद्धान्तो पर चल पड़े; तो वह विनाश की उस धंधकती हुई महाज्वाला में गिरने से बच सकता है, जिसमे गिरने के पश्चात् फिर शताब्दियों तक उसके अस्तित्व का पता ही न चले। और इसी त्याग-मार्ग पर चल कर संसार, विश्व शान्ति की ओर बढ़ सकता है।

—अब अन्त मे, मैं प्रात. स्मरणीय श्रद्धेय श्री श्री १००८ गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के पावन चरण कमलो मे, तीन बार तिक्खुत्तो के पाठ से सविधि वन्दन करके, प्रार्थना करता हूँ कि गुरुदेव ! हमे भी ऐसी शक्ति तथा बुद्धि प्रदान करें ताकि हम भी आप के महान् आदर्शों पर चल करके अपने जीवन को सफल बना सकें। हम भी आप के बतलाए हुए मार्ग का अनुसरण करके जीवन के सही लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। हम भी आप श्री जी की ही तरह सहन-शील बन कर, मार्ग की बाधाओ पर विजय प्राप्त करते हुए, सकुशल सफलता प्राप्त कर सके। बस आप श्री जी से करबद्ध यही याचना है।

रोशन मुहल्ला, आगरा : उत्तर-प्रदेश.
३०—१०—६०

[८१]

श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज :
एक आदर्श व्यक्तित्व :

श्री मोतीलाल जी जैन–चौरडिया–

—श्री मोतीलाल जी जैन–चौरड़िया–एक अच्छे विचारक तथा धार्मिक प्रवृत्ति के सज्जन हैं। आप श्री प्यारेलाल जी चौरड़िया के सुपुत्र हैं। आप के पिता जी बारह व्रती श्रावक थे। उन का स्वर्गवास ५६ वर्ष की आयु में, सम्वत् २०१४ विक्रम में हुआ। आप की माता जी भी, बड़ी ही धार्मिक वृत्ति की महिला थीं। उनका स्वर्गवास भी सम्वत् २०१३ में ५८ वर्ष की अवस्था में हो चुका है। और आप के ज्येष्ठ भ्राता श्री जौहरीलाल जी, श्रद्धेय पूज्य श्री काशीराम जी महाराज के सदुपदेश से प्रभावित हो कर, दीक्षित हो चुके हैं। उन की दीक्षा तिथि से ही आपके माता-पिता ने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया था। आप उन्हीं की सुयोग्य सन्तान और भ्राता हैं।

—आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के आदर्श व्यक्तित्व को अपनी लेखनी का विषय बनाया है और उस आदर्श मानव के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए अपने आप को धन्य माना है। आप के विचार अगली पंक्तियों में प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

—सम्पादक

❀ आदर्श मानव

—अत्यन्त आश्चर्य का विषय है कि जहाँ अत्यन्त सुख और अपूर्व आनन्द की लहरे उठ रही हैं, जहाँ अखण्ड शान्ति का सागर ठाँठें मार रहा है, उस आध्यात्मिक सद्गुण-विकास की ओर से तो अज्ञान वश ससारी मानव, दूर-दूर भागते है। उसमें दु.ख की परिकल्पना करके, भयभीत हो, उससे अलग-अलग रहने का ही प्रयत्न करते हैं। और जहाँ अनन्त दु:खो की खान है, जहाँ घोर अशान्ति का कुहरा छाया हुआ है, जहाँ राग के गहन गर्त एव द्वेष की दुर्गम दीवारे, सत्य-लक्ष्य को छिपाये हुए हैं ,. ऐसे वासनात्मक पतन की ओर, यह ससारी मानव दौड-दौड़ कर पहुँचते है। उनमे सुख की परिकल्पना कर-करके उनसे चिपटते हैं। इस प्रकार घोर अन्धकार मे भटकते हुए यह मानव, इस दुर्लभ जीवन का दुरुपयोग कर रहे हैं। अमूल्य नर जन्म को व्यर्थ ही गँवा रहे हैं।

—परन्तु संसार मे धन्यवाद के पात्र वही आदर्श मानव होते है, जो इस जीवन के वास्तविक सत्य एव तथ्य को पहिचान कर, आध्यात्मिक सद्गुणो के विकासशील मार्ग पर चला करते है और जो इस प्राप्त मानव जन्म का सदुपयोग किया करते है। जो अध्यात्म-साधना के क्रमिक विकास द्वारा, अपने सत्य-लक्ष्य को प्राप्त कर लिया करते हैं, वही आदर्श मानव, मरने के पश्चात् भी अमर रहते हैं। उनकी ही कीर्ति-गाथाएं युगो-युगो तक जन-मानस की प्रेरणा-स्रोत रहा करती हैं।

—ऐसे ही एक आदर्श मानव, जिन्होने अपने मानव जीवन का सफल सदुपयोग किया था, जो आध्यात्म सयम-साधना के द्वारा, अपने सत्य-लक्ष्य के सन्निकट ही पहुँच गए हैं— श्रद्धेय पूज्यपाद गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, अभी-अभी हो चुके हैं। जो शैशवावस्था से ही वराग्य एव धर्म के पक्के

रंग मे रग चुके थे। जिन्होने श्रद्धेय पण्डित प्रवर चारित्र चूड़ामणि श्री ऋषिराज जी महाराज का पुनीत सम्पर्क पा कर, अपने जीवन को अध्यात्म-साधना के महामार्ग पर चलाने के लिए, सयम एव सद्गुणमय रूप मे ढाल लिया था। माता-पिता की स्वीकृति पा कर जो यौवनारम्भ अवस्था में ही अपने सत्य-लक्ष्य की ओर बढ चले थे। शास्त्र-स्वाध्याय तथा आत्म-चिन्तन मे ही जिनका अधिकाश समय व्यतीत होता था। जिनके सान्निध्य को पा कर, हर एक मानव, अपने को गौरवशाली अनुभव करता था। जिनके महान् आदर्श जीवन तथा पावन सदुप देशो से प्रेरणा ग्रहण करके, मानव सत्य, शिव, सुन्दरम् की ओर अभिमुख होता था।

—भला ऐसे आदर्श त्यागी, सन्त पुरुप के उपकारो को कौन भुला सकता है ? उनके महान् उपकारो से तो जैन समाज का बच्चा-बच्चा तक उपकृत है। ऐसे महापुरुप के स्वर्गवास से जो क्षति जैन समाज की हुई है, उसकी निकट भविष्य मे तो पूर्ति होना असम्भव सा ही दिखायी पडता है।

❀ आदर्श व्यक्तित्व

—श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज अपनी सयम-साधना मे सदैव सतर्क रहे हैं। कभी भी प्रमाद या आलस्य करते हुए, उनको किसी ने नही देखा। जप-तप और सद्गुणो से मंज एव निखर कर उनकी आत्मा खरा कुन्दन बन चुकी थी। तपस्वी होते हुए भी आप, परम शान्त स्वभावी आत्म-साधक थे। तप के साथ शान्ति का सद्गुण तो मानो सोने मे सुगन्धि वाली उक्ति को ही चरितार्थ कर रहा था। आप ज्ञान के सागर थे। यद्यपि आपकी लेखनी अधिक नही चली, तथापि आपने जैनागमो का गम्भीर चिन्तन एव मनन किया था।

—गत कुछ वर्षों से आपकी नेत्र-ज्योति कुछ मन्द अवश्य पड़ गई थी। परन्तु वह आपको दैनिक क्रियाओ मे बाधा नही डाल सकी। वे हमेशा प्रसन्न मुद्रा मे ही रहा करते थे। मै दर्शनार्थ पहुँच कर जब भी उनको वन्दन करता, तो वे झट से मुझे मेरी आवाज से ही पहिचान लिया करते थे। उनकी चेतना शक्ति तथा स्मरण शक्ति अद्भुत थी। जो उनके अन्तिम समय तक उसी रूप मे जागृत रही।

—प्रभावशाली व्यक्तित्व अपने सम्पर्क मे आने वाले व्यक्तियों को सदा अपनी ओर आकर्षित कर, उनके दिलो में, अपनी सुन्दर छाप जमा ही दिया करता है। इसी प्रकार का प्रभावशाली आदर्श व्यक्तित्व, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का था। श्रद्धेय महाराज श्री जी का व्यक्तित्व सरलता, सौम्यता, तथा मृदुता जैसे श्रेष्ठतर सद्गुणों के प्रकाश से प्रकाशित था। गम्भीरता, उदारता तथा सौजन्यता आदि सद्गुणो से सुसज्जित होने के कारण ही आप अपने शिष्य वर्ग के सहित लगभग ३०-३५ वर्षों से, श्रद्धेय मंत्री प्रवर पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज के साथ-साथ ही विचरते रहे। आगरे का सौभाग्य है कि श्रद्धेय महाराज श्री जी सम्वत् २००८ विक्रम में आगरा पधारे और अन्तिम समय तक, विशेष कारण से यही श्रद्धेय मत्री जी महाराज की ही सेवा में विराजमान रहे।

—और अन्त में, अभी-अभी कुछ मास पूर्व ही आपने अपने नश्वर पार्थिव शरीर को छोडकर, स्वर्गधाम प्राप्त किया। गर्व की बात है कि श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज के तीनों शिष्यों, श्रद्धेय प्रखर वक्ता श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज, श्रद्धेय तपस्वी श्री श्रीचन्द्र जी महाराज, और श्रद्धेय पण्डित श्री हेमचन्द्र जी महाराज में, तथा इन तीनों के शिष्यों में भी उनके सभी गुण विद्यमान है।

—राजामण्डी, आगरा · उत्तर-प्रदेश :
३०—१०—६०

[८२]

उस पावन आत्मा के प्रति :

श्री पुष्पचन्द्र जी जैन

—श्री पुष्पचन्द्र जी जैन-गोली—जि० करनाल (पंजाब) निवासी सज्जन हैं; परन्तु गत अनेक वर्षों से आप आगरा में ही सर्विस कर रहे हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से आप बचपन से ही सुपरिचित रहे हैं।

—फलतः आपने बड़ी ही श्रद्धा और भक्ति के साथ उस पावन आत्मा के चरणों में अपने भाव सुमनों की भेंट चढ़ाई है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के जीवन की एक प्रारम्भिक घटना का दिग्दर्शन कराते हुए आप ने उस आदर्श मुनिराज के प्रति जो अपने भाव व्यक्त किये हैं, वे आगे दिए जा रहे हैं।

—सम्पादक

❀ एक जीवन घटना

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज की जीवन घटनाओ मे, प्रथम स्थान उस घटना का है, जिसने उनके जीवन को एक नयी दिशा दी, एक नवीन मोड़ दिया। वह घटना इस प्रकार है। जब श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज छोटी-बिल्कुल छोटी, शैशवावस्था में ही थे, उस समय आप चिन्तित दशा मे बीमार हो गए। बीमारी को असाध्य सा देख कर, आपके माता-पिता ने यह सकल्प किया कि यदि हमारा पुत्र अच्छा हो जावे, तो इसे हम श्रद्धेय श्री ऋषिराज जी महाराज के चरणों मे समर्पित कर देगे। फलतः इस सत्सकल्प से बच्चा ठीक हो गया।

—अपने शुभ सस्कारो के कारण बालक अब अपने को गुरुदेव के चरणो मे छोड़ आने की बात बार-बार दोहराने लगा। आखिरकार माता-पिता ने श्रद्धेय श्री ऋषिराज जी महाराज का पता लगाया और-एलम ग्राम-मे जा कर, जहाँ महाराज श्री जी विराजमान थे, उनकी पावन सेवा मे अपने पुत्र को सौप दिया। तत्पश्चात् गुरुदेव के चरणो मे रह कर आपने ज्ञान का अभ्यास किया और भली प्रकार से योग्यता प्राप्त हो जाने पर, गुरुदेव ने आपको सन्यास धर्म में दीक्षित कर लिया।

❀ आदर्श मुनिराज

—दीक्षा लेने के पश्चात् आपने शास्त्रानुसार अपने नियम-उपनियमो का बडी ही दृढता के साथ पालन किया। आप संयम की साधना करते हुए आदर्श मुनिराज कहलाए। आप श्री जी जैन धर्म के साधु-सिद्धान्तो के तो मानो प्रत्यक्ष उदाहरण ही थे। जैन साधक जीवन की तो, मानो आप जीती-जागती रूप-रेखा ही थे। आप सद्गुणो की खान थे। दुर्गुण आपके जीवन मे प्रवेश पाने से डरते थे, झिझकते थे। क्रोध का तो आपके

जीवन मे नामो-निशान तक न था। क्षमा और शान्ति की आप साक्षात् मूर्ति ही थे। यही कारण था कि आप हर समय प्रसन्न वदन, हँसमुख दिखायी पड़ते थे। आपकी मनोहर पवित्र वाणी से सदा मधुरता, सरलता और सौम्यता ही टपकती थी। आप अपने सद्गुणो के कारण, सर्व-जन-प्रिय थे। जहाँ-जहाँ भी आपने चातुर्मास किए, अथवा जिस-जिस क्षेत्र को आपने पावन किया, वहाँ-वहाँ पर ही, आपके स्वाभाविक सद्गुणो की छाप, प्रत्येक जन-हृदय पर बैठ गई।

—जिस महान् आत्मा ने अपनी आत्मा को तप, त्याग, ब्रह्मचर्य और क्षमा, आदि सद्गुणों से उन्नत बना लिया था। जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया आदि सांसारिक जंजालो पर विजय प्राप्त करने मे सतत प्रयत्नशील रहे, ऐसे आदर्श मुनिराज का वियोग भी हमे कुछ मास पूर्व सहन करना पडा। ६ मई सन् १९६० को आप स्वर्गधाम को प्राप्त हुए। उनके परम पवित्र तथा महान् जीवन और पावन आत्मा के प्रति, हम अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

—नौवस्ता, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
५—११—६०

[८३]

मेरी दृष्टि में :

उन का आध्यात्मिक जीवन :

श्री सतीशचन्द जी जैन

—श्री सतीशचन्द जी जैन, श्री हंसराज जी जैन स्यालकोट वालों के सुपुत्र हैं। आप अपने माता-पिता आदि परिवार के साथ अनेक वर्षों से आगरा ही रह रहे हैं। आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के आध्यात्मिक जीवन को, अपनी पैनी दृष्टि के द्वारा जाँचा है, परखा है, और उस के मूल्यांकन को शब्दों का रूप दे कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है।

—पाठक उनके इस लेख में, उस दिव्य पुरुष के जीवन की मधुर झाँकी पाएँगे, और पाएँगे लेखक की एक असीम श्रद्धा और अपूर्व निष्ठा। लेख की सद्-विशेषताओं से पाठक गण प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेंगे। तथा लेख पढ़ने के पश्चात् लेखक की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा भी पाठक गण किए बिना नहीं रह सकेंगे।

—सम्पादक

❀ एक महान् विभूति

—आधुनिक युग, जिसे हम वैज्ञानिक युग, अणुयुग अथवा स्पूतनिक युग के नाम से भी सम्बोधित कर सकते है, एक परिवर्तनशील युग है। इस युग मे, राज्य, समाज और धर्म के साथ-साथ, व्यक्ति भी एक नवीन वातावरण से गुजर रहा है। क्रान्ति की भावनाएँ, प्रत्येक दिशा मे अपना प्रभाव दिखला रही है। आज के युग का अधिकाश मानव, भौतिकता के आकर्षण-केन्द्र की परिधि मे ही चक्कर काट रहा है।

—ऐसे समय मे यदि हमे अपने आपको सुरक्षित और स्थिर रखना है, तो अपनी आध्यात्मिक संस्कृति और धर्म, तथा धर्म और संस्कृति के उन्नायक महापुरुषो का आश्रय-अवलम्बन लेना ही पडेगा। तभी हम अपने आपको, इस प्रवाह के वेग मे वह जाने से बचा सकेंगे। उन आध्यात्मिक महान् विभूतियों के महान् जीवन और पवित्र सन्देश-उपदेश, हमारे लिए आधार-दण्ड का कार्य करेंगे और हम अपनी जीवन-यात्रा सकुशल समाप्त कर सकेंगे। ये आध्यात्मिक महान् विभूतियाँ देश-काल की सीमा से सर्वथा परे हुआ करती हैं। किसी भी देश, समाज, प्रान्त अथवा परिवार के सीमा-बन्धनों मे वे नही बँधा करती। बस, आवश्यकता है, उनके पवित्र जीवन और सत्य उपदेशों के ग्रहण करने की और उन्हे जीवन का एक आवश्यक अंग बना कर चलने की। यदि मानव ऐसा कर सकेगा, तो वह विनाश के इस महागर्त मे गिरने से बच जायगा और एक दिन सफलता के सर्वोच्च शिखर पर भी अवश्य ही पहुँच सकेगा।

—ऐसी ही एक आध्यात्मिक महान् विभूति, हमारे देश मे उत्पन्न हुई, और उसने अपनी कठिनतम सयम-साधना से, सफलता का वरण किया। उस महान् विभूति का शुभ नाम, श्री श्री १००८ स्थविर पद विभूपित, शान्त मुद्रा, सौम्य मूर्ति,

सरलात्मा, पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज था। आप यहाँ अधिकतर—श्री गणी जी महाराज—के नाम से प्रसिद्ध थे। आपका महान् जीवन सद्गुणो से ओत-प्रोत था। जीवन की प्रारम्भिक अवस्था से ही आप त्याग-मार्ग पर चल पड़े थे, और जीवन के अन्तिम छोर तक, उसी रूप मे अडिग रह कर निरन्तर बढते गए। आपका पवित्र जीवन और आपके सदुपदेश, जन-जीवन के लिए हमेशा प्रेरणा के स्रोत रहे हैं।

❀ जीवन गाथा

—इस महान् विभूति का जन्म, ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी सम्वत् १९४७ विक्रम मे, भारतीय इतिहास की मुगल कालीन प्रसिद्ध राजधानी आगरा के सन्निकट सोरई ग्राम मे हुआ था। आपके पूज्य पिता का नाम श्री चौधरी टोडरमल जी और माता का नाम श्रीमती रामप्यारी जी था। माता और पिता आपको पा कर फूले न समाते थे। आप क्षत्रिय कुलोत्पन्न थे। क्षत्रियत्व आपकी नस-नस मे और ओजस्विता आपकी रग-रग मे परिव्याप्त थी। आपके मुखमण्डल पर सौम्यता तथा विचारो मे वैराग्य भावना अठखेलियाँ करती रहती थी।

—वैसे तो यह जगत् प्रसिद्ध बात है, कि विकास-मार्ग की ओर अग्रसर होने वाली, पुण्यशील महान् आत्माओ का बचपन भी, सामान्य बच्चो की अपेक्षा अनेक प्रकार की विशेषताओ से परिपूर्ण होता है। इसी के अनुसार, आपका बाल जीवन भी, अपने मे अनेक विशेषताएँ रखता है। बाल सुलभ चञ्चलता और हठीलेपन का अभाव, एकान्त प्रियता, नम्रता, मित भाषण, गम्भीरता, एव सौजन्य आदि अनेक मानवोचित सद्गुणो का सद्भाव, आपके बाल जीवन की अमूल्य निधि था। प्रारम्भ से ही आपको सत्सग एव धर्म श्रवण के प्रति रुचि थी। ज्यो-ज्यो, आप शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह बढ़ने लगे, त्यो त्यो आपकी वाणी मे मधुरता, एव विचार प्रवीणता का अधिक सौष्ठव

दृष्टिगत होने लगा, तथा प्रगल्भता और गम्भीरता का साम्राज्य आपके हृदय पर प्रस्थापित होता गया। विवेक पूर्ण रहन-सहन, सयत-भाषण, विद्याभिरुचि, और साधुजन-सत्सग की लालसा आदि महान् सद्गुणो ने आपके भावी जीवन का निर्माण प्रारम्भ कर दिया।

—इसी प्रकार ९ वर्ष की अवस्था व्यतीत हुई। अनन्तर सद्भाग्य से इन्हे एक महान् आत्मा का सहयोग प्राप्त हुआ, जो कि जैन परम्परा के, श्वेताम्बर स्थानकवासी साधु समुदाय के मुकुट मणि, सन्त थे। चारित्र चूड़ामणि, पण्डित रत्न, धर्मनीतिज्ञ, श्रावकगण उद्धारक, विद्या विशारद, श्री ऋषिराज जी महाराज की पवित्र सेवा मे आप फाल्गुण सम्वत् १९५६ विक्रम ग्राम एलम, जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर-प्रदेश) चले गए, और वही गुरुदेव के सरक्षण मे रह कर, निरन्तर सात वर्षों तक विद्या एव वैराग्य का अभ्यास करते रहे। आपने १६ वर्ष की अवस्था आने पर सम्वत् १९६३ विक्रम, ज्येष्ठ शुक्ला पचमी मगलवार को ढिढाली ग्राम जिला मुजफ्फरनगर मे गुरुदेव के कर कमलो से आर्हती मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली। तत्पश्चात् आप गाव-गाव पैदल भ्रमण कर, अहिसा, सत्य, न्याय और कर्तव्य का सन्देश जनता को देने लगे। उत्तर-प्रदेश, हरियाणा, पजाब और दिल्ली के शताधिक क्षेत्र आपके विचरण के प्रमुख स्थान रहे हैं। गत दश वर्षों से तो आप आगरा नगर मे ही विराजमान थे।

❀ सौभाग्य सूर्य

—कुछ वर्षों से आपका स्वास्थ्य शिथिल हो चला था। आँखो मे मोतिया उतर आने के कारण, आपकी दृष्टि भी काफी मन्द पड़ गई थी। एक आँख का आपरेशन कराने पर भी नेत्र-ज्योति पूर्ण रूपेण ठीक नही हो पाई। किन्तु अस्वस्थ

दशा मे भी आपकी साधना, जप-तप, सुमरण निरन्तर चलते ही रहे। वे कभी शिथिल न पड़ने पाए। अन्त मे ६ मई सन् १९६० तदनुसार वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार, सम्वत् २०१७ विक्रम का दुर्दिन भी आ ही पहुँचा। जिस दिन आपका स्नेहाचल हमारे शिर से सदा के लिए उठ गया। जैन समाज का, सौभाग्य सूर्य अस्त हो गया। आगरा नगर के लिए यह महान् खेद का दिन था। हमारे शिरछत्र, हमारी आत्मा के प्रकाश, हमारे सौभाग्य के सहस्राशु, श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज, महाप्रयाण का पथ अपना कर स्वर्ग लोक के दिव्य धाम में जा विराजे। इस नश्वर ससार से नाता तोड कर, और हमे अपनी पुनीत सेवा से सदा के लिए वचित कर, हमारी आँखों से ओझल हो गए।

—आपके स्वर्गवास का दु:खद समाचार, विद्युत् वेग से प्रसारित हो गया। जिसने भी सुना, वही सन्न रह गया। शोक का वातावरण सर्वत्र छा गया। आपका पार्थिव शरीर आगरा के सुप्रसिद्ध जैन स्थानक मानपाड़ा मे रखा गया। आपके अन्तिम दर्शन करने के लिए दर्शनार्थी जनता का ताता बन्ध गया। शोकाकुल मानव आते, और आपके चरणो मे अपने आँसुओ का अर्घ्य दे कर मूक श्रद्धाञ्जलि चढा जाते। सबके हृदय से एक ही आवाज निकल रही थी—ऐसी महान् विभूतियाँ भविष्य मे दुर्लभ है। इस सौभाग्य सूर्य के अस्त होने से जो स्थान रिक्त हुआ, उसकी पूर्ति भविष्य मे सर्वथा असम्भव है। आपकी विमान यात्रा बडी ही दारुण थी। चारों ओर शोकाकुल मानव समुदाय की आँखों से सावन-भादो की वर्षा हो रही थी। बच्चे, बूढे, जवान, स्त्री-पुरुष, जिधर देखो, सिर ही सिर दिखलायी पडते थे। आपके गगन भेदी जय जयकारो से नगर गु जायमान हो उठा। इसी जय-जयकार के साथ आपका विमान श्मशान पहुँचा और वहाँ श्री सेठ नेमीचन्द जी लौकड-जो कि आगरा– बेलनगज के एक प्रसिद्ध धर्मात्मा पुरुष श्रावक हैं—उनके द्वारा, विधि पूर्वक चन्दन की चिता बना कर, आपका अग्नि सस्कार किया गया। इसके पश्चात् शोकग्रस्त जनता

आपके गुणानुवाद गाते हुए, उस अपनी अमूल्य निधि को, अपने ही हाथो लुटा कर, कुछ खोयी सी, कुछ ठगी सी, अपने-अपने घरो को वापिस लौट आई।

—इस प्रकार आप समाज के सूर्य थे। एक ऐसे सूर्य जो अपने उदय-मध्यान्ह और अस्त के द्वारा ससार को एक नया सन्देश दे, एक नव जागरण दे, एक नयी चेतना और एक नयी प्रेरणा प्रदान करे। आप बाल रवि की भाँति ससार को नव जागरण का सन्देश देते हुए आये और आपने मध्यान्ह कालीन सूर्य की भाँति, अपनी ज्ञान-रश्मियों द्वारा विश्व का कोना-कोना प्रकाशित किया, तथा संध्याकालीन अस्तगत प्रभाकर की भाँति अपनी सद्गुण लालिमा में सबको एकाकार करते हुए, आप स्वर्गारूढ हुए। ७० वर्ष लम्बा, आपका महान् जीवन आदि से अन्त तक अलौकिक विशेषताओ से भरपूर रहा है। शाशनदेव से मेरी करबद्ध यही प्रार्थना है कि उस महान् विभूति के चरण-चिन्हो पर चल कर ससार, लक्ष्य प्राप्ति कर सके, ऐसा धैर्य, साहस एव आत्मबल प्रदान करे।

—कचहरीघाट, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१७—९—६०

[८४]

गुरु गुण स्मरण :

श्री पारसनाथ जी जैन

—श्री पारसनाथ जी जैन लोहामण्डी, आगरा निवासी श्री लछमनदास जी जैन के सुपुत्र हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के प्रति आप अनन्य श्रद्धा और भक्ति रखते हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की कृपाओं तथा सद्गुणों का स्मरण करते हुए, प्रस्तुत लेख में आपने अपनी सच्ची श्रद्धा और भक्ति का परिचय दिया है।

—लेख में श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की कौन सी कृपाओं का, तथा कौन-कौन से सद्गुणों का स्मरण किया गया है? और लेखक की श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की वियोगजन्य आन्तरिक वेदना, किस रूप में इस लेख के द्वारा अभिव्यक्त हुई है? इन सब बातों का समाधान, अगली पंक्तियों में पाठकों को मिल सकेगा।

—सम्पादक

❀ गुरु कृपा स्मरण

—परम पवित्र, प्रात· स्मरणीय श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की अपार कृपा से इस पुण्य नगरी आगरा मे रह कर, हमने जो कुछ भी ग्रहण किया अथवा कर रहे हैं, यह सव उन्ही सत्पुरुष की कृपा का चमत्कार है। आध्यात्मिक विभूति, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज की महत्वानुभूति के इस सम्वल से हमने जो कुछ भी प्राप्त किया, उसका ऋण कभी चुका सकेंगे, इसमे सन्देह है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने इस आगरा के सन्निकट ही जन्म ले कर, और इसी उत्तर-प्रदेश को अपनी आध्यात्मिक साधना का प्रमुख क्षेत्र बना कर, इस भूमि को पावन किया है। जन-जन के हृदयो मे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने जिस धर्म-बीज का वपन किया है, वह पल्लवित, पुष्पित तथा फलित हो कर, उनके उपकारो की अमर कहानी युगों-युगो तक कहता रहेगा।

❀ गुरु गुण स्मरण

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, अखण्ड वालब्रह्मचारी थे। ब्रह्मचर्य के महान् तेज से उनकी अन्तर आत्मा परम तेजस्वी वन चुकी थी, जिसका प्रकटीकरण उनके तेजस्वी आकर्षक सौम्य मुख्य-मुण्डल द्वारा होता रहता था। उनके पवित्र जीवन मे मृदुल स्वभाव, सरलता, निष्कपटता, मैत्री, करुणा और सहानुभूति प्रचुर मात्रा मे परिव्याप्त थी। उनको मिथ्याभिमान अथवा अपनी विशेषताओ का गर्व, किञ्चित् मात्र भी तो नही था। आप अहकार क्रोध, तथा लोभ, मोह आदि दुर्गुणो से सदा ही दूर रहते थे।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का जीवन एक तपस्वी, उच्च कोटि के सन्त का जीवन था। लम्बी-लम्बी तपस्याएँ सहज भाव से करते रहना, आपके सयममय कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्मिलित

था। जप, तप, स्वाध्याय एव ध्यान आप की संयम-साधना के प्रमुख अग थे। इतना होने पर भी आपने कभी भी अपने को तपस्वी कहलाना पसन्द नही किया। आत्म ख्यापन से आप सर्वथा अलग रहा करते थे और प्रचार से हमेशा दूर।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के अन्तर हृदय मे, प्रेम का अटूट झरना बहा करता था। आप क्या छोटे के साथ और क्या बड़े के साथ? क्या बच्चे के साथ और क्या बूढे के साथ? क्या स्त्री के साथ और क्या पुरुष के साथ? यावत् सभी के साथ समान प्रेम का व्यवहार करते थे। और आपके उसी प्रेम भाव मे वह जादू भरा आकर्षण था कि हर कोई खुद ब खुद आपकी ओर खिचा चला आता था।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव का समस्त जीवन ही आध्यात्मिक सद्गुणों से ओतप्रोत था। सज्जनता, सयम, शान्ति, सरलता, सत्य, सन्तोष तथा सेवा भाव आदि सद्गुणालकारो से आपका पावन जीवन अलकृत रहा है। दो-चार वर्ष ही नही, आपने तो जीवन के ५४ वर्ष, संयम एव सद्गुणो के विकास मे व्यतीत किए है। बचपन, जवानी और बुढापा यह मानव शरीर की तीनो अवस्थाएँ ही आप की धर्माराधन, एव सद्गुण-विकास में व्यतीत हुई हैं। इसीसे आप का परम पवित्र जीवन, हम ससारी जनो के लिए आदर्श एव प्रेरणा का स्रोत रहा है।

❀ मेरा सम्पर्क

—मै श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की पुनीत चरण सेवा में अधिक समय तो नही दे पाया। पर जो कुछ भी थोडा बहुत समय आपकी सेवा मे व्यतीत हुआ, वह जीवन की अमूल्य थाती बन चुका है। वह जीवन पर्यन्त हृदय पटल पर अकित रहेगा। आपका सात्विक प्रेम, आपके आदरणीय सद्गुण, मुझे आपकी पुनः पुनः स्मृति कराते रहते है, और भविष्य मे भी कराते ही रहेगे।

—मैं अधिक क्या लिखू ? परिचय के तो चार दिन ही बहुत होते हैं, जबकि श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव तो हमारे बीच में वर्षों तक रहे हैं। ऐसे मे यदि उनके बिछुड़ने से, आँखे छलछला आवें, तो आश्चर्य ही क्या ? यद्यपि श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव आज हमारे मध्य मे नही रहे, परन्तु हमें इतना सन्तोष अवश्य है कि उनका पावन जीवन और पावन सन्देश आज भी हमारे सामने मौजूद है। हमारा पग-पग पर जीवन साथी है। उनका यह महान् जीवन और उनके ये पावन उपदेश हमारे जीवन मे प्रकाशवर्तिका का कार्य करेगे। तथा हमें ठोकर खाने अथवा गिर जाने से बचाते रहेंगे। इस प्रकाश के सहारे ही हम अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। बस इन्ही शब्दो के साथ, उन श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का स्मरण करता हुआ, मै उनको अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूँ।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१—१०—६०

[८५]

एक स्वर्णिम जीवन की याद में :

श्री नगीनचन्द्र जी जैन

—श्री नगीनचन्द्र जी जैन, जैन समाज के एक होनहार छात्र हैं। अभी आप महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के छात्र हैं। बौद्धिक प्रतिभा से सम्पन्न और धार्मिक वृत्ति से संयुक्त आप श्री पदमचन्द जी जैन घड़ी वालों के सुपुत्र हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के महान् व्यक्तित्त्व की ओर आपका काफी आकर्षण रहा है। उनके श्री चरणों में बैठ कर आपने काफी दिनों तक अपने धार्मिक ज्ञानाभ्यास में अभिवृद्धि की है। फलत उस स्वर्णिम जीवन का आप के हृदय पर प्रभाव होना, कोई आश्चर्य की वात नहीं है। बहुत थोड़े से ही शब्दों में आपने उस सफल महापुरुष, भव्यमूर्ति सद्‌गुरुदेव के प्रति अपने श्रद्धा-भाव व्यक्त किए हैं। जो आगे दिये जा रहे हैं।

—सम्पादक

❀ एक सफल महापुरुष

—इस ससार मे, अगणित मानव, जन्म लेते है। और अन्त मे. एक दिन अपनी जीवनलीला दिखा कर, मरण-पथ पर अग्रसर हो जाते हैं। किन्तु जन्म उन्ही का सार्थक होता है, जो आत्म-कल्याण के साथ-साथ, जन-कल्याण को भी जीवन का एक महानतम उद्देश्य बना लेते है, और उसी उद्देश्य की ओर, सतत अविश्रान्त गति से अग्रसर रहा करते हैं। तथा मरण भी उन्ही महान् आत्माओ का महत्वपूर्ण हुआ करता है, जो मर कर भी अमर हो जाया करते हैं। ऐसे महान् आत्म-साधक महापुरुषो के पार्थिव-शरीर, चाहे हमारे सम्मुख न हो, परन्तु उनके महानतम-सन्देश, उज्ज्वल साधना, तथा सत्कार्य, आज भी जन-गण-मन को, सत्य-पथ पर चलने की प्रेरणा प्रदान कर रहे है, तथा भविष्य मे भी करते रहेगे।

—महापुरुष ससार का वह सफल व्यक्ति होता है, जिसके मधुर-सम्पर्क मे आने वाला व्यक्ति भी, पूर्ण सफलता प्राप्त कर, महान् पुरुष बन सकता है। वास्तव मे महापुरुप, अन्धकार मे भटकती हुई जनता का पथ-प्रदर्शन करने के लिए ही, मनुष्य रूप मे अवतरित हुआ करते है। वैसे आन्तरिक रूप से वे दैवी सम्पत्तियों से सम्पन्न हुआ करते है। स्वार्थ को तिलाञ्जलि दे कर वे परमार्थ को अपना ध्येय बना कर चला करते हैं।

—शान्त मुद्रा, परम पूज्य, गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज, ऐसे ही सफल महापुरुपों मे से एक थे। आपने शैशवावस्था से ही, अपना जीवन, आत्म-कल्याण के साथ साथ जन-कल्याणार्थ, साधना की बलि वेदी पर न्योछावर कर दिया था। आपने जन-हृदयो मे सयम, सद्ज्ञान एव सदाचार की ज्योति प्रज्ज्वलित कर दी। सभी आपके प्रभावशाली जीवन से प्रभावित हैं। आपकी सद्गुण-सुगन्धि से आकर्षित हो, असख्य जन-भ्रमर आपके इर्द-गिर्द गुञ्जार किया करते थे।

❀ एक भव्य मूर्ति सन्त

—यद्यपि गुरुदेव, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, आज दैहिक रूप से हमारे समक्ष नही रहे। तथापि आपके महान् जीवन की मधुर स्मृतियाँ और अमिट विशेषताएँ, आज भी हमारे हृदयों में सुरक्षित हैं। आप एक भव्य मूर्ति सन्त थे। जो भी व्यक्ति, एक बार आपके दर्शन कर लेता, वह आपकी भव्यता एव सौम्यता का हमेशा-हमेशा के लिए प्रसशक बन जाता था। आप की सरल हृदयता, जन-मानस को सहज ही आकर्षित कर लिया करती थी।

—जो भी आपके पास, दु:खी और टूटा हुआ दिल ले कर, रोता हुआ आया, वही आप के मधुर वचनो से, अपूर्व शान्ति, और आनन्द प्राप्त कर, हँसता हुआ लौटा। आप सभी दोषों से दूर, मोती के समान उज्ज्वल और आबदार थे। आप जल में कमल की मानिन्द सुशोभित थे। जिस प्रकार जल मे रह कर भी कमल उससे अलग-अलिप्त रहता है, उसी प्रकार आप, ससार मे रह कर भी, उससे अलग, अलिप्त, प्रभुभक्ति एवं आत्म-साधना में तल्लीन रहते थे। ऐसे भव्य मूर्ति गुरुदेव को कोटिश· वन्दन।

—कसेरट बाजार, आगरा : उत्तर-प्रदेश :

१९—९—६०

[८६]

हम बच्चों के आकर्षण केन्द्र :

श्री सुभाषचन्द्र जी जैन

—श्री सुभाषचन्द्र जी जैन, एक चुलवुली तबीयत के शिशु हैं। अवस्था छोटी होने पर भी आप की बुद्धि विकासशील है। आप भी श्री पदमचन्द जी जैन के सुपुत्र हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की चरण सेवा में बैठ कर, आप ने भी बहुत कुछ सीखा है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के श्री मुख से सुनी हुई धार्मिक कहानियाँ आप को खूब स्मरण हैं।

—आपने अपने समान ही अन्य बच्चो के आकर्षण-केन्द्र, उन श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी भावाञ्जलि अर्पित की है। आपने अपने भावों को बड़ी ही सुगमता के साथ प्रस्तुत लेख में व्यक्त किया है। पाठकों से एक बार इन की बात भी पढ़ जाने का अनुरोध है।

—सम्पादक

❀ सच्चे धर्मात्मा

—ससार मे, सच्चे धर्मात्मा, वही मानव होते है, जो अपना जीवन धर्म के सत्य मार्ग पर लगा देते है। आध्यात्मिक जीवन अपना कर, संयम धार कर, ऐसे ही मानव अपना जन्म सफल कर लिया करते हैं। आत्म-साधना के मार्ग पर चल कर, ऐसे ही धर्मात्मा पुरुष अजर-अमर हो जाया करते हैं। ऐसे धर्मात्मा मानव, अपना तो कल्याण करते ही है, परतु ससार की अनेक भूली-भटकी आत्माओ को भी मोक्ष-मार्ग पर लगा दिया करते है।

—ऐसे ही सच्चे धर्मात्मा, हमारे पूज्य गुरुदेव श्री गणी श्याम लाल जी महाराज थे। आप ने अपना सारा जीवन धर्म के लिए अर्पण कर दिया था। बचपन की छोटी सी अवस्था में ही आप धर्म के मार्ग पर चल पडे थे। आप स्वयं दीक्षा लेकर, मोक्ष-मार्ग पर चले, और अपने उपदेशो से, हजारो लाखो स्त्री-पुरुषो को मोक्ष मार्ग पर चलाया। आप का जीवन पवित्रजीवन था। धर्म आपकी नस-नस मे, रग-रग मे, जीवन के कण-कण में रम चुका था।

❀ आप के सद्गुण

—आप सद्गुणो की खान थे। आप श्री जी के मन मे अखण्ड शान्ति विराजमान रहती थी। आप हमेशा प्रसन्नमुख रहा करते थे। आप कभी किसी से लड़ना या किसी को भला-बुरा कहना नही जानते थे। आप को क्रोध तो कभी आता ही न था, और न कभी मोह आता था। आप सब को प्रेम और स्नेह की दृष्टि से देखा करते थे। आप के महान् मधुर जीवन से आकर्षित हो कर, दूर-दूर से लोग दर्शनो को आते थे। सभी आप के अमूल्य उपदेशो को सुन कर शान्ति पाते थे।

—आपने बच्चे-बच्चे के हृदय मे धर्म-जागृति पैदा की। आप के पास अगर कोई दुखी आता, तो झट आप उस का दु:ख दूर कर दिया करते थे। आप हर समय भजन-ध्यान मे लीन रहा करते थे। आप के हाथ मे हर समय माला रहा करती थी। आप जाप-

सुमरण बहुत किया करते थे। कुछ दिनों से आपकी आँखे कमजोर पड़ गई थी, दिखाई आप को बहुत कम देने लगा था, फिर भी आप परिचित व्यक्ति को, चाहे वह कही का हो, कितने ही दिनो मे क्यो न मिला हो, आवाज से ही फौरन पहिचान लेते थे।

❀ बच्चों के आकर्षण केन्द्र

—आप हम बच्चों को तो, बहुत ही प्यार किया करते थे। आप बच्चों को धार्मिक कहानियाँ सुनाया करते थे, जिस से बच्चे आप को हर समय घेरे रहते थे। आप बच्चो मे धर्म के संस्कार भरा करते थे। बच्चो को पास बिठा कर, सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल, नवतत्त्व तथा थोकड़े आदि धार्मिक ज्ञान का अभ्यास कराना, आपका प्रमुख कार्य रहता था। बच्चे भी आप मे अत्यन्त श्रद्धा रखते थे और आप से प्रेम पूर्वक धार्मिक कहानियाँ सुनते हुए, धार्मिक ज्ञान का अभ्यास किया करते थे।

—आप के पास बैठ कर, हमे इतना आनन्द प्राप्त होता था, जिसका कि वर्णन नही किया जा सकता। घण्टे दो घण्टे का समय यो ही व्यतीत हो जाता था। हम आपके इन उपकारो को कैसे भूल सकते है ? हम पर तो आप की विशेष कृपा रहा करती थी। जिस दिन भी हम नही आते, उसके दूसरे दिन आप कहते—क्या वात हुई ? कल क्यो नही आये ? आज तुम्हे दो सामायिक करनी होगी, एक आज की और एक कल के नाम की। आपने प्यार से मेरा नाम तो-चुहिया-ही रख छोडा था। आप को हम से अत्यधिक स्नेह था, और हम भी आप के दर्शन कर, चरण-स्पर्श कर, कुछ देर पास बैठ कर, अपने को भाग्यशाली अनुभव किया करते थे।

—अव आप के दर्शन कहाँ ? न जाने इस चहचहाती वाटिका को सूना छोड़ कर आप कहाँ चले गए ? आप के स्वर्गवास के पश्चात् हम सव वालक कुछ दिन तो खोए-खोए से, ठगे-ठगे से डोलते रहे। हम अव भी जैन स्थानक जाते हैं, सामायिक आदि भी करते हैं। पर अव

वह रौनक कहाँ ? वह उत्साह कहाँ ? उस समय की तो कुछ बात ही और थी। पर खैर, आप न सही, किन्तु आप के द्वारा बोया हुआ धर्म का बीज अब भी हमारे हृदयों मे सुरक्षित है। और वही आपकी मधुर स्मृतियों को जीवन भर ताजा रखेगा। वही हमारे लिए तो अनमोल वस्तु बन चुका है। हम बच्चे तो आपको जीवन-पर्यन्त कभी नहीं भुला सकेंगे। आपके द्वारा दी गई जीवनोपयोगी शिक्षाएँ हमारे जीवन-क्षेत्र में काम आएँगी। आपका पावन महान् जीवन हमे सदा अपने कर्तव्य-मार्ग में डटे रहने तथा आगे—और आगे, निरन्तर आगे ही बढ़ते रहने के लिए प्रेरणा करता रहेगा। आपके पावन उपदेश हमे जीवन-क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए उत्साह देते रहेंगे, स्फूर्ति देते रहेंगे और एक नयी जागृति देते रहेगे। बस अपनी बात मैं यहीं समाप्त करते हुए, आपके पावन चरण कमलों मे श्रद्धा के फूल चढ़ाता हूँ। आशा ही नही मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि आप अपने प्यारे छोटे से शिष्य के इन श्रद्धा-फूलों को स्वीकार कर ही लेंगे।

कसेरट बाजार, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१६—६—६०

[८७]

अध्यात्म-साधना के अमर साधक :

सुश्री लज्जा जैन–बी० ए०–

—सुश्री लज्जा कुमारी जैन–बी. ए.–सरल स्वभाव, तथा कुशाग्र बुद्धि से सम्पन्न होनहार छात्रा हैं। आप लोहामण्डी, आगरा निवासी श्री हजारीलाल जी जैन की पौत्री तथा श्री नन्हे बाबू जैन की सुपुत्री हैं।

—अध्यात्म-साधना के अमर साधक श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपने अपने मनोभाव काफी सुन्दरता के साथ व्यक्त किए हैं। आप की लेखन शैली बहुत सुन्दर एवं आकर्षक है। अपनी भाव भीनी श्रद्धाञ्जलि आपने थोड़े से ही महत्त्वपूर्ण शब्दों में श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी को अर्पित की है। जो अविकल रूप से आगे दी जा रही है।

—सम्पादक

❀ ते जयन्ति

—जयन्ति ते सुकृतिनो, रस सिद्धाः कवीश्वरा ।
नास्ति येषां यशाःकाये, जरा-मरणज भयम् ॥

जो संसार मे, उत्पन्न हुआ है, वह एक दिन, अवश्यमेव पञ्चत्व को प्राप्त होगा ही। पर धन्य हैं, सतत जीवन्त वे सुकृति सम्पन्न रस सिद्ध कवीश्वर—जिनके यश. शरीर को, कीर्ति-कलेवर को, जरा और मरण का, कभी भी भय ही नही होता। वे अपनी कला कृतियो द्वारा, यशः शरीर से, हमेशा-हमेशा के लिए, अजर-अमर हो जाया करते हैं।

—जो बात, सुकृतिसम्पन्न, कवीश्वरो के लिए कही गई है, वही बात, प्रत्येक महान् पुरुष पर लागू हुआ करती है। ये आध्यात्मिक महान् आत्माएँ भी, अपनी त्याग वैराग्य सयम, और सद्गुण आदि सुकृतियो के कारण, अजर-अमर हो जाया करती हैं। इन सरस, सहृदय, वन्दनीय विभूतियो को, जनता युग-युग तक, स्मरण करती रहती है। इन महान् आत्माओ की, पवित्र वाणी और सद्विचारधारा, युगो-युगो तक, जन-मानस की भूमि पर, रमण किया करती है।

—पूज्य गुरुदेव, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज भी, इन्ही पावन-विभूतियो, अजर-अमर, सुकृति सम्पन्न महान् आत्माओ मे से एक थे। जीवन-साधना के महान् क्षेत्र मे वे, सामान्य साधको से, आगे—बहुत आगे थे। सयम एवं त्याग के महामार्ग पर, उन्होने जीवन के प्रथम चरण मे ही, अपने अडिग चरण बढा दिए थे। और एक सफल सैनानी की भाँति, वे अपने जीवन के अन्तिम क्षणो तक, इस मार्ग पर, अटल रहे, अडोल रहे, और अकम्प रहे। भौतिक साधनो मे आसक्त, जनता के लिए उन्होने, सयम और त्याग का एक महान् आदर्श समुपस्थित किया। तभी तो अजर-अमर रूप से वे जन-हृदयो मे महत्वपूर्ण सर्वोच्च स्थान पा सके।

❀ अमर साधक

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव एक ऐसे अमर साधक थे, जिनका समस्त जीवन ही, सद्गुण समूह हो परिव्याप्त रहा है। आप मे, इतनी विशेषताए थी, जिनकी गणना, सामान्य बुद्धि का मानव कर भी नही सकता। आप अखण्ड बालब्रह्मचारी थे। आप के जीवन मे सरलता, सौम्यता, मृदुता, कोमलता, धैर्य, त्याग, संयम, तितीक्षा, और सेवा भाव आदि सभी सद्गुणो को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। आप की सौम्य मुख-मुद्रा, सरल हृदय, और शान्त प्रकृति बरबस जनता का मन आकर्षित कर लेती थी।

—आज जैन समाज का ऐसा कौन मानव है? जो आपके सद्गुणो से, परिचित न हो? मै और मेरा, तू और तेरा, जैसी भावनाओ से आप अपरिचित ही रहे हैं। अपने पराए का विभेद, कभी आपके मानस मे, स्थान न पा सका, यही कारण है कि आप, जन-जन के मन-मन मे विराजमान हैं। क्या बच्चे, क्या बूढे और क्या जवान? क्या स्त्री और क्या पुरुष? सभी आप से प्रभावित हैं। सभी आपको श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखा करते है। आत्म-साधको के लिए तो आपका जीवन अनुकरणीय आदर्श ही था और है तथा रहेगा। भले ही आप आज, हमारे सामने से ओझल हो गए हैं, लेकिन आज भी आप यश शरीर और अपनी सुकृतियो से सब के समक्ष विद्यमान हैं। और हमेशा-हमेशा के लिए, अजर और अमर रहेगे। ऐसे अमर साधक को कोटि-कोटि वन्दन।

—लोहामण्डी, आगरा .उत्तर प्रदेश.
२०—६—६०

[८८]

वे लोकोपकारी महापुरुष थे :

सुश्री कुमारी कुसुम जैन

सुश्री कुसुम कुमारी जैन, एक हँसमुख प्रकृति और मधुर स्वभाव की होनहा छात्रा हैं। आप इस वर्ष प्राइवेट इण्टर की परीक्षा दे रही हैं। आप श्र अमोलकचन्द जी जैन की पौत्री तथा श्री पदमचन्द जी जैन की सुपुत्री हैं। धर्म के प्रति आप की आस्था और लगन प्रसंशनीय है।

—आप ने बड़ी ही श्रद्धा के साथ उस लोकोपकारी महापुरुष, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के ज्योतिर्मय जीवन की विशेषता रूप ज्योति-रश्मियों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। प्रस्तुत लेख का शब्द सौन्दर्य एवं भाव सौन्दर्य देखते ही बनता है। पाठकों से इसे एक बार अवश्य पढ़ जाने का आग्रह है।

—सम्पादक

❀ एक ज्योतिर्मय जीवन

—भारतीय संस्कृति में, प्रकाश, उपासना का प्रतीक रहा है। प्रकाश जीवन का एक अभिन्न अंग रहा है। भारतीय आत्म-साधक ने यदि कोई कामना की है, तो वह प्रकाश प्राप्त करने की कामना है। भारतीय संस्कृति ने प्रकाश को अपना अराध्य मान कर, उसकी बड़ी लम्बी चौड़ी स्तुतियाँ भी की हैं। वेद एवं सारा वैदिक साहित्य प्रकाश और उसके उत्पादक सूर्य की पूजा-अर्चा मे तल्लीन है।

—किन्तु प्रकाश केवल भौतिक अर्थात् सूर्य-चन्द्र तथा दीपक आदि का ही नही होता, प्रकाश ज्ञान का भी होता है, कर्तव्य का भी होता है, संयम और सदाचार का भी होता है, और प्रकाश अनुभवो का भी होता है। प्रकाश किसी भी प्रकार का क्यो न हो? भारतीय सस्कृति को यह सबसे प्रिय ही रहा है। और वैसे तो भारतीय सस्कृति अध्यात्म प्रकाश की ही सस्कृति कहलाती है। वह मानव को अन्धकार से प्रकाश की ओर बढने की प्रेरणा देते हुए यही कहती है—

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मानव! तू अन्धकार से प्रकाश की ओर चल। यही तेरा ध्येय है, और यही तेरा लक्ष्य। तू हृदय के अन्धकार से, अज्ञान के अन्धकार से, मोह के अन्धकार से, और दुर्गुणो, दुर्व्यसनों के अन्धकार से परे हट, दूर हो, और तू चल परमात्मा के प्रकाश की ओर, ज्ञान के प्रकाश की ओर, वीतरागता के प्रकाश की ओर, तथा सद्गुण और सदाचरण के प्रकाश की ओर। बढ, निरन्तर बढ, चल, निरन्तर चल। बस चला चल, चला चल—

चरैवेति, चरैवेति।

—द्रव्य प्रकाश, अर्थात् सूर्य-चन्द्र अथवा दीपक आदि का भौतिकी प्रकाश तो केवल मानव के नेत्रो का विपय हो सकता है, केवल आंखो को प्रकाशित कर सकता है, अथवा वह संसार के भौतिक पदार्थों पर केवल ऊपर-ऊपर ही प्रकाश डाल सकता है। परन्तु

मानव की आत्मा को प्रकाशित करने मे वह असमर्थ है। मानव क आत्मा के लिए तो, आध्यात्मिक प्रकाश की आवश्यकता पडा करत है। और उस प्रकाश को देने वाले, आध्यात्मिक महापुरुष ही हुआ करते है।

—अतएव यह निर्विवाद है कि आत्मा को अन्धकार से निकाल कर, प्रकाश की ओर ले जाने के लिए, महान् पुरुषो की आवश्यकता हुआ ही करती है। उन्ही महान् अध्यात्म वेत्ताओ, आत्म-साधक महापुरुषो के जीवन स्पर्शी अनुभवो का प्रकाश ले कर, जब मानव, जीवन-क्षेत्र के गहनान्धकार मे प्रवेश करता है, तो उसे फिर कही भी भटकने का या ठो र खाने का भय नही रहता। एक दिन वह निश्चय ही, उस प्रकाश के सहारे चल कर, निर्विघ्न रूप से अपने लक्ष्य को सफलता पूर्वक प्राप्त कर ही लेता है।

—ऐसे ही आध्यात्मिक महापुरुषो की श्रेणी मे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का शुभ नाम भी सगर्व लिया जा सकता है। पूज्य गुरुदेव का जीवन भी एक ज्योतिर्मय जीवन था। अध्यात्म-साधना से मजा, निखरा, चमकता हुआ जीवन था। भला जो साधक, आत्म-साधना के महान् प्रकाश-पथ पर जीवन के प्रारम्भ से ही कदम बढा दे और जीवन के ७०-७० वर्ष उसी साधना मे अमल एव अचल रूप से व्यतीत कर दे, उस की महानता में क्या सदेह है ? निःसन्देह वह महापुरुष है। वह जन-गण-मन के लिए प्रेरणा का प्रकाश-स्तम्भ है। पूज्य गुरुदेव का पवित्र जीवन, सद्गुणो, एव अध्यात्म-अनुभवो से जगमगाता जीवन था।

❋ लोकोपकारी महापुरुष

—यह अटल एवं ध्रुव सत्य है, कि जो महान् पुरुष होता है, वह लोकोपकारी भी होता है। आत्म-कल्याण के साथ-साथ, जन-हित एवं जन-उत्थान का दृढ संकल्प भी महापुरुष ही ले कर चला करते हैं। पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का महान् जीवन भी, इसका अपवाद न था। आत्म-हित के साथ-साथ, जन-हित की

भावना भी उनके अन्तर्हृदय मे विद्यमान थी। तभी तो वे मात्र १६ वर्ष की अवस्था मे ही साधना का मार्ग अपना कर, आत्म-हित एव जन-हित के कार्य मे जुट पड़े थे। अपने जीवन अनुभवो, एव पावन उपदेशो से निरन्तर ५४ वर्षो तक आपने लोकोपकार किया। उत्तर-प्रदेश, हरियाणा, पजाब या दिल्ली, जिस ओर भी आप घूमे, वही आपने धर्म-प्रचार किया, समाजोत्थान किया। तथा सहस्राधिक वल्कि कहना चाहिए लक्षाधिक जनता को सन्मार्ग पर लगाया।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, जन-हृदय-सम्राट थे। उनकी सरल प्रकृति, उदार स्वभाव, पवित्र आचरण, आदर्श चारित्र, सभी हृदय को आकर्षित करने वाले सद्गुण हैं। आप की मधुर-स्मृतियाँ आज भी जन-मानस को मुग्ध किए हुए हैं। सौम्य मूर्ति, प्रसन्न वदन, गुरुदेव की मगलमय मूर्ति के जिसने एक बार भी दर्शन कर लिए, वह उनके सद्गुणो को, उपकारो को, आज तक विस्मरण नही कर सका है। धन्य है ऐसे लोकोपकारी महापुरुषो को, जिनका समस्त जीवन ही पर हितार्थ समर्पित था।

❀ हम पर उपकार

—गत अन्तिम ६-१० वर्ष से तो, पूज्य गुरुदेव आगरा मे ही विराजमान रहे। हम आगरा निवासी आपके उपकारो को कभी नही भुला सकेंगे। आप ने आगरा नगर के वच्चे-वच्चे के हृदय मे धर्म-जागृति उत्पन्न की। उन्हे धर्म का सच्चा स्वरूप वतला कर, सत्पथ पर चलने की प्रेरणा दी। आप की सौम्य मुख-मुद्रा एव पवित्र-वाणी मे वह तेज और ओज था, जो वरवस दर्शक एव श्रोता का मन आकर्षित कर लेता था। आप के मृदुल स्वभाव से, यहाँ का वच्चा-वच्चा परिचित है।

—जीवन के अन्तिम दिनो मे आप व्याधिग्रस्त अवश्य रहे, परन्तु आपका आत्म-तेज तो उसी प्रकार दमकता रहा। वह तो जीवन के अन्तिम क्षण तक भी धूमिल न पड़ सका। अन्त मे पूज्य गुरुदेव वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार सम्वत् २०१७ विक्रम के

दिन, मानपाड़ा आगरा में, जरा-जीर्ण इस पार्थिव शरीर को छोड़ कर स्वर्गवासी हुए। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो मुस्कराते हुए पूज्य गुरुदेव, पुराना वस्त्र त्याग कर, नया वस्त्र ग्रहण करते, धारण करने जा रहे हैं।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा—
न्यन्यानि सयाति नवानि देही ॥

गीता का यह महान् आदर्श, जनता अपने सम्मुख ही साकार देख कर गद्गद् हो उठी।

—आज पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, भौतिक रूप से, बेशक हमारे समक्ष उपस्थित नही हैं। परन्तु उनका अध्यात्म-प्रकाश से प्रकाशमान जीवन एवं महत्वपूर्ण पावन सन्देश, आज भी हमारे समक्ष उपस्थित है। और इस रूप में पूज्य गुरुदेव सदा-सर्वदा के लिए अजर-अमर हो गए हैं। उन की मधुर स्मृति बच्चे-बच्चे के हृदय मे उपस्थित है, सुरक्षित है। वह कभी धूमिल पड़ने वाली नही है।

—कसेरट बाजार, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१९—९—६०

[८९]

उच्च कोटि के महापुरुष :

सुश्री कुमारी सरोज जैन

—सुश्री सरोज कुमारी जैन, लोहामण्डी आगरा के श्री जादौराय जी जैन की सुपुत्री हैं। इस वर्ष आप इन्टर की परीक्षा में बैठ रही हैं। पिता एवं भाई को श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के प्रति श्रद्धाञ्जलि लिखते देख कर आपने भी अपनी लेखनी उठाई और उस उच्च कोटि के महापुरुष के प्रति अपने कुछ शब्द लिख डाले।

—जिन्हें उन्हीं के शब्दों में आगे दिया जा रहा है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति, किस आस्था एव निष्ठा के साथ आपने अपने मनोभाव व्यक्त किए हैं? यह तो पाठक गण आपका सम्पूर्ण लेख पढ़ जाने के पश्चात् ही मालूम कर सकेंगे।

—सम्पादक

❀ अध्यात्म साधना

—आज के भौतिक विकासशील युग मे, सर्वत्र विज्ञान का बोल बाला है। आज के मानव ने, विज्ञान का आश्रय ले कर ऐसे ऐसे चमत्कार दिखलाए हैं कि दाँतो तले अंगुली दबा कर, चकित रह जाना पडता है। विज्ञान के संरक्षण मे, मानव ने जल मे मछलियो सा तैरना और महीनो उस मे डुबकी लगाए रहना सीखा, भूमि पर स्वच्छन्द पवन सा निर्बाध गति से घूमना सीखा, और उन्मुक्त आकाश मे पक्षियो सा उडना और हवा मे तैरना भी सीखा। यही नही अब तो मानव, चन्द्र एव मगल आदि दूसरे ग्रह-पिण्डो पर धावा बोल कर, उन्हें अपने अधिकार मे कर लेने के प्रयत्न मे संलग्न है। प्रकृति तो आज मानव के सम्मुख, एक क्रीत दासी सी, सदा हाथ बाँधे खडी रहती है।

—इतना हो जाने पर भी मानव के अन्तस्तल मे शान्ति नही, चैन नही, सुख और सन्तोष नही। इस का एकमात्र कारण यही है, कि बाहरी चकाचौध के सामने, मानव ने आन्तरिक अध्यात्म-साधना की शान्त एवं सौम्य ज्योति को भुला दिया है। वह त्याग और नैतिक सद्गुणों से कोसो दूर जा पडा है। किन्तु ऐसी विकट परिस्थिति मे भी, हम यदा-कदा, उस अध्यात्म ज्योति की झलक एव धर्म और संस्कृति के प्रकाश की चमक के दर्शन संदर्शन पा ही जाते हैं। जो हमे विनाश के मार्ग की ओर जाने से सर्वदा सचेत करती रहती है।

—अध्यात्म-साधना क्या है? त्याग मार्गी महापुरुषो के मर्मस्पर्शी अनुभव। इन अनुभवो के सहारे चल कर, उन आध्यात्मिक महापुरुषो का अनुकरण कर, हम वास्तविक सच्ची शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। इन धर्म एव सस्कृति के उन्नायक सन्तो मे ही, श्रद्धेय पूज्य गुरुवर श्री श्यामलाल जी महाराज का शुभ नाम लिया जा सकता है। वे अध्यात्म-साधना के मार्ग पर, बढने वाले एक त्यागी मुनिराज थे। उनकी यह साधना, बचपन के मधुर शैशवकाल से ही प्रारम्भ होकर, वृद्धत्व

के उन अनुभूतिमय, अन्तिम क्षणों तक अप्रतिहत रूप से चलती रही थी, जहाँ जीवन को कुछ भी करणीय शेष नही रहता।

※ उच्चकोटि के सन्त

—गुरुदेव श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज, एक उच्चकोटि के सन्त थे। परम उदार, परम विद्वान्, परम त्यागी, परम तपस्वी, परम योगी, एव परम संयमी। आप पुष्प से भी अधिक कोमल और वज्र से भी अधिक कठोर थे। आप मिश्री से भी अधिक मधुर और सलिल से भी अधिक शीतल थे। सन्त-जीवन मे जो अनिवार्य विशेषताएँ होनी चाहिएँ, वे आप मे अपने परिपूर्ण रूप मे विद्यमान थी। आपका यशस्वी जीवन आत्म-कल्याण के साथ-साथ जन-कल्याण के लिए भी समर्पित था।

—साधना-पथ पर चलते हुए आपने, अनेकानेक नवीन क्षेत्रों को प्रतिबोध दे कर सन्मार्ग का अनुगामी बनाया। आपके विचार अत्यन्त गम्भीर और महापुरुषों के पवित्र अनुभवो से अनुप्रणित होते थे। क्रोध, भय, मान अथवा लोभादि दुर्गुण आपके पास आने से डरते थे। सरलता और सौम्यता आपके जीवन की निधि बन चुकी थी। आपकी वाणी, मृदु कल्याणकर एव हितकर, तथा ओज और तेज से भरपूर थी। सेवाभाव और उदारता आपके आवश्यक कर्तव्य मे सम्मिलित थे। आप भगवान् महावीर के सच्चे अनुयायी और जैन धर्म के महान् प्रचारक थे।

—आज बेशक, आप हमारे बीच मे, भौतिक रूप से नही रहे। परन्तु आपका धर्म-सन्देश, एव आपके महान् जीवन के मर्मस्पर्शी अनुभव, आज भी हमे प्रेरणा प्रदान करते हुए, अपने समुज्ज्वल, सौम्य प्रकाश से इस भौतिक वादी विश्व का मार्ग दर्शन कर रहे हैं। आपका यह साधना-रूप कभी भी मिटने वाला नहीं है। वह तो अजर और अमर रहेगा, अनन्त-अनन्त काल तक।

—लोहामण्डी, आगरा · उत्तर-प्रदेश : २६—६—६०

[९०]

वे मानवता के पुजारी थे :

सुश्री कुमारी मनोरमा जैन

—सुश्री मनोरमा कुमारी जैन, एक सरल एवं मृदुल प्रकृति की बालिका हैं। अभी आप इण्टर के प्रथम वर्ष में पढ़ रही हैं। श्री देवकुमार जी जैन की आप सुपुत्री हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सरल जीवन एवं सद्गुणों से आप भली भाँति परिचित रही हैं।

—फलत: मानवता के उस पुजारी को, आपने भी अपना श्रद्धा-अर्ध्य चढ़ाया है। जो आपकी कोमल लेखनी का संस्पर्श पा कर और भी कोमल और कान्त हो उठा है। आपने जिस सुन्दर ढंग से लेख को प्रारम्भ किया है उसी सुन्दरता के साथ उसे अन्त तक ले जा कर पूर्ण किया है।

—सम्पादक

❀ मानवता के पुजारी

—मिल सकता है धन वैभव भी, परिवार मित्र और परिजन भी।
सब कुछ मिल सकता है केवल, मानवता मिलनी दुर्लभ है॥

यह आदर्श वाक्य है। सचमुच, आज का मानव सब कुछ पा सकता है। धन-वैभव के अम्बार उसे मिल सकते हैं, परिवार मित्र और परिजनो का जमघट भी वह अपने चारो ओर जुटा सकता है। मान-प्रतिष्ठा, इज्जत, आबरू, पद अथवा अधिकार, आज का मानव किसी भी समय प्राप्त कर सकता है। किन्तु मानवता? मानवता तो आज के मानव से मानो कोसो दूर है। ऐसा मालूम देता है, मानो मानवता से उसका कभी परिचय ही न रहा हो, वह उसे जानता ही न हो। और तभी तो यह हाल है कि सभी कुछ प्राप्त करके भी मानव के मन में शान्ति नहीं, अमन नही, चैन नही। जब देखो, तब हाय-हाय, त्राहि-त्राहि, क्लेश ही क्लेश। वास्तव मे जब तक मानव मानवता को नहीं अपनायेगा, मानवता का सच्चा पुजारी नही बन सकेगा, तब तक वह यो ही कष्ट उठाता रहेगा, क्लेश भोगता रहेगा। आज की सर्व प्रथम आवश्यकता है, मानवता। तभी तो मानवता वादी कवि पूछ रहा है—

मानव हो कर, मानवता से,
तुम ने कितना, प्यार किया है?

मानव, यदि कवि का उचित समाधान, मानवता का पुजारी बन कर, मानवता को अपने जीवन का एक अविभाज्य अङ्ग बना कर, कर सका, तब तो ठीक, अन्यथा पतन का, विनाश का महागर्त उसके लिए तैयार है।

—किन्तु धन्य है, उन महापुरुषों को, जो अपना सम्पूर्ण जीवन ही मानवता के लिए उत्सर्ग कर देते है। मानवता प्राप्त करने में कोई कसर बाकी नही उठा रखते। तन-मन, जीवन, सुख-भोग, ऐश्वर्य, सभी कुछ तो होम डालते हैं, इस महा यज्ञ में।

तभी तो ससार उनको महामानव, महापुरुष, देवता, अथवा भगवान् तक के नाम से सम्बोधित करता है। उनकी ससार पूजा करता है, अर्चा करता है और उन्ही मानवता के पुजारियों को अपना आदर्श मान कर चलता है। मानवता प्राप्त करने मे ससार उनसे एक नयी दिशा, एक नयी प्रेरणा, और एक नयी स्फूर्ति प्राप्त करता है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महारज, भी उन्ही मानवता के पुजारियों मे से एक थे, जिन्हे ससार अपना अदर्श मान कर चलता है। पूज्य गुरुदेव मानवता के सत्पथ पर, अपने जीवन की प्रारम्भिक अवस्था मे ही चल पडे थे। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवता की प्राप्ति के लिए समर्पित था। उन्होने अपनी कठिन आत्म-साधना के बल पर मानवता को प्राप्त किया था। उनका समस्त जीवन ही मानवता से ओत प्रोत था। मानवता की रक्षा के लिए उन्होने अपना सर्वस्व तक समर्पण कर दिया था। पूज्य गुरुदेव मानवता के सच्चे पुजारी थे। वे जिस-मानवता के सत्पथ पर स्वयं आगे बढे थे, उसी पथ पर चलते हुए, संसार को देखना चाहते थे। अपनी सयम-साधना के ५४ वर्ष उन्होने, इसी दिशा में, प्रयत्न करते हुए बिता दिए।

—मानवता क्या है? मानवीय सद्गुणो का मानव मे सद्भाव। पूज्य गुरुदेव का जीवन, इन सद्गुणो का आकर था। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह आदि महाव्रतो का पालन तो पूज्य गुरुदेव ने १६ वर्ष की अवस्था से ही प्रारम्भ कर दिया था। दया, करुणा और अनुकम्पा तो पूज्य गुरुदेव के जीवन की एक महत्त्वपूर्ण विशेपता ही थी। आत्म-हित के साथ-साथ, जन-कल्याण भी आपके जीवन के लक्ष्य मे सम्मिलित था। परोपकार एव दूसरे की भलाई, आप सदैव ही करते रहते थे। दीन-दुखियो के तो आप अवलम्ब ही थे। जो भी कोई किसी कष्ट से उदास हो कर आपके पास आता था, वह

सान्त्वना और धैर्य पा कर मुस्कराता हुआ ही जाता था। जो रोता हुआ आया, वह हँसता हुआ गया। कवि के शब्दो मे आप सच्चे महापुरुष थे, एक ऐसे महापुरुष जिन्हे अपना नही, वल्कि दूसरों का दु ख द्रविभूत करता रहता है :—

महापुरुषो से होता है, सदा उपकार दुखियो का।
उन्हे ही तो सताता है हमेशा प्यार दुखियो का॥

❀ एक अनमोल रत्न

—मानवता पथ के राही ही, सच्चे मानव कहलाते है।
सद्गुण मय जीवन धारण कर, वे जगत्पूज्य वन जाते हैं॥

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री गणी जी महाराज एक अनमोल रत्न थे। वे सन्त समाज के मुनि रत्न थे। जैन समाज के समाज रत्न थे, भारतीय परम्परा के भारत रत्न थे, और विराट् मानव परिवार के नर रत्न थे। आपका अथ से इति तक समस्त जीवन ही समाज, राष्ट्र, परिवार और प्राणिमात्र की सेवा के लिए समर्पित था। आपने अपने मधुर-सन्देशो एव जागृतिमय उपदेशो से, समाज मे एक नई क्रान्ति उत्पन्न की, जिस ओर भी आप ने भ्रमण किया, उस ओर की जनता, आपके सद् प्रयत्नो से, मानवता के सन्मार्ग पर अग्रसर हुई, उन्नतिशील हुई।

—आपके सरल हृदय, मधुर वाणी, एव कर्मठ शरीर के, सम्पर्क मे आने वाले मानव, एक नयी प्रेरणा प्राप्त करते थे, एक नयी स्फूर्ति हासिल करते थे, और कर्तव्य-मार्ग पर आगे वढने का एक नया उत्साह और साहस प्राप्त करते थे। समाज के अन्दर छाई हुई अनेक कुप्रथाओ को, जो समाज को धीरे-धीरे घुन की तरह खाए जा रही थी, आपने दूर किया। समाज को ज्ञान एव विज्ञान से परिचित कराने के लिए आपने, अनेक स्थानो पर ज्ञानालय, पुस्तकालय और वाचनालय खुलवाए। समाज मे

धर्म एवं कर्तव्य के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए आपने अनेकानेक सद् प्रयत्न किए ।

—अपने मानवता से परिपूर्ण महान् जीवन तथा जीवन विकासक पावन उपदेशों एव सन्देशो के द्वारा, आपने संसार के समक्ष वह आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया, जिसकी उपमा अन्यत्र दुर्लभ है । आप मानवता-पथ पर बढ़ने वाले यात्रियो के लिए एक प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध हुए । एक ऐसे प्रकाश-स्तम्भ जिसके ज्योतिर्मय आलोक मे यात्री गण अपना मार्ग निर्विघ्नता के साथ तय करते हुए, लक्ष्य सिद्धि को सुगमता के साथ प्राप्त कर सके ।

—आज बेशक श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव हमारी आँखों के सामने नही हैं । परन्तु मानवता के विकास के लिए किए गए उनके सत्प्रयत्न, आज भी उनकी अमर कहानी कह रहे हैं । और भविष्य में भी युगों-युगों तक वे इसे दुहराते ही रहेगे, यह निःसन्देह है ।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
२६—८—६०

[९१]

वह धन्य जीवन :

सुश्री कुमारी सुदर्शना जैन

—सुश्री सुदर्शना कुमारी जैन, श्री अमरनाथ जी जैन स्यालकोट वालों की, जो अनेक वर्षों से आगरा लोहामण्डी में ही रह रहे हैं, सुपुत्री हैं। संकोचशील वृत्ति और मधुर प्रकृति आप की विशेषताएँ हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपने बड़ी ही श्रद्धा एवं कुशलता पूर्वक अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की है।

—आप के लिखने का ढंग अनूठा है, पढ़ने वाले को एक नया अनुभव, एक मधुर रस तथा एक अपूर्व तृप्ति सी वह मानो देता चलता है। प्रस्तुत लेख में पाठक गण उस धन्यवादार्ह सद्गुरुदेव के धन्य जीवन की झाँकी पाएँगे और पाएँगे साथ ही लेखिका की उन के प्रति अगाध श्रद्धा।

—सम्पादक

❀ धन्य भूमि

—जिस प्रकार वह स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण और सुहावना होता है, जहाँ पर केशर की क्यारियाँ लगी होती हैं। वह स्थान भी मनोरम हुआ करता है, जहाँ पर सुन्दर-सुन्दर सुगन्धि-युक्त फूल खिले हो, वृक्ष फलो से लदे खड़े हों, भूमि दूर्वादि से शस्य श्यामला हो। वह वन भी आकर्षण का केन्द्र समझा जाता है, जहाँ चन्दन और अगुरु जैसे सुगन्धित एव शीतल वृक्षों की पँक्तियाँ हो। इसी प्रकार वह भूमि भी महत्वपूर्ण, मनोरम, आकर्षण का केन्द्र तथा धन्य होती है, जो किसी महान् आत्मा का गौरव पूर्ण जन्म-स्थान अथवा क्रीडा-स्थली के रूप मे जानी जाती हो। इसी प्रकार, वह देश भी भाग्यशाली होता है, जहाँ महापुरुषो का प्रादुर्भाव हुआ करता है।

—आगरा के निकट रहा हुआ सोरई ग्राम भी, इसी रूप में धन्य, माना जाता है। क्योंकि, उसे श्रद्धेय परम पूज्य, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, की जन्मस्थली होने का गौरवपूर्ण पद प्राप्त है। गुरुदेव के महान् जीवन के साथ-साथ, उनका जन्म स्थान भी, एक महत्त्वपूर्ण आकर्षण-केन्द्र के रूप में जाना ही जाता है, और इसी प्रकार भविष्य में भी गुरुदेव के कारण वह गौरवान्वित रहेगा ही।

❀ धन्य जीवन

—गुरुदेव का जीवन धन्य जीवन था। आपने ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी के दिन विक्रम सम्वत् १९४७ मे, सोरई मे जन्म लिया था। क्षत्रिय कुल भूषण चौधरी श्री टोडरमल जी, एव श्रीमती रामप्यारी जी को, आपके पिता तथा माता होने का गौरवपूर्ण पद प्राप्त हुआ। नौ वर्षों तक गृहागण ही, आपकी क्रीडा-स्थली रहा। किन्तु आप तो एक महान् उद्देश्य ले कर इस ससार में आए थे। फलत· वचपन से ही आपका मन, सासारिक बन्धनो को

तोड़ फेकने के लिए मचलता था। अन्ततः फाल्गुण १९५६ विक्रम मे ९ वर्ष की छोटी सी अवस्था मे ही, आपने इन भावनाओ को मूर्त रूप दिया, और इन सासारिक बन्धनो से विरक्त हो कर आप, एलम ग्राम जो जिला मुजफ्फरनगर मे है, पूज्य गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज के चरणो मे जा पहुँचे। तथा वही गुरु-चरणो मे निवास कर, आपने विद्याध्ययन प्रारम्भ कर दिया। ७ वर्षों तक अथक परिश्रम कर, आप इस योग्य बने, कि सयम के महामार्ग पर आगे बढ़ सकें।

—गुरुदेव ने आप की उत्कट अभिलाषा देख कर, सम्वत् १९६३ विक्रम ज्येष्ठ शुक्ला पचमी मगलवार के शुभ दिन, आपको मुनि-धर्म मे दीक्षित कर लिया। तभी से आप श्री श्याम लाल जी महाराज के नाम से प्रख्यात हुए। दीक्षा के उपरान्त आप, शास्त्र-अध्ययन और गुरु-सेवा करते हुए स्थान-स्थान पर विचरने लगे। धार्मिक ज्ञान से एवं नैतिक सद्गुणो से सम्पन्न हो कर, आपने जनता मे धर्म का प्रचार करना प्रारम्भ किया। उत्तर-प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा और पजाब आदि प्रान्तों मे घूम-घूम कर जैन धर्म का उद्योत किया, तथा भूली-भटकी जनता को सन्मार्ग पर लगाया। जहाँ भी आप विराजे, वहीं, ज्ञान, ध्यान और संयम की अजस्र धाराएँ प्रवाहित हो चली। आपके भव्य उपदेशों और सन्देशो को सुन कर सभी हर्षित होते थे। इस तरह से आपने अपनी संयम-साधना के ५४ वर्ष जप-तप, ध्यान, तथा जन कल्याण में बिता दिए।

—अन्तिम समय मे आपको शारीरिक अस्वस्थता तो काफी रही, किन्तु वह आपको अपने मार्ग से विचलित न कर सकी। आप एक महान् पुरुष थे। अतः उसी महानता के साथ व्याधि और मृत्यु से मुकाबला करते हुए, सम्वत् २०१७ वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार के दिन, मानपाड़ा-आगरा में, आप स्वर्गवासी हुए। मृत्यु ने आपके पार्थिव शरीर को बेशक निश्चेष्ट कर दिया,

किन्तु वह आपके सद्गुणो और आपकी महान् आत्मा का कुछ न बिगाड सकी ।

❀ धन्य सद्गुण

—गुरुदेव का जीवन, प्रारम्भ से लेकर अन्त तक, सद्गुणो से धन्य रहा है । धन्य है वह ज्योतिर्मय जीवन, जो अपने सद्गुणो के प्रकाश से आज भी उसी प्रकार चमक रहा है । आपके जीवन मे हजारो विशेषताएँ पाई जाती हैं । जिनमे से कुछ यह हैं—आप हिमालय के समान धैर्यवान थे । साधना-क्षेत्र में आप हिमालय के समान अडिग थे । मन, वचन एव कर्म की उज्ज्वलता मे आप हिमालय के समान धवल थे । आप पृथ्वी के समान क्षमाशील थे । आप धरित्रि के समान सहनशील थे । आप चन्द्रमा के समान प्रिय-दर्शी थे । आप चन्द्रमा के समान शीतल थे । आप चन्द्रमा के समान सौम्य थे । आप समुद्र के समान गम्भीर थे । आप समुद्र के समान विराट और विशाल थे । आप समुद्र के समान सद्गुण-रत्नो की खान थे ।

—आपकी वाणी, मानव हृदयों पर सीधा असर करती थी । आपका कर्म अध्यात्म-साधको के लिए स्पृहा की वस्तु था । आपका मन सर्वदा, सबके हित-चिन्तन मे सलग्न रहता था । आप सरल हृदय थे । शान्त मुद्रा थे । सेवा भावी थे । दयालु थे । अखण्ड ब्रह्मचारी थे । आप मिलन सार थे । कहाँ तक कहा जाय ? संसार के सभी गुण आप मे विद्यमान थे । आपकी एक-एक विशेषता स्वर्णाक्षरो में लिखे जाने के योग्य है । आपने अपना जीवन सफल करने के साथ-साथ ससार के सम्मुख एक अनुकरणीय उच्चतम आदर्श उपस्थित किया । आप की विशेषताएँ जन-हृदयो मे सुरक्षित रह कर, आज भी आपकी मधुर याद दिला रही हैं । और मेरा तो यही दृढ़ विश्वास है, कि यही विशेषताएँ भविष्य मे भी युगो-युगों तक, आपकी याद को तरो-ताजा रखते हुए आपकी कीर्ति को अक्षुण्ण रखेंगी ।

—आपने अपने ज्योतिर्मय जीवन से तथा चमत्कारपूर्ण धर्म-उपदेशो से, जो प्रकाश संसार को प्रदान किया है, वह चिरस्थायी है। वह कभी भी मन्द पड़ने वाला अथवा तिरोहित हो जाने वाला नही है बल्कि वह तो युगों-युगो तक भूले-भटके साधना मार्ग के पथिकों का मार्गदर्शन कराने वाला प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध होगा। बस इन्ही थोड़े से शब्दों के साथ मै उस ज्योतिर्मय धन्यजीवन को अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करती हूँ।

सरल स्वभावी क्षमा भण्डारी,
भव्य जनो को तुम सुखकारी।
शान्त, दयालु अरु ब्रह्मचारी।
महिमा छाई जग मे भारी।

श्री श्यामलाल गुरुवर उपकारी,
क्रोध कषाय कटक सहारी।
सौम्य-मूर्ति, जग-हितकारी।
कोटि वन्दना चरण मँझारी।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१५—८—६०

[९२]

मृत्युञ्जय गुरुदेव :

सुश्री प्रवेश कुमारी जैन

—सुश्री प्रवेश कुमारी जैन, हाई स्कूल की प्रतिभा सम्पन्न छात्रा हैं। आप में बौद्धिक प्रतिभा और सतत प्रयत्न की विशेषता विद्यमान है। यही कारण है कि आप अपने विद्यालय में प्रति वर्ष प्रथम आती हैं। आप भी श्री अमरनाथ जी जैन श्यालकोट वालों की सुपुत्री हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के अनेक वर्षों से आगरा विराजने के कारण आप उन से पूर्णतया परिचित हैं ही। फलतः उनके विकासशील जीवन, प्रेरणा स्रोत सद्गुणों तथा मृत्युञ्जय आत्म स्वरूप को आपने शब्द बद्ध किया है। लेख क्या कुछ है ? कैसा है ? इसका मूल्याकन विवेकशील पाठकों पर ही छोड़ा जाता है।

—सम्पादक

❀ एक विकासशील जीवन

—जीवित जन है सदा वही, जो जीता है परहित के काज।
सारे जग मे यश फैला कर, वन जाता है देवो का ताज॥

मनुष्य जीवन का वास्तविक विकास, सदैव महान् आदर्श पुरुषो के पद-चिन्हो का अनुसरण करने से ही हुआ करता है। क्योकि उन विकासशील महान् पुरुपो का आदर्श जीवन, मात्र अपने लिए ही तो नही होता, बल्कि वह ससार के कल्याण के लिए भी होता है। संसार के प्रत्येक महान् पुरुष की, यही भावनाएँ और सद्विचार रहा करते है कि किस प्रकार मैं प्राणिमात्र की भलाई करता हुआ, अपने जीवन का विकास करू ? इन्ही भावनाओ के परिणाम स्वरूप, महापुरुपो के जीवन का प्रत्येक कार्य, एक ऐसा आदर्श, ससार के समक्ष, उपस्थित करता है, जिसका अनुसरण कर, हर एक प्राणी अपने जीवन का विकास कर सके। महापुरुष मानवता के उस सर्वोच्च शिखर पर स्थित होते हैं, जहाँ पहुँच जाने का प्रत्येक मानव का लक्ष्य और उद्देश्य रहा है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का जीवन भी, एक ऐसा ही विकासशील जीवन रहा है। अपने पूर्व पुरुपो का अनुसरण कर पूज्य गुरुदेव भी आदर्श महान् पुरुप वन चुके है। उनका महान् जीवन भी मानवता के सर्वोच्च शिखर पर स्थित था। उनका जीवन भी सयम-साधना और सद्गुणो से मज कर, निखर कर, चमक कर ऐसा पवित्र वन चुका था, जिसका अनुकरण कर के प्रत्येक मानव अपने को धन्य मान सके। उस विकासशील जीवन तक पहुँचने की प्रत्येक मानव के मन मे अभिलापा रही है। और अनेक आत्म-साधको ने उनके पवित्र जीवन-पथ पर अनुगमन किया ही है।

❀ प्रेरणा-स्रोत

—सत्पुरुषों का जीवन, हमेशा से प्रेरणा-स्रोत रहा है। महापुरुषो के जीवन और उपदेशो से, जनता को प्रकाश मिलता है, जीवनोपयोगी शिक्षण मिलता है, और जीवन-संग्राम मे जूझने के लिए बल तथा उत्साह भी मिलता है। जो मनुष्य अपने जीवन को पवित्र, प्रगतिशील, तथा बहुजन भोग्य बनाना चाहता है, उसे चाहिए कि वह महापुरुषो के जीवन और उपदेशों का, गहराई से अध्ययन करे, चिन्तन-मनन करे, और फिर उस पर अनुगमन करे। एक कवि का कथन है।

जीवन चरित महापुरुषो के,
हमे यह शिक्षा देते हैं।
हम भी अपना-अपना जीवन;
स्वच्छ-रम्य कर सकते हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का जीवन भी इसी प्रकार प्रेरणा-स्रोत रहा है। उन्होने अपने आदर्श जीवन एवं सद् उपदेशो द्वारा जनता मे धर्म-जागृति उत्पन्न की, एक नवचेतना फूंकी। एक ऐसी प्रेरणा दी, एक ऐसी स्फूर्ति प्रदान की, जिसको प्राप्त कर, मानव मे, अपनी उद्देश्य सिद्धी के लिए एक अदम्य उत्साह भर जाए। आप का सारा जीवन परोपकार के लिए समर्पित था। आत्म-उत्थान के साथ-साथ आप जन-कल्याण मे भी सदैव तत्पर रहते थे।

❀ मृत्युञ्जय

—आप मृत्युञ्जय थे। मौत से डरना या भय खाना तो आपने सीखा ही नही था। अन्तिम समय मे भी आप पूर्णतया शान्त रहे। मृत्यु से डट कर आपने मुकाबला किया। २१ दिन लगातार मृत्यु से जूझने के पश्चात्, भले ही आपका पार्थिव शरीर मृत्यु ने अपने

आधीन कर लिया, किन्तु आपकी अमर एव पवित्र आत्मा का मृत्यु कुछ भी न बिगाड़ सकी। आप ने जिस उद्देश्य के लिए ९ वर्ष की अवस्था से ही, संयम-साधना-मार्ग को अपनाया, उस को ७० वर्ष के लम्बे जीवन तक, सतत निभाते रहे, और अन्त मे अपने उद्देश्य को प्राप्त करने मे आप सफल हुए।

—यद्यपि गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज, आज हमारे सामने साकार रूप मे नही हैं। परन्तु उनकी वाणी, अमर सन्देश, मृत्युञ्जय जीवन, तथा महान् साधना, आज भी हमारा मार्ग-दर्शन कर रहे हैं। आप का नाम विश्व के कोने कोने मे हमेशा-हमेशा गूँजता ही रहेगा, यह ध्रुव सत्य है।

क्रोध, मान, मद, मोह सहारी, माया, ममता जिसने मारी।
भव सिन्धु से आत्मा तारी, पहुँचे गुरुवर स्वर्ग मँझारी॥
सब जीवो के थे हितकारी, श्री श्यामलाल गुरुवर सुखकारी।
धन्य-धन्य गुरु बारम्बारी, शरण आपकी हमने धारी॥

कीजे श्रद्धाञ्जलि स्वीकारी।
चरण सेविका प्रवेश कुमारी॥

—लोहामण्डी, आगरा · उतर-प्रदेश :
२६—९—६०

[९३]

पूज्य गुरुदेव के प्रति :

सुश्री माया रानी जैन

—सुश्री मायारानी जैन, मोतीकटरा निवासी श्री श्रीचन्द्र जी जैन की सुपुत्री तथा श्री पदमचन्द जी जैन अलवर वालों के लघु भ्राता श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन की धर्मपत्नि हैं। आप का स्वभाव बड़ा ही सुन्दर तथा आपकी धार्मिक प्रवृत्ति प्रशंसनीय है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा भावना व्यक्त करते हुए आप ने उनके पवित्र जीवन, महान् सद्‌गुण, एवं सच्चे धर्मोपदेश का वर्णन प्रस्तुत लेख में किया है। जिससे उनके प्रति आप की गहरी आस्था ही प्रगट होती है। सरल भाषा में लिखा गया आप का यह लेख अपनी पृथक ही महत्त्वपूर्ण विशेषता रखता है। आशा है पाठकगण इसे पढ कर लाभान्वित होंगे।

—सम्पादक

व्यतीत किए। आप का स्वर्गवास, वैशाख शुक्ला दशमी शुक्रवार सम्वत् २०१७ के दिन, मानपाड़ा, आगरा मे हुआ। आपका जीवन महान् जीवन था, एक आदर्श जीवन था।

❀ पूज्य गुरुदेव की विशेषताएँ

—पूज्य गुरुदेव, श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज का प्रारम्भ से ले कर अन्त तक सारा जीवन ही, विशेषताओ से भरपूर रहा है। आपके अन्दर इतनी विशेषताएँ विद्यमान थी, जिनका वर्णन कर सकना ही असम्भव है। ससार मे जितनी भी विशेषताएँ हो सकती हैं, वे सब आपके जीवन में मौजूद थी। जिनमे से चन्द विशेषताओ का वर्णन यहाँ दिया जाता है।

—आपका जीवन अत्यन्त पवित्र था, गगा जल से भी अधिक पवित्र, दुग्ध से भी अधिक समुज्ज्वल। आपका हृदय सरलता, सौम्यता, मृदुता और प्रेम का खजाना था। अनभोल शिशु सा सरल, चन्द्रमा की तरह सौम्य, पुष्प की कोमल पखुडी की तरह मृदु और माता के स्नेह के समान प्रेम मे पगा। आपकी शान्त मुद्रा, मधुर वाणी, तथा सब के सुख मे सुखी रहने वाले मानस का, जिस भी व्यक्ति ने एक बार भी परिचय प्राप्त कर लिया, वस वह आप को जीवन पर्यन्त न भुला सका। आप की इन्ही विशेषताओं के कारण, आगरा जैन-समाज के बच्चे बच्चे के हृदय मे आपके प्रति अटूट श्रद्धा है और जिह्वा पर सतत आपका नाम। आगरा निवासी तो आपको कभी भुला ही न सकेंगे।

❀ पूज्य गुरुदेव का धर्म-सन्देश

—आज श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री गणी जी महाराज, शरीर से वेशक हमारे सामने न हो, पर उनका धर्म-सन्देश, उनका पवित्र जीवन, आज भी हमारे सामने है। और वह हमे प्रेरणा दे रहा है—निरन्तर कर्तव्य-पथ पर वढते रहने के लिए। पूज्य गुरुदेव

कहा करते थे—मानव यदि जितना कह जाता है, उसका शतांश भी यदि आचरण मे उतार ले, तो उसका बेड़ा पार हो जाय। ससार मे आकर मानव, जितना समय अपनी स्वार्थ-पूर्ति में लगाता है, यदि उसका सहस्राश भी परमार्थ, एवं जन-कल्याण मे लगाले, तो वह जगत्पूज्य बन जाय।

—आज का मानव जितनी दौडा दौड़, धन प्राप्ति के लिए करता है, उसका एक छोटा सा हिस्सा भी यदि धर्म प्राप्ति के लिए निकाल ले, तो वह सोने का बन जाय। अधिक क्या ? पूज्य गुरुदेव श्री गणी जी महाराज के जो उपदेश या सन्देश होते थे, वे उनके आचरण और अनुभूति मे ढले हुए होते थे। स्वयं आचरण करने के पश्चात् ही वे जनता के सामने कोई बात रखा करते थे।

—काश, आज हम पूज्य गुरुदेव के महान् धर्म-सन्देशो को जीवन मे उतार सके। उनके पवित्र जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन पवित्र कर सके। यदि हम ऐसा कर सकेगे, तो सफलता हमारे स्वयं निकट पहुँच जाएगी। और यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

—मोतीकटरा, आगरा : उत्तर-प्रदेश :

१५—१२—६०

[९४]

उस परम ज्ञानी के चरणों में :

सुश्री कुमारी सन्तोष जैन

—सुश्री सन्तोष कुमारी जैन, एक उभरते हुए सफल व्यक्तित्व वाली बालिका हैं। आप हाई स्कूल की छात्रा तथा श्री जादौराय जी जैन की सुपुत्री हैं। बौद्धिक प्रतिभा का विकास आप में अच्छा खासा देखने को मिलता है।

—उस परम ज्ञानी एवं परम त्यागी, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के चरणों में आप ने अपने श्रद्धा के फूल चढ़ाए हैं। जिन की भीनी-भीनी मन मोहक सुवास अपना अलग ही अस्तित्व रखती है। पाठकों से आग्रह है कि जरा इन के भी श्रद्धा-सुमनों की ओर दृष्टिपात् कर देखें।

—सम्पादक

❀ परम ज्ञानी

—आज का मानव अज्ञान के अन्धकार म भटक रहा है, ठोकरे खा रहा है, और गिरते-पड़ते, किसी न किसी प्रकार अपनी जीवन-यात्रा चला रहा है। आज का भौतिक वादी मानव एक तरह से कर्तव्य शून्य सा ही हो चला है। इसे इस बात का ज्ञान ही नही है, कि इस जीवन का अर्थ क्या है? प्रयोजन क्या है? लक्ष्य और उद्देश्य क्या है? मानव ने यह कञ्चन सा शरीर पाया है, तो किस लिए पाया है? इस शरीर को प्राप्त करके उसे क्या कुछ करना है? इस पृथ्वीतल पर वह मानव वन कर अवतरित हुआ है तो किस लिए? इत्यादि वातो का इसे ज्ञान ही नही है, कुछ अता पता ही नही है। एक आदर्शवादी कवि भी मानव से इन्ही प्रश्नो का समाधान चाहता है। वह पूछता है—

जीवन का क्या अर्थ यहाँ है?
क्यो कञ्चन सा तन पाया है?
क्या इसको कुछ समझ सके हो?
क्यो नर भूतल पर आया है?

परन्तु आज के मानव का तो इस ओर तनिक भी ध्यान ही नही है। वह तो मात्र स्वार्थ-भावना से प्रेरित हो, सव कुछ, कार्य या अकार्य किए ही जा रहा है। आज का मानव केवल अपनी ही उन्नति चाहता है। वह भी भौतिक उन्नति। यही कारण है कि—वह आज अन्धकार मे भटक रहा है, ठोकरे खा रहा है।

—परन्तु जो मानव इन प्रश्नो का न्यायोचित समाधान करते हुए, हृदय मे ज्ञान का प्रकाश लेकर चलते हैं, वे परम ज्ञानी पुरुष हुआ करते हैं। उनका जीवन स्वार्थ की क्षुद्र परिधि से हट कर परमार्थ के विशाल प्रागण मे प्रवेश करता है। वे आत्म-हित के साथ-साथ जन-हित, एव परोपकार की भावनाएँ लेकर ही चला करते हैं। इन्ही परम ज्ञानी महापुरुषो में से, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज भी एक परम

ज्ञानी सन्त थे, महापुरुष थे। उन्हे भली प्रकार मालूम था कि जीवन का अर्थ अथवा प्रयोजन स्व तथा पर कल्याण है। मानव-तन, आत्म-कल्याण एव जन-उत्थान के लिए मिला है। और मानव किस लिए आया है ? पूज्य गुरुदेव ने इस प्रश्न का समाधान, राष्ट्र कवि की भाषा मे यों समझा था—

मैं आया उनके हेतु कि जो तापित है।
जो दीन हीन हैं, और विकल शापित हैं॥
सन्देश नही मैं, यहाँ स्वर्ग का लाया।
इस भूतल को ही, स्वर्ग वनाने आया॥
सुख देने आया दु:ख झेलने आया।
मैं मानवता का नाट्य खेलने आया॥

❀ परम त्यागी

—पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज एक परम त्यागी सन्त थे। जैन सन्तो मे आप उच्चकोटि के सन्त थे। सद्गुणो से आपका जीवन ओत प्रोत था। आप महान् अनुभवी, एव जन-कल्याण-रत मुनिराज थे। आपके प्रभावशाली जीवन एव उपदेशो से प्रभावित हो कर अनेक भव्य आत्माओ ने अपना कल्याण किया। वहुत से क्षेत्रों को धर्म एव कर्त्तव्य का प्रतिबोध देकर आपने सन्मार्ग पर लगाया।

—आपका जीवन सरलता, सौम्यता, मृदुता, सहानुभूति, सहयोग, तथा सेवा से भरपूर था। आपके चले जाने पर भी, आज आपका जीवन हमे प्रेरणा दे रहा है। हमे हमारे कर्तव्य का वोध करा रहा है। आपके पवित्र चरण-चिन्हो पर चल कर हम भी अपना उत्थान और कल्याण कर सकते हैं, यही आपका महान् जीवन हमे सिखा रहा है ;

हमे महत् पुरुषो के जीवन, ये ही वात सिखाते हैं।
जो करते हैं सतत साधना, वे पवित्र वन जाते हैं॥

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१७—६—६०

[१५]

मेरी ओर से भी :

के० सी० जैन

—मैं अपने ही सम्बन्ध में क्या लिखूँ ? मैं तो एक सामान्य मानव हूँ ! बस मेरा परिचय के रूप में तो इतना ही लिखना काफी होगा। और प्रस्तुत लेख के सम्बन्ध में ? इस विषय में भी यदि मौन ही रहूँ तो अच्छा है। लेख कैसा है ? क्या है ? इस का निर्णय तो पाठकों पर ही छोड़े देता हूँ, वही उचित निर्णय कर लें, बस।

—हाँ उस साहसिक अध्यात्म योद्धा, परम सज्जन, महान् सत्पुरुष श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को इन आँखों ने काफी नजदीक से देखा है। उन की सद् विशेपताओं का जो कुछ अध्ययन इस मन ने किया है, वह तो अनुभव की ही वस्तु है। उसको यह जड़ लेखनी भला क्या शब्द-रूप दे सकती है ? फिर भी कर्तव्य तो निभाना ही था न, अतः जो कुछ कागज पर उतर सका, वह अगली पँक्तियों में दिया जा रहा है।

—सम्पादक

❀ साहसिक योद्धा

—६ मई शुक्रवार, सन् १९६० वै०शु०१०सं०२०१७ वि०

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को, आज २१ दिन हो चुके थे निराहार रहते हुए। अतिसार, उदर शूल और ज्वर जैसी बड़ी-बड़ी भयकर व्याधियो से सघर्ष करते हुए, और उनसे लड़ते हुए। व्याधियों का मुकाबला करते हुए और उनके निर्मम प्रहारो को सहन करते हुए, आज तीन-तीन सप्ताह गुजर चुके थे। पर वाह रे तेरी धीरता ! वाह रे तेरा साहस ! क्या मजाल जो उफ तक भी की हो ? क्या मजाल जो चेहरे पर जरा भी मलाल आया हो ? क्या मजाल जो जरा भी दीनता दिखलायी हो।

—जब पूछो तब यही उत्तर—सब ठीक है·····आनन्द है। जब देखो, तब चेहरे पर वही मुस्कराहट, वही सहज सौम्यता, और वही अखण्ड शान्ति ! आपके धैर्य को, आपकी तितीक्षा और सहिष्णुता को देख कर, दर्शको को चकित रह जाना पडता था। आपकी परम साहसिकता का अवलोकन कर दाँतो तले अँगुली दबा जाना पड़ता था। उस सयय मुझे आँग्ल कवि राबर्ट ब्राउनिग की निम्न पक्तियाँ बरबस ही स्मरण हो आई—

I was ever a fighter, so one fight more,
The best and the last,
I would hate that death bandaged my eyes
and forebore,
And bode me creep past.
No let me taste the whole of it, fare like my peers.
The heroes of old,
Bare the brunt, in a minute
Payglad life's arrears of pain, darkness and cold.

अर्थात्—

मैं तो सदा लडता ही रहा, सो एक लडाई और,
सब से बडी और सबसे आखीरी।

मैं इस बात से नफरत करूँगा कि मौत मेरी—
आँखों पर पट्टी बाँध दे, मेरे साथ रू रियायत करे,
या मुझ से कहे कि चुपके से खिसक जाओ।
नही, मुझे सारी यातनाओ को झेलने दो,
सारे कष्टो का सामना करने दो।
अपने पूर्व पुरुषो के समान, अपने सहर्धमियो के समान,
मैं भी मौत की चोटो को ओढूँगा,
और एक क्षण मे, जीवन के सुखो का मूल्य चुका दूँगा –
दर्द को, जूडी को, बुखार को, अन्धकार को
सहन कर, वहन कर।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, वस्तुतः जीवन रणाङ्गण के एक अत्यन्त साहसिक सफल योद्धा थे। एक ऐसे योद्धा जिसने कष्टों की, संकटों की विपत्तियो की जरा भी परवाह न की हो। वल्कि उनसे डट कर सघर्ष करते हुए, बड़ी ही शान के साथ जीवन व्यतीत किया हो।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने जीवन की दुर्वृत्तियो से, बुराइयों से, जीवन के अपवित्र तत्त्वो से, दुर्गुणो से डट कर सघर्ष किया ; एक शानदार लडाई लड़ी। जिसमे विजय का सेहरा एकमात्र आपके ही सिर वँधा। आप जीवन की उलझी से उलझी और जटिल से जटिल गुत्थियो को वड़ी ही सरलता एव सुगमता के साथ सुलझा लिया करते थे। कष्टो या सघर्षों से घवराना तो आपने कभी सीखा ही न था। यही कारण था कि वुराइयाँ हमेशा आपसे दूर-दूर रही , दुर्वृत्तियाँ आपके नजदीक आने से झिझकी।

Life is the struggle against this world

—अर्थात्-जीवन ससार के विरुद्ध सघर्ष हैं—इस उक्ति को अपने जीवन उदाहरण से आपने प्रत्यक्ष कर दिखाया। आपने संसार के विरुद्ध डट कर सघर्ष किया और एक सच्चे जीवन को प्राप्त किया। जीवन के ही सम्बन्ध मे अग्रेजी साहित्य मे एक

और कहावत चलती है कि जीवन अच्छाई और बुराई के बीच का समझौता है—

Life is a Compromise between good and evil.

—लेकिन आपने बुराइयो से कभी भी समझौता नही किया। अधर्म को कभी भी प्रश्रय नही दिया। बल्कि आपने तो अपने जीवन-उदाहरण से ससार को दिखला दिया कि जीवन अच्छाई और-बुराई के बीच का समझौता नही है, बल्कि सच्चा जीवन तो अच्छाइयो, केवल अच्छाइयों का विकास है। सद्गुणो का चरम विकास ही मानवता की सच्ची कसौटी है।

❀ महान्-सज्जन

—कहते हैं—Great men are many but Good men are few अर्थात्—महान् व्यक्ति अनेक मिलेगे, परन्तु सज्जन कम। लेकिन श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव तो एक महान् व्यक्ति भी थे और एक परम सज्जन भी। आपका सद्गुणमय जीवन महानता का द्योतक था और सद्व्यवहारमय जीवन सज्जनता का प्रतीक। सत्य, अहिंसा, करुणा, सन्तोष, शान्ति, शील, सयम एवं सदाचार आदि जीवन को महान् से महान्तम बनाने वाले सद्गुण आपके जीवन मे चरम रूप मे विद्यमान थे। सरलता, सौम्यता, समता, और सेवा परायणता आदि सद्व्यवहार आपकी सहज, सज्जनता एवं स्वाभाविक सौजन्यता को ससार के समक्ष प्रकट कर रहे थे।

—सत्य और अहिंसा की बलिवेदी पर आपने अपने जीवन को शैशव काल मे ही उत्सर्ग कर दिया था। आपने-कष्टो, आपत्तियो और प्राणो तक की परवाह न करते हुए अपने कर्तव्य का पालन किया। आपने हमेशा अपने कर्तव्य एव सत्य और संयम को ही प्रमुखतया सम्मुख रखा। वह मानव ही क्या ? जो सत्य की वेदी पर जीवन बलिदान न करके अपनी जीवन-रक्षा को ही महत्व देता हो। इस विषय में सुप्रसिद्ध अँग्रेज दार्शनिक कहता है—

It is man's perdition to be safe
When for the truth he ought to die.

—अर्थात्—जब कर्तव्य की वेदी पर जीवनदान ही, मनुष्य का कर्तव्य हो, उस समय जीवन-रक्षा ही नरक है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने सत्य एव संयम आदि सद्गुणों की रक्षा के लिए ही जीवन का उत्सर्ग करके, अपने मानवीय कर्तव्यों को भली भाँति शानदार ढंग से निभाया। आपने अपने कर्तव्य के सामने, जीवन-रक्षा के प्रश्न को तो कभी उठाया तक नही और न उसे कभी महत्त्व की दृष्टि से ही देखा। इसीलिए—आपका जीवन महान् था, और आप एक परम सज्जन सत्पुरुष थे—यह अधिकार पूर्वक कहा जा सकता है।

❀ उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि

—अन्त मे ६ मई सन् १९६० की मध्यान्ह वेला मे ५४ वर्षों तक सतत आत्म-साधना और जन-कल्याण करने के पश्चात् श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने ७० वर्ष की अवस्था मे सहर्ष हँसते हुए मृत्यु का वरण किया। और उस स्वर्ग को प्राप्त किया जिसको कि मृत्यु की सुनहरी कुञ्जी खोल देती है। वस्तुत. महापुरुषो की मृत्यु भी असाधारण ही हुआ करती है। अनुभवी तत्त्ववेत्ता कहते हैं—

Death is the golden key which opens the Palace of eternity.

—अर्थात्—मृत्यु वह सुनहरी कुञ्जी है जो स्वर्ग के महल को खोलती है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की मृत्यु को भी आदर्श मृत्यु कहा जा सकता है। आपके स्वर्गवास से, आज जैन समाज ने एक साहसिक अध्यात्म योद्धा, एक महान् व्यक्ति, और एक सज्जन सत्पुरुष खो दिया है, जिसे भविष्य मे पाना सर्वथा असम्भव सा ही प्रतीत होता है।

—फिर भी उनका तेजस्वी महान् जीवन, उनके महत्त्वशाली अनुभव और उनके जीवनोपयोगी सन्देश, हमारे सामने मौजूद है। यदि हम उनसे लाभ उठा कर अपने जीवन का कुछ विकास कर सके, उन्हे अपनी जीवन या·ा का पाथेय बना सके, उनकी ज्योतिर्मय प्रकाश-रश्मियो से अपने जीवन-पथ को आलोकित कर सके, तो बस यही होगी उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि और यही होगा उनका महत्त्वपूर्ण सच्चा सम्मान; जो उन की स्मृति को युगों-युगों तक कायम रख सकेगा। बस इन्ही महत्वपूर्ण शब्दों के साथ, मैं भी जीवन रणाङ्गण के साहसिक योद्धा, महान् एवं सज्जन सत्पुरुष उन श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के पावन श्रीचरणों मे अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूं। आशा है उनकी महान्-आत्मा जहाँ भी होगी, वह इस श्रद्धाञ्जलि को भी अवश्य ही स्वीकार करेगी।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१—१२—६०

—:काव्याञ्जलि:—

—पुज्य गुरुदेव, स्मृति-ग्रन्थ के द्वितीय खण्ड का नाम–काव्याञ्जलि–खण्ड है। प्रस्तुत खण्ड में विभिन्न कवियों के द्वारा, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्याम-लाल जी महाराज के पावन चरणों में, काव्याञ्जलि अर्घ्य समर्पित किया गया है। इस खण्ड में कहीं गद्य काव्य, कहीं प्राकृत काव्य, कहीं संस्कृत काव्य, कहीं हिंदी काव्य, कहीं गीति काव्य और कहीं उर्दू काव्य की छटा के संदर्शन पाठक गण को होंगे। जिनके भाव सौन्दर्य तथा शब्द सौन्दर्य पर, पाठकगण मुग्ध हुए बिना न रह सकेंगे। हृदय की गूँज की यह दिव्य ध्वनियाँ, युगों-युगों तक उस दिव्य पुरुष का, मधुर स्वर से गुणगान गाती ही रहेंगी; यह निःसन्देह सत्य है।

—सम्पादक—

[१]

फूला था फूल एक :

श्री गणेश मुनि जी–साहित्यरत्न–

—श्री गणेश मुनि जी महाराज एक सरस हृदय एवं बौद्धिक प्रतिभा से सम्पन्न तरुण मुनिराज हैं। आप श्रद्धेय श्री पुष्कर मुनि जी महाराज के सुशिष्य हैं। आपने साहित्यरत्न एवं शास्त्री की परीक्षाएं सफलता के साथ उत्तीर्ण की हैं। साथ ही कविता रचना के आप माने हुए कलाकार हैं। गद्य–पद्य लेखन शैली आपकी बहुत सरस एवं सुन्दर है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सम्मुख–गद्यगत की काव्यात्मक भाषा में आप श्रद्धा–सुमनों का सुन्दर उपहार लेकर उपस्थित हुए हैं। जो अपने भावात्मक रूप में एक अनूठा ही स्थान रखता है। पाठकगण भी इन श्रद्धा–सुमनों की भीनी-भीनी सुगन्ध से परिचित हो सकें, इसी लिए इन्हें अगली पक्तियों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

फूला था,
फूल एक,
सघन निकुञ्ज मे।
महक उठा—
चहुँ दिशी-दिशी के,
अङ्क मे।

मिल आया,
सकल समूह—
परिजन-भ्रमर,
निज, देने औ—
लेने को,
मधुमय,

सुवासित
निस्यन्द
मकरन्द
प्यार का।

× × × ×

लख, मुख-चन्द्र—
ललन का,
हर्षित हुआ दिल,
मात और तात का।
धन्य भाग्य,
स्वजन का।
धन्य भाग्य,
परिजन का।
करने आया,
नर पुङ्गव—
हलका, पृथ्वी के
भार को।
शत-शत,
सहस्र-सहस्र,
कण्ठों से, फूट पड़ी,
कमनीय,
स्वर्गीय,
मङ्गल गीतों की—
स्वर, लहरियाँ।
× × × ×
प्रेम और स्नेह से,
प्यारा-प्यारा,
भोला-भाला,
निश्छल-निर्द्वन्द,
वीता जब—
कोमल, कोमलतम,
वचपन;
पाया, तभी—
सात्विक ममतामय,
वरद हस्त
मुनि ऋषिराज का।
हो गया, जीवन—
कृत्य-कृत्य !
धन्य-धन्य !
साधक, मुनिवर—
श्री श्यामलाल का।
× × × ×
जीवन की,
अरुणिमा मे—
चल पड़ा,
साधक यह,
संयम के, त्याग के,
अध्यात्म-साधना के,
कण्टकाकीर्ण,
राज पथ पर।
उठे थे—
तूफान, कई,
औ, झंझावात—
बवण्डर- प्रबलतम,
यौवन के वेग में।
किन्तु—
हुआ नही, कभी भी,
आकुल-व्याकुल,
चलित या विचलित
साधक वह।
रहा, वह तो—
सदा-सर्वदा ही,
निर्भय,
निर्द्वन्द,
निष्कम्प।
परवाह, तनिक भी
नही की—
दु.ख की,
शोक की,
व्यथा की,
अथवा—
अवमानना,
तिरस्कार औ—
अपमान के
गरल की।
वह तो, बस—
बढता ही चला,
चलता ही चला,
अपने, मुस्तैदी
कदमो से;
निज ध्येय ओर—
निज लक्ष्य की,
सुविशाल डगर पर।
× × × ×
देखा मैने
अपनी ही आँखो से,
इस सुदृढ, अडिग,
राही को;
तो—
चित्रित ही,
क्यो न कर दूँ,
अपने ही,

अनुभव की, रेखा से।
थके से,
श्रान्त से,
क्लान्त से,
उस वृद्ध तन के—
अङ्ग-अङ्ग से,
क्या फूट रही थी—
अरुणाई ?
औ, क्या फूट रही थी
तरुणाई ?
जिसमे,
विराजती थी—
अथक आत्मा,
सतत, तरुण चेतना,
अन्तर्मन से जो,
प्रस्फुटित हो रही थी,
सहस्र-सहस्र,
किरणों मे,
रश्मियो के रूप मे।
और—
प्रतिपल
प्रतिक्षण
सतत क्रीडायमान थी,
आनन पर,
अद्वितीय,
अद्भुत,
सुरम्य मुस्कान की—
मुग्धकर,
लालिमा।

देखी नही,
कभी भी,
उल्लसित—
आनन पर,
क्रोध की, क्षोभ की
एक धूमिल या—
अस्फुट सी भी रेखा।
वचन थे, उनके,
सुधा से आप्लावित,
हो जाता था,
हृदय जिन्हे सुन कर
गद्-गद्
श्रोता का।
× × × ×
-गणी-जैसे,
उच्चतम, शास्त्रीय
पद पर,
विभूषित होते—
हुए भी,
मान या सम्मान की,
प्रतिष्ठा या
इज्जत की,
देखी नही,
भूख,
प्यास,
अथवा तडप—
उनके, अन्तर्जीवन में।
नाम से तो—
बेशक, वे-श्याम-थे,

किन्तु—
कार्य औ कलाप थे,
मानस या आलाप थे
उनके—
अत्यन्त ही उज्ज्वल,
समुज्ज्वल;
अभिलषित—
अतिरञ्जित,
श्वेत—
शुभ्र—
चारु चन्द्रिका की,
झिलमिलाती—
चन्द्रिका से,
ज्योत्स्ना से।
× × × ×
भद्रता,
सरलता
सेवा परायणता थी,
जीवन की आपके—
महान् निधि।
लुटाता रहा,
सदा-सर्वदा,
भावुक, भ्रमर—
भक्तो को;
क्षमा और शान्ति का,
त्याग और सयम का,
तप और वैराग्य का,
शील और—
सन्तोष का,

ज्ञान और—
विज्ञान का,
निज, सौरभ,
पराग, मधु,
सुवास और सौन्दर्य;
नित-नित
नवीन, नवीनतम
वहार निज, पुष्प यह।
× × × ×
पार किए,
जीवन के—
सत्तर वसन्तो को,
और बीत गए—
चउव्वन वर्ष
संयम के उच्च-
पठारों पर,
शिखरों पर।
चलते-चलते,
हो आई, सन्ध्या,
सान्ध्य रवि के—
ढलते-ढलते।
विश्व का,
विधान क्या ?
नश्वर ससार का—
नियम क्या ?
प्रकृति का—
ध्रुव सिद्धान्त क्या ?
यही तो।
लुट जाता,
सौरभ वसन्त का;
मुर्झा जाता,
खिला फूल;
बुझ जाता,
जलता दीप,
हाँ—
आने वाला,
जाता है—
यही तो,
सृष्टि का,
अद्भुत रहस्य है !
क्यों ?
क्यो के लिए तो—
कोई स्थान नही,
औ—
कोई नहीं गुन्जाइश,
कोई भी तो—
तर्क नही, प्रश्न नहीं,
आ कर, यही बस,
हो जाता है,
विश्व समस्त मौन।
× × × ×
अरे ·· ·· !
यह क्या ·· ?
सुप्त है आज,
उपवन का,
वायुमण्डल !
जिसकी—
थिरकन मे थे प्राण,
सौन्दर्य मे थी—
अद्भुत शान,
मुस्कान मे थी,
शक्ति-त्राण।
वही
बिखर गया,
फूल, कूल का।
मृत्यु के,
हलके से, झोंके से,
बिखर पड़ी, पखुडियाँ
और—
धूलि कणो से—
हो गई आच्छादित।
पर—
भीनी-भीनी,
मोहक, महक से,
अब भी, महक रहा,
कोना-कोना—
उपवन का।
और यह—
सुवास है,
ऐसा स्थायित्व लिए,
जिससे—
युगो-युगो तक,
भविष्य में—
महकता ही रहेगा,
विश्व यह सम्पूर्ण।
× × ×
ओ, पुष्प राज !

जाने को तो,
जाते हैं सभी ;
रंक भी, गरीब भी,
धनी भी, मानी भी,
परिव्राट् औ-
सम्राट् भी ; तब—
बच सकते कैसे तुम?
जगति का,
विधान ही,
अनोखा है,
चित्र औ विचित्र है।
किन्तु—
कोटि-कोटि,
जन-भ्रमरों के,
सरल हृदयो का,
सात्विक, सच्चा,
प्यार है तू।
अस्तु
होते, होते, विदा तुम,
लेते जाना,
श्रद्धा के,
सुमनो का,
सुन्दर—
उपहार मेरा।

—ब्यावर : राजस्थान :
१७—८—६०

[२]

काश ! वे कुछ और रहते :

श्री उमेश मुनि जी

—श्री उमेश मुनि जी, एक अच्छे विचारक, बौद्धिक बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न, फक्कड़ तबीयत के अलमस्त तरुण सन्त हैं। लेख, कहानी, काव्य अथवा गद्य-गीत, आप की सफल लेखनी हर क्षेत्र में गतिशील है। आप लिखते यदा-कदा ही हैं, परन्तु जब लिखते हैं तो शानदार लिखते हैं।

—प्रस्तुत गद्यगीत में आप उस मसीहा, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की एक छोटी सी मधुर झाँकी ले कर उपस्थित हुए हैं। जो आप की प्रवाहमान सरल भाषा का सुयोग पा कर और भी अधिक खिल उठी है। पाठक गण इसे पढ़ने के पश्चात् इसके शब्द गत एवं भाव गत सौन्दर्य से अभिभूत हुए विना नहीं रह सकेंगे।

—सम्पादक

मानता है, विश्व जिसको—
मृत्यु, मरण, या अन्तकाल।
समझते हैं, सन्त जन उसे—
अमरत्व, जीवन की पुष्पमाल।
अतः,
मृत्यु का संकेत पा—
हो जाता पामर वाल निढाल।
जब कि,
ज्ञानी, सन्त-जन,
मृत्यु सम्मुख भी, आते ठोक ताल।
जो, सीख पाता है,
सही जीवन कला को

रह पाता है—
जीवित, वह अनन्त काल ।
× × × ×
जीवन और मृत्यु, तथा—
मृत्यु और जीवन, नियति की,
है सनातन एक चाल ।
खोजता है, मृत्यु में भी,
जो कि जीवन के अमर लाल;
स्थूल भौतिक देह के,
जाने पर भी—
रहता, इस भूतल पर,
उन्नत उसका भाल ।
× × × ×
हो चुके थे,
पूर्णतया, निष्णात,
जीने की कला मे—
श्रद्धेय, गुरुवर—
श्री श्यामलाल ।
× × × ×
नन्ही तरुणाई मे ही—
भौतिक जगत से मुख मोड़ा;
संसार की मधुवासना से,
विश्व के सुख भोग से भी,
था आपने सम्बन्ध तोड़ा ।
इस कान्त-कोमल सी, अवस्था—
मे ही, अध्यात्म जगत से,
आपने था नेह जोड़ा ।
और,
दीवाने यौवन की,
रौ को भी,
आत्म-साधना-हेतु मोड़ा ।
इस तरह,
आत्मा की दृष्टि से,
हो उठा था,
दीप्त जीवन का यह कण-कण ।
ले रहा था,
एक दिव्यादर्श,
जीवन से तुम्हारे,
जन-मन-गण ।
× × × ×
पर,
निठुर, नियति को यह,
था कहाँ स्वीकार ?
चाहती है, वह तो,
मानव से सदा—
मनवाना हार ।
बस,
देखते ही देखते,
वह तो यहाँ भी,
क्रूर अपना,
कर गई आ कर प्रहार ।
× × × ×
खैर,
पार्थिव देह से ही तो नियति ने,
वह,
मसीहा हम से छीना ।
किन्तु,
उसकी आज भी,

समधुर स्वर से,
हो रही झकृत है,
जीवन की वीणा।
जिसकी स्वर लहरी तथा—
जिसकी हर लय, जिसकी तानें;
सत्यनिष्ठा और आत्म-साधना के,
सेवा के, मंगल-भावना के,
सहृदयता और सरलता—
जन-जन के प्रति, शुभ कामना के,
गा रही आदर्श गाने।

× × × ×

उन का, वह
आदेश और निर्देश—
सच्चा,
उनका, वह,
उपयोगी, शिक्षापूर्ण, उपदेश—
सच्चा,
आज भी,
कर रहा है, विश्व को मोहित—
तथा जन-हृदय को,
कर रहा है, आलोकित विमोहित-
और सम्मोहित।

× × × ×

बरबस, निकल पड़ते,
हृदय से शब्द यह—
काश ! वे कुछ और रहते !
काश ! वे अध्यात्म साधक,
कुछ और रह पाते,
हमारे बीच मे !
ताकि,
हम भी,
सीख पाते, उन्नत उस
जीवन-कला को,
और भी सुचारु ढंग से,
और भी सुन्दर तरह से,
और ले पाते अधिक ही—
प्रेरणा कुछ,
आदर्श अनुपम,
उनके जीवित रूप से।

—फरीदकोट : पंजाब
१२—१०—६०

[३]

मेरे लोचनों के मौन ये जल-कण—

करो स्वीकार :

श्री कीर्ति मुनि जी

—श्री कीर्ति मुनि जी, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में उपस्थित हुए हैं, लोचनों के मौन जल-कण ले कर। इन जल-कणों में मोतियों की सी आब है, और हीरों की सी चमक। स्नेह की सरलता और श्रद्धा की तरलता के दर्शन-संदर्श इन में स्वयमेव ही हो जाते हैं।

—लोचनों के ये जल-कण अपनी क्या कुछ रामकहानी कहते चलते हैं ? और इस के साथ—साथ ही उस महामानव श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की किन-किन सद् विशेषताओं को बतलाते चलते हैं ? पाठक गण यह सब अगली पंक्तियों से ज्ञात कर सकेंगे।

—सम्पादक

तुम मनुज थे,
वह मनुज,
जिसके करो मे;
अभिशप्त मानव को,
सदा वरदान मिलता है।

तुम मनुज थे,
वह मनुज,
जिसकी क्रिया मे,
अडिग विश्वासो का,
सदा उत्थान पलता है।

तुम मनुज थे,
वह मनुज,
जिसके वचन मे,
मधुरता और सत्यता-
पियूष की धारा बरसती है ।
तुम मनुज थे,
वह मनुज,
जिसके जीवन मे,
सद्गुणो की, ज्योति-किरणे-
वास करती हैं ।
तुम मनुज थे,
वह मनुज,
जिसके दृगो में,
दूसरे के आँसुओ को-
ठौर मिलता है ।
तुम मनुज थे,
वह मनुज,
जिसके हृदय में,
दूसरे की वेदना का—
दीप जलता है ।
तुम मनुज थे,
वह मनुज
जिससे जगत कुछ-
सीख पाया,
दूसरे से प्यार करना ।
तुम मनुज थे,
वह मनुज,
जिससे मनुज कुछ—
सीख पाया,
आत्म का उद्धार करना ।

× × ×

तुम्हारा,
साधनामय, उग्र जीवन,
देख कर लगता, कि—
दानवता—बुराई,
दूर—
तुमसे दूर, रहने मे ही,
निज जीवन समझती ।
तुम्हारे,
सजल दृग औ-
सरल मन को,
देख कर लगता कि-
मानवता, स्वय साकार,
तुम में, डोलती, फिरती ।
मानता हूँ, मैं—
तुम्हारी,
ओजमय वाणी, युगो तक
हर मनुज के—
हृदय की,
गम्भीर घाटी मे—
करेगी गूँज पैदा ।
मानता हूँ, मै—
तुम्हारी,
ज्योतिर्मय, जीवन-रश्मियाँ,
भूले-भटके,
मानवो को,
मार्ग दिखलाती रहेगी ,
और,

ज्योति-शलभ बन,
मानव हमेशा,
होता रहेगा,
आपके जीवन पे शैदा ।
विशेषताएँ—
सफल जीवन की, तुम्हारे ;
स्निग्ध-मुग्ध-प्रकार,
हर हृदय मे,
प्रीत की,
उन्मुक्त निर्झरणी बहाएँगी ।
तुम्हारी,
उच्चतम, अनमोल, शिक्षाएँ,
विश्व को, दे आत्म-बल—
ऊँचा उठाएँगी ।
और,
पग-पग, पर—
मनुज के काम आएँगी ।
और, अब तो—
मृत्यु-पारस का, परस पा,
लौह-देह-यष्टि, तुम्हारी,
हो चुकी है परिवर्तित,
शुद्ध कञ्चन की—
यश. काया के तेजोमय रूप में,
जिसकी सदा जय है,
पराजय नही है ।
जिसको—
नश्वरता, जरठता,
या मरण का,
काल तीनों मे,
कभी भी भय नही है ।

× × ×

स्नेह पाया था अयाचित,
पूज्य गुरुवर,
मात्र, जीवन में, तुम्ही से ।
और, बस,
श्रद्धा जगी थी,
मुझ अपावन की, तुम्ही मे ।
मैं,
तुम्हारे ही, परस से,
और तुम्हारी प्रेरणा से,
कुछ-कुछ
परख पाया था,
क्या होती मनुजता ?
और,
यह भी जान पाया था,
तुम्हारी ही कृपा से,
किस तरह,
करती पतन,
नर का दनुजता ?
जान पाया था, तुम्ही से,
लक्ष्य क्या जीवन का है ?
और, मानव ने—
भला क्यो,
स्वर्ण सी यह देह पाई ?
और, आया—
किस प्रयोजन से, वह जग में ।
बस,
तुम्हारे, कर्तव्य-रत,

दृढ वाहुओ का, पा सहारा,
लडखडाता,
डगमगाता,
बढ चला था,
मै भी कुछ, कर्तव्य-मग मे।
तुम्हारी,
प्रेरणामय, ओज-वाणी,
गूँजती है—
कर्ण-कुहरो मे, अभी तक।
तुम्हारा,
साधनामय, रूप सात्विक—
और निश्छल ;
डोलता है—
नेत्रों के पथ मे, अभी तक।
तुम्हारा,
डाँटना,
पुचकारना औ—
स्नेह करना,
अब,
प्रतिक्षण, याद आता है।
तुम्हारा,
सौम्य जीवन,
सौम्य मुख, औ—
सौम्य वाणी—
से भरा व्यवहार, यह मन,
भूलने हर्गिज न पाता है।

× × ×

सद्गुणो से पूर्ण,
लख जीवन तुम्हारा,
बस, यही लगता सभी को
हो अनश्वर,
हो अजर, और—
हो अमर तुम
फिर,
तुम्हारी, मृत्यु यह कैसी भला ?
इस पहेली को,
समझ पाए न हम।
दीखते तो, अब नही हो,
तुम यहाँ पर।
किन्तु,
इससे क्या नही हो,
तुम कही पर ?
क्या नही तुम—
सब जगह छाए हुए ?
वास हृदयो मे,
नही पाए हुए ?
तुम्हारा,
साधनामय,
रूप प्रतिविम्बित है—
लेकिन,
आज, जन-जन के हृदय मे।
तुम तो,
हुए हो व्याप्त,
सारे विश्व में,
मर कर, अमर हे !
सोचता ही,
रह गया मै,
सत्य जीवन या मरण ?

सत्य—
मानव का मरण है ;
जगतका है—
सत्य जीवन ।

× × ×

देव !
श्रद्धा के सुमन तो
सब चढाएंगे,
तुम्हारे, श्री चरण में ।
किन्तु,
मेरे—
लोचनों के, मौन ये जल-कण,
करो स्वीकार ;
हो जहाँ पर भी—
वही से ।
दो मुझे, फिर—
प्यारमय आशीष यह—
मै मनुज बन, चल सकूं,
उस राह पर ;
जिस पर,
सदा, दृढ चरण धर—
चलते रहे तुम ।
उस,
लक्ष्य के, मैं—
पहुँच पाऊँ सन्निकट तक,
जिस लक्ष्य को,
वस,
पा चुके तुम ।।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१—१२—६०

मुणि सामलालो इव—
विरलो कोवि होइ :

संपादगो— सिरि सुमित्तो जइण भिक्खू

—श्री मुनि सुमित्रदेव जी-निशाकर-प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे लेखक हैं। आप सुत्तागमे जैसे अनेक ग्रन्थ रत्नों के सम्पादक, जैन धर्मोपदेष्टा श्रद्धेय श्री फूलचन्द जी महाराज के सुशिष्य हैं।

—प्रस्तुत प्राकृत कविता मे, आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति अपने श्रद्धा-पूर्ण भाव व्यक्त किए हैं। जिन्हें संक्षिप्त भावार्थ के साथ अगली पंक्तियों में दिया जा रहा है।

—सम्पादक

भिक्खुणा ऽणेगा जगम्मि,
परं सामलालो इव विरलो कोवि होइ।

—संसार मे भिक्षु अनेक हैं, परन्तु श्री श्यामलाल जी महाराज के समान, कोई विरला ही होगा।

रागं दोसं च वहवे करन्ति च करावेन्ति,
मुञ्च विरलो कोवि होइ।

भिक्खुणा ऽ णेगा जगम्मि;
परं सामलालो इव विरलो कोवि होइ ॥

—राग और द्वेष बहुत से जन करते तथा कराते हैं, परन्तु इन राग और द्वेष से मुक्त, कोई विरला ही होगा। ससार मे भिक्षु अनेक हैं, परन्तु श्री श्यामलाल जी महाराज के समान, कोई विरला ही होगा।

गाउंतु गीयं जाणन्ति सव्वे,
णिम्माविरो विरलो कोवि होइ।
भिक्खुणा ऽ णेगा जगम्मि;
परं मुणि सामलालो इव विरलो कोवि होइ ॥

—गीत गाना तो सभी जानते हैं, परन्तु गीत-निर्माता कोई विरला ही होगा। संसार मे भिक्षु अनेक है, परन्तु श्री श्यामलाल जी महाराज के समान, कोई विरला ही होगा।

सव्वे जणा मोक्खं पोक्करन्ति,
गमिरो जणो विरलो कोवि होइ।
भिक्खुणा ऽ णगा जगम्मि;
सेयं मुणि सामलालो इव विरलो कोवि होइ ॥

—सभी जन-मोक्ष-मोक्ष-पुकारते है, परन्तु मोक्ष की ओर गमन करने वाला, कोई विरला ही होगा। संसार मे भिक्षु अनेक हैं, परन्तु श्री श्यामलाल जी महाराज के समान श्रेयस्कर, कोई विरला ही होगा।

सुयणा कहावेउ मिच्छन्ति सव्वे,
सुयणो जणो विरलो कोवि होइ।
भिक्खुणा ऽ णेगा जगम्मि;
मुणि सामलालो इव विरलो कोवि होइ ॥

—सुजन कहलाना तो सभी चाहते हैं, परन्तु सुजन जन कोई विरला ही होगा। ससार मे भिक्षु अनेक, हैं परन्तु श्री श्यामलाल जी महाराज के समान कोई विरला ही होगा।

जाणन्ति सव्वे जह रूसिउ च,
मण्णाविरो विरलो कोवि होइ।
भिक्खुणा ऽणेगा जगम्मि;
मुणि सामलालो इव विरलो कोवि होइ ॥

—रुष्ट हो जाना तो सभी जानते है, परन्तु मान जाने वाला कोई विरला ही होगा। संसार मे भिक्षु अनेक है, परन्तु श्री श्यामलाल जी महाराज के समान, कोई विरला ही होगा।

पसु चारणे वहवे संति दक्खा,
जण चारगो विरलो कोवि होइ।
भिक्खुणा ऽणेगा जगम्मि;
मुनि सामलालो इव विरलो कोवि होइ ॥

—पशुओ को चराने मे बहुत से जन दक्ष होते हैं, परन्तु मनुष्य-चारक कोई विरला ही होगा। संसार में भिक्षु अनेक हैं, परन्तु श्री श्यामलाल जी महाराज के समान, कोई विरला ही होगा।

अच्छीहि देक्खति जगम्मि सव्वे,
तिलोयणो विरलो कोवि होइ।
भिक्खुणा ऽणेगा जगम्मि,
मुणि सामलालो इव विरलो कोवि होइ ॥

—संसार मे दो आंखो से तो सभी देखते हैं, परन्तु ज्ञान का तृतीय नेत्र रखने वाला त्रिलोचन कोई विरला ही होगा। संसार में भिक्षु अनेक हैं, परन्तु श्री श्यामलाल जी महाराज के समान कोई विरला ही होगा।

अच्छन्ति लोए ऽणेगा कुमित्ता,
परं-सुमित्तो-विरलो खु होइ ॥
भिक्खुणा ऽणेगा जगम्मि,
सिरि सामलालो इव विरलो कोवि होइ ॥

—संसार मे कुमित्र तो अनेक हैं, परन्तु सुमित्र निश्चित रूप से कोई विरला ही होगा। संसार मे भिक्षु अनेक हैं, परन्तु श्री श्यामलाल जी महाराज के समान कोई विरला ही होगा।

सागर वर गंभीरा आसी ।
मइवंतो साहसीओ आसी ।
लाभालाभे समभाव आसी ।
लोभभाव मनम्मि न आसी ।
मुणिऊण संसार असारं,
णीग्गंथ मग्गो गहिओ ।
त्ति बेइ खु -सुमित्तो-मुणि ॥

—श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज, सागर के समान गम्भीर थे। बुद्धिमान एवं साहसी पुरुष थे। वे लाभ और हानि मे समभाव रखने वाले थे। लोभ-भाव उनके मन मे भी न था। उन्होने संसार की असारता का भली प्रकार से मनन करके निर्ग्रन्थ-मार्ग ग्रहण किया था। —ऐसा मुनि सुमित्रदेव कहता है।

गुड़गावा छावनी . पन्जाब :
१४—६—६०

गुरु संथवम् :

सिरि कित्तिचंदो मुणी

—मुनि श्री कीर्तिचन्द्र जी की प्रतिभा काव्य निर्माण में अच्छी गति रखती है। हिन्दी, उर्दू तथा गुजराती के अतिरिक्त संस्कृत एवं प्राकृत का भी आपको अच्छा अभ्यास है।

—प्रस्तुत गुरु संस्तव में आपने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के अति संक्षिप्त जीवन एवं कुछेक विशेषताओं का दिग्दर्शन कराया है; जो प्राकृत काव्यात्मक भाषा में अपना पृथक ही स्थान रखता है। संक्षिप्त भावार्थ के साथ वह संस्तव पाठकों के मननार्थ नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

जस्स आसी पिआ अम्मा, रामप्यारी य टोडरो।
उववण्णो सोरइ गामे, सामलालो महामुणी ॥

—जिनके माता-पिता, श्रीमती रामप्यारी जी और श्रीमान् टोडरमल जी थे, वे महामुनि श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज, सोरई नामक ग्राम मे उत्पन्न हुए ।

खत्तिय कुल संभूओ, जेट्ठ एगारसइ दिणे।
एगूणवीसाए सए, सगयालाए य विक्कमे ॥

—वे श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, उन्नीस सौ सैंतालीस विक्रम मे, ज्येष्ठ (शुक्ला) एकादशी के दिन, क्षत्रिय कुल मे उत्पन्न हुए।

चंचलं जोवणं धणं, चंचलं सव्व सम्पदा।
चंचलं जीवियं देहं, धम्ममेव थिरं सया ॥

—धन और यौवन चञ्चल है, सभी वैभव क्षणस्थायी है, प्राण और शरीर भी नश्वर हैं, केवल एक मात्र धर्म ही स्थिर एवं शाश्वत है।

कोहं मोहं च लोहं च, रागं दोसं तओ तहा।
पाडेन्ति गहणगतम्मि, एआ य पंच सत्तवा ॥

—क्रोध, मोह और लोभ, राग और द्वेष; ये पाँच शत्रु (इस आत्मा को) गहन गर्त मे गिरा देते हैं।

सयं कडे भवे दुक्ख, सयमेव भवे सुह।
सयं विमोयइ वन्धं, सयं वन्धइ वन्धणं ॥

—इस आत्मा को दुःख स्वयंकृत होता है, और सुख भी स्वय-कृत ही होता है। यह आत्मा अपने वन्धनो से स्वयं ही मुक्त होता है और स्वयं ही वन्धनो को वाँधता है।

जाणित्ता इमं सव्वं, तेण भद्देण साहूणा।
अप्पाणं रक्खणट्ठाय, चइयं गेह वन्धणं ॥

—उस भद्र सत्पुरुप ने यह सव जान कर, अपनी आत्मा की रक्षा के लिए, गृह-वन्धन को त्याग दिया।

दस लक्खण सम्पन्नं, वैरागेण समेण य।
ऋषिरायं गुरुं किच्चा, धण्णं माणइ अप्पणं ॥

—वैराग्य और सम भावो से युक्त तथा क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, सयमादि दस मुनि लक्षणो से सम्पन्न श्रद्धेय श्री ऋषिराज जी महाराज को गुरु बना कर, उन्होने अपने आप को धन्य माना।

एगूणवीसाएसए, तेसट्ठि विक्कमे तहा।
जेठुस्स सुक्कले पक्खे, मंगले पंचमी दिणे॥
ऋषिरायं गुरुं नच्चा, ढिढाली नामे पत्तणे।
आचरिय मुणीधम्म, सामलालेण साहूणा॥

—और श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज ने, उन्नीस सौ तिरेसठ विक्रम मे, ज्येष्ठ शुक्ला पचमी मंगलवार के दिन, श्रद्धेय गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज को नमस्कार करके, ढिढाली नामक गाँव मे, मुनि धर्म का आचरण किया अर्थात्–भगवती दीक्षा अगीकार की।

मोक्खस्स कारणं अत्थि, संसारम्मि अणंतए।
तव संवर संजुत्तं, संजमं वीयरागता॥

—इस अनन्त संसार मे तप एव संवर से संयुक्त संयम और वीतरागता ही मोक्ष का कारण है।

गुरुणाचरियं धम्मं, अणगारस्स भिक्खुणा।
जं चरन्तं सुही होई, पत्तो गइ मणुत्तरं॥

—जिसका आचरण करके मानव सुखी होता है, उस अणगार-भिक्षु धर्म का आचरण करके श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने अनुत्तर गति को प्राप्त किया।

इंदियाणि मणं चैव, दमियव्वं खु दुक्करं।
सो वि गुरुणा दमियं, संजमेण तवेण य॥

—इन्द्रियो और मन को दमन करना वडा ही दुष्कर है, परन्तु श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने संयम और तप के द्वारा उनका भी दमन किया।

गामे वा नगरे वावि, रण्णे वा जण सकुले ।
बाहिराब्भतरो आसी, गुरुणामेगरूवता ।।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के जीवन मे ग्राम मे अथवा नगर मे, वन मे अथवा जनसमूह मे, व्यवहार मे अथवा अन्तर्जीवन मे, पूर्ण रूप से एकरूपता विद्यमान थी ।

तवेण बम्भचेरेण, अज्जवेण महामुणी ।
वेयावच्चेण सच्चेण, पत्तो हि ठाण मुत्तम ।।

—उस महामुनि श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव ने तप, ब्रह्मचर्य, ऋजुता वैयावृत्य और सत्य के द्वारा उत्तम स्थान को प्राप्त किया ।

बे सहस्ससत्तदहम्मि, विक्कमम्मि य सँवए ।
विसाहे सुक्कले मासे, दसमी सुक्कवासरे ।।
अग्गपुरम्मि नयरे, मानपाडा य ठाणए ।
लहइ सग्गधाम, सामलालो महामुणी ।।

—विक्रम संवत् दो हजार सतरह शुक्ल वैशाख मास मे दशमी शुक्रवार के दिन, उस महामुनि श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज ने, आगरा नगर, मानपाड़ा स्थानक मे, स्वर्गधाम प्राप्त किया ।

तस्स सिस्साणुसिस्सेण, अणगारेण भिक्खुणा ।
मुणिणा कित्तिचदेण, कहिअ गुरु सथवम् ।।

—उन्हीं (श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज) के शिष्यानुशिष्य, अणगार भिक्षु मुनि कीर्तिचन्द्र ने (यह) गुरु सस्तव कहा ।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
५—१२—६०

दिव्यलोकं गतः सः

श्री पण्डित मथुराप्रशाद जी-साहित्याचार्य-

—श्रीमान् पण्डित मथुराप्रशाद जी-साहित्याचार्य-एक बडी ही सरल प्रकृति के वयोवृद्ध सज्जन हैं। आप विद्याधर्मवर्धिनी संस्कृत पाठशाला गुड़ की मण्डी आगरा में संस्कृत अध्यापन का कार्य करते हैं। जैन सन्तों से भी आप का अध्ययन अध्यापन का काफी सम्बन्ध रहा है।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सरल जीवन से तो आप वर्षों से परिचित रहे हैं। फलतः उन की पुराय स्मृति में आप ने भी अपने श्रद्धा-पुष्प समर्पित किए हैं। जिन्हें संक्षिप्त भावार्थ के साथ नीचे दिया जा रहा है।

—सम्पादक

सन्तीह सत्व परम पवित्र,
शमो दमः सत्यमहिंसन च ।
तपः तितीक्षानुभवश्च यत्र;
सो ऽपि गतः दिव्यपद तपस्वी ॥

—इस लोक मे जिस तपस्वी महात्मा के जीवन मे, परम पवित्र सतो गुण विराजमान था, जिसके जीवन मे शम, दम, सत्य अहिंसा, तप, तितीक्षा और आत्मानुभव आदि दिव्य गुण थे, वह तपस्वी महात्मा, आज दिव्य पद को प्राप्त हो गए, अर्थात् आज वे स्वर्गधाम मे जा विराजे।

आसीदेवं सुमति विभव, सज्जनः श्यामलालः,
दीक्षां लेभे बुध मुनिवरात्, ऋषिराजात् महर्षेः ।
रामप्यारी जगति जननी, टोडरः यस्य तातः ;
शान्तः क्षान्तः मृदुलहृदयः दिव्यलोकं गतः सः ।।

—इस प्रकार श्रेष्ठ बुद्धि के वैभव से सम्पन्न, सज्जन पुरुष श्री श्यामलाल जी थे ; जिन्होने पण्डितरत्न महर्षि श्री ऋषिराज जी महाराज से मुनि दीक्षा प्राप्त की थी। जिनकी माता श्रीमती रामप्यारी जी और पिता श्रीमान् टोडरमल जी थे ; वह मृदुल हृदय, शान्त एव क्षमाशील महात्मा, आज दिव्य लोक को पधार गए।

तस्य तपस्विन उपदेशं निम्नाङ्किताः स्मर्यन्ते, तथा हि—

गुरुर्न स स्यात्, स्वजनो न स स्यात्,
पिता न स स्यात्, जननी न सा स्यात् ।
शिष्यो न स स्याच्च, पतिर्न स स्यात् ;
न मोचयेत् यः, समुपेत मृत्युम् ।।

—उस तपस्वी महात्मा के निम्नाङ्कित उपदेश हमे स्मरण हो आते है, जैसे—वह गुरु नही है, वह स्वजन नही है, वह पिता नहीं है, वह शिष्य नही है और वह पति नही है जो सम्मुख आती हुई मृत्यु से न छुड़ा सके।

स एव महात्मा काले काले सदा उपदिशति न.—

इदं शरीरं मम दुर्विभाव्य,
सत्व हि मे हृदय यत्र धर्मः ।
पृष्ठे कृतो मे यदधर्म आरात्;
अतः गुरु मा प्रवदन्ति लोका. ।।

—वह ही महात्मा, समय-समय पर हमको सदा उपदेश देते रहते थे—यह मेरा शरीर नश्वर है। सतो गुण ही मेरा हृदय है, जहाँ धर्म है। अधर्म को मैने पीठ पीछे कर दिया है, अर्थात्-छोड दिया है। इसी से लोग मुझे-गुरु- कहते है।

नाय देहो देहभाजां नृ लोके,
कष्टान् कामान् अर्हते विड्भुजां ये।
सत्य दिव्य श्रावका! येन सत्वं;
शुद्ध्येत् यस्मात् ब्रह्मसौख्य त्वनन्तम्॥

—हे श्रावको ! इस ससार मे यह नर देह कूकर-शूकरों के समान दु खदायी विषय भोग भोगने के लिए नही है। सत्य ही दिव्य अर्थात्–देवरूप है, जिससे सत्व अर्थात्–हृदय और आत्मा की शुद्धि होती है तथा जिससे अनन्त ब्रह्म–सौख्य प्राप्त होता है।

अध्यात्म योगेन विविक्त सेवया,
प्राणेन्द्रियात्माभिजयेन सध्र्यक्।
सच्छ्रद्धया ब्रह्मचर्येण शश्वत्;
लिङ्ग व्यपोहेत्कुशलोऽहमाख्यम्॥

—मै कहता हूँ कि कुशल विवेकी पुरुष को, अध्यात्म योग से, एकान्त सेवन से, प्राण, इन्द्रिय तथा मन के जय से, सत्य मे श्रद्धा से, और अखण्ड ब्रह्मचर्य से, इस पार्थिव शरोर को त्याग देना चाहिए।

—शीतलागली, आगरा उत्तर-प्रदेश
२९—१२—६०

[७]

बोभवीति विषयो न नेत्रयो :

संकलन कर्ता– मुनि यशाचन्द्र :

—श्री मुनि यशाचन्द्र जी महाराज, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के ही प्रशिष्य में से हैं। उस स्वर्गस्थ आत्मा के प्रति आपने एक प्राचीन ग्रन्थ से कुछ श्लो संग्रह किए हैं। जो सामयिक होने के साथ-साथ भावपूर्ण भी हैं। उन्हें अगली पंक्ति में संक्षिप्त भावार्थ के साथ दिया जा रहा है।

—सम्पादक

स्वकीय धर्मोन्नतिमात्र लग्न,
स्वप्नेऽपि न प्राप्तनिजार्थ बुद्धि।
त्यक्त्वा समस्तं तु कथन्नु कार्यं-
गंतुं द्युलोकं स मनश्चकार. ?

—अपने धर्म की उन्नति मे एक मात्र संलग्न, और स्वप्न में भी स्वार्थ बुद्धि को, अपने मन मे स्थान न देने वाले उस महापुरुष सद्गुरुदेव ने अपने समस्त उपयोगी सत्कार्यों को छोड़ कर, क्यो स्वर्ग में जाने की इच्छा की ?

विज्ञाय तस्याद्भुतचारु वृत्त,
दिवौकसो जात कुतूहला. किम् ?
तद्दर्शनावात्म निकेतनं तम्—
अजूहवन्दिव्य गुणैरुपेतम् ?

—क्या कही, देवगणो ने उनके अद्भुत और सुन्दर वृतान्त को सुन कर और उनसे आश्चर्यचकित हो कर, उस दिव्य गुणयुक्त सत्पुरुष श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को ; उसके दर्शन करने के लिए तो, स्वर्ग मे नही बुला लिया ?

दिनानि पूर्वं कतिचिद्य आसीत्,
असंहतास्म न्नयनोत्सवाय ।
स्मृतेस्स पन्थानमितोऽधुना तत् ,
कथं विधे स्याल्लसितं प्रमेयम् ?

—कुछ दिन पहले जो हमारे नेत्रो को आनन्द देता था, आज वह स्मृति के मार्ग मे पहुँच गया, तो फिर विधि का उल्लसित कैसे प्रमेय हो सकता है ?

तात गेह वसति विमानिता,
संश्रितश्चरम एव चाश्रम. ।
धर्म तत्त्व परिबोधने रत-
स्तेन सोढमपि दुर्वचो नृणाम् ।।

—पितृगृह मे रहना जिसने पसन्द नही किया और ब्रह्मचर्य-प्रथम आश्रम से ही जिसने चतुर्थ सन्यास आश्रम का आश्रय लिया । जिसने धर्म-तत्त्व को बतलाते हुए अनेक मनुष्यो के दुर्वचन भी सहर्ष सहन किए ।

स्यात्पुनस्तरणिरक्षि गोचरो,
दृश्यते नभसि चन्द्रमाः पुनः।
यात एष तु सकृत्सदग्रणी ;
बोभवीति विषयो न नेत्रयोः ॥

—सूर्य तो अस्त हो कर अगले दिन फिर भी हमे दृष्टिगोचर होगा, चन्द्रमा भी छिप कर, आकाश मे पुनः दीख जाएगा, परन्तु वह सत्पुरुषों मे अग्रणी श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव, एक बार गए हुए, फिर पुनः हमारे नेत्रो का विषय न होगे। अर्थात् अब उनके पुनः दर्शन न होगे।

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश
३—१२—६०

पूज्यपाद श्री श्यामलाल जी महाराज— महोदयानाश्चरणयोः श्रद्धा प्रसूनाञ्जलिः :

श्रद्धेय प्र० व० पण्डित श्री सौभाग्यमल्ल जी महाराज

—श्रद्धेय, प्रखर वक्ता, पण्डित प्रवर श्री सौभाग्यमल्ल जी महाराज, महाराष्ट्र मन्त्री श्री किशनलाल जी महाराज के सुशिष्य हैं। सरल मन, मधुर वाणी और कर्तव्य की धुन आप श्री जी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं।

—इन्दौर, गुरु-सेवा में अत्यन्त व्यस्त रहने पर भी श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा-प्रसूनाञ्जलि आप श्री जी ने लिख भेजी है। जो भावपूर्ण संस्कृत भाषा में अपना हृदय ग्राही स्थान रखती है। उसे हिन्दी अनुवाद के साथ नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

हा, हन्त ! हन्त ! नलिनी गज उज्जहार।

—नाह जानामि यद् तत्र भवता दर्शनावसरोऽपि मया-लब्धः। केवल स्वर्गारोहणस्येतिवृत्तम्, वृत्त-पत्रेषु समुपलभ्य नितरादूयमानेन चेतसा मया निर्णीत, यदीदृशानामलौकिक पुरुषाणाम् गुणानुवाद कृत्वा स्वात्मान सफलयामि।

—अस्मिन् संसारे बहवो जायन्ते विलीयन्ते च, परञ्चानन्तात्मानाम् अभयदातारो भवादृशा विरला एव। सामान्य जनानाम् जन्मना मरणेन च शोकावसरो न जायते। ईदृशानाम् कीर्त्याधवलीकृतसमाजानाम् पूज्यपाद मुनीनाम् वियोगेन मनसि महती वेदना जायते।

—भवत्सु सेवा भावना वैराग्यादिनैकेगुणा आसन्। भवान् यौवनेऽपि विषयेष्वनासक्तमना: सन् भागवती दीक्षा जग्राह। भवता स्वीय चारित्र्येण जन्मना गृहीत क्षत्रियकुलमप्यलङ्कृतम्। भवता पितरौ (पिता श्रीमान् चौधरी टोडरमलजी, तथा माता श्रीमती रामप्यारी बाई जी) धन्यवादार्हौ, याभ्यामीदृक् पुत्ररत्न-समुत्पादितम्। अनेके क्षत्रिया: शत्रूणामुन्मूलनार्थ बभूवु. भविष्यन्ति च। किन्तु भवादृशा निर्मत्सरा: कर्मणा विजेतारो विरला एवेति।

अनुवाद

—हा, खेद है ! खेद है ! जल कमल को हाथी ने नष्ट कर दिया ! मै नही जानता कि कभी आप श्री जी के दर्शनो का सौभाग्य मुझे मिला भी है अथवा नही। केवल आप श्री जी के स्वर्गारोहण का समाचार वृत्त-पत्र द्वारा जान कर हृदय खेद खिन्न हुआ। और दु:खित हृदय से ही मैने निर्णय किया, कि ऐसे अलौकिक पुरुषो के गुणानुवाद करके अपनी आत्मा को सफल करूँ।

—इस ससार मे बहुत से प्राणी जन्म लेते हैं और विलीन हो जाते हैं, परन्तु अनन्त आत्माओ के अभयदाता आप के सदृश कोई विरले ही होते हैं। सामान्य जनो के जन्म अथवा मरण से कोई दुखी नही होता परन्तु जिन्होने अपने सुयश से समाज को समुज्ज्वल किया है ऐसे पूज्यपाद मुनियो के वियोग से मन मे बडी ही वेदना उत्पन्न होती है।

—आप श्री जी के जीवन में सेवा भावना तथा वैराग्य आदि अनेक सद्गुण थे। यौवन मे भी ससार विषयों से अनासक्त मन हो कर आप श्री जी ने भगवती दीक्षा ग्रहण की। आपने अपने चारित्र के द्वारा, जन्म ग्रहण करने वाले क्षत्रिय कुल को भी अलकृत किया। आपके पिता और माता श्रीमान् चौधरी टोडरमल जी तथा श्रीमती रामप्यारी बाई जी, धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होने ऐसे पुत्ररत्न को जन्म दिया। शत्रुओं को नष्ट करने के लिए अनेक क्षत्रिय हुए और होगे, परन्तु आप श्री जी के समान निर्मत्सर और कर्मो के विजेता कोई विरले ही होगे।

इन्दौर : मध्य-प्रदेश :
७—६—६०

[६]

जगमगाता जीवन :

मरुधर केशरी, श्रद्धेय मन्त्री श्री मिश्रीमल्ल जी महाराज

—मरुधर केशरी, पण्डित प्रवर श्रद्धेय मन्त्री श्री मिश्रीमल्ल जी महाराज, एक धीर, वीर, गम्भीर तथा परम साहसी वयोवृद्ध अनुभवी मुनिराज हैं। आप श्री जी वय से भले ही वृद्ध हैं, लेकिन कर्तव्य-कर्मठ आप श्रीजी का मन तो जवानों का भी जवान है। परम साहसी वृत्ति और मधुर तथा मिलनसार स्वभाव, आप श्री जी के ओजस्वी व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं। आप श्री जी श्रमण संघ के मन्त्री हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आप श्री जी ने अपनी भाव-भीनी कवितावद्ध श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है। जो आप श्री जी की चमत्कारिक सुरम्य भाषा के संयोग से और भी अधिक खिल उठी है। पाठक गण, श्रद्धेय मंत्री जी महाराज द्वारा प्रस्तुत किए गए काव्य रस का मधुर पान कर, एक अनुपम तृप्ति का ही अनुभव करेंगे।

—सम्पादक

हरिगीतिका छन्द

हैं श्याम गज नभ घन घटा दृग कीकी कज्जल श्री हरी।
फूल अलसी के अनुपम गम्भीर नद जल ने भरी॥
देख कर सन्तुष्ट जन-मन होत हैं प्रति पल घरी।
पण्डित प्रवर ऋषिराज पट्टधर श्याम शोभा ज्यों वरी॥

ग्राम सोरई आगरा के निकट यू० पी० देश वर ।
क्षत्रीय टोडरमल्ल पत्नि रामप्यारी थी सुघर ॥
शुभ कुक्षि से नय[७] वेद[४] निधि[९] शशि[१] ज्येष्ठ शुक्ला जानिए ।
तिथि इग्यारस वार भृगु शुभ जन्म मगल मानिए ॥

नव वर्ष मे गृह त्याग कर ऋषिराज सेवा मे लगे ।
रस[६] वाण[५] निधि[९] भू[१] अब्द विक्रम भाग्य जिसके जगमगे ॥
ज्ञान अरु वैराग्य की शिक्षा समुन्नत है करी ।
राम[३] रस[६] निधि[९] धरा[१] वर्षे ऋषिराज पे दीक्षा धरी ॥

सौम्यता मृदुता सरलता विनय मे भरपूर थे ।
प्रस्तुत सदा गुरु सेव मे तप त्याग मे वह सूर थे ॥
सौजन्यता शुभ गन्ध से भवि-भ्रमर मँडराते सदा ।
तृप्त हो जाते मनाते पुनि दौड़ आते थे मुदा ॥

छोटे बडे की सेवना सत साधना बस जानते ।
था विलक्षण गुण यही हृद्धाम मे दृढ ठानते ॥
इस लिए -गणी- पद दिया पृथ्वी-अमर आदिक मिली ।
प्रेम मूर्ति अजब स्फूर्ति देख तामस भी हिली ।

वर्ष चोपन[५४] सयमी जीवन बिताया रग से ।
सर्वायु सीत्तर[७०] मोह मत्सर द्वेष टारा अंग से ॥
द्वीप[७] शशि[१] नभ[०] नेत्र[२] विक्रम मानपाडा आगरे ।
वैशाख शुक्ला भृगु दशमी स्वर्ग-पथ को सचरे ॥

करे क्या तारीफ तेरी ? जगमगाता हीरा कणी ।
शुभ्र गुण भूपित लड़ी पै हृदय मोहक तू मणी ॥
श्रीचन्द्र कीर्ति आदि मुनि का हृदय हार विहारिणी ।
कहाँ गया ? हा ! कहाँ गया ? हा ! श्यामलाल मुनि गणी ॥

दोहा

चमकत चपला घनमयी,
पेखी प्रमुदित लोग ।
श्याम गणी शोभा बनी;
पूर्व पुण्य प्रयोग ॥
श्रद्धाञ्जलि अर्पण करे,
मन्त्री मुनि मिश्रीय ।
आतम लहे आनन्द तव,
भव-भव मे रमणीय ॥

—खुवासपुरा · राजस्थान :
११—६—६०

श्रद्धाञ्जलि पञ्चक :

श्रद्धेय मुनि श्री रूपचन्द्र जी–रजत–

—मुक्ता सुशिष्य श्रद्धेय श्री रूपचन्द्र जी महाराज–रजत–एक बौद्धिक प्रतिभा से सम्पन्न सुपठित तरुण सन्त हैं। आप मरुधर केशरी मन्त्री श्री मिश्रीमल्ल जी महाराज के सुशिष्य हैं। प्रचीन छन्दों में काव्य रचना, आप बड़े ही सुन्दर ढंग से कर लेते हैं।

—दोहा एवं दुर्मिला सवैया ,छन्दों में आप ने श्रद्धेय गणीवर स्वामी जी श्री श्यामलाल जी महाराज के चरण कमलो में अपना-श्रद्धाञ्जलिपञ्चक-सादर समर्पित किया है। जो अगली पंक्तियों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

दोहा

कर दोहन सद् शास्त्र को,
भो-हन कर भोपाल।
जोहन जैन दिपा गयो,
स्वामी श्यामलाल ॥
मरस शान्त छवि छिप गई,
सरगो जाई श्याम।
आलम उत्तर के सवन,
जपें आपका नाम ॥

सवैया दुर्मिलाः—

ऋषिराज मुनि, उपदेश सुनी, शुभ पन्थ, जु संजम, धार लियो,
गुण' काय' निधी' विधु' सवत् को भव जालन व्यालन सो लखियो।
वसु-नाश हिते भल भक्ति भजी, सित-कान्ति वरी, दिवलोक गियो;
गणि श्याम सुधाम गुणामल को,-मुनिरूप-पदाम्बुज राचि रियो ॥

दोहा

दरस तरस उर मे रही,
सत्य सह्री नही जाय।
कीर्ति मुख, कानो सुनिया,
गुण गणिवर का प्राय ॥
अब आंखों ओझल गये,
भये अमर यश पाय।
—रजत—रसिक मुनि पद तणो,
गुण पञ्चक चरणाय ॥

—खुवासपुरा : राजस्थान.
११—६—६०

श्रद्धा अष्टक

श्री मधुकर मुनि जी

—पण्डित प्रवर श्रद्धेय श्री मिश्रीमल्ल जी महाराज—मधुकर—एक बड़ी ही सरल प्रकृति के सन्त एवं मधुर स्वभावी मुनिराज हैं। गाम्भीर्य एवं पाण्डित्य पूर्ण सुलझे हुए विचार, आप श्री जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता है। आप श्री जी का विचरण-संचरण अधिकतया मरुधर प्रान्त में ही होता है।

—आप श्री जी सुललित लेखक, सफल सम्पादक एवं काव्य कलाधर मुनिराज हैं। सरल भाषा में आप श्री जी का काव्य कलन, हृदय ग्राही प्रभाव रखता है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की पुण्य स्मृति में आप श्री जी ने श्रद्धा अष्टक लिख भेजा है। जो नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

दोहा

श्रमण संघ के लोक प्रिय, शान्ति क्षमा गुण धाम।
युक्त प्रान्त के सन्त वर, धन्य-धन्य मुनि श्याम॥

नाम तुम्हारा श्याम था, काम न तेरा श्याम।
श्याम, अहो! तुम तो रहे, सदा भव्य आराम॥

श्रान्त क्लान्त जन को सदा, देता सुख आराम।
पा कर तुम्हे, सब सन्त जन; पाते थे विश्राम ॥

पा कर गणी पद भी नही, कभी मान का काम।
जब-तब सुनते थे तेरी; मुनि सेवा निष्काम ॥

स्वर्गवास तुमने किया, रख कर क्या सुख आस ?
मुनि जीवन बिन क्या कभी; सफल हुई मन आस ॥

स्थूल देह से आज तुम, हो न हमारे पास ।
पर कीर्ति तव आज भी; करती है सुविलास ॥

कीर्ति अमर तेरी यहाँ, जग में चारों ओर ।
यश गाते तेरा सदा; जन-जन हर्ष विभोर ॥

श्रद्धाञ्जलि अर्पित तुम्हें, करता हूँ सुखकार ।
तव विशुद्ध चारित्र को; वन्दन है हर वार ॥

—मेड़ता : राजस्थान :
५—६—६०

आर्ष आदर्श

मुनि श्री लालचन्द जी श्रमण–लाल–काव्यतीर्थ–साहित्यसूरि

—श्रद्धेय श्री लालचन्द जी महाराज-श्रमण-लाल-मरुधर प्रान्तीय प्रख्यातनामा मुनिराज हैं। आप की वहुमुखी विकासशील प्रतिभा विद्वज्जनों में प्रसंशनीय स्थान रखती है। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, एवं गुजराती, और मारवाड़ी आदि में काव्य निर्माण आप अत्यन्त सरलता एवं सफलता पूर्वक कर लेते हैं। आप सरलात्मा श्री वख्तावरमल्ल जी महाराज के सुशिष्य हैं।

—प्रस्तुत आर्ष आदर्श नामक कविता में आप ने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति अपने श्रद्धा भाव व्यक्त किए हैं। जो चलती भाषा में होने के कारण सब के आकर्षण का केन्द्र वन सकेंगे, ऐसा विश्वास है।

—सम्पादक

आने हुए अमरावती, अभी जेठ ही मे खाम गांव।
ग्रन्थ देखा था, उसी पर, ऋषिराज जी महाराज नांव॥

शुद्ध समकित पूर्ण कविता, और लेख ललाम है।
सब तरह की दार्शनिक, चर्चा के आता काम है॥

ऐसे पण्डित ज्ञानी गुरु के, शिष्य मुनि श्री श्याम जी।
कीर्ति मुनि के पत्र से जाना, पाया आराम जी॥

उनके विषय मे चन्द सतरें लिखने का मौका मिला।
मानो पापों की पहाड़ी है दिवी इसने हिला॥

सद्गुणी के गुण किए से, पाक होता है जिगर।
देख लो-ज्ञाता-जिनागम, गोत्र बंधता तीर्थंकर ॥

× × × ×

वे श्याम थे या श्याम दिल को लाल थे वे कर रहे।
या स्वामी से वे श्याम बन, विनय मन थे भर रहे ॥

वे शाम थे तो शिष्य उनके श्री औ कीर्ति हैं सुबह।
सब तरह सुप्रकाश विस्तृत करें जग मे, चाह यह ॥

देख उनकी प्रगति को, विश्वास भी है हो रहा।
और द्विज उवभाय का, सहयोग जो उनको रहा ॥

× × × ×

सादड़ी के सम्मिलन का, अहसान माना चाहिये।
सन्त जन इक दूसरे से मिले औ परखे हिये ॥

यह उसी का फल है कि हम इतने घुल मिल हैं रहे।
इक दूसरे को समझ अपना काम हैं हम कर रहे ॥

—अमरावती : विदर्भ :
८—८—६०

[१३]

युग पुरुष के चरणों में :

श्रद्धेय श्री चन्दन मुनि जी

—श्रद्धेय श्री चन्दन मुनि जी महाराज, एक सफल प्रवक्ता, सफल लेखक और सफल कविरत्न हैं। प्रकृति के आप मधुर एवं मिलनसार हैं। श्रद्धेय तपस्वी श्री पन्नालाल जी महाराज के आप शिष्य रत्न हैं। काव्य कलन में आप की प्रतिभा कमाल दिखाती है। पञ्चनद प्रदेश के आप प्रख्यातनामा मुनिराज हैं। दर्जनों पद्यात्मक पुस्तकों के आप निर्माता हैं। पञ्जाबी भाषा के आप सिद्ध हस्त लोक कवि हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के आप काफी निकट सम्पर्क में रहे हैं। फलत. उन युग पुरुष श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के महान् जीवन से आप पूर्णतया परिचित हैं और उन की सद् विशेषताओं से प्रभावित भी। अपनी उसी काव्यमय भाषा में, आपने उस युग पुरुष के चरणों में, अपनी श्रद्धा के कुछ अर्द्ध खिले सुमन अर्पित किए हैं। इन के सौन्दर्य एवं उन की सुवास से पाठक गण भी परिचित हो सकें, इसी लिए इन्हें अगली पंक्तियों में सजा-संवार कर रख छोड़ा है।

—सम्पादक

राधेश्याम

समय-समय पर जन्म अनेको, पुरुष यहाँ पर पाते हैं।
चार दिनो का खेल दिखा कर; आखिर वे छुप जाते हैं ॥
लेना जन्म उन्ही का सार्थक, दुनिया अन्दर आ करके।
चमक दिखा जो चांद रवि-सी; जाते जग चमका करके ॥
ऐसे ही युग पुरुष, श्रद्धेय, श्यामलाल जी मुनि हुए।
ज्ञानी और गणी पद भूषित; परम यशस्वी गुणी हुए ॥

उन्नीस सौ सैतालीस विक्रम, वर्ष अनोखा आया था।
ज्येष्ठ सुदी की ग्यारस को; शुभ जन्म आपने पाया था ॥
माता रामप्यारी जी न, फूली जरा समाई थी।
पिता चौधरी टोडरमल ने माया खूब लुटाई थी ॥
जिला आगरा का वह भारी, ग्राम सोरई झूम उठा।
एक तरह से मानो उसका, आज जाग मकसूम उठा ॥
चमक गया वह कुल क्षत्रिय, जन्म आपके पाने से।
महिलाओ ने गगन गुँजाया, उस दिन मगल गाने से ॥
गौर वर्ण तन, बाल अवस्था, निशिपति जैसे मुखड़े को।
देख-देख कर मात-पिता वे; भूले अपने दुखडे को ॥
लाड़ प्यार मे, हँसी खुशी मे, नव जब वर्ष बिताते हैं।
ऋषिराज जी गुरुदेव के; मंगल दर्शन पाते है ॥
यही रहूँगा, यही पढूँगा, नही ग्राम अब जाऊँगा।
एलम मे ही गुरुदेव की; सेवा सदा बजाऊँगा ॥
और कही को जायेगे जब, साथ सदैव चलूँगा मैं।
मधुर दया इन्हो की पा कर, फूलूँ और फलूँगा मैं ॥
नही टली यह बात आपकी, रहे गुरु के पास सदा।
ज्ञान-ध्यान का, आलस तज कर; किया खूब अभ्यास सदा ॥
उन्नीसौ त्रेसठ का विक्रम, संवत् जब कि आया है।
जेठ महीना सुदी पञ्चमी; मगलवार सुहाया है ॥
ऋषिराज जी गुरुदेव के, चरणन शीश झुका करके।
धारा सयम आप श्री ने, मन मजबूत बना करके ॥
नगर मुजफ्फर का ढिढाली, कस्बा जो कहलाता है।
धूम धाम से दीक्षोत्सव कर, फूला नही समाता है ॥
लगे विचरने, साथ गुरु के, सेवा खूब बजाते हैं।
जैनागम के ज्ञाता बन कर, शोभा भारी पाते हैं ॥
जगह-जगह पर घूम-घूम फिर, दुनिया सुप्त जगाई है।
गणीवर्य की उत्तम पदवी, हो सम्मानित पाई है ॥

सरल प्रकृति को देख आपकी, सारे ही गुण गाते थे।
तेज तपस्या का लख मुख पर; नर-नारी झुक जाते थे॥
जब भी देखो, मुख मण्डल से, शान्ति अद्भुत झरती थी।
मिश्री जैसी वाणी मीठी, जनता का दुख हरती थी॥
भाषण क्या थे, आप श्री के ? सुधा-धार ही बहती थी।
धन्य गुरुवर, धन्य गुरुवर ; सुन-सुन जनता कहती थी॥
एक अनोखा चमत्कार सा, नजर आप में आता था।
जो भी मिलता आप श्री से, भक्त वही बन जाता था॥
नही लेश भी खुश होते थे, अपनी कभी बड़ाई से।
रहे हमेशा दूर, मान से, निन्दा, कलह, बुराई से॥
इक चौमासा सग आपके, करने का सौभाग्य मिला।
सरल शान्त औ मधुर प्रकृति ; देख हृदय का कमल खिला॥
मुस्कराहट तो मुख के ऊपर, रहती थी बस निशदिन ही।
प्राय: ध्वनि आपके मुख से ; सदा निकलती जय जिन ही॥
आया आखिर दो सहस्र औ सत्रह सवत् दुखकारी।
दशवी तिथि वैसाख सुदी की ; भूलेगे नही नर-नारी॥
इच्छा पूर्वक कर सथारा, नाम प्रभु का भज करके।
स्वर्ग सिधारे आप श्री जी ; नगर आगरा तज करके॥
चले गए हैं आप यद्यपि, नजर नही हो आ सकते।
यश. तनु से अमर हैं फिर भी, नही दिलो से जा सकते।
यही कामना-चन्दन-की अब, परम शान्ति सदा मिले।
चरणो मे हैं अर्पित कुछ ये ; सुमन श्रद्धा के अर्द्ध खिले॥

बरनाला : पंजाब :
९—८—६०

[१४]

एक चिरन्तन दीप बुझा है :

मुनि श्री रामप्रशाद जी

—श्रद्धेय पण्डित प्रवर श्री रामप्रशाद जी महाराज, एक उत्कट बौद्धिक प्रतिभा के धनी तरुण मुनिराज हैं। हिन्दी और संस्कृत के आप माने हुए विद्वान् हैं। मधुर स्वभाव एवं मिलनसारिता आप के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं। आप श्रमण संघ के प्रधान मन्त्री श्रद्धेय व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज के सुशिष्य हैं।

—काव्य-कलन में भी आप की प्रतिभा अच्छी गति-प्रगति रखती है। जिसका प्रत्यक्ष दर्शन, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति लिखी गई प्रस्तुत कविता के द्वारा हो जाता है। कविता में भाव एवं भाषा का सौन्दर्य देखते ही बनता है।

—सम्पादक

राधेश्याम

एक चिरन्तन दीप बुझा है,
एक चिरन्तन ज्वाला—
हन्त ! तिरोहित हुई बाँट कर,
जीवन का उजियाला !

सरल स्नेह की स्पष्ट मूर्ति औ—
उपमा निश्छलता की।
संयम वह साकार, निधी—
सौम्यता निराकुलता की ॥

जितनी आकृति मधुर, प्रकृति भी,
उतनी मधुर मिली थी ।
हृदय भूमिका की उदारता,
अतिशय प्रचुर खिली थी ॥

उनके स्निग्ध मिलन की स्मृतियाँ,
अब तक हैं जागृत सी ।
शीतल पावन करती हैं,
शीतल पावन अमृत सी ॥

अपने पन की शुद्ध भावना,
उन सी और कहाँ है ?
सब के हित की मनो कामना,
उन सी और कहाँ है ?

और किसी की देख वेदना,
सवेदन में बहते ।
अपनी पीड़ा मे परन्तु,
उपशान्त निरन्तर रहते ॥

हम जैसे लघुतर लघुतम—
मुनियो पर उनकी छाया ।
कितनी ठण्डी रहती थी,
याद है अब हो आया ॥

उस छाया का शून्य हृदय में,
खटक रहा है इतना ।
पद तल में इक तीक्ष्ण शल्य;
पीड़ा करता है जितना ॥

शल्य निकलता है पद तल से,
पीड़ा मिट जाती है ।
पर यह शून्य मिटे कैसे ?
कुछ समझ नहीं आती है ॥

किन्तु रहे यह शून्य सदा,
तो भी वरदान बनेगा ।
मार्ग दिखाने वाला, जीवन—
का उपमान बनेगा ॥

याद रहे उनके जीवन की,
जीवन की निधियो की ।
मूल भावना है यह ही—
बस, एतादृक् विधियो की ॥

—सोनीपत मण्डी : पंजाब :
१८—८—६०

[१५]

श्रद्धाञ्जलि स्वीकार करो :

मुनि श्री कीर्तिचन्द्र जी—यश—

—श्रद्धेय मुनि श्री कीर्तिचन्द्र जी—यश—ने, अपने सुवासित श्रद्धा-सुमनों को पद्यों की माला में गूँथ कर, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव को समर्पित करने के लिए, एक अत्यन्त सुन्दर बत्तीस लड़ी का हार तैयार किया है। इस हार के फूलों की सुगन्ध कैसी है? और इन का सौन्दर्य क्या कुछ है? यही जाँचने और परखने के लिए इसे नीचे टाँका जा रहा है।

—सम्पादक

राधेश्याम

इस जगती तल पर मानव-गण, कुछ ऐसे भी आते है।
जो विश्व-मञ्च पर सफल नाट्य कर, अजर अमर बन जाते हैं॥

ऐसे ही सद्गुणी मनुज, जन-जन से पूजा पाते हैं।
पथ-भ्रष्ट मानवो को जग के, जो सन्मार्ग दिखलाते हैं॥

गुणगान हजारो वर्षो तक, ससार उन्ही का गाता है।
जो जग-हित जन-सेवा मे निज, तन-मन-सर्वस्व लुटाता है॥

श्रद्धेय गुरुवर श्यामलाल, एक ऐसे ही मुनिराज हुए।
जग-पूजा के आदर्श केन्द्र, जो मुनियो के सरताज हुए॥

उत्तर-प्रदेश-सोरई-ग्राम मे, जन्म जिन्होने पाया था।
मात-पिता का हृदय, आपको देख-देख हर्षाया था॥

वाल्यकाल से ही गुरुवर को, लगन धर्म की प्यारी थी ।
सत्सग और मुनि-दर्शन की, रहती उत्कण्ठा भारी थी ॥
रामप्यारी औ टोडरमल, यह देख सदा हर्षित रहते ।
नव वर्ष व्यतीत हुए उनको, इस तरह वहाँ रहते-सहते ॥
वैराग्य रग मे रगे गुरुवर ने, फिर मन मे ध्यान किया ।
ले पिता श्री को संग आपने, सोरई से प्रस्थान किया ॥

सम्वत् उन्नीस सौ छप्पन था, औ मास फाल्गुण श्रेयकारी ।
पहुँचे-एलम-नगरी मे जहाँ, गुरु ऋषिराज थे हितकारी ॥
लगा धर्म दरबार गुरु का, जनता आती जाती थी ।
जो उनके पावन उपदेशो से, प्रेरणा सर्वदा पाती थी ॥
उन धर्मनिष्ठ गुरु की वाणी सुन, पिता-पुत्र हर्षाते है ।
अब श्यामलाल जी गुरु चरणो मे, एलम हो रह जाते है ॥

पिता श्री तो आज्ञा देकर, वापिस घर को चले गए ।
और श्यामलाल जी गुरु चरणो के, चञ्चरीक ही बने रहे ॥
पा कृपा दृष्टि गुरु ऋषिराज की, अभ्यास धर्म का करते हैं ।
विद्याध्ययन औ गुरु-सेवा के, पथ पर पग वे धरते हैं ॥
रह सात वर्ष तक भाव सयमी, ज्ञानाभ्यास बढाया है ।
जप-तप से अपने जीवन को, तुमने अति शुभ्र बनाया है ॥
सवत् उन्नीस सो तिरेसठ मे, जब जेठ सुदी पाँचे आई ।
-ढिढाली-नगरी मे उत्सव से, मुनि दीक्षा तुमने पाई ॥
लेकर दीक्षा अणगार धर्म की, भ्रमण आपने कीना था ।
अज्ञान-मोह मे फँसे जगत को, ज्ञान दान तुम दीना था ॥
जहाँ-जहाँ पधारे, वहाँ-वहाँ पर धर्म-ध्यान के ठाठ लगे ।
सुन करके वाणी जनता के, मानो सोते से भाग्य जगे ॥
चउव्वन वर्षो तक सतत, धर्म की अमर साधना कीनी थी ।
सद्गुण से जप-तप सयम से, आत्मा उज्ज्वल कर लीनी थी ॥
अति सरल सरस सौम्यता भरा, आदर्श आपका जीवन था ।
सन्तोष शान्ति सेवा से जो, जन-जन का मन भावन था ॥

थे परम दयालु और कृपालु शान्तमूर्ति करुणामय।
आधार दीन औ दुखियो के, थे गुरुदेव शुभ ममतामय ।।
प्रेरणा स्रोत थे सयम के, जिन शासन के रखवारे थे।
खुद तिरे आप भवसागर से, भव्यो के तारणहारे थे ।।
जिनके शुभदर्शन से मन को, परितृप्ति सी एक मिलती थी।
मुर्झाई कलियाँ जनता के, मानस की हरदम खिलती थी ।।
था प्रेममय व्यवहार आपका, जो सबके मन को भाता था।
एक वार दर्श करने वाला भी, नही भूलने पाता था ।।
नही क्रोध मान माया लोभादि, पास फटकने पाते थे।
आदश आपका जीवन लख, वे दूर-दूर भग जाते थे ।।
इस तरह आपने भारत मे, निज विजय पताका फहराई।
गुरुदेव यशो-कीर्ति तुम्हारी, जन-जन के मन मे छाई।
दो सहस्र सत्रह सवत्, वैशाख शुदी दशमी आई।
शहर आगरा मानपाड़ा मे, सन्देश काल का जो लाई ।।
सत्तर वसन्त कर पूर्ण आपने, सथारा अनशन ठाया।
तज नश्वर जग को, काया को, जा स्वर्गों मे डेरा लाया ।।
धन्य-धन्य औ कृत्य-कृत्य हो, इस जग से प्रस्थान किया।
जप-तप से भावित कर निज को, तुमने आतम कल्याण किया ।।
तुम देह रूप से चले गए, गुणरूप से कायम हो जग मे।
आदर्श तुम्हारा रहता है, जन-जीवन के जीवन-मग मे ।।
जव तक रवि-शशि चमकेंगे, 'और तारा गण मुस्काएंगे।
तव तक जगती के सब जन-गण, गुणगान तुम्हारे गाएँगे ।।
तुमसे सम्वन्धित दिन-तिथियाँ, जब-जव भी सम्मुख आएँगी।
तव-तव ही हे गुरुवर! तेरी, ये स्मृतियाँ हमे दिलाएंगी ।।
—मुनि कीर्तिचन्द्र—तव चरण-शरण मे, आया है उद्धार करो।
तुम गुरुदेव! हो जहाँ कही, यह श्रद्धान्जलि स्वीकार करो ।।

—मानपाड़ा, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
२७—१२—६०

श्याम गणी गुणाष्टक

श्री रमेश मुनि जी–रत्न–प्रभाकर–कोविद

—श्री रमेश मुनि जी महाराज, एक मधुर स्वभावी तरुण सन्त हैं। छोटी सी अवस्था में ही ज्ञानाभ्यास में आपने अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली है। आप रत्न, प्रभाकर, तथा कोविद परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर चुके हैं। श्रद्धेय श्री प्रतापमल जी महाराज के आप सुयोग्य शिष्य रत्न हैं।

—काव्य निर्माण की ओर, आपकी रुचि नैसर्गिक है। समाज को भविष्य में, आप जैसे तरुण मुनिराजों से बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपने श्याम गणी गुणाष्टक नामक भाव-भीनी कविता लिखी है जो नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

—सम्पादक

दोहा

गुरु भक्ति मे मग्न लग्न,
सलग्न सदा आप।
ऋषिराज गुरु पाय के;
मिटा दिया भव ताप॥

हरिगीतिका

त्यागी अरु ज्ञानी मुनिवर, सयमी गुण-खान थे।
भेद जड-चेतन बताते, अमूल्य देते ज्ञान थे॥
रूंध कर निज इन्द्रियो को, वश्य करते सर्वथा।
पाल्यो शुद्ध ब्रह्मचर्य, त्याग्यो भोग विषवत् सर्वथा॥

कच्छप सदृश गोपन किया मन, वचन, काया योग को।
आत्म-घातक दमन कीना, पातक कषाय के रोग को॥
प्रवचन मात के बन आराधक, पञ्च महाव्रत धारते।
साधक विनय अरु ज्ञान के बन, कर्म चमू संहारते॥
मित-मिष्ट भाषी रोष नाशी, बोध देते थे सदा।
मोक्ष का मार्ग बताते, धर्म-रत रह कर मुदा॥
सेवा, सरलता सौम्यता, जीवन के तव भूषण बने।
हंस सम अपनाए सद्गुण, दूर सब दूषण तजे॥
भव-सिन्धु से प्राणी अनेको, वाणी तव सुन कर तरे।
देख जीवन उच्च तेरा, पाप-पथ से सब टरे॥
भव-बन्ध टूटें पाप छूटे, सीख तुझ से लेवतां।
सचमुच ही दिव-शिव वास मिलता, चरण तेरे सेवतां॥
गम्भीर गुण की खान और भव्यो के तुम आधार थे।
जैन शासन के समुज्ज्वल, आप एक शृंगार थे॥
दीन,दुखियो की सदा तुम, हरण करते पीर को।
धन्य तव माता-पिता और, धन्य तुझ से वीर को॥
करुणा, अहिंसा के आराधक, नाथ! मैं तुम को नमूं।
सत्य के उत्कृष्ट साधक, नाथ! मैं तुमको नमूं॥
अस्तेय औ ब्रह्मचर्य पालक, नाथ! मै तुमको नमूं।
अपरिग्रह, संतोष धारक, नाथ! मै तुमको नमूं॥

दोहा

रामप्यारी अक मे,
लीना सफल अवतार।
टोडरमल के पुत्र तुम;
कर गए खेवा पार॥

—रामपुरा : मध्य प्रदेश :
३—८—६०

गुरुदेव गुणाष्टक :

मुनि यश इन्दु :

—मुनि श्री यश इन्दु : जी ने आठ विभिन्न छन्दों में, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के गुणानुवाद गाए हैं। जो भाषा और भावों की दृष्टि से बड़े ही सुन्दर बन पड़े हैं। अगली पंक्तियों में उन्हें अविकल रूप से दिया जा रहा है। जिन्हें पढ़ कर पाठक गण भाव-विभोर हुए बिना न रहेंगे।

—सम्पादक

दोहा

श्री श्यामलाल गुरुदेव जी, कर उज्ज्वल शुभ काम।
श्याम भी उज्ज्वल हो गया, पा कर के तव नाम॥
श्याम नही तुम लाल थे, या थे तुम घनश्याम।
रहे सवेरा ही सदा; बने कभी नही श्याम॥

चौपदा

-लाल- का संयोग पाकर -श्याम- भी,
कर निमज्जन सत्य-संयम धार मे।

श्वेत अति उज्ज्वल बना, यश पा गया;
छा गया मूर्धन्य हो संसार मे ॥

दुर्मिल सवैया

श्याम सदा सुख धाम रहे, अरु श्याम रहे सबके हितकारी,
श्याम कभी नही श्याम बने, रखी श्याम सदा उज्ज्वलता भारी।
शाम-सुबह गुण श्याम के गावत, श्याम-श्याम रटते नर-नारी,
शुभ्र सुकीर्ति छाय रही, श्री श्यामलाल गुरुदेव तुम्हारी ॥

मनहर सवैया

पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज,
सरल स्वभावी, सौम्य मूर्ति महान् थे ।
धारे पञ्च महाव्रत, किया जप-तप, ध्यान;
साध निज आत्मा को, बने गुणखान थे ॥
मुनियो के मुकुट, शृंगार जिन शाशन के,
भवोदधि तारने को नाव के समान थे ।
ज्ञानवान, शीलवान, तपवान, तेजवान,
सत्यवान, तोषवान, और पुण्यवान थे ॥

हरिगीतिका

पितु धन्य टोडरमल्ल जिन घर, जन्म थे तुम पा गए।
अरु धन्य माता रामप्यारी, जिनके सुत कहला गए ॥
है धन्य क्षत्रिय वंश को, अरु धन्य गुरु ऋषिराज को।
जिसके बने मुनि रत्न तुम, उस धन्य जैन समाज को ॥

छप्पय

श्री श्यामलाल गुरुदेव ! तुम्हारा जग यश गाता ।
पा कर तेरे दर्श, दूर दुःख था नस जाता ।।
वह सौम्यमूर्ति आज, हुई ओझल नैनो से ।
जगता था वैराग्य सदा, जिस के वैनो से ।।
उन से सद्गुरु के भला, अब होंगे दर्शन कहाँ ।
जगती थी ज्योति सदा, जप-तप की पावन जहाँ ।।

कुण्डलियाँ

गुरुवर ! तेरी जगत में, महिमा अपरम्पार ।
जप, तप, संयम, शील से, सफल किया अवतार ।।
सफल किया अवतार' बने सिरताज हमारे ।
भारत के नर-नार, गात गुण आज तुम्हारे ।।
कहे मुनि-यशइन्दु'-तुम्ही थे त्यागी मुनिवर ।
श्री श्यामलाल महाराज, तरण-तारण हे गुरुवर !

मानपाड़ा, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
२६—१२—६०

[१८]

तुम को लाखों प्रणाम

श्रद्धेय श्री प्रतापमल जी महाराज

—श्रद्धेय श्री प्रतापमल जी महाराज, जैन दिवाकर श्री चौथमल जी महाराज के सन्तों में से हैं। आप बड़े ही मिलनसार और मधुर प्रकृति के मुनिराज हैं। आप एक सफल प्रवक्ता हैं। वाणी में ओज-और माधुर्य तथा स्वभाव में विनोदप्रियता, आप श्री जी के सफल व्यक्तित्व की आकर्षक विशेषताएँ हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से आप पूर्णतया परिचित रहे हैं। उनकी पुण्य स्मृति में, आपने प्रस्तुत कविता की रचना की है। जिसके माध्यम से श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपकी गहरी निष्ठा एवं श्रद्धा ही प्रकट होती है।

—सम्पादक

श्री श्याम गणीवर प्यारे ! तुम को लाखो प्रणाम ।
टोडरमल के प्यारे ! तुम को लाखों प्रणाम ॥
सोरई क्षेत्र मे जन्म जो पाया,
क्षत्रिय कुल को आप दिपाया।
रामप्यारी दुलारे ! तुम को लाखो प्रणाम।
श्री श्याम गणीवर प्यारे ! तुमको लाखो प्रणाम ॥
ढिढाली मे आप पधारे,
वर्ष सोलह की आयु धारे।
ऋषिराज गुरु धारे, तुमको लाखो प्रणाम।
श्री श्याम गणीवर प्यारे ! तुमको लाखो प्रणाम ॥

जिन मार्ग को खूब दिपाया,
ज्ञान-ध्यान भी खूब बढ़ाया ॥
सरल प्रकृति वारे ! तुम को लाखो प्रणाम ।
श्री श्याम गणीवर प्यारे ! तुमको लाखों प्रणाम ॥
मुनि मण्डल मे सुयश लीना,
आगरा शहर मे अनशन कीना ।
सीधे स्वर्ग सिधारे, तुमको लाखो प्रणाम ।
श्री श्याम गणीवर प्यारे ! तुमको लाखो प्रणाम ॥
—प्रताप मुनि—के मन मे बसते,
आप सदा रहते थे हँसते ।
गुण गाते हैं सारे, तुमको लाखों प्रणाम ।
श्री श्याम गणीवर प्यारे ! तुमको लाखों प्रणाम ॥

रामपुरा : मध्य-प्रदेश :
१—६—६०

[१६]

श्याम गणी गुण खान :

श्री सुरेश मुनि जी

—श्री सुरेश मुनि जी, श्रद्धेय श्री प्रतापमल जी महाराजके सुशिष्य हैं। अल्पवय एवं अल्प दीक्षित होने पर भी, आपकी विकासशील प्रतिभा एवं काव्य प्रणयन की ओर रुचि प्रशंसनीय है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के गुणानुवाद के रूप में आपने जो भावपूर्ण कविता भेजी है, वह नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

—सम्पादक

नमन करे कर जोड के सारे, श्याम गणी गुणखान;
तेरे दर्शन थे महान्।
क्षमा के सागर, ज्ञान के आगर, शीतल शशि समान;
तेरे दर्शन थे महान् ॥
टोडरमल जी पिता तुम्हारे,
रामप्यारी के नयन सितारे।
यू० पी० देश मनोहर प्यारे;
गुण गाते हैं जन-जन सारे।
उसी धर्म-भूमि का गणी ने, बढाया गौरव मान;
तेरे दर्शन थे महान् ॥
संसार की माया नश्वर जानी,
लघु वय में बन गए ज्ञानी।
गुरु मिले थे ज्ञानी-ध्यानी;
अमृत सम थी जिनकी वाणी।

ऋषिराज गुरु पा कर गणी ने, दिपाया धर्म महान्;
तेरे दर्शन थे महान् ॥
गम्भीर गुण की खान तुम थे,
भवि जीवो के प्राण तुम थे।
पतितो की पतवार तुम थे,
सन्त-समाज के आधार तुम थे।
तेरी शिक्षाओ से हुआ था, जन-जन का कल्याण ;
तेरे दर्शन थे महान् ॥
जन-मन को तुम जगा रहे थे,
जिन शाशन को दिपा रहे थे।
पाठ प्रेम का पढा रहे थे,
सन्देश धर्म का सुना रहे थे।
-मुनि सुरेश-ने लीनी तेरे, चरणो की शुभ आन ;
तेरे दर्शन थे महान् ॥

—रामपुरा . मध्य-प्रदेश :
१—६—६०

[२०]

श्रद्धा के फूल

श्री टेकचन्द जी महाराज

—श्रद्धेय श्री टेकचन्द जी महाराज, मधुर स्वभाव और मिलनसार स्वभाव के धनी मुनिराज हैं। आप सरलात्मा श्रद्धेय श्री बनवारीलाल जी महाराज के सुशिष्य हैं। श्रमण संघ के प्रधान मंत्री, व्याख्यान वाचस्पति श्रद्धेय श्री मदनलाल जी महाराज के परिवार के ही आप सन्त हैं।

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी से आप पूर्णतया सुपरिचित हैं। उनकी पुण्य स्मृति में आपने जो श्रद्धा के फूल चढाये हैं, उन्हें आप ही की काव्यमयी भाषा में नीचे दिया जा रहा है।

—सम्पादक

सभी गुण गावो रे, सभी गुण गावो रे—
गणी श्यामलाल जी का, ध्यान लगावो रे॥
महिमा अगम अपार आप की, ठाम-ठाम यश छायो रे।
ज्ञान दान दे गणीराज ने, विश्व जगायो रे॥
यू० पी० देश, ग्राम सोरई, रामप्यारी घर जायो रे।
क्षत्रिय कुल भूषण टोडरमल, पुत्र कहायो रे॥
छोटी सी नव वर्ष आयु में, ऋषिराज गुरु पायो रे।
ढिढाली, संवत् त्रेसठ मे, सजम ठायो रे॥
ज्ञानी, ध्यानी, परम तपस्वी, सौम्य मूर्ति प्यारो रे।
सरल स्वभावी, सेवा भावी, दया भण्डारो रे॥
शहर आगरा, सवत् सतरह, विक्रम का जब आया रे।

वैशाख सुदी दशमी के दिन, तुम स्वर्ग सिधाया रे ॥
प्रेमचन्द जी, श्री चन्द्र जी, हेम चन्द्र जी स्वामी रे ।
शिष्य आपके तीन हुए, यह जग मे नामी रे ॥
कस्तूरचन्द्र जी, कीर्तिचन्द्र जी, मुनि उमेश हितकारी रे ।
शिष्यों के हैं शिष्य आपके, तीनो सुखकारी रे ॥
चरण तुम्हारे-टेकमुनि-, श्रद्धा के फूल चढावे रे ।
गणीराज के गुण गातां, आतम शुद्ध थावे रे ॥

काछुआ : पञ्जाब :
२—६—६०

[२१]

उस मसीहा की याद में :

मुनि श्री कीर्तिचन्द्र जी–मशहूर–

—मशहूर, श्रद्धेय श्री कीतिचन्द्र जी महाराज का तखल्लुस है। आप उर्दू शायरी–मशहूर-के उपनाम से किया करते हैं। प्रस्तुत उर्दू काव्य के माध्यम से, उस मसीहा श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपने बहुत कुछ कहा है, जो अगली पंक्तियों में उन्ही की भावमयी भाषा में दिया जा रहा है।

—सम्पादक

सदाकत की जया से, तूने जुलमत को मिटा डाला।
कि अपने अज्म से पुर शोर, खिल्वत को बना डाला॥
तेरी तनवीर से आलम मे, ऐसी रोशनी छाई।
हजारो मिल शमाएं, जैसे कि महफिल मे हो आई॥
किया रोशन, चिरागे-दहर बन कर तूने दुनिया को।
दिखाया रहमतो का, ताज बन कर तूने दुनिया को॥
जलाया महफिले-आलम मे, एक फानूस उल्फत का।
जिलाया मुर्दों को तूने, बजा नाकूस उल्फत का॥
तेरी ही महरबानी से, थी आलम मे बहार आई।
दिलो मे हर किसी के, तेरे दम से थी खुशी छाई॥
बना इन्सान को कर्रो वयां, जौहर दिखा डाला।
था ककर को भी तूने, वे बहा गौहर बना डाला॥
तू था इन्सान, लेकिन था फरिश्तो सा करम तेरा।
लगाना सबको राहे-नेक पर ही, था धरम तेरा॥

इसी से आज दुनिया, तुझको बेशक याद करती है।
नही जब देखती तुझको, तो इक फरियाद करती है॥

कि आलम मे बशर तुझसे, अगर दो-चार आ जाएँ।
तो हम भूले हुए इन्सान, हक की राह को पाएँ॥

तू रहबर था, ज़माने को लगाया राहे-नेकी पर।
बनाया नक्श दायम, एक तूने बज्मे-गेती पर॥

निगहबा धर्म का था, पासबा था बेसहारो का।
था एक गंजे-निहा, आलम मे तू आफत के मारो का॥

उछल पड़ता है दिल, जब याद तेरा नाम आता है।
तेरा पुरजोश अफसाना, ज़माने को जगाता है॥

तेरे औसाफ को, यह कुल ज़माना जानता सारा।
पचासो वर्ष से तुझको, जहा पहिचानता सारा॥

न भूलेंगे तुझे, -मशहूर-है फैजो-करम तेरा।
दिलो पर हुक्मरानी कर रहा है, बस हुकम तेरा।

एक रुबाई

तेरे औसाफ की लौ, तेज हो-हो कर भडकती है।
हजारों आँधियाँ आई, यह लौ मद्धम नही होती।
तेरे नक्शे-कदम का, ले सहारा, जो बढा आगे।
फिर उसके सामने, राहे-हकीकत गुम नही होती॥

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर प्रदेश:
१—१२—६०

[२२]

दिल दे रहा दुआएँ :

श्री मशहूर जी

—श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की तारीफ में श्री मशहूर जी ने चार अशआर लिखे हैं। जो आपकी दृढ भक्ति के ही परिचायक हैं। आप का हृदय उन गुरुदेव को दुआएं दे रहा है। किस प्रकार दे रहा है ? यह नीचे पढिए।

—सम्पादक

तारीकी ज़िन्दगी की, हुई जिसकी जया से रोशन।
उस महरे-दिलरुबा को, दिल दे रहा दुहाएँ॥
मेहरो-करम से जिसके, इन्सानियत की राह पर।
मैं चल सका हूँ, उसको, दिल दे रहा दुआएँ॥
जिस के कि फैज से मै, औसाफ पा सका कुछ।
उस रहबरे-जहा को, दिल दे रहा दुआएँ॥
आलम मे चश्मा-रहमत, -मशहूर- है जिन्हो का।
उन श्यामलाल गुरु को, दिल दे रहा दुआएँ॥

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१—१२—६०

वन्दनीय, श्याम सफल जीवनी यन्त्र :

मुनि गजेन्द्र (मेवाडी)

—श्रद्धेय श्री हस्तीमल्ल जी महाराज-गजेन्द्र-(मेवाड़ी) बड़े ही मिलनसार तथा मधुर स्वभाव के सन्त हैं। आपको प्राचीन पद्धति से समुद्रवद्ध कविता-निर्माण करने की विशेषतया अभिरुचि है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की पुण्य स्मृति में भी, आपने-वन्दनीय श्याम सफल जीवनी यन्त्र नामक एक ऐसी ही रचना प्रेषित की है। जो अगली पंक्तियों में दी जा रही हैं। प्रस्तुत कविता के अंकों वाले मोटे अक्षर मिला कर पढ़ने से, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी का नाम, उनके गुरू का नाम, माता-पिता का नाम, जन्म सम्वत् वैराग्य सम्वत्, जन्म स्थान तथा स्वर्गवास स्थान आदि ज्ञात हो जाते हैं। प्रस्तुत कविता को पढ कर पाठकगण, मुनि श्री जी की बौद्धिक प्रतिभा की प्रशंसा किये विना नहीं रह सकेंगे।

—सम्पादक

गुरुदेव तारो मुझे, विनय सुनाऊँ तुझे ॐ[१] अर्हं मनाऊँ, दूजे पद सिद्ध शरणा।
ज्ञान और क्रिया कर, मिथ्या मत दूर हर, उ[२]त्तम कारज कर, निन्दा नही करणा॥

शीतल स्वभाव मिष्ट, कभू ना चिन्ते अनिष्ट, ष[३]ट् काय पाले इष्ट, अभिमान हरणा।
वन्दन हजार बार, मुनियो के[१०] चरणार, भ[४]ले काम धर्मो[१८] करो, होगा तभी तरणा॥१॥

चतुरता पूरे पूर, सुगम[५]ता सु[११]ध उर, पाप हटाउ[१७], ऐसो[११], नित करे चिन्तवना।
अनुकूल पाय योग, तजो[८] पुण्य राशि[१२] भोग, अच्छी शिक्षा[१६] लीजे पूछ[४०], कभी ना विसारना॥
कर्मों वश यह जीव, ज[७]न, भूले भविष्य[११]फल, रवी[१५] वचन कोलप्प[२१] नही उच्चारना।
श्रेष्ठ हो विचारधारा[५], भग जावे कर्म रिपू[१४], नीय[१४]त उज्ज्वल रहे, पन[४२]पे सुभावना॥२॥

भोग वासना निषि[७]ध, सोचिए ग्राह्य या त्याज्य[१५], आज[११] का आचरण, बतलाए[४३] समाज का।
छाया घट अरि[४]पन, भरा भारी अवगु[१६]न, दया-दा[१७]न से विमुख, बढा दल[४४] पाप का॥

वन कर श्री[१] महत, कहलाते अरु[१७] सत, मूर्खों का स[११]रदार, ज्ञान विहीन म[१७]त का।
विचारिए नि[२]ज धर्म, सत उपदे[१८]श देय, जिनागम की[१०] सूक्तियाँ, दो विधि आगा[४६]र का॥३॥

दीनानाथ मु[१]झ पर, मेरी नाव[११] लगा पार, बालक की लाज[१९] प्रभु, अल्प वुद्धि म[१७]न्द है।
उत्माह अपार मन, करम मीश्री[२०]त जीव, मिथ्या से भरा[२८] घट, पावे नही आनन्द है॥

कस लो कमर वीरो और शुभ लेश्या[२२] भाव, हटावो हा[२७]य वृत्तियाँ करना न द्वन्द है।
रोकिये अशुभ योग, हट जावे माया-म[२२]द, जनम[२१] सफल होय, पावे सुख कन्द है॥४॥

ममता के वन्ध वडे, तोडने की सीखे कला[२३], आजी[१५]वन सुख लीला, वनी रहे पास मे।
सतावे न कोई हमे, हमारे हैं नम्र भाव, ल[२४]क्ष है जिनदेव का, वन चुका दास मैं॥

मे ।
ह-कषाय त्याग, अजी खुल जाय भाग्य, नरमाई ऐसी चीज, सुख रास आस मे ।
यु जन्न बिन्दु सम, लड़ाई कभू ना कीजे, खोटी वार्ता जाके मुख, जान लीजो ह्रास मे ।।५।।
न भाव आठो याम, करुणा की वहे वार, शरीर सयम पाले, जाता दुखः क्षण मे ।
: तिरण तारण, आओ उनकी शरण, प्याला पिलावे अमृत, सेवा आचरण मे ।।
ान की छोड सग, खूब पाओगे आराम, चारित्र पालिये ऐसो, चित्त दरसण मे ।
व तो काटो बन्धन, रटत हूँ दिन रात, मिटाओ खेद, जनित अरज चरण मे ।।६।।
त साता आतम बल, अघ का हटाता दल, फिर करूँगा उद्धार, अन्तस की भावना ।
त्व पिछान सकल, यह फरमावे गुरु, शरण सन्मति दीजे दर्शन की चावना ।।
प-जप श्रद्धा शुद्धि, जिससे बढत बुद्धि, जिनराज का आदेश, शिर पे चढावना ।
द्धारक भव सिन्धु, पापियो का पाप सब, छिनक मे छूट जाय, दास को उबारना ।।७।।
ुद्ध वृत्ति के सोपान, कब मिले सही पता, लगन है उस ओर, वाणी आगम भली ।
न इच्छा-मनोरथ, वो दिन कब आयगा, गमनागमन मार्ग, रुके राग की गली ।।
ुण के ग्राहक सोई, धरम मे रुचि रखे, तुजे बनना है स्वच्छ, बन जा खरा वली ।
ागरा मे श्याम मुनि, स्वर्ग पधार गये, थे मुनीन्द्र महान गुणी, काटी पाप की जली ।।८।।

—कनकपुर · राजस्थान .
१-६-६०

नोट—पाठकगण दीक्षा के स्थान पर वैराग्य सवत् तथा स्थान जानें। मुनि श्री जी भूल से वैराग्य सवत् एव स्थान को दीक्षा सवत् एवं स्थान लिख गए हैं।

—सम्पादक

[२४]

उस पुनीतात्मा के प्रति :

महासती श्री पवन कुमारी जी महाराज

—महासती श्री पवन कुमारी जी म०, सुमधुर स्वभाव, ओजस्वी वाणी तथा विकासशील प्रतिभा से सम्पन्न साध्वी रत्न हैं। लघुवय होते हुए भी आपका अध्ययन अच्छा विस्तृत है। काव्य निर्माण की ओर आपकी स्वाभाविक रुचि है। आप स्वर्गीया महासती श्री पद्म श्री जी महाराज की सुशिष्या हैं। उस पुनीतात्मा श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपने अपनी काव्यमयी भाषा में, अष्टक के रूप में, बड़ी ही भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है। पाठक गण जिसे पढ़ कर भाव विभोर हुए विना न रहेंगे।

—सम्पादक

क्या लुप्त हो गए, वह शीतलात्मा ?
क्या महात्मा से, बन गए परमात्मा ?
क्या जन्म-मरण का, कर गए खात्मा ?
हा ! कहाँ जा विराजे, वह पवित्र आत्मा ?

आओ, वतलाएँ तुमको, कि वह कौन था ?
श्रमण संघ का एक, सिरमौर था।
था सुशिष्य परिडत, ऋषिराज का;
जगत जैन को, जिस पे अति नाज था ॥

निकट आगरा के, ग्राम एक -सोरई- है,
जन्मे क्षत्रिय कुल में, जय-जयकार हुई है।
शस्य श्यामला भू हुई, वहार आई है;
गूँज उठा नभ मरडल, तारों ने दी बधाई है ॥

जाना जव संसार क्या है ? सशयों का हार है,
धर्म ही जीवन की नैया, को लगाता पार है।
बाल्यावस्था मे ही गुरुवर, बन गए अणगार हैं;
गुरुदेव श्री ऋषिराज-चरणों का लिया आधार है ॥

देश देशान्तरो मे भ्रमण किया,
अनेकानेक कष्टो को सहन किया।
जैन धर्म का आपने प्रसार किया;
आध्यात्मिकता का जग को प्रकाश दिया ॥

वैशाख शुक्ला दशमी आई,
काल का सन्देश साथ लाई।
मौत की घडियो से बचा नही कोई;
रह जाएं देखते ही सब भाई ॥

यश-सौरभ फैल गया जग मे,
कर गए नाम, मुक्ति - मग मे।
मानवता का दे सबक गए;
ले गये भलाई इस जग मे ॥

सौम्यभाव की थी साक्षात् प्रतिमा,
कहाँ तक करें, गुरुदेव की महिमा।
ऐसे थे वह समाधिस्थ आत्मा;
स्वर्ग में जा विराजे पुनीत आत्मा ॥

कांधला, उत्तर-प्रदेश :
३१—१०—६०

उस ऋषि के चरणों में :

साध्वी श्री सुन्दरी देवी जी महाराज

—श्री सुन्दरी देवी जी महाराज, एक ओजस्वी व्यक्तित्व से सम्पन्न साध्वी रत्न हैं। आप सफल प्रवक्ता एवं परम विदुषी हैं। स्वर्गीया महासती श्री मथुरा देवी जी महाराज की आप सुशिष्या हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के आप अनेक बार दर्शन कर चुकी हैं; फलतः उनके महान् जीवन से आप भली-भाति परिचित हैं। उस ऋषि के चरणों में आपने श्रद्धा के कुछ पुष्प चढाये हैं, जिन्हें पाठकों के लिए, नीचे सजा कर रख छोड़ा है।

—सम्पादक

आए आज ऋषि के चरणों मे, कुछ श्रद्धा के पुष्प चढाने।
अमर आत्मा एक जगत मे, उसकी आज कथा बतलाने॥
नाम जिन्हो का श्यामलाल था, रामप्यारी का जाया था।
टोडरमल जी पिता जिन्होने, चाव से गोद खिलाया था॥
क्षत्रिय कुल मे जन्म लिया था, रहा धर्म से प्यार उन्हे।
मोह माया के बन्धन का, नही बाँध सका ससार उन्हे॥
सवत् उन्नीस सौ सैतालीस, ज्येष्ठ मास जब आया था।
सुदी इग्यारस, सोरई नगरी, जन्म आपने पाया था॥
लगी लगन मन मे, सयम की, मोह-बन्धन को त्याग दिया।
बाल उमरिया नव ही वर्ष मे, धार आप वैराग्य लिया।'
ग्राम ढिढाली, ऋषिराज, चरणों मे नत मस्तक हो कर।
सोलह वर्ष युवावस्था मे, जैन मुनि का पद पा कर॥

उन्नीस सौ तिरेसठ संवत् से, आतम का उत्थान किया।
जप, तप, साधना के बल पर, निज जीवन का कल्याण किया।।
आज स्पूतनिक युग मे भी वह, शान्ति का सन्देश लिए।
सक्रान्ति काल की वेला मे भी, ज्ञान का शुभ उपदेश लिए।।
शीलवन्त, मृदुकण्ठ यति, सोई जनता को चला जगाने।
आत्म शुद्धि का दिव्य प्रखरतम, सन्मारग जग को दिखलाने।।
अन्धकार मे डूबी जनता, के थे सोये भाग्य जगे।
नगर-नगर और डगर-डगर मे, अहिंसा का दीप लिए।।
उत्तर-प्रदेश, पजाब, देहली, हरियाणा का उद्धार किया।
वृद्ध अवस्था, सत्तर वर्ष तक, आपने धर्म-प्रचार किया।।
आत्मोन्नति और जन-सेवा मे, सब कुछ अर्पण कीना था।
सबसे धन्य-धन्य कहला कर, सुयश आपने लीना था।।
अन्त समय मे शुद्ध भाव से अनशन आपने ठाया था।
शहर आगरा, मानपाड़ा मे स्वर्ग आपने पाया था।।

× × × ×

हे मानव ! तू मोह निद्रा को, छोड जरा और जाग।
मिट्टी से उत्पन्न हुआ तू, फिर मिट्टी मे वास।।
क्यो तू मेरी-मेरी करता ? क्या है जग मे तेरा।
जीवन धूप-छाँव की झाँकी, अन्त खाक मे डेरा।।
यह दुनिया है रैन बसेरा, और पाप की झाँकी।
ओ बन्दे ! शुभ कर्म कमा ले, कुछ न रहेगा बाकी।।
—सुन्दरी-का सन्देश यही है, शीलवन्त दयावान बनो।
श्याम गणी के पथ पर चलकर, निज आतम कल्याण करो।।

—नई दिल्ली :
८—६—६०

श्रद्धा के मोती :

महासती श्री विजेन्द्र कुमारी जी महाराज

—महासती श्री विजेन्द्र कुमारी जी, एक सरल प्रकृति की गुण निष्पन्न आर्या हैं। लघु वय होते हुए भी विद्याभ्यास में आपने अच्छी प्रगति की है। काव्य निर्माण आप अत्यन्त सुगमता पूर्वक कर लेती हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के चरणों में आपने श्रद्धा के मोती अर्पित किए हैं, जिनकी आबदार चमक, पाठकों का मन चमत्कृत किए विना नहीं रह सकेगी।

—सम्पादक

अय मनवा ! गुरु कहाँ है बोल ?

टेर रहा तू जीवन धन को, गुरुवर प्यारे श्याम मुनि को।
पीडा सी छाई हृदय पर; अन्तर के पट को खोल ॥
सञ्चित रख यह बिरह वेदना, गुरु-दर्शन का सुन्दर सपना।
अर्पित करदे गुरु चरणो पर; श्रद्धा मोती अनमोल ॥
उच्छ्वासो की घटा घुमड़ कर, छाई हुई है दुःखित हृदय पर।
मौन साधना करले मनवा ; दु.ख से मुख मत खोल ॥
सरल स्वभावी थे, गुरु प्यारे, भव्य जनो के तारण हारे।
मिल करके गुण गाओ सारे, जीवन हो अनमोल ॥
गुरु-ज्ञान का अमृत पी कर, तप्त हृदय को शीतल अब कर।
अजर अमर तू होजा -विजेन्द्र-, सत्य पथ को टटोल ॥

—टोहाना : पंजाब :

१०—१०—६०

[२७]

गुरुदेव के वियोग में :

महासती श्री प्रेम कुमारी जी महाराज

—महासती श्री प्रेम कुमारी जी महाराज, एक कोमल प्रकृति एवं मधुर वाणी से सम्पन्न साध्वी रत्न हैं। मधुर स्वभाव तथा नम्र व्यवहार आपके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं। आप की प्रवचन शैली अत्यन्त सरस सुन्दर एवं आकर्षक है। आप श्रद्धेया महासती श्री पन्ना देवी जी महाराज की सुशिष्या हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव से आप, अपने बचपन से ही परिचित रही हैं। गुरुदेव के वियोग में आप ने करुण रस से ओत प्रोत कविता का निर्माण किया है। जिसे अगली पँक्तियों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

हमको जुदाई गुरुदेव दे गए।
हमेशा के लिए वह विदाई ले गए॥
छोड चला गुलशन को माली,
सूख गई हैं सब डाली-डाली।
फूल मुर्झाए और खार रह गए;
हमेशा के लिए वह विदाई ले गए॥
सन्त गणों का पालन करके,
सन्त शिरोमणि नाम धरा के।
गए वह आधार निराधार हो गए,
हमेशा के लिए वह विदाई ले गए॥

त्याग अनुपम स्वामी तुम्हारा,
लख विस्मय माना जग सारा।
वाल ब्रह्मचारी वह योगी हो गए,
हमेशा के लिए वह विदाई ले गए ॥
कामवासना दिल से विसारी,
वैभव तज, जिन दीक्षा धारी ।
गुरु चरणो के वह दास हो गए,
हमेशा के लिए वह विदाई ले गए ॥
मोह त्याग कर सयम धारा,
जगह-जगह किया धर्म प्रसारा ।
मेरे जीवन के वह सहारे खो गए;
हमेशा के लिए वह विदाई ले गए ॥
हर दिल दरश को तरस रहा है,
नयन मेघ अब वरस रहा है ।
-प्रेम- अब हम तो निराश हो गए;
हमेशा के लिए वह विदाई ले गए ॥

तीतरवाड़ा : उत्तर-प्रदेश :
३०—१०—६०

[२८]

उपकारी गुरुदेव :

महासती श्री प्रेम कुमारी जी महाराज

—महासती श्री प्रेम कुमारी जी म०, श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति अनन्य भक्ति रखती हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की पुण्य स्मृति में आपने काव्यमय पद्य के माध्यम से अपने श्रद्धा भाव व्यक्त किए हैं। जो अपनी अलग ही विशेषता रखते हैं। उन्हें सजा-सँवार कर अगली पँक्तियों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

श्री श्यामलाल गुरुदेव परम उपकारी जी।
महिमा कही न जाय, जगत हितकारी जी ॥

ग्राम सोरई सुन्दर, उत्तर-प्रदेश कहलाया,
क्षत्रिय वंश को स्वामी, था उज्ज्वल आन बनाया।
हर्षे नर नारी जी,
महिमा कही न जाय, जगत हितकारी जी ॥

थे रामप्यारी माता के, गुरुवर तुम अंगज प्यारे,
और पिता टोडरमल जी के. थे लख्ते जिगर दुलारे।
जन्मे अवतारी जी;
महिमा कही न जाय, जगत हितकारी जी ॥

नव वर्ष आयु में तुमने, गुरु चरणों ध्यान लगाया,
संसार से, निज परिजन से, था तुमने मोह हटाया।
शरण गुरु धारी जी;

महिमा कही न जाय, जगत हितकारी जी ॥
विक्रम सवत् त्रेसठ की, सुदी ज्येष्ठ पञ्चमी आई,
ऋषिराज गुरु चरणो में, ढिढाली ग्राम के मांही ।
दीक्षा धारी जी;
महिमा कही न जाय, जगत हितकारी जी ॥
जप, तप औ करणी करके, निज जीवन शुद्ध बनाया,
फिर सत्तर वर्ष आयु मे, देह छोड़ अमर पद पाया ।
गए स्वर्ग मंझारी जी;
महिमा कही न जाय, जगत हितकारी जी ॥
गुरुदेव गुणो के सागर, हम कहाँ तक महिमा गावे,
श्रद्धांजलि -प्रेम- तुम्हारे चरणो मे आज चढावे।
करो स्वीकारी जी,
महिमा कही न जाय, जगत हितकारी जी ॥

तीतरवाड़ा . उत्तर-प्रदेश :
१६—१०—६०

[२६]

जिन शाशन के शृंगार निकले :

महासती श्री विजय कुमारी जी महाराज

—महाहती श्री विजय कुमारी जी म०, एक भद्र प्रकृति की साध्वी हैं। आप की प्रतिभा एवं अध्ययन विकास मार्ग की ओर अग्रसर है तथा भविष्य समुज्ज्वलता की ओर गतिशील। आप महासती श्री प्रेम कुमारी जो महाराज की सुशिष्या हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की पुण्य स्मृति में आप ने अपने भाव, बड़ी ही सुन्दरता के साथ कविता के माध्यम से व्यक्त किए हैं।

—सम्पादक

गुरु श्यामलाल जी धर्म के आधार निकले।
जिन शाशन के आप शृङ्गार निकले॥
ग्राम सोरई मे तुमने जन्म लिया,
माता-पिता का था हर्षा जिया।
क्षत्रिय वंश के तुम उजियार निकले।
जिन शाशन के आप शृंगार निकले॥
छोटी सी उम्र की सुनो यह कहानी,
संयम लेने की मन मे ठानी।
त्याग तपस्या मे तुम सरदार निकले,
जिन शाशन के आप शृङ्गार निकले॥
सरल स्वभावी, पूर्ण ज्ञानी,
जपिया, तपिया, योगी ध्यानी।

करते जगत का बेडा पार निकले,
जिन शाशन के आप शृंगार निकले ।।
शहर आगरा तव दर्शन पाए,
सुन-सुन वाणी दिल हर्षाए ।
क्षमा सागर, दया के अवतार निकले;
जिन शाशन के आप शृङ्गार निकले ।।
नश्वर देह तज स्वर्ग सिधारे,
छोडा हमे अब किसके सहारे ।
मेरे दिल के अरमान बार-बार निकले,
जिन शासन के आप शृङ्गार निकले ।।
श्रद्धा कुसुम चरणों मे भेट करूँ,
मै निश दिन तुम्हारा ही ध्यान धरूँ ।
—विजय-आँखो से अश्क अपार निकले;
जिन शाशन के आप शृङ्गार निकले ।।

—तीतरवाड़ा : उत्तर-प्रदेश :
१६—१०—६०

छोड़ चले गुरुवर :

महासती श्री विजय कुमारी जी महाराज

—महासती श्री विजय कुमारी जी म०, एक अध्ययन शील आर्या हैं। काव्य निर्माण की ओर आप की स्वभाविक रुचि है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की पुण्य स्मृति में आपने बहुत सुन्दर कविता का निर्माण किया है। जिस के माधुर्य एवं ओज का अनुमान पाठक गण सहज ही लगा सकेंगे। कविता नीचे दी जा रही है।

—सम्पादक

छोड़ गए गुरुवर ! क्यों आज हमे तुम छोड़ गए ?
तोड गए गुरुवर ! क्यो हम से नाता तोड गए ?
सन्मार्ग को तज कर प्राणी, उन्मार्ग पर जाते।
सम्यग् ज्ञान का दीप जला कर, उनको राह बताते ॥
मधुर रसीली वाणी आप की, सुन जन-मन हर्षाते।
जिन-वाणी का मेह वर्षा, गुरु जग की प्यास बुझाते ॥
मन मोहन वो सूरत प्यारी, आज कहाँ से पाऊँ ?
तड़प रहा है दिल यह मेरा, कहाँ ढूँढने जाऊँ ?
दर्शन करने जब जाती, तब शास्त्र रहस्य बताते।
हित शिक्षाएँ दे कर मेरा, जीवन उच्च बनाते ॥
नयन सितारे, छोड सिधारे, स्वर्गो जाय पधारे।
तेरे पथ पर चलें गुरुवर, -विजय- यह अर्ज गुजारे ॥

तीतरवाड़ा : उत्तर-प्रदेश :

१६—१०—६०

[३१]

गुरुवर चल दिए स्वर्ग नगरिया :

महासती श्री जिनेन्द्र कुमारी जी महाराज

—महासती श्री जिनेन्द्र कुमारी जी म०, सरल प्रकृति की विद्याध्ययन में निरन्तर संलग्न रहने वाली साध्वी हैं। आप का बौद्धिक विकास देखते हुए कहा जा सकता है कि भविष्य में आप जिन शासन को समुज्ज्वल करने वाली परम विदुषी साध्वी रत्न निकलेंगी। आप भी महासती श्री प्रेम कुमारी जी महाराज की सुशिष्या हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपने भी अपने श्रद्धा-कण प्रस्तुत किए हैं, जिन्हें आगे दिया जा रहा है।

—सम्पादक

छोड के हम को आज गुरुवर, चल दिए स्वर्ग नगरिया।
हर दम आप की याद मे छलके, नयनो की गगरिया॥
पूर्व जन्म के अहो भाग्य से, हमने आपको पाया था;
अमृतमयी तव वाणी सुन कर, मन सबका हर्षाया था।
अब क्यो नही आ कर लेते हो, हमारी आप खबरिया।
छोड के हमको आज गुरुवर, चल दिए स्वर्ग नगरिया॥

तप सयम से जग मे गुरुवर, सुयश आपका छाया जी;
जिसने शरण लिया आपका, उसने सब कुछ पाया जी ॥
प्रवचनो से प्रभावित हो कर, सुघर गई जिन्दड़िया।
छोड के हमको आज गुरुवर, चल दिए स्वर्ग नगरिया ॥

आप थे गुरुवर परम तपस्वी, और यशस्वी भारी जी।
नश्वर देह को त्याग आगरा, पहुँचे स्वर्ग मँझारी जी ॥
तुझ बिन हलकी कैसे होगी, पापों की गठरिया।
छोड़ के हमको आज गुरुवर, चल दिए स्वर्ग नगरिया ॥

गुरुदेव की नही जरा भी, सेवा कुछ कर पाई जी।
अन्तिम दर्शन कर न सकी, अब कैसे सहूँ जुदाई जी ॥
-जिनेन्द्र-तेरा आदर्श साथ ले, चल पड़ी धर्म डगरिया।
छोड़ के हमको आज गुरुवर, चल दिए स्वर्ग नगरिया ॥

—तीतरवाड़ा : उत्तर-प्रदेश :
१६—१०—६०

आदर्श मुनिराज :

पण्डित श्री वालाराम जी–कविकिङ्कर–

—जोधपुर निवासी पण्डित वालाराम जी—कविकिङ्कर—एक अच्छे विचारक सज्जन हैं। जोधपुर की कवि मण्डली में आपको सम्मानित स्थान प्राप्त है। श्रद्धेय श्री केवल मुनि जी के संकेत करने पर, आपने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के जीवन वृत्त की कड़ियों को कविता की लड़ियों में पिरो भेजा है। जिन्हें अगली पंक्तियों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

वीर छन्द

भव्य भूमि भारत के अन्दर, शहर आगरा है सुखधाम।
जो उत्तर-प्रदेश मे सबसे, बढ करके है लोक—ललाम ॥
उसी प्रान्त मे जन-मन-मोहक, प्रथित-सोरई-सुन्दर ग्राम।
निवसे वहाँ जाति क्षत्रिय है, कर्मवीर-टोडरमल–नाम ॥

अर्द्धांगिनी अनुपम जिनकी, पतिभक्ता-पद्मनि-सी जान।
कुल-मर्यादा पालनहारी, - रामपियारी-सद्गुण खान ॥
उसी खान से प्रकट भया यह, धर्मवीर नर-रत्न-प्रधान।
करें आज गुणगान उसी का, बडे मान से सब मतिमान ॥

हरिगीतिका छन्द

ुनि' वेद' निधि' विधु' वर्ष विक्रम, ज्येष्ठ सचमुच ज्येष्ठ है।
पुनि सब व्रतो में निर्जला, एकादशी व्रत श्रेष्ठ है ॥
सब योग उत्तम आ मिले, जब जन्म इस ने है लिया।
अति हर्ष से टोडर अहा ! सुत जन्म का उत्सव किया ॥

दोहा

जन्मोत्सव के बाद मे, लखि ग्रह लोक-ललाम।
दिया ज्योतिषी ने अहा ! श्यामलाल शुभ नाम ॥

हरिगीति का छन्द

अब बाल-शशि-सम नित्य प्रति, यह लाल भी बढने लगा।
शुभ रग पूर्वार्जित सुकृत का, अंग पे चढ़ने लगा ॥
इस हेतु यह, शिशु-आयु से, अलमस्त ही रहने लगा।
परिवार के सुख-वायु का, नही मोह है इसको जगा ॥

दोहा

पेख पुत्र की प्रकृति को, मात-पिता वेहाल।
हुए, किन्तु विधि लेख को, वे न सके हैं टाल ॥
जिला मुजफ्फरनगर मे, है-एलम-शुभ ग्राम।
सुत-युत टोडरमल वहाँ, गये जु घर के काम ॥

राधेश्याम छन्द

उस एलम मे स्थानकवासी, सुश्रावक ज्यादह रहते हैं।
इस हेतु भक्ति-वश अधिकतया, मुनिवर उस पथ ही वहते हैं ॥
उस समय वहाँ पै भावी-वश, हैं राज रहे ऋषिराज अहा।
चातक श्रोता को पय पाने, गुरु-ज्ञान-विमल-घन गाज रहा ॥
मग चलते वाणी विमल सुनी, ऋषिराज कथामृत पाते है।
जो पक्षपात को छोड़ अहा ? निर्लेप ईश गुण गाते हैं ॥

तव सुत-युत टोडरमल्ल वहाँ, सुनने को सादर बैठ गया।
मुनि-सयम का सुन्दर स्वरूप, उर श्यामलाल के पैठ गया ॥

हरिगीतिका छन्द

ऋपिराज दे उपदेश यों—नर जन्म का यह सार जी ॥
शुभ काय, मन, वच से करो, पर का सदा उपकार जी ॥
द्रुत छोरि के छल-कपट को, सव भ्रातृ वत्सलता गहो।
नही भूल करके भी कभी, कटु बैन निज मुख से कहो ॥
जो मूर्खता से आपके, मग मे विछावे शूल जी।
तुम पलट के उनके लिए, सुन्दर विछाओ फूल जी ॥
पुनि आत्मवत् सव प्राणियो को, पेखना सत्कर्म है।
विपरीत इस के और सव, भव-भटकने के भर्म हैं ॥

ताटङ्क छन्द

उपदेश सुन यह सद्गुरू का, टोडरमल-मन हर्षाया।
पेख पुत्र की विमल प्रकृति, यो वोला उसके मन भाया ॥
अगर हृदय मे तेरे पक्का, रग फकीरी का छाया।
तो गिर जा सद्गुरू चरणो में, है आज्ञा मेरी जाया ॥

दोहा

पितु की आज्ञा पाय द्रुत, गहे श्याम, गुरु चर्ण।
अनुपम छवि उस समय की, कवि न सके हैं वर्ण ॥
आज्ञा-पत्र लिखा लिया, टोडर से श्री सघ।
वैरागी वन श्याम अव, रहे सुगुरू के संग ॥
वोल चाल अरु थोकड़े, नन्दी दशवैकाल।
सादर सीखे सुगुरु से, श्यामलाल सुकुमाल ॥

छप्पय छन्द

वर्ष विताये सात, श्याम वैरागीपन में।
लगा सोलमां वर्ष, जवानी छाई तन मे ॥

तब-ढिढाली-संघ, सुगुरु से अरज गुजारी।
दीक्षोत्सव अब करें, हुक्म दीजे सुखकारी ।।
यो अति आग्रह अवलोक के, विनती की मंजूर गुरु।
तब-ढिढाली-श्री सघ ने, कार्य किया सानन्द शुरु ।।

रोला छन्द

गुण[1] रस[6] निधि[9] विधु[1] वर्ष, अहा! सज्जन हितकारी।
ज्येष्ठ महीना शुक्ल, पञ्चमी तिथि जयकारी।।
मगल कारी लग्न, वार मगल को आया।
दीक्षोत्सव सानन्द, चतुर्विध सघ मनाया ।।

दोहा

छती ऋद्धि को छांड जब, हुए श्याम अणगार ।
ढिढाली श्री सघ तब, उत्सव किया अपार ।।

लावरणी छन्द

दीक्षा की भिक्षा, गुरु से ले सुखकारी।
प्रभु भजन किया, आदर्श श्याम अविकारी ।।

शुभ सेवा सन्तन की, तन-मन से करते।
मद भरे वैन नहीं, मुख से कभी उचरते ।।

दिन रात जिनेश्वर, ध्यान विमल वे धरते।
शुचि ज्ञान-दान से, दुखियो के दु:ख हरते ।।

गुरु ज्ञानांकुश से, मन की ममता मारी।
प्रभु भजन किया, आदर्श श्याम अविकारी ।।

यो वर्ष विताए, चौपन मुनि संयम मे ।।
है किया कभी न प्रमाद, जु नित्य नियम मे।

थी श्रद्धा पक्की, जिन की सुत्तागम मे।
क्षरण एक न खोया, जिनने मिथ्याभ्रम मे ।।

थे सेवा भावी, सन्त बड़े उपकारी ।
प्रभु भजन किया, आदर्श श्याम अविकारी ।।
पञ्जाब प्रान्त है, सुगुरु-भक्ति-रस-भीना ।
मुनि अधिक भ्रमण, उत्तर-प्रदेश मे कीना ।।
पा ज्ञान-सुधा; भक्तों को खुद भी पीना ।
नही भूले गुरु को, एक बेर जो चीना ।।
है जिन की शोभा, जैन-जगत में भारी ।
प्रभु भजन किया, आदर्श श्याम अविकारी ।।
मुनि[७] विधु[१] नभ[०] कर[२] वत्सर की, छवि जब छाई ।
कवि माधव शुक्ला, दशमी थी मन भाई ।।
लौ जिन-पद पङ्कज, बीच अखण्ड लगाई ।
गुरु अनशन करके ज्योति मे ज्योति मिलाई ।।
—कवि किङ्कर—कविता, जरा न झूठ उचारी ।
प्रभु भजन किया आदर्श श्याम अविकारी ।।

—जोधपुर : राजस्थान :
३—११—६०

श्याम मुनि अभिनन्दन :

श्री टेकचन्द जी जैन

—रठौड़ा-जिला मेरठ निवासी श्री टेकचन्द जी जैन, एक धर्म निष्ठ भक्त हृदय सज्जन हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के आप अनन्य भक्तों में से हैं। श्री वीर मण्डल रठौड़ा के आप सभापति हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की पुण्य स्मृति में आपने कविता की भाषा में बड़ा ही भावपूर्ण अभिनन्दन प्रस्तुत किया है। जो नीचे दिया जा रहा है।

—सम्पादक

दोहा

बल बुद्धि वरदान दो, चौवीसों जिनराय।
गौतम, सद्गुरु, शारदा, हृदय विराजो आय ॥
संघ शिरोमणि वीर के, कई पुश्त के बाद।
पूज्य मनोहरदास जी, हुए गुणी दिलशाद ॥
इसी भाँति होते रहे, कितने पूज्य महान्।
वर्तमान आचार्य, श्री पृथ्वीचन्द्र सुजान ॥
इसी सघ मे सुज्ञ जन, श्री ऋषिराज महाराज।
तिन के शिष्य सम्पन्न गुणी, श्री श्यामलाल महाराज ॥

राग ग्रनूठा

श्री श्याम मुनि किस भांति करे, हम गान बडाई, महिमा तेरी।
तेरे मे गुण भरे ग्रनेको, एक ज़बा छोटी सी मेरी ॥
सोरई ग्राम शुभ, निकट आगरा, रामप्यारी माता तेरी।
क्षत्रिय कुल, पितु टोडरमल घर, जन्म लिया, बजी मगल भेरी ॥
बाल्यकाल से सरल स्वभावी, सयम की थी इच्छा तेरी।
तिरेसठ विक्रम, ज्येष्ठ शुक्ल शुभ; मगलीक मंगल पञ्चेरी ॥
शुभ योग नक्षत्र करण मिले, हुई ग्राम ढिढाली दीक्षा तेरी।
श्री सन्त शिरोमणि ऋपिराज से, हुई सूत्र पढ़ाई शिक्षा तेरी ॥
ज्ञान ध्यान, तप क्षमा, शील मे पूर्ण हुई, निभाई तेरी।
बहु उपकार किए भारत पर; जिन मुड-मुड़ याद दिलाई तेरी ॥
प्रेम, श्रीचन्द्र, हेम, कीर्ति, कस्तूर, उमेश शिष्य मण्डली तेरी।
सभी ग्रनुपम गुण के सागर, विश्व फैलाई सन्दली तेरी ॥
चउव्वन वर्ष निरन्तर सही सब, सयम बीच बड़ाई तेरी।
निर्वाण हेतु नित रही टेर, नवकार माल सुखदाई तेरी ॥
सत्तर वर्ष दीर्घायु पाय हुई, पूर्ण ग्रान ग्राउखा तेरी।
लाख चौरासी जीव खमाए; सब पर समता धरी घनेरी ॥
दो हजार सतरह वैशाखी, दशमी शुक्र उजेरा देरी।
स्वर्ग बीच मे जाय विराजे, सब मिल गावे महिमा तेरी ॥
वार-वार ग्रभिनन्दन वन्दन, लीजो मुनिवर ! सांझ-सवेरी।
दास—टेकचन्द—विनवे नित-नित, करुणा निधि लगाना फेरी ॥
उज्वल पक्ष, श्रावण की दशमी, सतरह विक्रम प्रेरित केरी।
मङ्गल के दिन दास टेकचन्द, मङ्गलीक हो ग्राशा मेरी ॥

दोहा

जन्म भूमि शुभ ग्रागरा, रहा ग्रधिक प्रकाश।
उसी ठौर पर सन्त की, काया भई विनाश ॥

पढ़े गुणे जो भाव से, श्याम मुनि की रास।
अन्न धन सम्पति का रहे; होता सदा विकास॥

उपहार

के० सी० जैन की माँग पर, कीना शीघ्र विचार।
हम तुमको अर्पण करे; करो मित्र स्वीकार॥
मै पूरा शायर नही, ना कुछ जानूं सार।
भूल-चूक अरु दोष पर; करना नही विचार॥
इतनी आशा आपसे, यही दृढ विश्वास।
कविता मेरी मान धर; कर दीजे प्रकाश॥
ग्राम रठौड़ा—टेकचन्द,—बिनवे बारम्बार।
भूल चूक सब सुज्ञ जन; लीजे स्वयं सुधार॥

—राठौड़ा : उत्तर-प्रदेश :
२—८—६०

[३४]

उनकी याद में :

श्री धर्मदास जी जैन

—श्री धर्मदास जी जैन, दोघट निवासी श्री रु गामल जी के सुपुत्र हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के प्रति अनन्य श्रद्धा आपको पैतृक विरासत में मिली है। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी की याद में आपने एक पद्य लिखा है, जो नीचे दिया जा रहा है।

—सम्पादक

श्रद्धेय गणी श्री जी ! आप तो स्वर्गों के सुख मे जा भूले।
पर यह तो बतलाओ हमको, हम याद तुम्हारी कैसे भूले ?
चले गये हा ! चले गए;
बेदारी करके, चले गए ॥
स्वामी ! क्या जल्दी थी जाने की, जो इतनी जल्दी चले गए।
इस धर्म गुलिस्तां के रक्षक, क्यो इतनी जल्दी चले गए ?
उपकार उन पूर्वज मुनियो का, स्मरण रखने योग्य ही है।
वो बीज धर्म का यू० पी० मे, स्वर्गों मे अहा ! जो चले गए ॥
श्री पूज्य पृथ्वीचन्द्र जी को भी, बस वृद्ध अवस्था के कारण।
एक जगह बैठना पडता है, पर दूर आगरा चले गये॥
पर दुःख असह्य यह हमे हुआ, श्री शान्त मूर्ति गणी जी विदा हुए।

थे सत्य धर्म के संरक्षक, हमे छोड़ के जल्दी चले गए ॥
आपने अपनी वाणी से, बहु जनता का उद्धार किया।
मम हृदय से निकली सदा यही, क्यो इतनी जल्दी चले गए ॥
पर संतोष हमे अब इतना है, हे विद्वान् शिष्य मण्डल तेरा।
ये उद्धार करेगे जनता का, अब आप दूर अति चले गए ॥
श्री संघ सेवक यह-धर्मदास -यू० पी० दोघट क्षेत्र निवासी है।
मैं बारम्बार यही कहता, क्यो स्वामी! जल्दी चले गए ॥

दोघट : उत्तर प्रदेश :
३—८—६०

हे जैन सन्त ! उदीयमान :

सुश्री रानी कुमारी जैन

—सुश्री रानी कुमारी जैन, एक बौद्धिक प्रतिभा से सम्पन्न मेधावी छात्रा हैं। आप महाविद्यालय के प्रथम वर्ष में पढ़ रही हैं। काव्य निर्माण की ओर आपकी स्वाभाविक रुचि है। आप मोतीकटरा, आगरा निवासी श्री श्रीचन्द्र जी जैन की सुपुत्री हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव की पुण्य स्मृति में, आपने बड़ी ही सुन्दर कविता की रचना की है; जिसे अगली पंक्तियों में दिया जा रहा है।

—सम्पादक

गुरुवर ! श्यामलाल गुणधाम,
विश्व मे छाई कीर्ति-ललाम।
वीर के पथ पर चल तूने—
दिपाया जैन धर्म का नाम॥

नही साधक कोई तव तुल्य,
गुणो का था तुझमे बाहुल्य।
प्राप्त कर मानव तन तूने—
बनाया जीवन को बहुमूल्य॥

धन्य है शान्ति क्षमा आगार,
धन्य तेरा जीवन—व्यापार।
धन्य औ सफल साधना तेरी;
धन्य है धन्य तुझे अणगार॥

धन्य तुझको भारत के लाल,
धन्य तुझको, हे हृदय विशाल !
शान्त मुद्रा औ धीर स्वभाव;
धन्य तेरा यह जाहो-जलाल ॥

वाणी क्या थी ? अमृत की धार,
शुद्ध सयम से तेरा प्यार।
चमक औ चाकचक्य से पूर्ण;
गुरुवर तेरा था दीदार ॥

× × × ×

हे जैन सन्त ! उदीयमान,
ज्योतित थे तुम रवि के समान।
करते थे सबको ज्ञान-दान,
सोरई क्षत्रिय कुल सन्तान।

सुत थे श्री रामप्यारी जी के,
भव्यता से रञ्जित उर रखते।
पितु चौधरी टोडरमल पाए,
तुम सा सुत पा जो हर्षाए॥

ऋषिराज समान गुरु पाए,
नव वर्ष की वय मे जब आए।
आए थे एलम ग्राम धाम,
जिले का मुजफ्फरनगर नाम।

आया फिर इनका दीक्षा-काल,
ली ग्राम ढिढाली मे जो पाल।

तब सोलह वर्ष की आयु जान;
प्रगटा था इनके हृदय-ज्ञान।

उत्तर-प्रदेश, दिल्ली, पञ्जाब,
हरियाणा मे करके विहार।

जो नीचे डूबे जाते थे;
उनको भवोदधि से दिया तार।

चउव्वन वर्ष संयम धारा,
फिर आया इनका मुक्ति-काल।

वय सत्तर वर्ष मे बिछुड़ गए;
हे! सरल, सौम्य, कोमल विशाल!

—मोतीकटरा, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१५—९—६०

[३६]

मुनि निराले हैं :

श्रीमती त्रिलोक सुन्दरी जैन

—श्रीमती त्रिलोक सुन्दरी जैन, एक धर्मनिष्ठ एवं मधुर स्वभाव की महिला हैं। आप श्यालकोट वाले, लोहामन्डी आगरा निवासी श्री अमरनाथ जी जैन की धर्मपत्नी हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपकी गहरी निष्ठा है जो आपके इस पद्य में भी स्थान-स्थान पर प्रगट हुई है। प्रस्तुत पद्य भावपूर्ण होने के साथ साथ हृदय ग्राही भी है।

—सम्पादक

गणी श्री श्यामलाल महाराज, सभी के यह रखवाले हैं।
प्राणी मात्र के जो हितकार, सभी से मुनि निराले हैं॥

जन्मे आप सोरई मांहि, मिल कर सबने खुशी मनाई।
रखा तब श्यामलाल शुभ नाम, उत्तम किस्मत वाले हैं॥

रामप्यारी थी आपकी माता, पिता श्री टोडरमल थे विख्याता।
क्षत्रिय कुल की तुम सन्तान, वचन पर डटने वाले हैं॥

छोडी घर की सम्पदा सारी, समझी झूठी दुनियादारी।
तोड़ा मोह वासना जाल, योग यह लेने वाले है॥

जब देखा यह मात-पिता ने, इनको लगे बहुत समझाने।
पुत्र! यह योग कठिन महान्, सहने कष्ट कराले हैं॥

पिता जी ! कष्ट नही, यह सुख है, कायर पुरुषो को ही दुःख है।
मैंने तो लीना खूब विचार, नही अब हटने वाले हैं॥

मात-पिता की आज्ञा पा कर, ऋषिराज गुरु शरणी जा कर।
लीने पच महाव्रत धार, दोप सब दूर ही टाले हैं॥

गुरु भक्ति मे मन को लगाया, आत्म श्रेष्ठ ज्ञान गुण पाया।
कीना जग मे धर्म प्रचार, गुरु गुण गाने वाले हैं॥

—त्रिलोक सुन्दरी—आई शरणी, गुरु जी कृपा मुझ पे करनी।
हमारे जन्म-मरण दो टार, आपके दर्श निराले हैं॥

—लोहामण्डी, आगरा : उत्तर-प्रदेश :
१८—८—६०

[३७]

गुरूदेव महिमा :

सुश्री सुदर्शना कुमारी जैन

—सुश्री सुदर्शना कुमारी जैन, एक सीधी सादी हँसमुख बालिका हैं। आप लोहामण्डी आगरा निवासी श्री अमरनाथ जी जैन स्यालकोट वालों की सुपुत्री हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के प्रति आपको गहरी आस्था है, इसी आस्था का प्रकटीकरन आपके निम्नांकित पद्य में हुआ है।

—सम्पादक

श्री श्यामलाल गणी ! तेरी वाणी सुनी,
पाप टल जाएं सभी ॥

रस्ता मुक्ति का आ कर बताया हमें,
मिथ्या मार्ग से आ कर हटाया हमें।

आपके दर्श कर, आपके चरण पड़,
पाप टल जाए सभी ॥

जीवन तेरा था गुरुदेव जादू भरा,
जो कि जनता का था आदर्श रहा।

जो तेरे पथ पे चला, उसको शिव पद मिला,
पाप टल जाए सभी ॥

पञ्च महाव्रत धारी थे गुरुवर मेरे,
इनकी सेवा से भव फन्द दूर टरे।
इनके गुण गाएँ हम, इनके बन जाएँ हम;
पाप टल जाएँ सभी ॥

कर्म काटन को सुन्दर यह मौका मिला
तेरा उपदेश-संदेश पावन मिला।
इसका कर आचरण, शुद्ध कर ले जीवन;
पाप टल जाएँ सभी ॥

पूज्य गुरुदेव सद्गुण के भण्डार थे,
शील के आप गुरुदेव अवतार थे।
-सुदर्शन-आई शरण, काटो भव का भ्रमण;
पाप टल जाएँ सभी।

—लोहामण्डी, आगरा उत्तर-प्रदेशः
१८—८—६०

[३८]

गुरुदेव से प्रार्थना :

श्री रूपचन्द्र जी जैन–रूप–

अरज है गुरु जी बारम्बारा । दु.ख दूर करो स्वामी हमारा ॥
पञ्च महाव्रत के हो धारी, सर्व इन्द्रियाँ तुम ने मारी ।
अहिंसा का लिया सहारा, दुख दूर करो स्वामी हमारा ॥
खूब धर्म-प्रचार हो करते, औरों को तारो खुद तरते ।
तुम ही हो बस एक सहारा, दुःख दूर करो स्वामी हमारा ॥
श्यामलाल गुरु नाम है जिनका, शिष्य श्रीचन्द्र जी है तिनका ।
हेम भी है अधिक प्यारा, दु.ख दूर करो स्वामी हमारा ॥
–रूप-स्वामी ! चरणो का चेरा, गुरु श्री सुन्दरलाल है मेरा ।
इन्ही का एक सहारा, दुःख दूर करो स्वामी हमारा ॥

—पाटोदी स्टेट, चातुर्मास में पठित
संवत् १९९४ विक्रम
(दिव्य–ज्योति पृष्ट १४५ से साभार)

[३६]

गुरु गुण महिमा

श्री रूपचन्द्र जी जैन–रूप–

लोगो आई है मौसम वहार, चौमासा स्वामी जी ने किया ॥
गुरु जी गुणों की हैं खान, एहसान हम पर किए महान् ।
धर्म का शरण दिया, चौमासा स्वामी जी ने किया ॥
सम्वत्सरी की तातील कराई, जैन की अजमत खूब वढ़ाई ।
देशो-देशो से मिली वधाई, खूब ही कारज किया ॥
सम्वत् उन्नीसो चौराणु बड़ भागी, पाटोदी वालो की किस्मत जागी ।
पधारे श्री श्यामलाल गुरु त्यागी, हुलसाया सब का जिया ॥
गुरुओ से हम सब की अरदास, फिर भी पूर्ण करना आश ।
मगशिर वदी दोज दिन खास, चौमासा पूर्ण किया ॥
अलविदा पर यह गई सुनाई, नाकिस अक्ल में जो कुछ आई ।
मुझ में नही कोई चतुराई,–रूप–का पुलकत हिया ॥

—पाटोदी स्टेट से चातुर्मास के पश्चात् विहार के समय पठित
संवत् १६६४ वि०
(दिव्य-ज्योति पृ० १४६ से साभार)

[४०]

गणी श्री श्यामलाल जी महाराज :

श्री चन्दन मुनि जी महाराज

गणी श्री श्यामलाल जी महाराज ! तुम्हारी महिमा भारी है ।
खूब किया उपकार आपने, खलकत काफी तारी है ।।
सैतालीस का है जन्म तुम्हारा, बचपन बीच आराम गुजारा ।
आया साल तिरेसठ प्यारा, दीक्षा आपने धारी है ।।
श्री ऋषिराज जी गुरु तुम्हारे, पण्डितराज बड़े ही भारे ।
लाखो जीव जिन्होने तारे, दुनिया खूब सुधारी है ।।
उन के शिष्य हैं आप प्यारे, लोग झुकावे मस्तक सारे ।
क्रोध-मान सब दूर विसारे, सिफ्त न जाए उचारी है ।।
सरल स्वभावी, क्षमा भण्डारी, भव्य जनो को तुम सुखकारी ।
शान्त, दयालु हो ब्रह्मचारी, महिमा बहुत ही न्यारी है ।।
कहाँ तक गुणो को-चन्दन-गावे, महिमा का कुछ पार न पावे ।
फरीदकोट मे भजन बनावे, कहता सिफ्त तुम्हारी है ।।

—फरीदकोट चतुर्मास मे गुरुदेव को समर्पित
सवत् १९९८ विक्रम
(दिव्य–ज्योति पृष्ट १४६ से साभार)

[४१]

उपकारी गुरुवर :

श्री कीर्ति मुनि जी

गुरुवर है पर उपकारी, मैं वार-बार बलिहारी ।।
क्रोध, लोभ अरु मान को जीता, ममता दूर निवारी,
सज्जनता है अग-अंग मे, छाया जग यश भारी ।
गुरुवर की महिमा न्यारी, मैं वार-वार बलिहारी ।।
देश-देश मे घूम के गुरुवर, धर्म - ध्वाजा लहराई,
वीर प्रभु की अमृत वाणी, घर-घर मे फैलाई ।
हम आए शरण तिहारी, मै बार-बार बलिहारी ।।
सोरई ग्राम उत्तर-प्रदेश मे, जन्म आपने पाया,
श्यामलाल जी नाम आपका, जीवन सफल बनाया ।
हैं अधम उद्धारण हारो, मैं वार-वार बलिहारी ।।
चरण-शरण मे-कीर्ति-आया, हे गुरुवर ! अपनाओ,
सच्ची शिक्षा दे कर गुरुवर ! भव-जल पार लघाओ ।
यह मेटो कर्म बीमारी, मै वार बलिहारी ।।

(गीत–गुन्जार पृष्ट २७ से साभार)

[४२]

गुरुवर के गुण :

मुनि श्री यशचन्द्र जी

गुण गाओ सब मिल गुरुवर के, गुरुदेव की महिमा न्यारी है ।
उद्धारक गुरु भव्य जीवो के, वाणी अमृत सी प्यारी है ।।
प्रतिपालक हैं छह काया के, त्यागी है जो मोह-माया के ।
नव बाड़ ब्रह्मचर्य पाले, गुरु पञ्च महाव्रत धारी हैं ।।
गुरु कठिन तपस्या करते हैं, कर्मो के मल को हरते हैं ।
भव-जल से पार उतरते हैं, रहती नही कर्म बीमारी है ।।
गुरु वाणी-सुधा बरसाते है, सुन श्रोता-जन हर्षाते हैं ।
निज जीवन उच्च बनाते है, छाया जग मे यश भारी है ।।
गुरु श्यामलाल जी प्यारे हैं, जो चमके जैन सितारे हैं ।
दीनों के गुरु सहारे हैं, गुरु भव-भय-सकट हारी हैं ।।
जो शरण आपकी आया है, उसका सब दु.ख मिटाया है ।
—यशचन्द्र—ने शीश झुकाया है, चाहे गुरु कृपा तुम्हारी है ।।

(गीत-गुञ्जार पृष्ट ३० से साभार)

[४३]

गुरुवर प्यारे :

श्री कीर्ति मुनि जी

धारें महाव्रत धारें, पाप सौ टारें ।
ए गुरुवर प्यारे; जगत थी तारे ।।

क्रोध, लोभ ने मान ने जीत्या, ममता दूर निवारी ।
सज्जनता छे अंगे-अंगे ; छे गुरुवर उपकारी ।।
घूमी देश-देश मा गुरुवर, धर्म-ध्वजा लहराई ।
सुना वीर नी वाणी तमने ; दुनिया सूती जगाई ।।
जन्म थया छे सोरई गाम मा, अवध प्रान्त ने वच्चे ।
'श्यामलाल जी' नाम आप ना ; गुण वन्ते गुरु सच्चे ।।
–कीर्ति–तारे चरणी आव्या, जल्दी एने उवारो ।
भवसागर मा बूड़ती नैया , एकज शरणो तमारो ।।

(कीर्ति ना गीतो पृष्ठ २१ से साभार)

बोलते पत्र :

—:बोलतेपत्र—

—पूज्य गुरुदेव, स्मृति-ग्रन्थ के इस तृतीय खण्ड का नाम —बोलते पत्र—है। प्रस्तुत खण्ड में श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के दुःखद स्वर्गवास की कहानी; पाठक गण पत्रों की जबानी सुनेंगे। अपने अश्रुओं एवं समवेदना का अर्घ्य, उस मानवता की जाज्वल्यमान ज्योति, साधुता के पुण्य स्रोत, तथा परम श्रेष्ठता के उज्ज्वल प्रतीक, उस महापुरुष, स्वर्गीय श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के पावन चरणों में, इन विभिन्न पत्रों ने किस-किस भाँति समर्पित किया है ? तथा इन बोलते हुए मुखर पत्रों ने; जिन में से कुछ तो अपनी कहानी पहले ही, समाचार पत्रों द्वारा कह भी चुके हैं, तथा शेष, जो प्रथम बार ही अपनी-अपनी श्रद्धा-सुरभि लेकर, इस स्मृति-ग्रन्थ के द्वारा प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष उपस्थित हो रहे हैं; किस-किस रूप में अपने दु खानुभावों को व्यक्त किया है ? यह सब, पाठक गण इस खण्ड को तन्मयता के साथ पढ कर ही अनुमान लगा सकेंगे। और मुझे तो यह भी विश्वास है कि इन पत्रों की राम कहानी सुनने के पश्चात् पाठक गण इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेंगे। समाचार पत्र, डाक पत्र तथा तार आदि, विभिन्न सुमनों के रूप में, अपनी-अपनी विभिन्न सुरभियों से पाठक गण के मन एवं मस्तिष्क को किस प्रकार आल्हादित एवं मुग्ध कर लेते हैं ? यह तो प्रस्तुत खण्ड का पारायण करने के पश्चात् ही ज्ञात हो सकेगा।

—सम्पादक—

गणी श्री श्यामलाल जी महाराज की–
संक्षिप्त जीवन–रेखा :

श्री रामधन जी-साहित्यरत्न-प्रभाकर–

❀ वैराग्य .

—गणी श्री श्यामलाल जी महाराज, गुरुदेव पण्डित श्री ऋषिराज जी महाराज के पुनीत चरणों मे, वैराग्य-भावना से, विक्रम संवत् १९५६ के, फाल्गुन मास मे, ९ १०वर्ष की आयु मे ही आ पहुँचे थे। गुरुदेव ने आपकी भावना को जान कर, दीक्षा से पूर्व ७ वर्ष तक वैराग्यावस्था मे साथ रख कर, आपको भली प्रकार से शिक्षित किया। यह आपकी एक महान् परीक्षा का समय था।

❀ दीक्षा

—अस्तु अनेक प्रकार की धार्मिक तथा साधु जीवन सम्बन्धी शिक्षाओ एव अनेक कठिन परीक्षाओ के अनन्तर विक्रम संवत् उन्नीस सौ तिरेसठ के ज्येष्ठ मास मे, ढिढाली ग्राम, जिला मुजफ्फरनगर के भाइयो द्वारा आग्रहपूर्ण प्रार्थना किए जाने पर, आप को मुनि दीक्षा प्रदान की गई। दीक्षा के पश्चात् भी आप श्री जी, गुरुदेव की सेवा-भक्ति करते हुए, शास्त्रो का अध्ययन करते रहे।

❀ गुरुदेव का स्वर्गवास

—अभी आप की दीक्षा को १८ मास ही हुए थे कि पोष कृष्णा द्वितीया शनिवार संवत् १९६४ के दिन कस्बा झिझाणा (मुजफ्फरनगर) मे आप के गुरुदेव श्री ऋषिराज जी महाराज का स्वर्गवास हो गया। इस आकस्मिक गुरु-वियोग से आप के अध्ययन आदि मे वड़ी क्षति पहुँची। गुरुदेव के स्वर्गवास का आप के मन पर प्रभाव पडना स्वाभाविक ही था। फिर भी इस वियोगजन्य व्यथा का प्रभाव, आप के मन से शीघ्र ही कम हो गया। क्योंकि आपके गुरुभ्राता पण्डित श्री प्यारेलाल जी महाराज आप को शिक्षा एवं सांत्वना देने मे वड़े दक्ष थे।

❀ सहनशील

—यद्यपि पूज्य गुरुदेव की छत्रछाया आप के ऊपर से उठ गई थी तथापि आपने, अपने गुरु भ्राता पण्डित श्री प्यारेलाल जी महाराज के सहयोग से, वडी दृढता एवं धीरता के साथ कर्तव्य-पालन किया। जैन मुनिराजो को अपने जीवन मे एक नही, अनेक परीसह सहन करने पडते हैं। अतः आपने भी अनुलोम-प्रतिलोम, सभी प्रकार के परीसह सहन किए। साथ ही अत्यन्त गौरव की वात है कि आप सभी परीषहो को सहते हुए अपनी संयम-साधना मे पूर्णतया दृढ़ रहे, एवं आपने अपनी शान्त प्रकृति, सहिष्णुता तथा क्षमावीरता का महान् परिचय दिया। आप की यही सहनशीलता तथा त्याग आज भी आप को असख्य जैन-जैनेतरो का श्रद्धा-भाजन वना रहा है।

—अस्तु गुरुदेव के स्वर्गवास हो जाने पर, पण्डित श्री प्यारेलाल जी महाराज तथा आप, दोनो आत्म-कल्याण के साथ जन-कल्याणार्थ, शास्त्राज्ञानुसार विचरण कर भगवान महावीर का दिव्य सन्देश जनसाधारण को सुनाते रहे।

—सवत् १९६७ ज्येष्ठ मास मे, पण्डित श्री प्यारेलाल जी महाराज का भी स्वर्गवास हो गया। वहाँ पर भी आपने बडे धैर्य का परिचय दिया और अपने गुरुभ्राता के शिष्य को, जो कि आपसे छोटे थे, साथ रखते हुए सयम-साधना करते रहे। उन्ही दिनो महासती श्री दुर्गा जी महाराज ने भी आपको अपने साहस पूर्ण प्रवचनों से सयम-साधना में सुदृढ बनाया एव उचित परामर्श से सहयोग प्रदान किया। इसके पश्चात् आपने कितने ही वर्ष तक महान् तपस्वी श्री पूर्णचन्द्र जी महाराज की सेवा का अपूर्व लाभ लिया और भक्ति भाव से उन की परिचर्या की। तपस्वी श्री जी महाराज का शुभाशीर्वाद आपने प्राप्त किया और उनके स्वर्गस्थ हो जाने पर, शान्तमूर्ति श्री सुखानन्द जी महाराज के साथ विचरण किया।

❀ शिष्य दीक्षाएँ

—सवत् १९८१ वैशाख शुक्ला पञ्चमी को आप के पास पण्डित श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज ने मुनि दीक्षा धारण की। संवत् १९८३ आषाढ कृष्णा द्वितीय के दिन बड़सत जिला करनाल मे श्री श्रीचन्द्र जी महाराज ने आपके पुनीत कर कमलों से भागवती दीक्षा प्राप्त की। सवत् १९९३ मे पण्डित श्री हेमचन्द्र जी महाराज ने नारनौल मे पं० श्री पृथ्वीचन्द्र जी महाराज के आचार्य पद महोत्सव के शुभावसर पर, अपने भरे-पूरे परिवार को छोड़ कर, अपनी माता जी की अनुमति से मुनि दीक्षा ली। संवत् १९९८ मे श्री कस्तूरचन्द्र जी महाराज को संगरूर मे दीक्षा दी। सवत् २००१ मे श्री कीर्तिचन्द्र जी महाराज को एव सवत् २००५ मे श्री उमेशचन्द्र जी महाराज को दीक्षा दी। ये सभी शिष्य-प्रशिष्य आपकी उपयोगी शिक्षाओ से सम्पन्न हुए हैं।

[२]

श्री गणी जी म० का स्वर्गवास

—आगरा मे गत ६ मई के मध्यान्ह काल मे, मानपाडा के जैन स्थानक मे, सथारा पूर्वक गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास हो गया। स्थानीय जैन सघ ने बैण्डबाजे के साथ, आपके शव का जलूस निकाला। श्मशान यात्रा मे, जलूस के साथ लगभग १००० पुरुष और २२५० महिलाएँ थी।

—मुनि श्री का जन्म आगरा के निकट ही सोरई ग्राम मे सवत् १९४७ मे राजपूत कुल मे हुआ था। सवत् १९६३ मे ढिढाली (मुजफ्फरनगर) मे आपने मुनि श्री रत्नचन्द्र जी महाराज के प्रशिष्य, मुनि श्री ऋषिराज जी महाराज के पास दीक्षा अङ्गीकार की थी।

—श्वेताम्बर जैन, आगरा के ८।५।६० के अक में प्रकाशित

---

[३]

शोक समाचार

—आगरा, ६ मई, बडे दुःख के साथ समाचार देना पड़ता है कि आज दोपहर १२ बजकर १५ मिनट पर, स्थानकवासी जैन मुनि श्री श्री १००८ पूज्य गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का, मानपाडा जैन स्थानक मे देहावसान हो गया।

—मुनि श्री जी बड़े ही सौम्य स्वभाव के तेजस्वी तथा विद्वान् पुरुष थे। उनके देहान्त से निश्चय ही समाज को क्षति पहुँची है।

—दैनिक सैनिक, आगरा ७-५-६० के अंक में प्रकाशित

---

[४]

श्री गणी जी म० को श्रद्धाञ्जलि

—श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास हो जाने के समाचार जान कर दुख हुआ। श्री गणी जी महाराज निर्मल ज्ञान के धारक तथा तेजस्वी उत्कृष्ट चारित्र पालन करने वाले थे। श्री गणी जी महाराज ने समाज व धर्म की सेवा कर, ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनके स्वर्गवास से जैन समाज मे जो क्षति हुई है, उसका निकट भविष्य मे पूर्ण होना कठिन है। स्वर्गीय आत्मा को अनन्त शान्ति और सहयोगियो को धैर्य प्राप्त हो; यही शाशन देव से प्रार्थना है।

—माधोमल लोढा,
मन्त्री, श्री वर्द्धमान जैन श्रावक सघ, जोधपुर
—कपूरचन्द सुराणा, दिल्ली शहर
(तरुण जैन, जोधपुर २३।५।६० के अंक में प्रकाशित)

---

[५]

मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज के निधन पर शोक सभाएँ

❀ एलम

—१०—५—६० मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज के दिनाङ्क ६—५--६० को, आगरा मे हुए देहावसान के समाचारो से स्थानीय श्रावक सघ को हार्दिक दु.ख हुआ, और दिवगत आत्मा के प्रति, श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए शान्ति की कामना की गई।

—मोहकमदास जैन
(जैनप्रकाश, दिल्ली १५-५-६० के अंक में प्रकाशित)

[६]

❀ दिल्ली

—८—५—६० श्री व० स्था० जैन श्रावक सघ चाँदनी चौक के तत्त्वावधान मे प्रात. ८ बजे महावीर भवन (बारादरी) मे, श्रीमान् लाला नौराताराम जी की अध्यक्षता मे, मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज के निधन पर शोक सभा हुई, जिसमे श्री गुलाबचन्द जी, जयन्तीलाल जी, तथा मास्टर श्यामलाल जी जैन ने, स्वर्गस्थ आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि समर्पित की, एव अध्यक्ष महोदय ने शोक प्रस्ताव पढ़ा, जिसमे आपके निधन को समाज की महती क्षति बतलाया और दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, शान्ति की कामना की ।

मोहरसिंह जैन मन्त्री

(जैन प्रकाश,दिल्ली १५-५-६० के अंक में प्रकाशित)

---

[७]

❀ दिल्ली

—श्री महावीर जैन सघ, सदर बाजार दिल्ली को दिनाङ्क ६—५—६० को आगरा मे विराजित गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के निधन समाचार, कान्फ्रेंस कार्यालय द्वारा प्राप्त होने पर, समस्त श्रावक संघ व शिष्य मण्डली सहित विराजित मुनि श्री भागमल जी महाराज को बहुत ही खेद और हार्दिक दुःख हुआ। तत्काल शोक सभा करके दिवंगत आत्मा के गुणानुवाद पूर्वक, जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई ।

—कुञ्जलाल ओसवाल

(जैन प्रकाश, दिल्ली १५-५-६० के अक में प्रकाशित)

[८]

❀ आगरा

--७—५—६० को श्री बाबूलाल जी शास्त्री के सभापतित्व मे एक सभा, जैन स्थानक मानपाड़ा मे हुई, जिसमे निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ—

—आज की यह स्मृति-सभा श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के ता० ६—५—६० को देवलोक हो जाने पर, अत्यन्त दु:ख प्रकट करती है, और वीर प्रभु-शासनदेव से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति मिले तथा सर्व मुनि-मण्डल को धैर्य व शान्ति प्राप्त हो।

—सुरेन्द्रकुमार जैन—रत्न—एम० ए०

(जैन प्रकाश, दिल्ली १५–५–६० के अंक में प्रकाशित)

---

[९]

❀ जोधपुर

—२०—५—६० गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास के समाचार सुन कर, मन्त्री श्री पुष्कर मुनि जी महाराज ने व्याख्यान बन्द रखा और मुनि श्री जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

—माधोमल लोढा

(जैन प्रकाश दिल्ली १-६-६० के अंक में प्रकाशित)

---

[१०]

❀ भरतपुर

—१२—५—६० आज रात्रि के ८ बजे महावीर भवन मे, मुनि श्री श्यामलाल जी महाराज का आगरा मे देहावसान हो जाने पर, शोक सभा की गई, जिसमें दिवंगत आत्मा के लिए श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, चिर शान्ति की कामना की।

—चन्द्रभानु जैन, मन्त्री

(जैन प्रकाश, दिल्ली १।६।६० के अंक में प्रकाशित)

---

[११]

बोलते पत्र

❀ लुधियाना

—१३—५—६० कल 'जैन प्रकाश' देखा, उसमे श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास हो जाने का दुःखद समाचार पढ कर मन सिहर उठा। आज तक न तो उनके अस्वस्थ होने की बात सुनी न अन्य समाचार। अचानक इस समाचार को पढ कर मन व्यथित हो उठा।

—गणी श्री जी महाराज से अपना अच्छा सम्बन्ध रहा है। लुधियाना महीनों इकट्ठे रहे हैं। उनकी भोली-भाली आकृति और सरल व्यवहार, आज भी आँखों के सामने है। मुझ पर तो उनकी विशेष कृपा दृष्टि थी। फिर ऐसे कृपालु महापुरुष का हमसे जुदा हो जाना, कितना दु:खद और पीड़ा जनक हो सकता है? यह स्पष्ट ही है। इसे दोहराने की आवश्यकता नही है।

—आचार्यदेव, पण्डित श्री हेमचन्द्र जी म० आदि सभी को हार्दिक खेद हुआ। मेरी ओर से श्रद्धेय प्रेमचन्द्र जी म० तपस्वी श्री श्रीचन्द्र जी म० के चरणों मे समवेदना अर्ज कर देना।

—ज्ञान मुनि
लुधियाना (पञ्जाब)

---

[१२]

❀ सफीदो मण्डी

—१७-५-६० हमारे यहाँ श्री श्री १००८ प्र० म० व्या० वा० श्री मदनलाल जी महाराज ठा० ६ सुख शान्ति से विराजमान हैं। 'जैन प्रकाश' तथा सफीदो वाले भाइयो के द्वारा मालूम हुआ कि गणी श्री श्यामलाल जी म० का स्वर्गवास हो गया है, यह जान कर, यहाँ विराजित सन्तो को, एक धक्का सा लगा और अति खेद हुआ। यहाँ का सन्त परिवार वहाँ विराजित मुनियो तथा खास तौर पर श्री गणी जी म० के शिष्यो से, समवेदना जाहिर करता है।

—कितने सरल थे, श्री गणी जी महाराज ? उनका प्रेम और उनकी सरलता हमारे लिए एक आदरणीय चीज है। ऐसे सन्त का अभाव, समाज के लिए क्षति का कारण है।

—चतरसैन जैन
सफीदों मण्डी (पंजाब)

---

[१३]

❋ बरनाला

—परम श्रद्धेय, सरल आत्मा, पूज्यपाद, शान्त मुद्रा प्रसन्न हृदय, श्री श्री १००८ गणीवर्य श्री श्यामलाल जी महाराज के असामयिक स्वर्गवास की दर्द भरी सूचना पा कर, हृदय को एक बहुत ही भारी एवं गहरी ठेस लगी। जब कि उनकी अस्वस्थता की कोई खबर नही, ऐसी हालत मे सहसा ऐसी दुःख भरी खबर पर विश्वास करने को जी नही करता। परन्तु जो होनहार होती है, वह हो कर ही रहती है। प्रकृति के इस अटल नियम को भला कौन परिवर्तित कर सकता है ?

—पूज्यपाद गणीवर्य श्री जी हमारी जैन समाज के एक चोटी के प्रतिष्ठित सन्त थे। शास्त्रज्ञ होते हुए भी आप मे जिस निरभिमानिता के सुमधुर दर्शन होते थे, उसे कभी भुलाया नही जा सकता। सदा प्रसन्न रहना तो आपका जन्म-सिद्ध ही एक गुण था, जो अविस्मरणीय है। इसी प्रकार आप श्री जी की मिलनसारिता की भी सराहना हो नही हो सकती। सयम के प्रति सतर्कता एव उदारता आदि अनगिनत गुणो के आप धनो थे। किं बहुना, आपके गुणों का पार ही नही था।

—आपके इस असामयिक निधन से, जो मुनिवृन्द में कमी हो गई है, निकट भविष्य मे तो क्या ? कभी भी यह कमी पूरी नही हो सकती। हम शासन देव से पूज्यपाद परम श्रद्धेय गणीवर्य श्री जी म० की आत्मा को शान्ति की कामना करते हुए, उनके परम पुनीत चरण कमलों मे अपने प्रेम भक्ति तथा विनय भरे हृदयों की श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।

—चन्दन मुनि
बरनाला (पजाब)

---

[१४]

❀ नालागढ़

—७-५-६० श्रद्धेयास्पद श्री गणीजी महाराज के अप्रत्याशित स्वर्गवास की सूचना से, तन-मन पर वज्र-प्रहार सा हुआ। सरलता की उस मजुल मूर्ति के दर्शनो से हम सदा के लिए वञ्चित हो गए। विधि की यह कैसी विडम्बना है। कराल काल के क्रूर हाथों के आगे इन्सान कर भी क्या सकता है? यही पर मजबूर है इन्सान ? इस चोट को सह जाने के लिए, भगवान वीतराग देव सब की आत्मा को बल प्रदान करे, ऐसी भावना है।

—मुनि सुरेश
नालागढ (पंजाब)

---

[१५]

❀ नालागढ़

—७-५-६०, कल अचानक गुरुदेव श्री जी की अस्वस्थता का तार मिला। पढ कर हृदय चिन्ता और दुःख के सागर मे डूबने उतराने लगा। और आज ? आज तो बस हृदय चूर-चूर हो गया। पूज्य गुरुदेव श्री जी के स्वर्गारोहण का तार पा कर मानस क्रन्दन कर उठा।

—दैव की भी यह कैसी विडम्बना है? जिनके श्री चरणो मे मैं पला, पढा और इतना बड़ा हुआ, उन्हीं चरणो का अन्तिम दर्शन न कर सका। यह बात हृदय मे कांटे की तरह चुभती रहेगी।

—मुनि उमेश
नालागढ़ (पंजाब)

[१६]

❀ कलकत्ता

—७-९-६० आपको मालूम होगा कि श्री गणी जी म० के प्रति, बाल्यकाल से ही मेरे मन मे श्रद्धा रही है। उनका वरद हस्त मेरे लिए सदा प्रेरणा-स्रोत रहा है।

—मुनि सुशील
कलकत्ता

---

[१७]

❀ लुधियाना

—२३-८-६० श्री गणी जी महाराज का साधनामय जीवन एव उनका स्नेह-सौजन्य, मेरे स्मृति-पटल पर अंकित है। मैने दिल्ली मे जब उनके पहली बार दर्शन किए थे, तभी से उनके सरल एवं सेवानिष्ठ जीवन से आकर्षित था। उनके आदर्श जीवन एव निश्छल प्रेम-स्नेह को, मै कभी नही भुला सकता।

—मुनि समदर्शी
लुधियाना (पंजाब)

---

[१८]

❀ मेरठ

—७-५-६०, खेद है कि क्या सुनने की आकाँक्षा से पत्र दिया था; परन्तु सुनना क्या पड रहा है? यही तो दैव विडम्बना है। ऐसे कोमल स्वभाव के, आबाल वृद्ध के सहारे, धर्म

के अवलम्बन, स्थविर, मुनि पुङ्गिव, श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का, अपने मध्य मे अभाव होना, भला किस सहृदय को सिहरन न चढ़ा देगा ? अच्छा, इहसि उत्तमो भन्ते ! पच्छा होहिसि उत्तमो । उनकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हो ।

—शान्ति मुनि
जैन नगर, मेरठ (उत्तरप्रदेश)

---

[१६]

❀ शाहकोट

—१३-५-६० यहाँ विराजित कवि श्री हर्षचन्द्र जी म० श्री जौहरीलाल जी म०, पं० श्री महेन्द्र मुनि जी महाराज तथा श्री सुमन मुनि जी ठा० ५ को श्री गणी जी महाराज के स्वर्गवास के समाचार जान कर खेद हुआ ।

—श्री जौहरी लाल जी म० ने सभी श्रोता जनों के समक्ष सारगर्भित शब्दो में, स्वर्गीय गणी श्री श्यामलाल जी म० के शान्तप्रिय तपस्वी जीवन की प्रसंशा की । शोक सभा में प्रस्ताव पास किया गया । और उनकी आत्म-शान्ति की प्रार्थना की । आपने फर्माया कि सन् १६४६ मे, हमने आपके दर्शन रोहतक में किए थे । आप सदा ही प्रसन्न मुद्रा मे रहते थे । अनेक गुण सम्पन्न होने पर भी उन्होने निरभिमानता पूर्वक जीवन व्यतीत किया । धन्य है उनकी आत्मा को ।

—रामप्रकाश जी जैन
मन्त्री एस. एस. जैन सभा
शाहकोट (पजाब)

---

[२०]

❀ दोघट

—२२ । ५ । ६० ।, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास का समाचार पढ कर, हृदय को जो दु.ख हुआ, वह लिखने मे नही आ सकता । गणी श्री जी की शान्त मुद्रा तथा गम्भीरता सराहनीय थी । आज के नये युग में ऐसी आत्मा होनी असम्भव है ।

—जैन मुनि श्री भजनलाल जी म० श्री विनय मुनि जी म०
दोघट (उत्तर-प्रदेश)

---

[२१]

❀ चरखी दादारी

—६ । ५ । ६० ।, गणाधीश पण्डित स्वामी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास के समाचार ज्ञात करके, हृदय को अतीव दु.ख हुआ; जो कि जड़ लेखनी द्वारा लिख नही सकता । गणीश्वर जी महाराज के अभाव से साधु वर्ग को जो क्षति पहुँची है, वह लेखनी से वाहर है । महाकाल के आगे किसी का वश नही चलता । महाराज ने जो समाजोन्नति तथा आत्मोन्नति की है, वह जग-जाहिर है । सव मुनियो को समवेदना प्रकट करना ।

—खुशहाल मुनि

चरखी दादरी (महेन्द्र गढ़)

---

[२२]

❀ हरमाड़ा

—८ । ५ । ६० । गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के वियोग के समाचार पा कर असीम हार्दिक वेदना हुई । उनके सान्निध्य मे, जो गणी श्री जी से विपुल वात्सल्य मैने पाया, उस की स्मृति मेरे हृदय मे यावज्जीवन रहेगी ।

—गणी श्री जी शास्त्रज्ञ, सरल हृदय, स्नेहमूर्ति, सद्गुणानुरागी, सदाशय, सेवा भावी, एव सच्चे क्षमा श्रमण थे । आप के श्रमण जीवन के प्रति, अणुयुग के अनुयायियो मे भी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी ।

—उसी श्रामण्य का उत्तराधिकारी, गणी श्री जी का शिष्य समुदाय भी उत्तरोत्तर यशस्वी-तेजस्वी बने । इसी सद् भावना के साथ, गणी श्री जी की आत्मा के प्रति मै हृदय से श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूँ ।

—मुनि कन्हैयालाल-कमल-
हरमाड़ा (राजस्थान)

---

[२३]

❀ हरमाड़ा

—८ । ५ । ६० श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के देहावसान के समाचार पा कर, स्वामी जी श्री फतेहसिंह जी महाराज आदि, सन्त मण्डल को तथा स्थानीय संघ को हार्दिक दुःख हुआ । परलोक प्राप्त आत्मा को शाश्वत शान्ति प्राप्त होने की कामना करते हुए, संघ ने गणी श्री जी के सद्गुणो के प्रति हृदय से श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है ।

अमरचन्द जैन साह
मन्त्री हरमाड़ा श्रावक संघ
हरमाड़ा (राजस्थान)

---

[२४]

❀ थाँवला

—२० । ५ । ६०, 'जैन प्रकाश' से यहाँ विराजित मन्त्री मुनि श्री हजारीलाल जी महाराज आदि मुनिराजो को, गणीवर्य श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास हो गया है, यह जान कर बड़ा खेद हुआ। मुनि श्री जी बहुत अच्छे सतो गुणी मुनिराज थे। यहाँ से मुनि श्री जी ने समवेदना प्रकट की है।

—प्यारेलाल गाधी
मन्त्री श्री व० स्था० जैन श्रावक संघ
थाँवला (मारवाड़)

---

[२५]

❀ इन्दौर

—२७ । ५ । ६० श्री गणी जी महाराज के देहावसान के खेदजनक समाचार जान कर दुःख हुआ, महाराष्ट्र मन्त्री श्री किशनलाल जी म०, प्रसिद्ध वक्ता पण्डित श्री सौभाग्यमल जी म० ने खेद और समवेदना प्रकट करते हुए फर्माया कि—

—श्री नगीन मुनि जी म० तथा श्री विनय मुनि जी म० से हमने श्री गणी जी महाराज की बड़ी प्रसशा सुनी है और वैसे भी प्रसशा सुनते ही रहे हैं। श्री गणी जी महाराज उत्तम पुरुष थे। वे महाभाग्यवान थे। पर खेद है कि क्रूर काल ने उन को, हमसे छीन लिया है। एक अनुभवी सन्त रत्न हम से सदा के लिए बिछुड़ गया है। उनका वियोग दुःखद है, असह्य है। किन्तु काल के आगे किस का वश चला है ? फिर भी वे काल से जूझे

हैं। दीन बन कर नही गये हैं। अतः वे इस शोकमय दशा मे भी साधको के लिए एक आदर्श सन्देश दे गए है।

—अन्त मे यही शुभ कामना है कि दिवगत आत्मा को चिरशान्ति प्राप्त हो और उनके सन्त परिवार को उन का वियोग सहने की शक्ति प्राप्त हो।

—भँवरलाल धाकड़
स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
इन्दौर (मध्य-प्रदेश)

---

[२६]

❀ रतलाम

—२० । ५ । ६०, अत्र पं० र० शास्त्रज्ञ श्री कस्तूरचन्द्र जी म० पं० र० प्रिय व्या० श्री प्रतापमल जी महाराज ठा० २१ का सगम हुआ। गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास के समाचारों से, सभी मुनिवरो ने हार्दिक दुःख प्रकट किया। काल की गति विचित्र है। आप सर्व मुनिराज धैर्य धारण करे।

—सुवालाल वाफना
रतलाम (मध्य प्रदेश)

---

[२७]

❀ रतलाम

—यहाँ विरजित पूज्य श्री कस्तूरचन्द्र जी म० तपस्वी श्री नानक राम जी म० ठा० २१ ने गणी श्री श्यामलाल जी म० के देवलोक होने की खबर सुनी, तो सभी को वहुत दुःख हुआ।

—वी. एम. तिवारी
रतलाम (मध्य-प्रदेश)

[२८]

❀ गढी झझारा

—श्री श्री १००८ श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्ग वास का समाचार पढ कर, यहाँ विराजित, महासती श्री खीलमती जी म० तथा श्री सुशीलाकुमारी जी म० और श्री सघ को बहुत दुःख हुआ।

—श्री संघ गढी झझारा (पञ्जाब)

---

[२९]

❀ लश्कर

—१० । ५ । ६०, शान्त मूर्ति परम श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज ने यह नश्वर शरीर भले ही त्याग दिया, किन्तु लश्कर सघ के दिल मे उन के प्रति जो श्रद्धा है, वह सदा अमर रहेगी। उनकी ही सद् प्रेरणा से हमारे लश्कर-शिवपुरी क्षेत्रो मे दो-तीन अत्यन्त ही सफल और प्रभावशाली चातुर्मास हुए थे। वैसे चातुर्मास कराने के लिए, हम आज भी लालायित हैं।

—आप २०—२१ दिन अत्यन्त कष्ट सह कर दि०-६ । ५ । ६० को स्वर्गस्थ हुए, इस की खबर यहाँ के संघ को दी, तो सारा संघ इस शोक सतप्त समाचार से अत्यन्त दुखी हुआ। हम प्रार्थना करते हैं कि स्वर्गस्थ महान् पवित्र आत्मा को चिर शान्ति मिले, साथ ही हम और हमारे सघो को इस अपूर्ति घटना को सहने की शक्ति भी प्राप्त हो।

—टीकमचन्द वापना
वृहत्तर ग्वालियर व० स्था० जैन श्रावक संघ
लश्कर (मध्य-प्रदेश)

[३०]

❀ अलवर

—१५ । ५ । ६० श्रद्धेय शान्त मूर्ति, चारित्रवान, पण्डित रत्न, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवासी हो जाने के समाचार जान कर, स्थानीय श्री सघ अपार दु:खानुभूति करता है। स्वर्गीय गणी श्री जी का सम्पूर्ण जीवन त्याग वैराग्य एवं समाजोत्त्थान की विविध प्रवृत्तियो मे सतत सलग्न रहा था। ऐसे महापुरुष के देहावसान से, चतुर्विध श्री सघ की जो अपार क्षति हुई है, निकट भविष्य मे उस की पूर्ति असम्भव प्राय: है।

—महापुरुषों का जीवन वह प्रकाश-स्तम्भ होता है, जिसका आधार प्राप्त कर प्राणी, अपनी जीवन-नौका को, शाश्वत सुख-प्राप्ति के मार्ग पर, निर्बाध गति से अग्रसर हो सकने मे, समर्थ बना पाता है। यदि हम ऐसा कुछ कर पाये, तो अवश्य हमारा जीवन सार्थक हो सकेगा।

—श्री पद्मचन्द संचेती
मंत्री, श्री व स्था. जैन श्रवक संघ
अलवर (राजस्थान)

---

[३१]

❀ अम्बाला शहर

—२१ । ५ । ६० श्री अमरसिंह जैन सभा अम्बाला शहर की स्पेशल बैठक श्री श्री १००८ शान्तमूर्ति गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के देवलोक हो जाने पर, अति दु:ख प्रकट करती है। आप की जुदाई से जैन समाज को भारी नुक्सान पहुँचा है। इस युग मे आप जैसे शान्ति के भण्डार सन्तो का होना दुश्वार है।

—जिस वक्त आपका अम्बाला शहर में चातुर्मास था, उस समय आपने अखण्डजाप शुरू करवाने में बडा ही उत्साह दिया था। अन्त मे हम सब सदस्यो की भावना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

—जिनदास जैन
मन्त्री श्री अमरसिह जैन सभा
अम्बाला शहर (पन्जाब)

---

[३२]

❀ अम्बाला

—२६।५।६० यह समाचार पढ कर बहुत दुःख हुआ कि श्री श्री १००८ परम प्रतापी गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का देवलोक हो गया। श्री गणी जी म० स्थानकवासी जैन समाज मे शन्ति के भण्डार थे। हमारे पर श्री गणी जी म० की वहुत कृपा थी। जब अम्वाला मे आप का चातुर्मास था तो उस समय नवकार मन्त्र का अखण्ड जाप श्री गणी जी म० की ही कृपा का फल था। त० श्री फकीरचन्द जी म० ने भी श्री गणी जी म० के देवलोक पर खेद प्रकट किया है। स्वर्गीय आत्मा को शान्ति मिले, यही हमारी भावना है।

—विद्याप्रकाश जैन
अम्वाला शहर (पन्जाव)

---

[३३]

श्री श्री १००८ शान्तमुद्रा, चारित्र चूड़ामणि, गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के चरणों में श्रद्धांजलि :

—जब यह समाचार सुना कि श्रद्धेय श्री श्री १००८ गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का आगरा मे देवलोक हो गया, तो सारे समाज में शोक छा गया। तमाम बिरादरी एकत्रित हुई और श्री गणी जी महाराज को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, शोक प्रस्ताव पास किया।

—श्रद्धेय महाराज श्री जी का एलम जैन बिरादरी पर तो बडा भारी उपकार है। यहाँ का बच्चा-बच्चा, उनके धार्मिक प्रेम मे भीगा हुआ है। यह क्षेत्र श्री श्री १००८ पण्डित प्रवर पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज, पण्डित श्री कँवरसैन जी महाराज, तथा पण्डित श्री ऋषिराज जी महाराज, जो कि स्वर्गीय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के ही गुरु, बाबा गुरु एवं दादा गुरु जी थे, उन्ही के द्वारा प्रतिबोधित, परिवर्द्धित एव परिसिञ्चित क्षेत्र है।

—श्रद्धेय गणी श्री जी महाराज ने भी संवत् १९६५, १९६९, १९७९, १९८९, १९९२, २००४,—इस प्रकार एलम क्षेत्र मे छ. सफल चातुर्मास किए। प्रत्येक चातुर्मास मे आप की कृपा से खूब ही धर्म-ध्यान हुआ। आप की ही प्रेरणा से सवत्-१९८९ मे श्री ऋषिराज जैन पुस्तकालय की इस क्षेत्र मे स्थापना हुई। और आप की ही कृपा से सवत् १९९२ मे, बालकों में जागृति बनी रहे—इस हेतु श्री महावीर जैन पाठशाला कायम हुई। श्री नमोकार मन्त्र का अखण्ड-जाप भी सवत् १९९२ से श्रद्धेय गणी जी महाराज ने, इसी क्षेत्र से प्रारम्भ करवाया था, जो आज प्रायः समस्त भारतवर्ष के स्थानकवासी समाज में पर्यूषण पर्व मे होता है। जैन समाज को यह अमूल्य देन भी आप की ही है।

—इस प्रकार भौतिक शरीर से आप हमारे समक्ष न होते हुए भी गुण रूप से हमेशा हमारे दिलो में सुरक्षित रहेगे। जब तक ये सस्थाएँ कायम रहेगी, तब तक हम को ये आप की याद तरो-ताजा कराती रहेंगी। हमारे धार्मिक जीवन पर आप का बडा भारी उपकार है, जो चिर स्मरणीय रहेगा।

—ज्योतिप्रशाद जैन
मन्त्री, एस. एस. जैन सभा एलम
प्रधान —भिक्खनलाल, चतरसन जैन, दाढीवाला

---

[३४]

गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के चरणों में-
श्रद्धाञ्जलि :

—जिस समय यह समाचार सुना कि श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास हो गया, तो सारे सफीदो-समाज मे शोक की लहर छा गई। महाराज श्री जी बडे ही शान्त स्वभावी और सरल हृदय थे। उन का महान् जीवन और उन के द्वारा किए गए हमारी समाज पर उपकार, हमे बार-बार याद आते है।

सम्वत् २००२ के फाल्गुन मे, श्रद्धेय तपस्वी श्री श्रीचन्द्र जी महाराज व श्री कीर्ति मुनि जी महाराज, ठा० २ का पधारना हुआ। सफीदो वालो ने जब तपस्वी जी महाराज से चातुर्मास की प्रार्थना की तो उन्होने फर्माया कि गुरु महाराज कैथल विराजमान है, उन की विनती करो। इस पर हम सफीदो वाले कैथल पहुँचे। गुरुदेव से चातुर्मास के लिए प्रार्थना की। वे

तो परम दयालु, उदार हृदय एव सरलात्मा सन्त थे, सो झट से हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली। खुशी-खुशी गुरुदेव के गुणानुवाद गाते हुए हम लौटे। चूँकि हमारे यहाँ स्थानक तो था नही, अतएव मकान की व्यवस्था करना आवश्यक था। इस कार्य को मूलचन्द जी नामक एक वैष्णव भाई ने, पूज्य गुरुदेव के सदुपदेश से प्रभावित हो कर, सम्पन्न कर दिया। उस ने अपना विशाल मकान श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री जी के चातुर्मास के लिए देना स्वीकार कर लिया। महाराज श्री जी पधारे और इसी मकान में उन का सफल चातुर्मास व्यतीत हुआ। महाराज श्री जी की कृपा से ही, इसी चातुर्मास मे श्री जैन स्थानक का भव्य निर्माण प्रारम्भ हुआ। जो पूर्ण हो कर धर्म-ध्यान का तो मानो केन्द्र स्थल ही बन गया। अधिक क्या ?

—इस क्षेत्र मे जो धर्म रूपी वृक्ष फला-फूला और हरा-भरा नजर आता है। यह श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज द्वारा ही बोया हुआ है। यह सफीदों क्षेत्र तो उन की कृपाओं एवं महान् उपकारों को आजन्म न भुला सकेगा। आज महाराज श्री जी बेशक हमारे सामने नही हैं, मगर धर्म की यह उन की अमूल्य देन, हमारी जैन बिरादरी के हृदयो मे सदा बनी रहेगी।

—परदेशीलाल गुलाबराय जैन
सफीदों मण्डी (पञ्जाब)

---

[३५]

ॐ दिल्ली, चाँदनीचौक

—श्री व० स्था० जैन श्रावक संघ (रजिस्टर्ड) चाँदनी-चौक दिल्ली की ओर से आयोजित ता० ८।५।६० की बैठक मे श्री नौराताराम जी की अध्यक्षता मे निम्नलिखित शोक प्रस्ताव पास किया गया।

—यह सभा स्थविर पण्डित मुनि गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के देहावसान की सूचना पा कर अत्यन्त दु.ख का अनुभव करती है। आप श्री जी गम्भीर, स्नेहमूर्ति, उदार हृदय, और सरल प्रकृति के सन्त थे; तथा अत्यन्त शान्त और सयमी जीवन का आदर्श उपस्थित कर रहे थे। आप की व्याख्यान शैली रोचक थी। आप समाज के एक अनुभवी वयोवृद्ध सन्त थे। आपके निधन से समाज को एक गहरी क्षति पहुँची है। शाशन देव से यह सभा कामना करती है कि स्वर्गस्थ महाराज श्री जी के शिष्य समुदाय तथा जैन समाज को, इस दुःख को सहने की शक्ति दे तथा दिवगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

—मोहरसिंह जैन
मन्त्री श्री व. स्था. जैन श्रावक संघ
चाँदनीचौक दिल्ली—६

---

[३६]

❀ सब्जीमण्डी दिल्ली

—१६। ५। ६० श्रद्धेय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गस्थ होने के दुःखित समाचार को जान कर सब को बहुत ही दुःख हुआ। स्वर्गीय गणी श्री जी (स्वर्गीय शब्द लिखते हुए भी एक टीस हृदय में उठती है) का शान्त स्वभाव, विशाल हृदय एवं साधुता से ओत-प्रोत जीवन तथा मधुर वाणी को कौन ऐसा है, जो तनिक भी सम्पर्क मे आ कर भूल सके?

—सौभाग्य की बात है कि कुछ समय के लिए स्वर्गीय गणी श्री जी ने इस छोटे से क्षेत्र सब्जीमण्डी, दिल्ली को भी पावन किया था। अन्त मे स्वर्गीय आत्मा की शान्ति के लिए, समस्त श्री संघ, श्री शाशन देव से प्रार्थना करता है और समाज

की जो क्षति हुई है, उस के लिए शोक प्रकट करता है। यह श्रमण सघ की भी ऐसी क्षति है, जिस की पूर्ति होना, निकट मे सम्भव नहीं है।

—वनारसीदास प्रेमचन्द ओसवाल
सब्जीमण्डी जैन श्री संघ, दिल्ली

---

[३७]

❀ नई दिल्ली

—८।५।६० कल दिनांक ७ मई को एक तार मिला, जिस मे हृदय विदारक समाचार, श्री विजयसिंह जी ने लिखा था कि गणी श्री श्यामलाल जी महाराज दि० ६।५।६० के दिन काल धर्म को प्राप्त हुए। समाचार मिलते ही दिल्ली शहर में शोक छा गया। कान्फ्रेन्स की ओर से भी शोक सभा हुई, जिस मे दिवंगत आत्मा की चिर शान्ति के लिए प्रार्थना की गई तथा शोक समाचार पारित किया गया।

—शान्तिलाल वनमाली
अ भा श्वे. स्था. जैन कान्फरेन्स
नई दिल्ली

---

[३८]

❀ दिल्ली

—१०।५।६० आज 'जैनप्रकाश' द्वारा, यह समाचार पढ़ने को मिले कि श्री गणी जी म० सा० का स्वर्गवास हो गया। पढ कर वहुत ही दु:ख हुआ। आपकी सम्प्रदाय में श्री गणी जी महाराज भी वड़ी ही सूझ-बूझ वाले साधु थे। ऐसे समय

मे ऐसे साधुओ का चले जाना अखरेगा। परन्तु क्या किया जाय ? यहाँ आकर तो इन्सान हारा है।

—कपूरचन्द सुराना
दिल्ली

---

[३९]

❀ दरियागंज, दिल्ली

—११। ५। ६० श्री श्री १००८ गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास की इत्तला पा कर, बड़ा भारी दुःख हुआ। इसमे किसी का चारा तो नही, मगर दुःख की बात है। महाराज श्री जी तो हर एक आदमी का खयाल रखते थे। मगर मुकद्दर की बात है कि आखिरी वक्त हम लोग उनके दर्शन भी न कर सके। भगवान से प्रार्थना है कि महाराज श्री जी की आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

—सुमेरचन्द लक्ष्मीचन्द जैन
दरियागंज, देहली

---

[४०]

❀ वकीलपुरा, दिल्ली

—११। ५। ६० आज देहली पहुँचने पर ६। ५। ६० का शोक समाचार मिला। इस समाचार को सुन कर जो खेद हुआ उसका वर्णन तो हो नही सकता। बाकी अगर उनकी बीमारी का पता चलता तो दर्शन अवश्य करता। महाराज श्री जी के देव-लोक से जो क्षति पहुँची है, उसकी पूर्ति ही असम्भव है।

—अजितप्रसाद जैन
वकीलपुरा, दिल्ली

[४१]

❀ दिल्ली

—९।५।६० आज रोज दिल्ली की शोक सभा मे उपस्थित होने से पता चला कि वयोवृद्ध गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास हो गया है। यह सुन कर दिल को बहुत अफसोस हुआ। वे तो पूज्य श्री जी के दाँए बाजू के समान थे। मेरा भी उनसे काफी सम्पर्क रहा है। ऐसे गुणी व शान्त स्वभावी साधु के स्वर्गवास से जो समाज मे तथा उनके शिष्य समुदाय मे कमी आई है, उसकी पूर्ति होनी मुश्किल है। हमारी तो शाशनदेव से दिवंगत आत्मा के लिए यही प्रार्थना है कि उन्हे व उनकी आत्मा को धर्म का शरण व शान्ति मिले।

—भगत नौराताराम जैन, बनूड़ वाले
मोरी गेट, दिल्ली

---

[४२]

❀ नई दिल्ली

—१३।५।६० यह समाचार पढ़ कर बहुत दु.ख हुआ कि पूज्य श्यामलाल जी महाराज का देहावसान हो गया है। आप जैन समाज के एक रत्न थे। आपकी क्षति को पूरा करना असम्भव है। मै उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए कामना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

—माँगेराम जैन
नई दिल्ली

---

[४३]

❀ दिल्ली

—११ । ५ । ६० यह पढ कर हम सबको बहुत दु ख हुआ कि श्री गणी जी महाराज का देवलोक हो गया। वह एक महाप्रतापी हस्ती थी, जिसका साया ससार से उठ गया। बेशक वे फानी दुनिया से देवलोक चले गए, लेकिन वह हमारे लिए अपने गुण छोड़ गए हैं। भगवान से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति दे।

—ओमप्रकाश जैन, दिल्ली

---

[४४]

❀ देहली

— २७ । १० । ६० इस बात का दुःख है कि पूज्य गुरुदेव श्री गणी श्यामलाल जी म० सा० का स्वर्गवास हो गया है। हम दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते है। हमारे बीच मे से ऐसे महापुरुष का उठ जाना बड़े रंज का समय है, जिसकी पूर्ति आजकल के समय में होनी कठिन है। मगर आयु पूर्ण हो जाने पर, सब को दुःख सहन करते हुए भी सन्तोष ही करना पड़ता है। हमारा परिवार गुरुदेव की कृपा दृष्टि से हो फलीभूत होता रहा है। हर समय गुरुदेव की कृपा दृष्टि से ही, हमारे सब दुःख दूर होते हुए चले गये हैं।

—आशाराम जैन मितलावली वाले
दिल्ली

---

[४५]

नई दिल्ली

—२७।५। ६० कल रोज बड़े दुःख का भरा हुआ खत मिला, जिसको पढ़ कर बहुत दुःख हुआ। मुझे बड़ा भारी अफसोस हुआ कि मैं दर्शन करने की सोचता ही रह गया और गुरु जी चल बसे। यह हमारे भाग्य की ही बात है। जब भाग्य उतरा हुआ होता है तो ऐसा ही होता है।

—किशनलाल जैन
नई दिल्ली

---

[४६]

❀ दरियागंज, दिल्ली

—१५।५। ६० श्री गुणी जी महाराज के स्वर्गवास के बारे में सुन कर बहुत ही दु.ख हुआ। कई साल से दर्शनों की अभिलाषा थी ; लेकिन तकलीफ की वजह से नही आ सका।

—निरंजनलाल दयाचन्द जैन
दरियागँज, दिल्ली

---

[४७]

❀ दिल्ली

—२५। ५। ६० श्री गुरु जी महाराज के स्वर्गवास की सुन कर हमको बहुत सदमा पहुंचा। हमारा सारा परिवार यह सुन कर बहुत दुखी हुआ। गुरु जी ने हमे धर्म की बातें सिखाई थी। भगवान

उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। हमारी समाज से धर्म का रास्ता बतलाने वाले, ऐसे त्यागी महापुरुष के चले जाने का सभी को दुःख है।

—जम्बूप्रसाद दर्शनकुमार जैन
मोतियाखान, दिल्ली

---

[४८]

❀ दिल्ली

—२१।१०।६० श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास होने पर बड़ा दुःख है। उनकी महिमा जहाँ भी जाएं, वही साधु-सती खूब गाते हैं।

—बूलचन्द जैन गन्नौर वाला
पहाड़ी धीरज, दिल्ली

---

[४९]

❀ दरियागंज, दिल्ली

—२३।५।६० श्री श्री गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास के समाचार पढ़ कर अत्यन्त दुःख हुआ। उनकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

—चन्द्रकला जैन
नत्थूमल जैन, दरियागंज, दिल्ली

---

[५०]

❀ दिल्ली

—३०।५।६० हम डलहौजी श्री श्री १००८ श्री रघुवरदयाल जी म० के दर्शनार्थ गए थे। वहाँ मालूम हुआ कि श्री श्री १००८ गणी श्री श्यामलाल जी म० का स्वर्गवास हो गया। यह समाचार जान कर बड़ा दु:ख हुआ। श्री गणी जी म० बड़े परोपकारी, सरल स्वभावी साधु थे। उन की कीर्ति, उन के अनुयायीयों को हर समय उन की याद दिलाती रहेगी। प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—सूर्य कुमारी जैन
दिल्ली

---

[५१]

❀ दिल्ली

—यह मालूम करके कि श्री श्री १००८ श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास हो गया है, बड़ा शोक हुआ। वे बड़े पुराने साधु जी थे। बड़े चारित्रवान थे। हम लोगो को उन का बड़ा सहारा था। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दें।

—बुन्दी बाई
मुंशी दयाचन्द सतीशचन्द जैन
दिल्ली

---

[५२]

❀ करनाल

—समस्त जैन समाज करनाल, श्री श्री १००८ गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास पर, हार्दिक शोक प्रकट करती है और शाशन देव श्री भगवान महावीर से प्रार्थना करती है कि महाराज श्री जी की आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

—चतरसैन जैन
मन्त्री, श्री एस. एस. जैन सभा
करनाल (पञ्जाब)

---

[५३]

❀ करनाल

—१७ । ५ । ६० गुरु महाराज श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास का, हमें बड़ा दुःख है।

—हरीराम परसराम
नईमण्डी, करनाल (पञ्जाब)

---

[५४]

❀ करनाल

—७ । ५ । ६० आज जब मैं, जैन स्थानक करनाल में महाराज श्री जी के दर्शनार्थ गया, तो वहाँ स्वामी जी श्री श्यामलाल जी महाराज के देहावसान का पता पा कर, मन

को अति दु.ख हुआ । मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को हर तरह की शान्ति दें ।

—मदनगोपाल गुप्ता
माडल टाउन, करनाल (पञ्जाब)

---

[५५]

❀ करनाल

—१० । ५ । ६० आगरा श्री सघ के पत्र द्वारा अत्यन्त शोक भरा समाचार प्राप्त हुआ । हृदय को अपार वेदना हुई। श्री गणी जी महाराज के परलोक से जो जैन समाज को क्षति पहुँची है, वह वर्तमान मे पूरी होने की आशा नही है। भगवान महावीर के चरणो मे, गणी श्री जी की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना है ।

—कैलाशचन्द जैन,
माडल टाउन, करनाल (पञ्जाब)

---

[५६]

❀ करनाल

—१६ । ५ । ६० मै १०–१२ दिन की छुट्टी पर गया हुआ था । आने पर ज्ञात हुआ कि पूज्य गुरुदेव श्री गणी जी म० का स्वर्गवास हो गया है । दिल को अत्यन्त दुःख हुआ । परन्तु किया क्या जा सकता है ? अच्छा रहता, यदि वे कुछ दिन और रहते । परन्तु समय किसी के टालने से नही टल सकता ।

—ताराचन्द जैन
करनाल (पञ्जाब)

---

[५७]

❀ कैथल

—११-५-६० श्री श्री १००८ पूज्य गुरुदेव, शान्त मूर्ति श्री श्यामलाल जी महाराज का देवलोक हो गया है, यह पढ र दिल को बहुत दुःख हुआ। यह दुख हमे ही नही बल्कि मस्त जैन बिरादरी को भी बहुत हुआ। अब तो सिवाय सब्र के ोई चारा नही है। भगवान उन की आत्मा को शान्ति दे।

—हरीचन्द ताराचन्द जैन
कैथल (पञ्जाब)

---

[५८]

❀ रोहतक

—१० । ५ । ६० पूज्य गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास के समाचार पढ़ कर अति दुःख हुआ। जैन रादरी रोहतक महाराज श्री जी के स्वर्गवास पर अति दुःख कट करती है। और जिनदेव से प्रार्थना करती है कि महाराज ी जी को देवलोक मे उच्च—अतिउच्च स्थान प्राप्त हो तथा स महान् दुःख को हम को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। ाथ ही उन की कमी को पूरा करने की ताकत जैन समाज को दें।

—वदलसिंह जैन
मंत्री, एस. एस. जैन सभा, रोहतक शहर (पञ्जाव)

---

[५९]

❀ रोहतक

—१६ । ५ । ६० मै करनाल गया था, वहाँ श्री श्री १००८ श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास की खबर सुन कर, एक दम हक्का-बक्का रह गया । दिल को बेहद अफसोस व रंज हुआ । महाराज साहब, निहायत ही ठण्डे स्वभाव के थे । हर एक उन से खुश था ।

—मास्टर चन्दूलाल जैन
रोहतक (पन्जाब)

---

[६०]

❀ जींद

—७ । ५ । ६० श्री गणी जी महाराज के स्वर्गवास का सूचना का तार आज मिला । इस दुःखद समाचार से हमारे मनों को बहुत आघात पहुँचा । श्रद्धेय श्री गणी जी महाराज, संयम साध्वाचार और वैराग्य की साक्षात् मूर्ति थे । वह सरल स्वभावी, पापभीरु, समिति-गुप्ति के पालन मे जागरूक और आत्मार्थी थे । उन के पवित्र चरणों मे यही श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, शासन देव से प्रार्थना करते है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो ।

—सेठ रलीराम मननारान जैन
जींद (पन्जाब)

---

(६१)

❀ समालखा मण्डी

—श्री श्री १००८ गुरुदेव श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास का शोक पत्र पढ कर, सारी जैन समाज समालखा को बहुत शोक हुआ। क्यों कि महाराज साहब का जैन समाज पर वड़ा भारी उपकार हो रहा था। उस उपकार से अब रहित हो गए हैं।

—एस. एस जैन संघ
समालखा मण्डी (पञ्जाब)

---

[६२]

❀ हिसार

—२४।५।६० 'जैनप्रकाश' मे पढ कर, तथा स्थानक मे ला० बनवारीलाल जी द्वारा श्री गणी श्यामलाल जी म० सा० विषय मे, उनके स्वर्गवास की बात सुन कर मुझे तथा यहाँ की जैन समाज को बडा शोक हुआ। एतदर्थ हम सभी उनके चरणो में अपनी श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत करते हैं। हमारा विश्वास है कि दिवगत मुनि जी, देवलोक मे भी किसी उच्च पदवी को सुशोभित कर रहे होगे।

—नवकार मन्त्र के अखण्ड जाप को समाज मे चालू करने वाले श्री गणी जी म० ही थे। उनके द्वारा समाज-हित के लिए किए गए कार्य, किसी से छुपे हुए नही हैं। समाज के सगठन के लिए, जो कार्य आप श्री जी ने किया, वह प्रसशसनीय है। श्री गणी जी म० के विषय मे -नमिपवज्जा- की यह ५८ वी गाथा चरितार्थ होती है—

इहसि उत्तमो भन्ते, पच्छा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तम ठाण, सिद्धि गच्छसि नीरओ ॥

—भगत उग्रसेन जैन
हिसार (पंजाब)

[६३]

❀ बरनाला

—१८।५।६० आपका दु.ख भरा पत्र मिला कि श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज काल धर्म को प्राप्त हो गए। श्री गणी जी महाराज के स्वर्गवास से यहाँ के श्री सघ को अत्यन्त दु.ख हुआ। श्री संघ शोक प्रकट करता है और श्री भगवान महावीर स्वामी से प्रार्थना करता है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हो तथा जैन समाज को दुःख सहने की शक्ति प्राप्त हो।

—मन्त्री श्री जैन सभा, बरनाला (पंजाब)

---

[६४]

❀ बरनाला

—१८।५।६० श्रद्धेय श्री श्यामलाल जी महाराज, बहुत भद्र प्रकृति के सन्त थे। मुझे उनके कई बार दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह सतयुगी सन्त थे। उनकी स्मृति सत-युग का स्मरण दिला रही है। मै ऐसे महान् सन्त के प्रति श्रद्धा ञ्जलि अर्पित करता हूँ।

—वैद्य अमरचन्द जैन
बरनाला (पंजाब)

---

[६५]

❀ फरीदकोट

—१४।५।६० यह जान कर बडा दुःख हुआ कि श्रद्धेय श्री श्री १००८ श्री श्यामलाल जी महाराज ६।५।६० को स्वर्ग-वासी हो गए। महाराज श्री जी के स्वर्गवास से समाज व धर्म को

बड़ी क्षति पहुँची है। जैन सघ फरीदकोट के सब स्त्री-पुरुष इस समाचार को जान कर दुखी हुए। सारे संघ की ओर से समवेदना मालूम होवे।

—किशोरीलाल जैन, एडवोकेट
प्रे. श्री एस. एस. जैन सभा
फरीदकोट (पञ्जाब)

---

[६६]

❀ संगरूर

—२०।५।६० आपके पत्र से ज्ञात हुआ कि श्री श्री १००८ श्री श्यामलाल जी म० देवलोक पधार गए हैं। यह पढ कर हार्दिक दुःख हुआ। महाराज श्री जी सरल स्वभावी ही नही थे, बल्कि वे तो निराशो की आशा भी थे। सो प्रार्थना है कि भगवान इन की आत्मा को शान्ति देवे।

—खूबचन्द जैन
संगरूर (पञ्जाब)

---

[६७]

❀ जगराओं

—१२।५।६० श्री श्री १००८ श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास हो जाने की खबर पढ कर हैरानी हुई। इस लिए कि महाराज श्री जी के बीमार हो जाने की कोई खबर पहले मालूम न हो सकी। खैर! महाराज श्री जी की आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

—बाबूराम तरसेमचन्द जैन
जगराओं (पञ्जाब)

---

[६८]

❀ जगराओं

—श्री गणी श्यामलाल जी महाराज स्वर्गवासी हो गए हैं, यह सुन कर बहुत दुःख हुआ। कर्मों ने ऐसा चक्कर ला, कि हम तो दर्शनों को भी तरसते रह गए।

—गुज्जरमल जैन
जगराओं (पञ्जाब)

---

[६९]

❀ रतलाम

—२१। ५। ६० 'तरुणजैन' को देखने से मालूम हुआ कि श्रद्धेय तपस्वी गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का र्गवास हो गया। यह समाचार पढ कर बहुत खेद हुआ। चिरं-व आत्मा को चिर शान्ति मिले, यही शासन देव से प्रार्थना रते है।

—लखमीचन्द मुणोत
मन्त्री श्री धर्मदास जैन मित्र मण्डल
रतलाम (मध्य-प्रदेश)

---

[७०]

❀ जामनगर

—१०। ५। ६० हम को मालूम हुआ कि पूज्य श्री गणी श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास हो गया है। यह ान कर हमको बहुत दु.ख हुआ। हम परमात्मा से प्रार्थना करते कि उनकी आत्मा को शान्ति अर्पण करे।

—सीताराम जैन
जामनगर (सौराष्ट्र)

[७१]

❀ कलकत्ता

—१८ । ५ । ६० मुनिराज श्री श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गारोहण का समाचार पढ कर, पूज्य मामी जी को बहुत शोक हुआ । वे बहुत दिनों से आगरा जा कर, आप सर्व श्री के दर्शनों के लिये आकुल थी । सयोग है कि वे जा न सकी । और धर्म का एक पुजारी उठ गया । हम लोगों के मनो मे दिवंगत आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धा थी । वे शान्त, गम्भीर और दयालु थे । जो आत्मा-संसार के लिए शान्ति-कामना करती थी, उसके लिए शान्ति कामना करने के योग्य हम कहाँ हैं ?

—जगदम्बाप्रसाद गुप्त
आर० बी० एस० जैन डिस्टीब्यूटर्स प्रा० लि०
कलकत्ता

---

[७२]

❀ नारनौल

—१८ । ५ । ६० पूजनीय गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का असामयिक स्वर्गवास हो जाने के समाचार प्राप्त करके यहाँ का श्रावक संघ हार्दिक शोक प्रकट करता है । और स्वर्गीय महाराज श्री जी की आत्मशान्ति के लिए, श्री वीर प्रभु से प्रार्थना करता है । महाराज श्री जी की सेवायें कभी भी नही भुलाई जा सकती ।

—बनारसीदास जैन
नारनौल

---

[७३]

❀ कोरबा

—२५।५।६० पूज्य गुरुदेव श्री श्री १००८ गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के देवलोक होने का शोक सम्वाद, मेरे बाहर से वापिस आने पर मालूम हुआ। जिसको पढ कर इतना दुख हुआ कि जिसे लिख कर नही बता सकता। मगर किया क्या जाय ? कालचक्र के आगे तो कोई चारा ही नही है। भगवान से प्रार्थना है कि श्री सघ व समाज को इस क्षति के सहने की शक्ति दें।

—महावीरप्रसाद जैन
कोरबा (बिलासपुर)

---

[७४]

❀ देहरादून

—१८।११।६० आज गुरुदेव भले ही हमारे सामने नही है, परन्तु उनकी शिक्षाओ ने, हमे वह रास्ता दिखाया है कि अगर हम उनकी दी हुई शिक्षाओ को अपनाले तो, हमे सच्चा पथ प्राप्त हो जाय। मुझे प्रसन्नता है कि पूज्य गुरु जी की अतीत की झांकी एक ग्रन्थ के द्वारा हम सब के सामने आ रही है।

—जयभगवान जैन
देहरादून

---

[७५]

❀ ब्यावर

—आज अखबार देखा, उसमे शान्त मूर्ति गुरुदेव श्री श्री १००८ श्री श्यामलाल जी म० सा० का देवप्रयाण पढ़ कर बड़ा दु.ख हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

—हजारीलाल ज्योतिषी
ब्यावर (राजस्थान)

---

[७६]

❀ कानपुर

—९। ५। ६० भाई अमरनाथ जी से मालूम हुआ कि पूजनीय श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास हो गया। सुन कर बहुत अफसोस हुआ। श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास हो जाने से, जैन समाज को पूरा नुक्सान हुआ है। यह नुक्सान किसी हद तक पूरा नही हो सकेगा।

—शिवलाल
कानपुर (उत्तर-प्रदेश)

---

[७७]

❀ मथुरा

—१०। ५। ६० पूज्य श्री १००८ गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के देहावसान की सूचना पा कर, हमको अत्यंत शोक हुआ। दर्शनमाला कहती है कि अपने सिर से बड़ों का साया उठता ही जा रहा है। उनके जाने से एक गहरा धक्का लगा है।

एस० पी० जिन्दल, ए० डी० एम०
मथुरा (उत्तर-प्रदेश)

[७८]

❀ एलम

—९ । ५ । ६० श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास होने का तार प्राप्त होने पर, जैन स्थानक एलम मे शोक सभा की गई। यहाँ विराजित महासती श्री पद्मश्री जी म० ठा० ५ ने दुःख प्रकट करते हुए सब भाइयो को समझाया कि इस संसार मे जो आया है, उसे जाना अवश्य है। सब ने नवकार मन्त्र का जाप किया और श्री गणी जी महाराज की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की।

—ज्योतिप्रशाद जैन
जैन श्री संघ एलम (उत्तर-प्रदेश)

---

[७९]

❀ काँधला

—९ । ५ । ६० गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास की खबर पढ कर, कांधला की समस्त एस० एस० जैन बिरादरी को बहुत दु ख हुआ। भगवान महावीर स्वामी से प्रार्थना है कि वे महाराज श्री जी की आत्मा को सुख और शान्ति प्रदान करे।

—श्रीमन्दिरदास जैन
मन्त्री, एस० एस० जैन सभा
काँधला (उत्तर-प्रदेश)

---

[८०]

❀ बडौत

—९ । ५ । ६० गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के आकस्मिक स्वर्गवास का समाचार सुन कर हृदय को बडी ठेस लगी है । महाराज श्री जी की क्षति, समाज को हमेशा खटकने जैसी चीज है । वे शान्त मुद्रा, सरल स्वभावी, महान् आत्मा थे । शाशन देव से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को पूर्ण शान्ति प्राप्त हो ।

—डा० चेतनलाल जैन
बड़ौत (उत्तर-प्रदेश)

---

[८१]

❀ बड़ौत

—१८ । ५ । ६० श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास की खबर पढ़ कर वहुत दुःख हुआ । परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी रूह को शान्ति प्रदान करे ।

—खजानसिंह जैन
हैड क्लर्क, नगरपालिका
बड़ौत (उत्तर-प्रदेश)

---

[८२]

❀ बामनौली

—१५ । ५ । ६० दिनाङ्क १०-५-६० का लिखा पत्र पढ़ कर यहाँ के संघ को हार्दिक दुःख हुआ । परम श्रद्धेय श्री श्री १००८ श्री श्यामलाल जी महाराज के निधन से समाज को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होनी अत्यन्त कठिन है । उनका

सरल स्वभाव व शान्त मुद्रा रह-रह कर याद आती है। किन्तु विवश हैं, कुछ चारा नहीं चलता। हार्दिक कामना है कि पूज्य श्री की स्वर्गीय आत्मा को सदैव शान्ति मिले।

—सलेकचन्द जैन
वामनौली (उत्तर-प्रदेश)

---

[८३]

❀ छपरौली

—१२।५।६० श्री श्यामलाल जी महाराज का समाचार पढ़ कर अत्यन्त दु:ख हुआ। क्योंकि ऐसी महान् आत्मा श्री श्यामलाल जी महाराज का स्वर्गवास होना, हमारे लिए बहुत दुःखदायी है। हमारी समस्त बिरादरी को भी बहुत दु:ख हुआ। उनके उपकार भुलाये नहीं जा सकते। हम भगवान् श्री महावीर जी से प्रार्थना करते हैं कि उनकी महान् आत्मा को शान्ति दे।

—समस्त जैन विरादरी
छपरौली (उत्तर-प्रदेश)

---

[८४]

❀ रठौडा

—९।५।६० पण्डित रामधन जी की जवानी, सरल स्वभावी, समाज हितैषी गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का अकस्मात् निधन सुन कर चित्त को अति दुःख हुआ। ऐसे उत्तम समाज-हितैषी, वयोवृद्ध महान् आत्मा की छत्र छाया हमारे सिर

से, इतनी शीघ्र उठ जाने का हमें महान् खेद है । उनकी जगह की पूर्ति होना परम कठिन है । अफसोस है कि हम अन्तिम समय मे मुनि श्री जी के दर्शन नही कर पाए । अन्त मे हम कामना करते हैं, भगवान हम सभी में उनके वियोग को सहन करने की शक्ति दे और स्वर्गस्थ मुनि की आत्मा को सुख और शान्ति प्राप्त हो ।

—टेकचन्द, प्रेमचन्द जैन
रठौड़ा (उत्तर-प्रदेश)

---

[८५]

❀ दोघट

—११ । ५ । ६० शान्तमूर्ति पं० मुनि श्री श्री १००८ गणी श्री श्यामलाल जी महाराज का देहावसान-समाचार अचानक मिलने पर, यहाँ के श्री सघ के हृदय में बड़ा ही असह्य दुःख हुआ । अचानक अपनी समाज के ऐसे महान् मुनिराज, सत्य धर्म प्रचारक, शान्तमूर्ति का हमेशा के लिए छिप जाना, कितने बड़े दु ख की वात है । उनका वियोग असहनीय है । श्री गणी जी महाराज बडे ही सरल स्वभावी थे । इन्होने तथा इन्ही के परिवार के मुनियो ने, हमारे प्रान्त मे, धर्म-प्रचार कर, जो उपकार किए हैं, वे भुलाए नही जा सकते । आयुष्य कर्म पूर्ण होने पर लाचारी है । अन्त मे हम सव प्रार्थना करते हैं कि स्वर्गस्थ आतमा को शान्ति मिले ।

—धर्मदास जैन
दोघट (उत्तर-प्रदेश)

---

[८६]

❀ हिलवाड़ी

—२०।५।६० खेद है कि परम वैरागी, शान्त स्वभावी, शुद्ध चारित्री, अखूट क्षमावन्त, समभाव शील, महामुनि श्री श्याम लाल जी म० का स्वर्गवास हो गया। यह शोक जनक समाचार सुना तो दिल को अति खेद हुआ। ससार की अनित्यता प्रत्यक्ष दिखायी दी। कुछ सहारा नही, सबर ही करना पड़ता है। यह काल तो तीर्थ कर तक को लागू रहता है, औरो की क्या गिनती है? उनके स्थान की पूर्ति होना अति कठिन है।

—फूलसिंह जैन
हिलवाड़ी (उत्तर-प्रदेश)

---

[८७]

❀ परासौली

—१३।५।६० श्री गणी जी म० के स्वर्गवास की सुन कर अति दु.ख हुआ। हम लोग अपने गुरु महाराज के दर्शन भी न कर सके। हमारे परिवार को इसका बड़ा खेद है। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

बनारसीदास, नरेशचन्द जैन
परासौली (उत्तर-प्रदेश)

---

[८८]

❀ मवानामण्डी

—१६।५।६० गुरु जी म० के स्वर्गवास का दु.खं भरा समाचार पा कर, हम सभी के दिलों को बहुत ही ज्यादह दुःख हो रहा है। यह दुःख भुलाए से भी नही भूला जा रहा है। एक दम अचानक ही यह घटना घटने से हमे, बहुत भारी धक्का पहुंचा है।

मुन्शीलाल, जिनेश्वरदास जैन
मवानामण्डी (उत्तर-प्रदेश)

---

[८९]

❀ बिनौली

—९।५।६० श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास का समाचार मिला, पढ कर चित्त को बहुत खेद हुआ। उनके प्रति हम अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। स्वर्गवासी आत्मा को शान्ति मिले, यही हमारी मनोकामना है।

रिसालसिंह, प्रेमचन्द जैन
बिनौली (उत्तर-प्रदेश)

---

[९०]

❀ श्यामली

—१४।५।६०, श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास की सुन कर बहुत अफसोस हुआ। हमे महाराज श्री जी की तकलीफ की कोई खबर नही मिली। खबर मिलती तो दर्शन जरूर करता।

चन्दीराम, मितलावली वाला
श्यामली (उत्तर-प्रदेश)

[९१]

❀ किरठल

—१७।५।६०, मै जब एक माह की छुट्टी ले कर घर आया, तब मालूम हुआ कि गुरु जी महाराज का स्वर्गवास हो गया। सुन कर बड़ा दु.ख हुआ। गाँव के सभी व्यक्तियो ने दुःख माना। उनकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

गिरवरसिंह शर्मा
किरठल (उत्तर-प्रदेश)

---

[९२]

❀ दिल्ली

७।५।६० गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास पर हार्दिक समवेदना स्वीकार करे।

—गुलाबचन्द जैन लोढा
दिल्ली

(तार द्वारा प्राप्त)

---

[९३]

* Kanpur
—7।5।60 Shocked God may give rest to departed soul.

Jain sangh
KANPUR (U.P.)

❀ कानपुर

—७।५।६०, हमे दुख है; भगवान स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—जैन सघ
कानपुर (उत्तर-प्रदेश)

(तार द्वारा प्राप्त)

---

[६४]

* Charkhi dadri

—At gani shyam lal ji death sorry.

Hiralal jain
Charkhı dadri

❀ चरखी दादरी

—हमे गणी श्री श्यामलाल जी महाराज के स्वर्गवास से दुःख है।

—हीरालाल जैन
चरखी दादरी (महेन्द्रगढ)

(तार द्वारा प्राप्त)

---

[८५]

स्मृति-ग्रन्थ के विषय में :

❀ **दिल्ली**

—२८।५।६० आपका छपा हुआ सरक्युलर, बावत जीवन चरित्र दिवंगत श्री श्यामलाल जी म० का मिला। ऐसे जीवन चरित्र अवश्य लिखे जाने चाहिएँ। आप का यह पग उठाना सराहनीय है।

—साधारणतया आजकल यह रिवाज हो गया है कि जीवन-चरित्र लिखे जावे। पैसा भी सहायता मे मिल जाता है, दस-बीस किताबे बिक भी जाती हैं। सौ दो सौ निःशुल्क भी बंट जाती हैं। परन्तु पढने वाले कम मिलते हैं। यहाँ अनेक उत्तम पुरुषो के जीवन-चरित्र लिखे गये। उनमे से दस-बीस ही पढ़े गए, बाकी अलमारियो मे शोभा देते हैं।

—आपका परिश्रम तो अवश्यमेव सफल होगा। आप उसी लगन से अपना कार्य करते रहे। मेरे सद्‌भाव तथा मनोवृत्ति आपके साथ हैं।

—दलेलसिंह गुराना
दिल्ली

मंगल कामना

सौम्यः साम्ये संस्थितो बाल-वर्णी,
शान्तो दान्तः स्नेह-सारल्य-मूर्तिः ।
शिष्यैर्मित्रैर्वन्दितः सन्ततं यो ;
जीयात् कीर्त्या सो मुनिः "श्यामलालः" ॥

—जो सौम्य, समत्वभाव में स्थित, बाल-ब्रह्मचारी, शान्त, दान्त=इन्द्रियों को दमन करने वाले, स्नेह तथा सरलता की मूर्ति सदैव शिष्यों (तथा) मित्रों से वन्दित (थे) वे मुनि (श्री) श्यामलाल (जी महाराज) कीर्ति से जय को प्राप्त हों ।

—हृषीकेश चतुर्वेदी
चौबेजी का फाटक, किनारी बाजार, आगरा

सूचना

—जिन सज्जनों को प्रस्तुत "पूज्य गुरुदेव, स्मृति-ग्रन्थ" की आवश्यकता हो ; वे मात्र १।।) रु० डाक व्यय के लिए भेज कर, रजिस्टर्ड पारसल द्वारा इसे निःशुल्क निम्नलिखित पते से प्राप्त कर सकते है ।

स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशन मन्दिर
जैन भवन, लोहामन्डी
आगरा (उ० प्र०)